ISSN 2229-547X

विदेह सदेह ३१

डॉ. कामिनी कामायनी & कुमार मनोज कश्यप

केर गद्य आ पद्य रचना

(विदेह www.videha.co.in/ पेटार अंक १-३५० सँ)

विदेह-सदेह शृंखला- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ गद्य आ पद्यक एकटा निरन्तर संकलन

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्

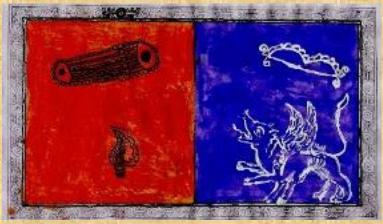

विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

ISSN 2229-547X VIDEHA

सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर।

ऐ पोीिक सविविकार सुरवित अवि। कॉपीराइट (©) ीिरकक क्लवित अनुमक्तक विना पोीिक कोनो अंशक ीिया पक्तएि क्रकॉवंग सक्हत इलेक्ट्रॉक्तक अिीि याविक, कोनो माध्यमसँ, अिीि ् ानक संगहण ीिि पुनपशोगक पणाली दारा कोनो रपमे पुनरत्पाक्दत अिीि संचाक्रत-पसाक्रत नै कएल जा सकैत अवि।

(c) २०००- अदतन। सिीमिकार सुरमित। मविदेहि पकाक्शत सभटा रचना आ आकाइकि सिीमिकार रचनाकार आ सृगहकराक लगि छम्नह। भालसम्नरक गाछ जे सन २००० सँ याहूम्सटीजपर छल http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आम्नद म्नलृकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क पोस्ट http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html (म्नकछु म्नदन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html म्नलृकपर, सोत wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसम्नरक गाछ-पिि िमििली ब्लॉग / िमििली ब्लॉगक एगीगेटर) केर रपि इन्टरनेटपर िमििलीक पाचीनतिि उपम्सितक रपि मविदिन अम्छ। ई िमििलीक पम्नहल इटरनेट पमिका मिक जकर नाि बादि १ जनिरी २००८ सँ "मविदेह" पडलै।इटरनेटपर िमििलीक पिि उपम्सिमतक यािि मविदेह-पिि िमििली पामिक ई पमिका िमिर पहुँचल अम्छ,जे http://www.videha.co.in/ पर ई पकाक्शत होइत अम्छ। आब "भालसम्नरक गाछ" जालिरि 'मविदेह' ई-पमिकाक पविक्ताक सृग िमििली भाषाक जालिरिक एगीगेटरक रपि पयुक्त भऽ रहल अम्छ। मविदेह ई-पमिका ISSN 2229-547X VIDEHA

(c)२०००- अदतन। सिीमिकार लेखकािीन आ जतऽ लेखकक नािि नै अम्छ ततऽ सृपादकािीन। सृपादकािीन। मविदेह- पिि िमििली पामिक ई-पमिका ISSN 2229-547X VIDEHA सम्पादक: गजेन्द ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur.

रचनाकार अपन ीिम्नलक आ अपकाक्शत रचना (जकर ीिम्नलकताक सृपूर्वउरदाम्यति लेखक गरक िध्य छम्नह) editorial.staff.videha@gmail.com के ीिल अटैचिण्टक रपि .doc, .docx, .rtf ीिि .txt फॉर्मेटि पठा सकै छमि। एतऽ पकाक्शत रचना सभक कॉपीराइट लेखक/सृगहकराि लोकम्नक लगि रहतम्नह। सम्पादक 'मविदेह' पिि िमििली पामिक ई पमिका ऐ ई-पमिकािि ई-पकाक्शत/ पिि पकाक्शत रचनाक म्नपट-िबि आकाइकि/ आकाइकि अनुिदक आ ूिल आ अनूक्दत आकाइकि ई-पकाशन/ म्नपट-पकाशनक अमिकार रखैत छमि। (The Editor, Videha holds the right for print-web archive/ right to translate those archives and/ or e-publish/ print-publish the original/ translated archive).

ऐ ई-पमिकािि कोनो रॉयल्टीक/ पाम्नरशमिकक पािीिन नै छै। ते रॉयल्टीक/ पाम्नरशमिकक इच्छुक मविदेहसँ नै जुडमि, से आगह। रचनाक सृग रचनाकार अपन सृमिप्त पम्नरचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अृतिि टाइप रहय, जे ई रचना ीिम्नलक अम्छ, आ पम्नहल पकाशनक हेतु मविदेह (पामिक) ई पमिकाके देल जा रहल अम्छ। ीिल पाप्त होयबाक बाद यिासृभि शीघ (सात म्नदनक भीतर) एकर पकाशनक अृकक सूचना देल जायत। एम्नह ई पमिकाके ीिसक ०१ आ १५ म्नतमिके ई पकाक्शत कएल जाइत अम्छ। ISSN: 2229-547X

मूल्य : ाा र १०००/- संस्करण: २०२२

Videha Sadeha 31: A Collection of Maithili Prose and Verse by Dr Kamini Kamayani & Kumar Manoj Kashyap e-published in Videha e-journal issues 1-350 at www.videha.co.in).

अनुकम

गद-ि ण (प. १-३३६)

डॉ. कामिनी कायिनी- डॉनोमोह, सेयाि रेयापक सिमिि अतीत, लघुकि- भागृति, सोर, कोन डाम्र पर केकर खोता, घुइर ताकू, िटीक ि रत, मिलायत िली कमनया, सूटक कपडा, चुिन, चुटा लेि की चुटीी, भरोस,लाल काकी, अमनशफ्त, सिय काल, कठजीब, कलृमकत चान, उर राक नोर, िहानगर ि सुनीता, सृटू क उपनैन, शाशत कि, कमनया पूतरा के मिहि, डामिनक बानर, टूटल तारा, अपान राज्य (प. २-२५४)

कुिर िनोज कश्यप- मििसिता, िरीचका, परजा, ियादाक हनन, पमतरोि, दमि कोर, ओ तऽ बताह अछ, िििति, िनसताप, मारैत देिल, कलाकार, नोर अृगोर, फयूज बलि, पमहल मचटी, मदन िराबय तीन नाि, घुमर आऊ माशा, अन्हेर, सीिन, उज़डल खोता, िमरमचका, परजा, बदलैत सिय, जरल पेट, जीतक आगू, िता कुिता न भिमत, ईिनदार, िस्टर साहेब, कचोट, निि-षिद्व िकल बाट, हारल िनुकख, भािना, बी०डी०ओ० (प. २५५-३३६)

पद-खण्ड (प. ३३७-४७९)

डॉ. कामिनी कायिनी- अृकोरटि ृमिंदर, जमहया ओ इमहास सुनौलक, सृग मदअ समदखन अमहना, िसृत, बाजार िसर्ी, बृजारा िन, रौपदी, यशोिरा, गाििरी, शकुनतला, फागुन राग, काशीक घाट, मचडैक अमिलाष, भटकैत सिप, आजुक मदिार्ी, असृिजस, आतृकी गाि, मलखत के पेि गीत, आमखर कमहया िमर, भाषा, चका, ई केकर शोमरत ?, मखडकी, भरोस, पुषािजमल, आसिाक पूरवकलश, मखलैत पलास िनि, आिुमनक सर्ीगर १-५ (प. ३३८-४७२)

कुिर िनोज कशयप- िसृती दोहा, नमहृ सुमत रहब आहा चदमर तामत, मकछु गजल (प. ४७३-४७९)

गद्य खण्ड

डॉ. कामिनी कायिनी

नोमपेह

भोरे करीब पाच बजे आंख खुजल त अपना के किोग नदी के तीर प ठाढ़ पयलो।कनी कनी मामयायल ,कनी कनी याता स झाराल ,उपर मचमार बीमार आसानिदेख् क ,आ पातः के पुमित सारिक समरशस िन पफुमलत भ उठल।दूर नदी ि नाव चमल रहल छल।बड़का मबराल नदी [तीन नदी ,किोग ,बाससाक,टोनलसप,जामह िकिोग सबस पईघ अमछ],जे अनेको देरक ाटीसीचने आमबरहल छल ,अपन लंबाई ि ओतय बमह रहल छल ,एकरे चाकर चौरस छाती प बसलछै ,कोनो सयि एमरया के ाती कहाबय बाला ,ओमह देर क राजधानी ,नोमपेह । नि के उदाि वेग के लगाि दईत पमहने स बुक होटल जाकय,सनान ,खान पान केबाद तुरतही रहर भणि के मलए माकसबा के छल सयि बड़ कि छल ,दरशीय सथान बेरी । ुखय ुखय सथान के मलसट कैब डाईवर के पकड़ा देमलए।

सेयाि रेयाप स कनी मबरेष मसथमत ।देरक राजधानी अमछ ,त सवाभामबके छै ,जे देरक सबटा गणामन्य ,ओहदादार, पाग वाला लोक सब अमह ठाि रहैत छथी।सुंदर भवन ,प फासीसी सथापतय कला के बेसी पभाव छैक।[कोनो सयि ि फासीसी उपमनवेर जे छल]

ठाि ठाि प नगरक रच्छा करैत जेना ,मुशाकि ुदा ि , पाछा के दु पैर ाड़ने ,अगुलका दु पैर ठाढ़ रेरक ूितशसब मुागत के राजसी वैभव के पदर्श कमरहलछल। रहर के सड़क चौड़ा चौड़ा,साफ सुथरा सुन्यकन सुंदर छै । कतेक ठाि ओकर सब के नेता के ूितशसेहो ठाढ़। फूल ,फव्वारा स सुसज्जतिदान ,सड़क ,दोग,दाग ।

पहलुक पड़ाव छल मयूमजयि ,बड़ मदव्य , पाचीन खिर कालक बस्तु आ कलाकृत्त स ऊबडुब। अँकोर काल स पहनुक ,[चौथी सदी]स ,अंकोर काल धमर[चौदहवी सदी के] सबटा पिुख इमहास जेना अहठाि रेखामकत कयल गेल अछ ।

ओहठाि स मकछुए दूरी प राजभवन व राजकीय िहल अछ ,जे अह रहरक गौरव और बढ़ा दईत अछ । अह मुस्तृत भवन पमरसर ि अनेको मदव्य आआकषक िहल सब अछ ,जेना दरबार हौल ,नृत्य कक ,राजा के मावास ,रानी के मावास ,नेपोमलयन पैवेमलयन ,आ भव्य पेगोडा। अह ठाि अंकोरवट जेका बड़भीड़ छल ।

रहर ािटा ािटी चामर भाग ि मुभक्त छै उतर दमकण आकषक आवासीयकेत्त ,आ फैक्री ,पमि ि बहू ूिय आवासीय आ आमथक केत्त{मुरेष}आ ध्यिव हृदय अह रहर के फासीसी भाग ,जतय ममसरी ,बैक ,उपमवेर िकान ,बाजार आ होटल सब छै ।

पीयर रंगक सेरल ािकेट ,खरीदवैया सभक अडडा बनल रहैतअछ ,ओह ठाि अनेक पकारक सणशआ रजतक आभूषणक स्टौल लगल

अछि एकरा संग संग पुरानसिका ,कपड़ा लता ,घड़ी ,फूल ,पेंटिंग आ खेनाय के सामिगी स भरल पड़ल अछि ।

दोसर पसिद बाजार अछि टुओल टॉि पोग िकेट ई रसियन बाजार के नाि स से बिरेष जानल जाइत अछि ।

अनेक ठाि नाईट िकेट सेहो लिखल देखाय पड़ल ।

ओतुका सिय जीएिटी स सात घंटा आगा छैक। सथानीय करेसी िरएल छै,िदा यू स डी सिाधोक भ क चलै छैक । अिह ठाि रायल यूिनविसिटी ,यूिनविसिटी ऑफफाइन आटश,रॉयल यूिनविसिटी ऑफ एिाकलचर आिद अविसथत छैक ।

रहर स कनिक फराक िाश पसिद िकरीरोि नेरनल पाकश छै, जेकरा घूिबा लेल पयापत सिय चाही। अिह ठाि पतयेक वषशबड़ भवय जलोतसव होईत ,छैक, जेकरओिरयौन कएक िसि पिहनिह स पारमभ भ जाईत छैक ।

एक सुंदर ,एक साप ियी राजधानी के दोसर हृदय िवदारक पहलू ओकर िकिलंग फीलड सेहो छैक ,जे कोनो भीषण तानाराहक ,लोिहषक ,नृरंस ,नरसंहार कजीिवत दसतावेज़ अछि । सन 1975 स 1989 धिर तानाराह पोलपोट आ ओकर िडिली दारा सृिजत कंपूिचया के रकत रंजीत इितहासक खुजल पृष ।वार मयूिजयिके हिथयारक ,आयुधक कूरता के कथा अिह ठाि अखन धिर िसिकी रहल अछि । ओिह िवराल पिरसर के घेर क पयशटक सथल बनाओल गेल अछि ,जतय करीब20,000 स बेसी लोक के{जािह ि सती आ

दु बरखक बच्चा सब सेहो रहैक } अि ानुमानक हत्या कयल गेल छल ।ओकर सबहक खोपड़ी ,ओकर सबहक हडडी ,ओकरसबहक पहिरल वस्त्र के एक गोट सिरिक बना क सुरक्षित राखल गेल अछि । ठा ि ठा ि लिखल छैक ,जे कृपया िदानक घास प पैर नही राखू,के जाने ककर ि ि र रीर अहि ठा ि खसल छैक । ओहि भयानक तासदी के अवस्सा सुनि क ,आ प ाि ण देखि क , नि अथाह वेदना स भरि गेल छल । गाईड बाजि रहल छल ,लोककहत्या करबा ि कोनो गोली व बार द नहि खचशभेलए,खजूरक काटेदार जड़ ि पटैक क ,बच्चा सब के ि रिल गेलै,आओर दुदात वणश सुनि क नि खराप हुए लगल ,ततुरते ओहि ठा ि स पस्थान कयलहू । आब र हरक बीच ओहि बड़का स्कूल ि अनलक ,जे ओहि नरसंहारक पहिल पृष छल ।औचक एक दिन जे सब स्कूल गेलाओ फेर आपस नै घुरला । कक्षा सब के जेल बनादेल गेल छल ,चारहु दिस कंटीली तार स तुरत घेरल गेल , आनन फानन ि एक एक कक्षा ि तीन तीन टा ईट कदेवार ,अलग अलग सेल ,पॉल पॉट के जे जतय विरोध केलकै, ओकरा ओहिठा ि मिबटाबय के खूनी पयास । स्कूल के अन्य क ि रा सब संगहालय बनल ,ओहि स ि यिके सामहित्य ,पमाका ,हत्या ि उपयोगी सा ि ागी सब के स ि टिने सून आंखि स संसार के हेर रहल अछि ।हजारो हजार पना अहि खूनी खेल प लिखल गेल ,फिल ि बनलदुनिया ताहि ताहि कमि उठल छल ।

अहि भूभीमिका के पार निकलबाक पयास ि आय धरि ई देर लागल अछि ,गरीबी ,बेरोजगारी ,बाल ि जिदूरी अनेको व्यापमि छैक ,दुनिया भरी के स्वयं ि सेवीसंस्था त छैक ,ि दा काज की भ रहल

छै भगवान जानै थ [, कतेको ासि धमर ई दृश्य हरि नि ममस्तष्क के मरोमहत करैत रहल छल ।]

कहुना कमर इहिर उहिर तकैत ,रहरक िनभावन चाकर चौरस बाट प िटर गस्ती करैत एक एक कणक आनंद उठाबैत रहलहू ।

स्थानीय सयिानुसार करीब तीन बजे हि सब मिन्दर पहुचलहु ,अनेक सीढ़ी चमढ़ क िहाति बुदक मिन्दर ,अम्हह ठाि ओ अमिताभ रप ि छथी। सम्ुिख पाच पाचफुट स बेरी उंच िाट िाट िाबिती सब ,एक दु टा जमर रहल छल ।ओम्हह पमरसर ि कीछु और ूिमतश सब छैक,कनी नीचा सीढ़ी स उतमर क एक नीक जलपान गृहसेहो छैक ,एक ठाि बाहर ि सेहो मकछू पूजनीय ूिमतशसब के सजा संवामर क राखल गेल छल।ओम्हह ठाि स नीचा के दृश्य बड़ा रिणीय लगैक।

नोममेह के नाि अम्हह मिन्दर प अमछ ,पहाड़ी मिन्दर ।एकर मकसा सेहो बड़ िनोहर छैक ।

रहर ि नदी कातक दृश्य अमत िनोहामरणी ,जल ि छोट पैघ जहाज पर पयशटकक आवाजही ,संध्या सयि भोरे जका भिण करैत लोक ,अपन अपन छोट िाटसिान बेचैत फेरीवाला ,सायमकल के एक दीस अपन ठेला व टोकरी बान्हने फल ,सूखल िाछ आ मद्द बेचैत लोक ।कतो बड़ तीवरधामर लगा क नब पीढ़ीनामच रहल छल । नदी के कात ि पाथरक बेच प बैसल लोग भाव मवभोर सन देखाई पड़े छल । कनी आगा एक टा बड़का मवशाालिय सन बनल [रौद वपामन स रक्षा करबा लेल'] ओम्हह ठाि फुटपाथ प एक टा

छोट मछ्न म्डिल अच्छ ,जाम्हि ि ाछि बाला तीन टा देवता म्बाराजा नि छलाह,ओम्हि के छोट पागण िआमा जम्र रहल छल,,एक पूजैमाम्र सन लोक बैसल,फूल म्बाकाय,लोक अपन शदा सुनि सफ़ेद कलि के र प ि अम्पाश करैक। सड़क के दोसर कात पाकश,आ भव्य पैघ पैघ होटल ,किान,दोकान सब । सोझा ि एक टा भारतीय होटल छल ,नीक अपन स्पादक राकाहारी भोजन भेटल । दोकान्दार बतौलक ,बाहरी आगंतुक सबभारतीय भोजन पसीन करैक छै। ओतुका बाजार सब पाच बजे बन भ जाय छै राम्त ि होटल ,बार एहने सन स्थान खुजल रहे छै । सड़क कात बेचय वाला सेहोअपन सयि व गाहम्क देम्ख व्यापार करैत अम्छ । म्मनसरे स ,झाड पोछ कम्र दोकान सब खुजय लगे छै । बड़का बड़का ,फूल ,फल स सजल बाजार केटपैत ,आम्खरी नजर स सलाि करैत,भोरे भोर हि दुनु गोटे एयर पोटशलेल पस्थान भ चुकल छी।

रहर स नौ म्कलो ािटर प एयर पोटशछै ,टैक्सी के म्कराया सात यूसडी। अनेक सुंदर ,इािरत ,सरकारी सस्थान ,म्वम्मन्न देरक सहयोग स चलैत संस्थान सबहकम्वराल भवन सब स सजल सड़क एक गोट आधुम्नक देरक झलक पस्तुम्त कम्र रहल छल ।

हा ,पॉल पौट के तानाराही के यादगार सन एक ठाि{कतोऔर ,भम्रसक म्कम्लंग फीलड म्दस ज़ेबा काल] बड़का टा के होम्डंश सन लागल,कोनो अंगरेजी अखबारि युदक सयि के छपल लोग सबहक फोटो छै,जाम्हि ि असंख्य लोग ,,ररणाथी ,अपन पाण बचबय लेल ािथ प सािन सब उठा क भामा रहल छै । जे म्कन्स्यातभम्वष्य

के पीढ़ी लेल एक टा बड़का टा के चेतावनी छैक । बड़ ि मि श्क छल ।

रहर के अम्धकार आबादी नवयुवक आ छोट बच्चा सब के छैक। सयि के संग ,ि ह उठेबा के पयास ि लागल ,ि दा धूतश वाम्णाम्ज्यक सभ्यताक युग ि ि दिम्द्गारपम्हने अपन स्ाथशतकैत अम्छ ,रक्क भक्क अम्हने अम्हने ठाि बम्ना जाय छै। बड़का कंपनी अपन साि नि बेचबा ि तल्लीन ,बड़का छोटका ि लि के म्बकी म्बारेख। तखन ''सरिथ के नम्हं दोख गोसाई' अम्हना चलैत एलै है संसार ।

अनेक म्बसंगम्त के उपरात , ई सुंदर रहर अपना संग ढेर रास म्खस्सा म्पाहानी नेने बड़ म्दन धम्र ऊहापोह ि रखने छल ।

सेयाि रेयापक स्वण्मशि अतीत (याता वृतान्त)

धन धान्य स लबालब ,ऊंच ऊंच ,ि टका ि टका म्वर ाल म्बम्रछ सबहक छाहम्र ि ,नदी सब के ि ृदु जलक ि ध्य ,सुस्ताम्त, अलसायल ,कनी सुतल ,कनी जागल,पाचीन सभ्यता के अतुल्य भार अपन छाती प रखने ,धरती के ई टुकड़ा ,म्वश के सि कि अपन सबटा रहस्य खोलबा के लेल बेकल , म्वहल भ याती सभक पतीक्ा कम्र रहल अम्छ,यातीगण पयाप्त संख्या ि अम्बतौ छथी ।

चारहू म्दस पसरल,कुहरैत,म्बभत्स, म्नाधशता ,अपन देर क कोनो रेलवे स्टेर न सन एयर पोटश,लोकक आंम्ख ि संम्हयायल सनाटा, कोनो गहीड़ व्यथा के अकथ भूमि का ि डूबल सन लागल,त ि नि ि हठात सहस्तो पश उठब स्वाभाम्वक छल ,अतेक म्पाछड़ल ,एहेन सकुचल वतशीन वाला भूमि ,आम्खर अजस्त पकृम्तक सम्पदा स पम्रपूणशकोना ? अनेको अही भाम्व के पश के ि न के कोनो कोन ि म्वराि दइत ,होटल आम्ब कनी म्वशाि करबा लेल म्वदर भेलहू। म्दन के साढ़े चाम्र बाम्ज रहल छल । अन्य पयशटकक पसंदीदा सवारी टुकटुक लेलहू,आ गाईड के सलाह अनुसार ि म्दरक एक छोट सन पम्रकि ा लेल अगसर भेलहू। ि म्दर के गेट धम्र पहुंचैत पहुंचैत पाच बजबा ि दस मि निट बाकी ।म्टकट 40 डौलर पम्त व्यम्क्त ,,ि दा तीन म्दन धम्र भि ि करब के अनुि म्त । पाच बजे भोर स पाच बजे साझ धम्र ि म्दर के सि यि म्नाधाम्रत छैक।

अम्ह धरती प पएर रखबा स पम्हनम्ह स बूम्न पड़ी रहल छल ,से म्जदी बालक सन ठुि कैत रम्ह गेल छल भम्र म्दन ,ओम्ह ि ासि ि

टुकटुक प बइसल बइसल पम्पलैत घि िमाजैत अतीत के भव्यता सिरिण करैत िम्दर िम्दर देखैत रहलहू ।

राकाहारी भोजन लेल रहमर के चीरेत,हिाराजा होटल पहुचय ि परंपरागत दोकान सबहक भव्य झाकी बड़ सुखयि दृश्य पस्तुत कमर रहल छल । म्हन्दी भाम्ष होटल िम्लक के हम्पाश भ पुछम्लय भारतीय छी? “ नई पाम्कस्तान,पंजाब केर”। एक कण लेल म्वचम्लत िन भेल ,पाम्कस्तान त भारते छलय नै,खेनाय मानाय सेहो एके । जे से ।

दोसर म्दन अंकोरवट िम्दर आ म्यूम्जयि के कायक्रि बनल ।

िम्दरक म्टकट कीम्ताए नेने रम्ह ,सयि बचल ,म्वराल अँकोरवट पम्रसर के पम्रकिा करबा लेल म्वश के पाय सब कोना के लोग जुटल। [म्कछूयाती त कएक म्दन ,बम्लक हीिनो स ओतय डेरा जिाने छल, अम्ह सभ्यता आ इम्तहासक अनुसंधान करयवाला ,लेखक ,म्वदाथी छथी ।]

खिर युग के स्वम्णाशि कालक पम्तमाम्धत्व करैत भीषण अरण्य ि ठाढ़ ,म्वश हेम्रटेज िरामिल ,अम्ह पम्रसर ि अंकोरवट िम्दर म्वश के सबस म्वराल आ म्वस्तृत िम्दर अम्छ .सम्रपहू ि अजगुत अम्छ , ,वास्तु,मरला कला के बेजोड़ पिाण ।नीक जका सुरम्कत रखल गेल अम्छ राजा सूयशबिशा म्दतीय दारा ,1,950,000,स्क्वायर िटर, आने म्क195 हेक्टेयर जिान प बनाओल ई िम्दर पारम्भ ि म्हन्दू देवता म्वष्णु के सिम्पाश कएल गेल छल,कालातर ि बौद धिक्र ररण ि चम्ल गेल ।

दोसर पईघ मिन्दर अछि ,बायोन टैम्पल हियान बौद मिन्दर सब मि ई सबस पैघ,अछि ,एकरा अँकोर थोम के मध्य मे बनाओल गेल छल ।तेसर ता पोम टैम्पल ,पयर्टकक सबस बेसी ध्यान आकर्षित करैत अछि ।समय व काल दारा उपेक्षित रहलाक कारणे ठिका ठिका ममार ाल बृक सब मिन्दरभवन ,आँगन के चीर क अपन पभाव स्थापित कय नेने अछि ।अहि ठाम ठाम ,लंबा लंबा अजोध साप सब सेहो अडडा जमौने अछि । आब एकर देख भाल बड़ सावधानी स कयल जा रहल अछि ,जाहि स मिन्दर ढाचा के कोनो क्षति नहि पहुचे।

बेकोग मिन्दर पिरामिडिक रूप मे बनल भगवान शिव के समर्पित अछि ।मिन्दर के पवेर दार सात मुँहि वाला नाग सब स संरक्षित अछि ।

अनेको देर एकर पुनरुत्थान लेल दिशा कय रहल अछि । अहि कमि भारत सरकारक पुरातत्व विभागक बोडशसेहो लागल देखल जा सकैत अछि । अनेको ठाम यूनेसेफ के दिशा स जीणोदार के काज भ रहल छै। मकछू मिन्दरक सिसडही बडड उंच उंच ,नहि जानि ओहि प लोक कोना आराम स चढ़ैत होयत ,पयर्टकक सुविधा लेल अनेक ठाम लकड़ी के सुविधा जनक सिसडही बनाओल गेल अछि । कतेको भूमिगत पछ्ड़ायायल पाथर कोनो समय मे भरल पूरल उल्लसित पूजनीय देव स्थल छल। अनेक ठाम ओहि पाचीन पाषाण ईट के जोडि क कोनो पाचीन ढाचा के रूप देल जा रहल छल । भवन के छत ,छज्जा प ठिट ठिट हस्यर हस्यर खिलि काही जमि छल , बड़ सोहनगर लगैत छल ।एक ठाम पुलक दुनु कात

अनेको यक यम्कग्णी के डाढ़ धम्र िमशसब, म्कछू साबूत,म्कछू भागल ,म्कन्सयात ओ कोनो म्कला के िख्य दरवाजा रहल हेतैक। अप्सरा ,नाग ,हाथी ,रेर ,कलि दानव आम्द के िमश,व ममम्त म्चत स कोना कोना आच्छाम्दत अम्छ ।म्कछू म्दर ि हाति बुद के पीत वस्त्त पम्हरा क हुनका सकि पुष्प अगरबती राखल छल । म्कछू स्त्तीगण सब ,पयष्टक स फूल अगरबती खरीदबा के अनुगह सेहो करैतछल । एक म्डल के पागण ि एक पुजारी सन लोक चादम्र प बैस क म्कछू कन्या सभक हाथ ि ताग बम्ह रहल छल । म्दर आ स्तूपक ई स्थान जादू ,टोना ,तंत ,ति के आम्धपत्य ि सेहो बड़ बेरी सम्म्हत छल“[म्कन्सयात एखनो] म्हन्दू धशिके पायः गणान्य देवी देवता साबहक पाथम्र प उत्खनन ,आ िमश,ई साम्बत करबा लेल पयाप्त अम्छ जे एक सयि ओतय म्हन्दू धशिके डंका बाम्ज रहल छल ,तदुपरान्त बौद धशिके पधानता भ गेल ।।हाति बुद के जनि स म्नवाण धम्रक कथा ,जातक कथा ,के बड़ म्नक जका अनेक ठाि मम्म्तम्चत ि ,पाचीर ि दराओल गेल अम्छ ।तीन म्दन पयाप्त अम्छ नीक जका घुिबा लेल ,ताही स तीन म्दनक म्टकट दईत छैक । िदा हिरा सब लग सयिक अभाव छल ।

सेयाि रेयप कोनो सयि खिर राज्य क राजधानी छल । हजारो हजार स्पणशिदा खचशकम्र क एकर म्नािण भेल छल ,आय अम्ह देरक अथशव्यवस्था एकरे काध प अम्छ ,कंबोम्डया लोक अँकोरवट के म्दरे देखय अबैत अम्छ ,आ पयष्टन उदोग स आि जन जीवन अपन जीवन यापन करैत अम्छ ।

अन्य देर क बमसपत ई देर बड़ सस्त,चीज बोस्त,गाड़ी ,होटल ,खेनाय ,स्पा ,िम्लर ,सब म्कछू । बेरी संख्या म्धया पूता के ,जवान लोक के ,बुढ़बडड कि ,देखाय पड़ल ।

तेसर म्दन सेयाि रेयप के दोसर धरोहमर फ्लोम्टंग म्बलेज के लेल पस्थान कएल। डाईवर चेन के गाि उिहरे छल ,ओ अपन गाि सेहो देखेबाक चाहैत छल । ओतुका गाि के देखबा के लालसा हिरो उदाि भ चुकल ,अम्बलंब ओकर पस्ताव स्वीकार कयलहू ।गाि एखनहु अपन अतीत के गरा लगौने ठाढ़ छै।

कच्ची सड़क ,[जेकरा पकी बनेबाक सरकारी पयास भ रहल छैक]के दुनु कात लहलह करैत धान क फ़सील रोपल जा रहल छल,सड़क पर कम्ए दूर म्कलला प ओकर भाय एक गोट स्कूटर प बइसल अपन संगी संग म्वपरीत म्दस स आम्ब रहल छल ।चेन के म्दस तकैत,िसकैत । गाड़ी रोम्क क ओ अपन पम्हरलहा चिड़ा के नीकहा चप्पल भाई के दैत हिारा सब स बाजल ,ई हिर छोट भाय अम्छ' ,आ अपन पसशखोम्ल म्कछू टाका सेहो देलके।हिहु सब म्कछू ओतुका करेसी देम्लयै। कम्ए दूर आगु चलला के बाद ,बीच खेत स ,म्तात कच्ची {पुरना जिना के बैल गाड़ी वाला रास्ता}देखा ,चेन कहलक पंदरह बीस मिनट पैदल चलय पड़त हमिर गाि धम्र,ओतय गाड़ी नम्ह जा सकैत अम्छ । ओम्ह ऊबड खाबड़ सड़क पर अम्हना हिर िन परेरान ,ररीर अरोथम्कत भ गेल छल । आब म्हमित नम्हं,पैदल चलबा के । हिर िना केला के बाद ओ बाट घाट के घर सब देखबैत जेना गाईड बम्न गेल । सड़क बम्न रहल छै,जे पगम्त के सूचक छै ,म्बजली के खंभा दूर

दूर धरि नजरि आबैत छै ।अपना सब मदेस के िचान सनक छोट छोट फूसक घर ,नीचा लकड़ी वला गाड़ी ,िल जाल ,,ऊपर सीढ़ी चिढ़ लोकवेद रहैत अिछ ।घरक ,देवाल चार ,िकछू फूसक ,िकछू ताड़क खजूरक पता के । िकछू पका के सेहो । कहलक ओ " अिह ठाि बड़ बािरस होय छैक ।,बरसा के िसि ि ई सब ईलाका पािन ि डुिब जाय छै ।,तािह लेल अिह ठाि बासक,लकड़ीक एहेन घर बनाओल जाय छैक ।िकछू खेत ि िमरचाई के पौधा लागल छल,कतेक ठाि बतकक फाशिछल ।िकछूघर ि बइसल ज़नानी सब बास के ,खजूरके पात स सािन बनबै छल ,जे खुजल दरबज्जा स ओिहना देखाय पड़ी रहल छल । दूर दूर धिर पसरल बाध ,एक टा खेत ि िकछू स्तीगण पुरख बड़का बड़का हैट पिहरने धान रोिप रहल छल । हिरा फोटो िझकैत देिख क ठठा क हंसल छल ।

कच्ची सड़क पाच दस कोरक बाद पकी सड़क ि एकाकार भ चुकल छल ।सड़क क कात वएह झोपड़ी सन घर व दोकान ,िदा सब ठाि पािनक बोतल ,भािन भािन के लाल ,िपयर,हिरयर ,िचप्स व िबस्कुट के पैकेट । पयिटकक सुिवधा के चीज सब ।,हा , कतेको ठाि दु लीटर, पाच लीटर के बोतल ि पेरोल ,डीजल िबकाईत छल । आगा ,जंगल झाड स बढ़ैत गाड़ी एकटा,गुिती लग रोकलक ,जतय25 डौलरक पिन िटकट खरीदय पड़ल। जाबैत चेन िटकट लैत छल ,पाच सात टा, सात स दस बरखक बच्चा सब गाड़ी के चारो कात स घेर लेलक ,हि एक टा फोटो िखचिलये ,त सब फटाफट गाल प,िथ प हाथ रािख ,पोज बना क ठाढ़ भ गेल । एक टा कन्या के हाथ ि पारदरी प्लािस्टक ि जीिवत

कछुआ छले,हॅलो हॅलो करैत ओ खरीदबा के ईसारा करय लगल ,आन बच्चा सब सेहो तरहतथी पसारि देलके।चेन बडबड़ाय लागले ,बाहरि आदमी सब केकरा सब के भिखमंगा बना देलके ।

कनिए दूर स नदी के सोर सुनाई पडैट छल । नदी के कात खूब चहल पहल ,नाव ,जहाज ,मिल्लाह पैलवार ,पर्यटक सब । एक टा जहाज मे बैस क नदी के लंबाई मे याता सुर भेल । करीब आधा घंटा लागल ,फ्लोटिंग भिलेज मे पवेर कयलहू ।आजूक युग मे इहो संभव छैक की? पानि के ऊपर बसल संसार ,बास ,लकड़ी ,सब के बनल घरनि क बनल ,जल प तैरेत घर ,दोकान,पुरातनता के संग ,आधुनिकता सेहो घेट मे घेट मिलौने ।

जहाज क कैप्टन अपन जहाज के ओहि ठाम रोकलक ,जे एक टा पइघ दोकान सन छल,खेबा पीबा के ,चीज बोस्तु खरीदबा के ,बाथरूम आदि के सुविधा स परिपूर्ण।ओहि घर स सटल लकडी के पोखरा पाटन घर सन दू मंज़िला घर छल ,जाहि मे नीचा जाल स घेरल छल ,कतेक रास छोट पइघ गिरगिच्छ सब ओतय भाशा के उदा मे निढाल भ पड़ल छल ।

एक टा दोसर घर मे नाइलोनक जाल सन दु टा बास के खंभा मे बाहल छल ,जाहि प एक गोट स्त्री सुतल छली ,कतो कोनो स्त्री अपन आठ नौ मासिक तंदुरस्त बच्चा के लोईक लोईक क खेला रहल छल ॥ किकयो रस्सी बुनेत ,कोनो कोनो दिनचया मे लगल ।एक ठाम दु घरक़ बीच पानि प जाफरी सन बनल ,ओहि मे मच्छरदानी लागल ,बतक ,आदि जिा स तैर रहल छल ।कुकुर

सेहो छल । आवागनि के लेल पाय सब के अपन अपन नाव ,छैक,चचश,स्कूल ,हेयर कटिंग सैलून ,अस्पताल सेहो सब छैक । टूटल भागल अंगरेजी बाजक अपन रोजी रोटी कि रहल अछि । कोनो समय ई ईलाका कोनो राजा के नुकेबाक स्थान छल।

नदी प डोलैत ओ गाि आम्दि नुिखक कथा जेना कही रहल हो। पानी ि रहनाय कष कारक त छइए।

ओतुका पाम्न बड़ गंद,मर का के स्तर त पूरे देरे ि खराप छै,तखन ओतुका गप्पे की ।

आपसी ि बड़ कि समय{12मिनट} पाच बजवा ि बचल रहे ।सब म्यकछू पाच बजे बन भ जाय छै। बाटे ि वार म्यूजयि छल ,

काउंटर प ठाढ़ लड़की साढ़े पाच तक खुलल रहबा के कही क म्टकट काम्ट देने छल ।

वार िम्यरयल हि रा सब के अलावा दस टा आर पयशटक अम्ह धोका ि भीतर चली गेल रही ,सरकारी गाईड अपन टुटल,तोतराईल अंगरेजी ि देरक भीषण दुभाग्यक बखान करैत[,युद के बाद इहिर ओहिार म्छतरायल सबटा लड़ाकु म्वानि ,हम्थयार सबके एक ठाि एक टा घेरल िदान ि राखी देल गेल अछि ,आ एक कात म्यकछू एकचारी जका बनल घर ि युद के म्वभीम्षका के जीम्वत तस्वीर सब ,लगाओल गेल छै]कोन बि के कतेक िरक किता छल ,िईम्नंग ब्लास्ट निुकख लेल कतेक खतरनाक ,छोटका बि ,बड़का बि

,सैन्िनक के वस्त्र , कान्िता कन्िर सबके कारी कारी पन्िरधान । ओ बान्िज रहल छल ,हिरि देरक सीधा सादा न्िकसान ,जे अतुका उवश िन्िट पान्ि ि अन उपजा क हंसी खुसी अपन जीवन जीबैत छल ,िुदा ओकरा िुहक अन छीन क ई सब हन्िथयार ,टैक ,पन्िरया ,रन्िसया ,चीन स िगाओल गेल ,जखन युद सािप्त भेल अतुका जंगल ,झाड ,न्िबयाबा ,खेत ,ि लावान्िरस एकरा सब के आन्िन राखल गेल ,ई हिरि देरक बरबादी के ,कथा कन्िह रहल अन्िछ ।ओ सब जतेक नर संहार केलक धनक अपव्यय केलक ,देरक डाढ़ टुटले अन्िछ । न्िबरेख न्िकछू देखबा स पन्िहनन्िह सयि सािप्त भ चुकल छल ।

तेसर न्िदन कलचरल न्िवलेज देखल -15 डालर पन्िर व्यन्िक्त ,पाचीन वास्तु न्िरल्प के पदन्िर श करैत । सबटा कायक्रि दुपहर ढाई बजे स पारम्भ होईत छैक। एखन साढ़े एगारहे बान्िज रहल छल।अन्िह स्थान्िनि सयि के ओन्िह भव्य इिरत पन्िरसरक पन्िरकि ि लगेबाक पयास ि आगा बढ़लहू त देखलहून ,हिारा सब संग संसार ससन्िर रहल अन्िछ ,पयटकक बड़ न्िभक उपन्िस्थन्िन छल । चान्िर पाच टा त न्िथएटरे छल ,न्यू न्िथयेटर ,न्िलिन्िनयि न्िथयेटर आन्िद ।

सास्कृन्िनक गाव ,जेना न्िक ओकर रन्िद्राथरि न्िनन्िहत अन्िछ ,अपन सबटा ऐन्िनहान्िसक संपदा के एक ठाि सहेजने न्िवश सिुदाय के आियश चन्िकत करबा के लेल उत्सुक अन्िछ ।सन 2001 ि बनल आ 2003 ि जनता के लेल खुजल अन्िह थीि पाकरके 210,000 स्क्वेयर िीटर ि बनाओल गेल अन्िछ जान्िह ि एगारह टा गाि ,सब

युगक अपन अपन रीति रिवाजक संग । संगहालय मे ,बुद,के अनेक पतिमा ,शिव लिंग ,विष्णु बम्हा ,अप्सरा हाथी ,बाघ ,पाचीन जनजाति ,आदि के भव्य मूर्ति बड़ नीक पकार स लगाओल गेल अछि । चीनी कालेज ,खमेर कालेज आदि के नहैत हम सब फ्लोटिंग कालेज पहुंचलहू। जलाशय मे बनल काष के कास्तृत घर ,पुल,भवन आदि ,मूर्ति स बड़ बेरी सौन्दर्य ध्यान लागा रहल छल । ठाम ठाम नयनाभिराम ,मोरिक मूर्ति,मुक्ख ,जानवर सब के बनल जे ओहि देशक संस्कृति के उदोतक अछि । एक ठाम धरती मे छाती धरि धंसल,दुनु हाथ ऊपर उठौने दु टा भीमकाय पुरषक मूर्ति छल ,जेकर एकटा के मुँह पर असीम वेदना ,आ दोसर के पकाड पसनता बड़ आकर्षण केन्द्र रहल छल ।बड़का गुब्बारा जेकर झूला सन बनल दुनु गोलाकार हाथ प बईस क लोक सब फोटो खिचवा रहल छल, कतो बारह पंदरह फीट उंच सुपर मैन आदि इत्यादि । पर्यटक करबा लेल बैटरी जनित गाड़ी सेहो सुलभ छल ,मुदा एका दुगो के छोड़ि सब पैरे बुलैत छल ।

देखैत देखैत ढाई बाजि गेल ,न्यू थिएटर मे पोगाम देखवा लेल लोक सब अपन अपन स्थान गहण कायल , भव्य कक ,उतम साज सज्जा हाल पईघ रहे त आधे भरल लागै ।कलाकार सब आबि क अपन परंपरागत नृत्य पस्तुत कैल । ,बास के ,विवाह के ,कमलक फूल के ,अप्सरा के आदि । विवाहक नाच देखि अपन देशक नाच मोन पड़ लागल ,ओहिना पाच सात टा स्त्री सब ,घइल ल क पानि भरय नदी मे जाय अछि ,विवाह के पानि मे ज़ेबा स विवाहीन बरजै त अछि ,, उखरि सामिट मे धान कुटैत अछि ।

बास वला नृत्य मणिपुरक मोन पाड़ल।

अप्सरा नृत्य ओतय के बड़ पसन्द छै॥एक थियेटर मे एके टा पो गामे ,दोसर लेल दोसर ठाम ।मिलेनियम थियेटर बड़ नीक ,लकड़ी के उत्कृष्ट कलाकृति अछि ।ओतय ,खमेर राजा सब के कोना विवाह होय छल एकरा प्रस्तुति छल ।चीनी गाम मे चीनी नृत्य के मनोहारी चित्र कतेक रास कायकर्ता देखैत हम सब बड़ थाकि गेल रही ,त कनी पहिनहि ओत स प्रस्थान कयलहूँ।

अँकोर राष्ट्रीय संग्रहालय अहि देर क सभ्यता संस्कृति के संग्रहण ,संरक्षण करबा के पुरातत्व विभाग के एक गोट अतीव सुंदर स्थान अछि । फ्रासीसी स्थापत्य कला स ओत पोत, अहि प आधुनिक आ पुरातन दुनु शैली के प्रभाव अछि ।

अहि ठाम अनेक गैलरी अछि ,जाहि मे बुद्धा गैलरी मे बुद्ध के एक हजार दुलर्भ मूर्तिसब संगहीत अछि । आन गैलरी सब मे खमेर के सम्पर्ण इतिहासक ,मूर्ति,राजा रानी ,परिधान ,आभूषण ,कलाकृति ,पाषाण के कथा , आदि के बड़ मनोहारिणी प्रस्तुति अछि । प्रायः सब प्रमुख भाषा मे [हिन्दी छोड़िए क] ऑडियो गाईड उपलब्ध अछि । फोटो खिचनाय निषेध छल ,ताहि लेल कानी मनि मलिन सेहो भ गेल ।

बहरेलो त आकारक रंग बदलल छल साझ उतरय लागल ,चारहु कात बिजली झिलमिल क अपन मोहि देखबय लगलै। आजूक राति एतय लेलअंगति छल ,कामे कतो और ठेकान । शहर मे इहिर ओहिर बौवाबैत ढहनाबैत, घड़ी मे आठ बाजि गेले ,तखन

पहिनहि स बुक कराओल होटल मे जा कए ओहि संस्कृति के हिान अप्सरा नृत्य के आनंद मे डूबि गेल रही ।

लघुकथा- भागिती

बड़ दिनक बाद आइ ओइ घरक खुजल पुबरिया खिड़की दिस मानो दायके वियान गेल । जाफरीसं घेरल, चुहचुही सं भरल , सुर जक करीनमे उमकैत, फूल पतीसं खिल खिलाइत एक तल्ला घर । डबडबा गेलन्हि आंखि, हुलकय लागलै अतीत ।

तहिया ई इलाका एकदम्मे सुन मसान छलै। राति के कोन गप्प ,दिन दहाड़ो ओमहर ज़ेबा क नाम प कोढ़ हहरि उठैक । दरिभंगा शिला सेहो उमहर के याती के मूड़ी झूला क बरजै लगैक । महाराजी पूल के अहि पार पंचानाथ के पूजा करय बला लोक ,जनी जाति सेहो झुंडे मे आबेथ, आ पुल के ओहि पार कनी दूरस्थ सती स्थान के पूजा करि क हाली हाली घूरि जाईथ।

मुदा शहरीकरण के तीरिआँि बसात के चपेट मे एला के कारण इमहरका जमीन तहिए सं मोटगर पाय मे बिकै लागल छल।आ लवाच क गाम के महेश बाबू दू कटा जमीन किनी क अहि ठाम चारि टा कोठरी,किचन आ बाथर म बना क बाकी जमीन के जाफरी स घेर लेने छलैथ।कंपाउंड मे छहर द ,आम लताम,शरीफा , नेबो,केरा के गाछ संग जाफरी प लतरल लती सब मे लुिकल करेल ,सजमनि ,घेरा लगिा देलंन्हि। जे से तोड़ि क ल जाय,आ महेश बाबू खुश होथि,केकरो काज त भेल हमर परिशम ।

हुनक सासुरकक पोखरा पाटन घर बड़ नीक खेती पथारी भरल पूरल पैलिार क दालान सेहो शहरक टुनमुनिया कोठरी के डयोढ़ स बेसिए छलेह । तखन राति बिराति , कोटट मुकदमा ,डाक्टर

अस्पताल क फेकर लगला प राक्त कटबा लेल एक टा अपन छत त भ गेल छल ।

ओक्ह घर क चौखक्ट प तक्हया स क्मयक्मत दीप जरलै,जखन महेश बाबू के बड़का पोता क विाहि दुरागमन भेल ।कक्नया के सीथ मे क्संदूर पक्ड़तै मातर महेश बाबू के कक्हया कत स कतेको अटकल काज सुनैट गेलैन। क्मपरौक्लया िला जमीन के केस जीत गेला,छोटका बाबा विािनसभा के चुनाि मे भारी बहुमत स विजयी घोसीत भेला,तेसर पोता के आमी मे नौकरी लावा गेलेह्ह,सतरह साल स संतान के बाट तकैत,सुरज़ देि के अरघ प अरघ चढ़बैत बेटी के बेटा भेलैह,गाय के बाछी भेलय,सासुर मे कह्या सुमंगली मानल गेली ।चतुथी के परते दुरागमन कक्र कक्नया के ल आयल गेल । दक्दया सौस पक्हनक्ह स मुनादी करबा देलक्खन जे सब गोटे हुनका भागमंती नाम स सोर पाड़ेथ । हुनका होयक्ह्ह क्क पोत्पुतौह के माथ प राखी क्क हाथ मे राखी,क्क करेज चीर क ओक्ह मे स्थाक्मत करी ली ।दाय नौड़ी सब सेहो भागमंती भौजी अथाि बौिक्सन कहनाए पारम्भ कक्र देने छल ।

कक्नया अपन गाम मे इंटर मे पढ़ैत छली,त हुनक नाम कालेज मे क्लखा क कक्छू क्दन सासुओ अपन खबाक्सन,भनसीया मुनेसरा संग आबी क रहलखीन । मुदा ओत गाम प राज काज मे बड़ हजटहोमय लागल छलै। बड़ सोक्च विचक्र क पैल िरिक सबस अरामतलबी पाणी बूलन पीसी के गाम स उठा क शहक्र मे राक्ख देल गेल । छोटका ककाक बेटा शीहर जे मैविकि के परीक्ा गाम के स्कूल स देने छले,मेक्डकल के तैयारी केलेल

आईएसी मे नाम लिखा ओहो डेरा प जाकय रहय लागला । बड़का पोता कतो बाहर नौकरी करैत छल ।

एक गोट नब रिक्शा कीन क कनी दूरस्थ पड़ोसी लकड़ी के दोकान बलाके भातिज किशन के अही शतटप देल गेल जे कन्या के कतो जेबा एबा मे कोनो किसानी नै होय,तेकरा बाद मोन हो त भाड़ो कमा लै। किछू पाय महिनारी सेहो बन्हि देल गेल ओकर । डेरा प के सब इंतजाम कए घरैया निफीकीर भ गेल छला । कन्या सुभासिनी अपन दियर संग कओलेज जाईथ,आ रिक्शा हुनका उतारि शीहरि के कओलेज छोड़ैत।घूरती काल मे सुभासनी एसगरे रिक्शा स जाईथ ।शी हरी उमहरे स टयूशन चलि जायथ,कखनो कोनो सारिरी नै भेटैय त हुनका पैरे डेरा प आबय पड़ेह।

शी देखबा मे सोरगर पोरगर गोर आकरक युकि भैयो क ततेक लजकोटर जे सदिखन ड़ि खसौने,रिती मे सटल,गुम सुम गुमसुम,मुदा मेहनताया बड़।आ राति दिनुक दिमागक घिसाई स स्थानीय मेडिकल कओलेज मे अपन स्थान कविात करा लेलन्हि।

बरस छौ मास लगलै मेडिकल कओलेजक परमाजित ितारिण शी के व्यक्तित के ािमाव्ज क दपट्ट सन चमका देलकेन्हि। सीना तनि गेलय, पोशाक बदलि गेलय आ आब केकर नजरि एहेन छल जे हुनका प नहिं अटकै ।

लोकल भेला क कारने हॉस्टल नहिं नेने छलथि।

सुहासिनी के खुशी के ठेकान नहिं,कतो जाईथ त हुनका होन्हि शी हुनका संग रहैथ।हुनको भरि माथक सिंदूर घट क आि आंगुरक

भ गेलह्ह,केश स तेल उव्ड़ गेल, पालट के फेरी लगा केश छोट करबा ,भौ क्छलबय लागल छली । एक दू बेर घरबला लग जा बड़का शहरक हा डीि ल लेने छक्लह । गामक ाि ख छुटबा संग , अंगेजी के दू चाक्र शब्द सेहो बाक्ज लईत , आब ओ माथ झूका क नै,माथ उठा क क्ाकि भ चलैत क्करैथ ,त आर सुनर लगैथ। विरय सेहो कोनो तेहने सन छल जाक्ह मे कोनो तरहक क्दमाग नक्ह लगाओल जायछै।हुनका कोन नौकरी के बेगरता छल,ओ त ओक्हना सख स पक्ढ़ रहल छली ,दुणु कुल मे पक्हल स्ती ,जे कओलेजक मुंह देखलेन ।

पक्त दे दू तीन मास प अबैत छला। आब क्हनक बीए के अंक्तम बरख चक्ल रहल छल ,परीक्ा द माघ फागुन मे ई अपन घरििला के डेरा प जाय िली छक्लह।

इमहर शी कतेक बेर मक्हला कओलेज सुभाक्सनी संग जायत अबैत रहला ,मुदा आब हुनको लाल दुपटा अपन वारह मे बाि नेने छल। एना बुक्झ पडलै जे क्कयो हुनक क्टकी काक्ट के मक्हला विदालय के सोझा ठाढ़ नीमक गाछ क नीचा गाक्ड़ देने होय ।

कतेक बेर अपन क्कलास छोक्डओ क ओ ओतय ठाढ़ रहैथ। सखी बक्हनपा के टोट सुनैत, मने मन मुसकेत सुहाक्सनी कखनो राज ,कखनो मनो कामना मंक्दर, कखनो टारि घूमय जायथी,कखनो क्सनेमा ।अपन पक्त के क्लखल क्चटी हुनका पक्ढ़ पक्ढ़ क सुनाबैथ,आ हुनक आंक्ख मे उपजल ईरखा देक्ख अंतस करन िक्र मुगि होईथ ।

गाम स नीत दिन किओ नै कियो, मइया क हाथ क बनल किछू विशेर पकिनि ल क आबि जाय।पीसी के शहर मे मोन औनाय त ओ इमहर उमहर के सखी बिहनपा स गप्प लड़ा क,फेर बाबाजन के वरिक्शा स दु चारी दिन लेल गाम घुिर आबेथ।मानो दाय स आगा खिस क गप्प करय बाली िएह स्नेहिल स्ती छिलह। एहने सुखक सुिविसत मलयािनल सँग विजनगी कटि रहल छल। गोतिया नाता के बड़का लती,आिा जाही,सेहो समय के सुगंवित बना रहल छल।

भदाविर मास आबि गेल त बरखा बूिन,सँग कारी कचोर मेघ अपन लट विछटकौने,आकाश मे विछरहरा खेलाय लागल।एक गोट एहने मनोरम साझमे जखन ओ अपन बरंडा मे असगर बैसल गजिइत मेघ आ चमकैत बिजूरी के जुगल बंदी देख रहल छली,हठात ओ शी के बजबय लेल हुनक कोठरी विदस बढ़ली। कुसी प बैसल,दुनू टाग टेबुल प िने पेट प िल कोनो किताब मे डूबल ओ मुसैक रहल छल। विहनका देविख किछू घबडायल सन,किछू अनसोहात भािना के विशकार सन झट दनी किताब बंद किर देलथी। सुहािसनी झपटलखीन",किएहेन पढ़े छलहू,जे हमारा देविख क बन करय पडल,एहेन बैिर हम भ गेलहू"।मुदा शी हुनका किछू जबाि नै द क,हुनक हाथ विझकैत कोठरी स बहरा गेल छलथी।

ई सामाह्य सन गप्प सुहािसनी के बड़ व्यविथत किर देने छल।दािल मे किछू कारी नजिर अयलह्री। भिर राित मोन मे भाित भाित के गप्प बाईस्कोप मे देखाओल दृश्य जका घूिरयाित रहल। परात भेने शी जलपान किर क कओलेज चिल गेला,मुदा ओ बहना करल ओछोन प पड़ल रहली,अपन कॉलेज सेहो निहं गेली। पीसी गाम गेल छली,आ भनिसया के माछ आनय लेल पठा क ओ

शी के कोठरी पईसी टेबल प रखल ओकर एक एक किताब झाड़ली।इमहार सूंघली ओमहार कनवखिएली,कतो किछू नै हाथ अयलन्ही।

दोसर तेसर दिन सेहो पयास कयल,मुदा अहू बेर निरथक । मोने मोन ठेकाने लगली कोनो फोटो जका अछिय छल । मुदा केकर?

इमहर दुगा पूजा के लेल कओलेज मे तातील घोषित कर देल गेल ।घरिला परसूँ आबि रहल छला।दू तीन दिन मे ओ हुनका संग हुनक डेरा प चलि जयति ।

गाम स जतरा कर डेरा अयली।भोरका निनि छले। चीज निसित कोनो बेवस नै,मात दस दिन लेल एक टा अटैची आ एयर बैग काफी छले । दुनू भाई गप्प करैत करैत कोनो समान आनय टाबर दिस गेला,भनवसया भानस बनबय मे लिन तखन ओ एक बेर फेर हुलकी मारलैन शी के कोठरी मे। ताख प रखल एक टा मोटका किताब हाथ मे लेलथी ।सबूत भेट गेलन । चुप चाप सबूत सहित अपन कोठरी मे आपस आबी गेली ।

दस दिनक छुटी,बड़ विलंब स बीतल । पति के हुनक मुरझायाल,मुंह देखि आियटहोयन्हि कि भेल जा रहल अछि?किछू त कहू,डाक्टर स गप्प करी।मुदा ओ कहैथ परीक्षा के डर गारा मोक्क रहल अछि । “छोडु परीक्षा,तरीक्षा अहा के कोण नोकरी करबा के अछि” ।पति के अहि गप्प प ओ सहमि क बजैथ “ अतेक मेहनत अकारज भ जायत,मात दू मास आर छैक बस”।

छठी के परना के उपरात,निबिर के कानी मोलायम मोलायम

सान रौद मे कओलेज खुजल त,चारहू कदस कशोर,युि कल्लोल पस्फुक्टत होय लगलै।लाल वायर,पवरिान,कंिा प झुलैत पसट्पैर मे ऊंचका एड़ी के सैडील,सखी सहेली वठक्ठया वठक्ठया क अपन ह्रय के उल्लास पकट कवर रहल छल।छात सभक संग वशाकका सब सेहो जेना पसनताक महाकाव्य बाक्ि रहल होयथू । एना बुझी पड़ेक जेना सिंत आवा क ओक्ह ठाम रवा रहल छल ।

मुदा सुहाक्सनी के आंवखक नीचा क कवर कारी गोला कछूआओर कहबा लेल व्यग छल । ओ गुमसुम,मुरझैल सन काकरो बड़ उवग्निता स पतीका कवर रहल छली। सखी सब वठठौली करेह्ह। ''जीजाजी मोन पड़ी रहल छथीन,तै हमार सखी अटेक उदास,आ 'के पवताया लय जायत रे मोरे वायतम पास'' ।कओ कहे 'कोन काज छल पढ़े के,हम रवहतौ त कनो नव्ह अवातौ,वायतम के छोवड़क,पढ़ाई जाए चूलीमे''। सुहाक्सनी के कछू नै सुनाई पड़ल,व्याकुल व्हरणी सन ओ ओक्हना इमहर उमहर तकैत रहली ।

ओक्ह व्दन ओ लाल नूआ लाल आंगी,लाल चूड़ी,आ लाल सैडील पव्हरने छक्लह,। हठात हुनक नजवर लाल वायर बेलबौटम िली कह्या प व्टकल। ''पुष्पा'' मक्स्तष्क मे नाम अनुगुंक्जत होमय लगल । ओकर पछोर िलिथी। तबैत कओलेजक पथम घंटी बाक्ज चुकल छल,सब कयो ड़ि फड़ ड़ि फड़ करैत अपन अपन कका व्दस बढ़ै लागल छल ।क्लास मे पिशि करय स पव्हनव्ह ओ पुष्पा के पाछा स हाथ वखंचलक ''रक तोरा स बड़ जररी गप्प करबक अवछ''। पथम रिक छाता अपना सोझा अंवतम रिटके छाता के देवख घबड़ा गेल ।

ओ ओकरा खीचने खीचने बाथरम क्दस सुनसान मे ला आयल । ओकर क्लखल क्दटी ,ओकर फोटो देखबैत बाजल “पेम करब के बड़ सख छलो, पूरा कओलेज के देखक्बओ तोहर क्करदानी”। आ अपन पैरक सैडील उताक्र ओकरा प पेशेरि अपराि सन टूक्ट पडले । पक्हने त पुष्पा सकपका गेल छली ,मुदा बादमे ओहो सीना ताक्त अड़ी गेली,की करबे। तखनेएक सेक्डल ओकर आंक्ख प लगले आ ओ बफाक्र कटैत नीचा खक्स पदल ।“म्या गै म्या” एक त महा भयौन धक्नि स सम्पूणटबाथरम कावम गेले । सुहाक्सनी प जेना अनेको चुड़ैल असिार छल,ओ नीचा खसल पुष्पा प लात घुस्सा के बरसा करैत,भाक्त भाक्त के गाक्र पक्ढ़ रहल छल । ओकर पीठ प क्कओ डंडा मरलकै ‘राक्सी” ओ मुंह उठौलक बड़का भीड़ संग गीता मैडम छक्लह । बेसुि पुष्पा के उठा पुठा क बगल के क्लीक्नक ल गेल ,जतय ओकरा मृत घोसीत करी डेल गेल छल । कनी काल मे पुक्लस आबी क सुहाक्सनी के अपन जीप मे बैसा क ल जायत रहलै।क्कयो अनेरे घंटी टनटना देलके। चारहू कात सोर सराबा ,हो हल्ला होमय लागल छल ।कतेको पकारक नारा लगायल जाय लागल।आनन फानन मे सूचना बोडटप एक सप्ताह के छुटी के नोक्टस क्चपका देल गेल छल ।

मानो दाय हुनके दलान प बैसल छक्लह,जखन पुक्लसक गाड़ी क्वक्वयाती ,क्चक्चयाक्त गदटउड़बैत हुनका दरक्जा प आयल छल।बरदी िारी पुक्लस सब के देक्खते मातर चारहू क्दस जेना घनगर अनहार भ गेल छल ,सबहक करेज बेतहासा िक्ि कै लागल ,हे वििाता ,ई क्कए आयल हमरा दुआरे । जीपक सोअर सुनी शी कोठरी सा बहरैला । पुक्लस के गप्प सुनी ओ तुरत ओकर जीप मे बइसी क जायत रहला । ओक्ह भम्म पडल सनाटा के चीरैत इमहर “दाय गै

दाय आब हम केकरा की मुंह देखेबै गे दाय' कचकचयाती ,असप्सस्ट सरिस कलपैत बुलन पीसी ओतहि ठाम बेहोस भ क खसि पड़ल छलीह ।।

सोर

सबटा सतरंगी चादरि अपन अतृप्त काया पर लपेटने,इंदिनुर बनल सम्पूर्णटआसमान पर पसरल ज़ेबा के लालसा ओकर मन मे औचक नै पस्फुटित भेल रहै,ई त कतेक बरखक मुईल मीझैल लुती छल हेतै जे समय आ अनुकूल सिंती झोंका के कोमल ,शीतल स्पर्शटपाबि दानिल बनि किक उठल ,नै जंगलक लाज ,नै काल वि समयक। आ एक बेर जे भयौन हिह उठलै, त स्वाभाविक छल ,अपना कात करौट के सम्पूर्णटजीव जन्तु संग ,विशाल ,दैत्य सन विकराल गाछ विरीछ के सेहो भस्मीभूत कवि देलके।ओकरि झरकल खड़ पतवार, कीट फतिंगा ,पशु पाखी के मध्य कावि स्याह भेल हरियरीके कहावि क आंखि स नॉर बहाबय बाला ,रिती आ आकाश ,एकदम स्तब्ध ।अपन हृदय के असीम पीड़ा नेने कछू पाखी चे चे करैत,अपन पाण बचाबय लेल दोसर नि पात मे बौवि ढहना क शरणस्थली के आस मे करास करास उडी चलल छल । कतेक चेन स ओ सब अपन पुरान बास स्थल मे ,चहकैत,महकैत,गबैत ,चुगैत दिन काटि रहल छल ,मुदा हाय रे दानिल ,कोन आवा जठराग्नि के टपैत,मानसिक विचार के क्त विक्ति करैत ,लक्ष्मनरेखा नाघय लेल बाध्य कवि देल ,जे अकस्मात ओकर सबहक खोता उजवि़ गेलय,ओकर सबहक ओ डावि अनकर भ चुकल छल ।

स्याह रावि मे खिड़की स हेरैत आकास संग, सविता के मोन विचारक बाविबोन मे बुलैत बुलैत घृणा आ आत्मग्लानि स भवि ओकरा भावि विहिल कवि देलके, रक्त रक्त क कुहेस फूटे,संसार त्यागक विचार मो के आंदोलित करय लागै। कोन मुंह ल क केकरा लग जेते ,सम्पूर्णट मुख मण्डल त खापवि़क पेदी बनि गेल आब ,केहन परिहासक दृष्टि स छलनी छलनी करय लेल,विणी स फुइसक सहानुभूति स, आत्महत्या

फेल करबाक लेल पेकरत करबा लेल बेकल समाज ओकर पतीक्षा मे बाहर ठाढ़ छैक ।ओछोन प राखल मोबाइल फेर बफाकर तोड़य लागले मुदा ओ ओहिना पथराएल सन ठाढ़। कनी कालक बाद फोन उठा कॉल बौक्स प नजर फेरलक उनीस टा मिस कॉल ,कतेक अपन लोक सब ।सुतल हाथ के कहुना घीच घाक क टेबुल लैप जरा क पैथोलॉजी के मोटका पोथी खोललक ,काल्ह परीक्षा छै,पेपर के नाम स दिमाग जखन किछू रक्त संचार भेलै त ओतय किछू दोसरे पकारक खलबल्ली होमय लगले।फेल करबाक हदस सेहो हृदय मे पइसय लागल छल,ओहि टौपर विदाथी के ,जे फराके व्डपेशनक विरय बनतेक।

कालेज स आबिते अपन फ्लैट क सोझा किसडही प बैसल बड़ी मा ,विजनक मंथरा दिदी दृष्टि कोण स के नहिं आहत भेल छल ,आ हुनक पूत विंकू के देखि ओकर हाथ पएर सुन आ होश हासि गुम होमय लागले, ‘हे दैव ई दोसरपूतना के किएक पठौलहू हमर बद करबाक लेल कतेक हमर पाप अछि ओहि जनमक”। मन मौन कंदन कयने छल,मुदा गरा लवाक बुझि पडले कतेक बरख स गीष्मक पचंड रौद मे भटकि रहल छल, आय जेना औचक हिमालय स यिम लग आबि क अपन स्नेह पाश स कारवास करी देल।

अपन जन्म स्थान स अतेक दूर अहि नगर मे विद्यापुता सब के पढ़बे लेल ओ सब पहिनहि मकान किन नेने छलथी ,सिती के पपा त हुनके देखसी केलहुी, मुदा कष्ट्र विधिता के कलम स ओ दुनु भाई बहिनी क भाग्य मे गहण लावा गेले ,तखन मम्मी, आ पप्पा के अरजल, लक्ष्मी ,जीनि के गाड़ी अहि महानगर मे सेहो कोनाक घीचैत रहल छल । स्कूल पास कर उच्च शिक्षा लेल दुनु इंजीनियरिंग आ

मेडीकल कालेज मे दाखिला ल चुकल छल । कहत्स्यात इहो एक गोट कारण बनि गेल होय, अहि बंनि स नीकफककर भेला के ।

घोर असगरि आ नैराश्य पूणटजीनि स ताण पाबय लेल ईएह दुनु हुनका कम्प्युटर आ इह्टरनेट के दुनिया स परिचय पाती करौलक त ओसब सपिो मे अहि महाविनाश क गप्प नही सोचल ।मुदा जीनिक सातो रंग जखन मस्तिष्क क दरिजा खोलि क बहरे लागले,तखन जुग जुग के दर्ि ह्य प पासिक मिर मिर बुन काया के जुडबेत सूखैल जड़ मे खाद्य पानि देनाय सुर केलकै त ठूंठ सेहो अपन रंग देखबे लेल माथ उठौने हेतै । डारिक पोर पोर मे नाहि नाहि टा आंखि लागले आ देखते देखते लौजा लौजा पात स भरल झमटगर गाछ फेर स बनबा मे कनिओ बिलंब नहिं भेल । ओहि हरियायल ठूंठ प हेजक हेज पखेर गन कल्लोल करबा लेल उताहुल भ गेल । आ ओकर खोहड़ मे इच्छाििरी नाग के बास हेबा मे सेहो मे कनिओ विलंब नहिं भेल छल। समाह्य लोक बुझ नहिं पाओल की पचंड रौदी मे ई असमाह्य हरियरी आब विराक्त भ चुकल छैक। ि ई गाछ आब देबे भरोसे जीवति रहे त रहै,पिरजनक आंखि मे त भुतहा बनिए गेल छल । पिहुनुका काड़े चुनमुन के सेहो पयानिक अहि खेल स ममातक कि भेल रहै,सुखैले छल मुदा डारि प ओकर अपन खोता त छल, जतय राति दिन,मौसमक मारि स बचबा लेल तीनो अपन अपन पाखि पसारि क लोल मे लोल ि दाना चुगे छल,ची चपड़ करैत छल, अपन अपन पाखि के बलगर बनेब् क राति दिन सपना देखैत छल ।

कखनो कखनो पैघ लोक क वजद सेहो विया पुता के कोमल परिशि के,ओकर दुनिया के, मटियामेट करिक राखि दैत छैक । आ ओहो एहेन िभत्स,जे जह्म जह्मातर िकर पेतक परछाही बनल ओकर

पछौड़ िने रहै जाए छै।

जखन ओ ृकि भुतहा कहाबय लेल बाध्य भ गेल त ओकर फड़ आ फूल के तुलसी आ बेलपत जका त नहिं पूजल जेतै ।

अत्यंत उचगर स्थान प,कािक भ, साय साय, उदण्ड बहैत बसात;एहेन मे तविशाल झमटगर गाछ सेहो कण मात मे भूलुशाई भ जाय छैक,ओसब त मात नाह्ही टा के एक गोट कोमल तरिर। तहन सब विचार मुंह भरे खसय लागल छल। दूर दूर िवर बायाबान, चारहु कात घनघोर बन्हार,कोनो बाट कतहु नहि सुझै। चलबा के त छलैहे। वजंदगी त आगा बढ़ब के नाम छै ।

छुच्छ बासन मे सेहो हिा भरल रहे छैक, कतो कोनो िसतु के पकृत खाली नहि रहय दईत छैक । तखन विचार शूह्य मवस्तषक कतेक वदन बावककय सुतल रहतैक । बड़ी मम्मी कवहया िवर अपन घर वारहस्थी तवज ओकरा ओगरने पड़ल रहतवथ। सीवत के माथ प ओकर जीनिक बोझ राख,ताला कुंजी सुनझा क,बोल भरोस दइत,फेर फेर आबए के गप्प करैत अपन घर जाय लागली त ओकरा बुझा गेल रहे जे एके सहर मे रहैओ क आब हुनक बाट अहि घर स बड़ दूर चवल गेल छल। बाहर हुका लोली खेलाईत समय वखड़की दरजिजा स ओहि घर मे हुलकी मारैत रहले, मुदा भीतर पिश करबाक साहस नहि केलकै । कावल के सीवत आय एकदम बदवल क पकठोस भ चुकल छल ।कखनो बाढ़ेन हाथ मे,त कखनो चकला बेलना,आब ओकरा घरक़ सबटा काज करनाय कवनओ नहि अखरे । ई एकात ओकरा लेल परम आिश्यक बवन गेल छल ।व्यथटमे कोनो काजािली आवा क ओकरा और वफकरशन करे से एखन ओ कदावप नहि चाहैत छल ।

लोकल भेला के कारणे हॉस्टल लेल अपलाई नहि कैने छल पहिने ,मुदा आब ,बीच सेशन मे त कोनो सिलिए नहि छल भेटयके ,तखन अवाला बक्सस क बाट जोहू ।

उमहर हकियाक्ल गाछ सेहो अपन पुरान मोह नहि छोड़ पाबि रहल छल ,ओकर बाजब सुनब ,हसब ,पढब ,लिखब ओकरा असंख्य आंखि स सम्पूणटस्पशटकरबा लेल बेकल भ बेर बेर फोन करे त सिकि के मनक संताप आओर बढ़ि जाय । घृणा स ओकर माथ पैन बिजली के पंखा सन घुमय लगे । सम्पूणटआकास ,रिती ,पाताल क ,असहज दारणसोर ओकर मस्तिषक के िरीदार आरी स चिरय लागल छल ।छाती पीटेत, विलाप करैत, बताहि समुदी िरा सब आब एके सरि स चिकरय लागल , एतेक तीरि सरि 'ईयह छै ओ' "ईएह छै ओ जेकर ,," चारहु दिस स ओकरा प उठल आंगुर' ,ओह ,कोन पताल मे नुकाय ,कोनअवग मे भस्म भ जाए ,किछू फ़ुरै नै छल तखन अपन आंखि संगे दुनु कान सेहो घबड़ा क बन करी नेने छल ।

दू तीन सप्ताह स सिकि चकोर दिस नजरिओ उठा क नहि देख सकल छल। अपने मे गुमसुम ,आंखि क सोझा कारी ,जेना कजरौटा के सब टा काजर िकाक्ल क किओ ओकर सुंदर आंखि के नीचा मक्ल देने होय । एक दु बेर ओ ओकरा सोझा ठाढ़ होबाक पयास कयबो कैल ,मुदा अपने मे ओझराएल सिकि मेला मे हेड़ाएल नेना सन डराएल डराएल इमहार उमहर तकेत चुप चाप चलल जाइत रहल छल । चकोर की सोचते ,इहो संताप रहि रहि क ओकर मानसिक अिस्था के आओर व्यग कक्ि दैक। काक्ल िक्ि जे ओकर व्याख्यान सुिन आंखिक पपनी झपकेनाय बिसरी जायत छल,जे महान पचेता ,ऋक्ि ,मुिन के वखसा सुिन,अपन महती िरोहक्ि के कथा

सुक्त,मिथिला दशा त लेल उताहुल भ गेल छल,आय ओकरा कोना कहते जे,मिथिला के तिथान मे सेहो आब माहुर घोरा गेल अछ ।

राक्त राक्त भर गेरआ के अपन करेज स सटौने,पलंग प पेटकुनिया देने,टुकुर टुकुर तकेत ओकर दृष्टि सोझा पड़ल टेबुलक पाया स बहरा क कतेक कतेक जुगक पार स बौि ढहनाक आपस आबय त लगे,दरिजा के कुंडी कओ खटखटा रहल अछ,कंसयात ओ आपस आबा गेल होयथ,मुदा ओ त काषु र हि ककलै छल,जखनओ िडफड़ा क उठे,खुजल केिड़ स दूर दूर िव सड़क कयोन लाइट मे कओ कतो नै देखाय पडै। कखनो खिड़की के परदा कलै, मुदा ओ कत झाक रहल छली,। आंख बहे “गै सुगनी हमर कथी लेल कनै छै’ ओकर माथ प हाथ राख बाजल ओ सरि त िका समेत आब बाला गेल ।“पापा यौ पापा,एहेन पहाड़ कए भ गेले हमर सबहक जीिन यओ पापा,विािता कएक हमरे सब स बाम भ गेलखीन’। जखन ओकर कोढ़ फटे त जेना लगे कतो कोनो पहाड़ प बादल फाटल होय । सोफा प बई सल मुसकैत पापा अपन सुगि,सुगनी के करेज स सटौने ओकरा दुिया के सबस शक्तिशाली लोक बनबए के सपना देखेत,देखेत सयिम सपि भ गेला,तखन मा के आचर,छतरी बनी दुनु के माथ झपने रहे,आब ओ आचर सेहो पछमक बड़का आंिड़ मे उविया गेलै। आब,, ।दमाग मे उिम मचबईत अछ भयानक सोर केबलजोरी शात करैत सोचल, शक्तिशाली त बनैए पड़तेआब ,पापा कहैथ छलखन,कमजोर गाछ के सब मोचाड़ क राख दैत छै,बलगर तर छाहर लैल,अपन त अपन, दूर दूर स अंहार सेहो हेज क हेज आबै छै आ ओ गाछ सहरटओकरा सीकार सेहो करैत छै”।

एतेक दिन के बाद सचिन के अपन स्वाभाविक गति स ,अपना दिस आबैत देखि चकोर जतय छल ओहि ठाम अजंता के मुरत जका ठाढ़ भ गेल ।सचिन ओकर हाथ घीचने केंटीन दिस बढि चुकल छल । आय ओकर मुख मण्डल प उदासी के कनिओ कोनो चेह नहि छले,। क्लास ,डिसेक्सन ,सेमिनार पोफेसर सब प ओहिना यथाति हाथ हिला हिला क गप्प करैत काफी पिबेत, सेडविच खाइत,बाजैत रहल छल ।

बेसी सक रईब क घरक़ भोजन करबा लेल चकोर के जिद करी क सचिन अपन घर आने छल,। इमहर चारि पाच मास भ गेलै त चकोर सचियम अपन मुंह खोलइत बाजल छल ‘‘आब अहा घरक़ खेनाय लेल नहि बजबे छी,आंटी मना करैत छथी की’। ‘‘आंटी’ ,कनी काल लेल ओकर आंखि मे फेर स बादरो उठबा के कोसिस कयने छल ,मुदा बलगर बनि के विचार ओकर ठोर प चौकीदार जका ठाढ़ भ गेलै मन मे उठले ‘‘फेस द फिअर ,फिअर विल डिसेपियर’ ।माथ झुलबैत कहलक , ‘‘मा त आब चलि गेलखी’। ‘‘कत ,गाम ,कतहुया औता’।ओ कनी अकि सन भेल । ‘‘ नै नै,आस्ट्रेलिया , ओ आब दोसर विहि करी लेलखीन’’। ई एतेक पैघ आ ममातक कि क गप्प ओ एना बाजि देलके जेना ओ ककरो आन स संबंधित होय ।चकोर के माथ नहि जानि की सोचि क झुकि गेल छले,सचिन ओकर मुह प खसल केस के अपन आंगुर स सइतेत ओकर हाथ मे हाथ दिने केंटीन स निकलि क बाहर लौन मे आयल आ बेफिक्कर ,कोनो हारल खिलाड़ी जका जेकर की खेल खराप मौसमक कारणे अस्थवात भ गेल होय ,जय पराजय स मुक्त दुनू मेक्डौनाल्ड मे खाय लेल सीपी चलि गेल छल ।

लघुकथा- कोन डारि पर केकर खोता

“यै बच्चन ,कनी थम्ह जौथ ,कालकौड क तरा ि तैर रहल छएह्ह,तखन खइहब्थ’। बच्चन ओसारा प राखल पीढ़ी प बईस गेल छलाह,सोझा परसल थारी राखल छल,दिनक एगारह बाजि रहल छल,कदंबक गाछ के ऊपर स सुर ज़ महाराज दुकाया भकरक गाम घरक हिसाब किताब लेबा लेल मुस्तैद भेल अपन ताप स चहु दिस के खड़ पात ि कर झरका रहल छलथ्थ। ,आय बटेदार सब स खेत पथारक हाब डीब लईत लईत बड़ बेर भ चुकल छल ,कुा ि तीरि भ गेल छलेह,बजली “आब रहय दिऔ एखन ,राति क बना लेब ,एखन अहू आबि जाऊ खेबा लेल ,अहू के भूख लागल हैत’। मुदा ताबेत त पच्छनकि स ि किल चूली प चढ़ल लोक्हया मे कडूक तेल पडपड़ाय लगलै त केरा ि क घावछ मे पात लटपटा क हब्बर हब्बर लोक्हया मे खसा चुकल छलाह।

हुनक ई तत्परता आ अनुराग देखि क ,ओ कनी काल लेल हाथ बारि नेने रहब्थ । कनी विलंब स दुनू गोटे सोझा सोझी बइस क मौन भ अपन भोजन गहण करय लागल छलाह ।

नबका कड़जेन के लोहा लकड़ सीमेट स बनल घर जे साबिकक खरहान मे बनल छल,ओ त बच्चनक छलेह,कनया के बख़रा मे त पुरना खपड़ैल घड़ाडी, मुदा आब कोन,दुहु घर त अपने सन । ओते टा चास बास मुदा रहनीहार ,जेना बडका पोखरि मे दु टा पोठी माछ । अन पानि कोठी,तोठी मे रखनाय,उसीनाया कुटाया आब पूरने आँगन मे होय :एका दुग्गी जे सर कुटुम आबेन त हुनक रहब के बेबस्था नबका घर मे होय । ओहुना मन बहटारय लेल ओ दुनु

कखनो अड़्गा घर त कखनो ओई घर मे सेन्ह राति काटि लईथ । ओना त चोर चहारक हदस लोकके पहिनहु पईसल रहे,मुदा आब कतेको घर जनक मुखिया बा कुलदीपक परदेस कमाई करय गेल छलेथ,ओत त बेसेख रपे रक्तजगा भ जाय । आ हिनको दुनु के परान सदिखन अरसथु मे बन तड़पइत रहेह । कहबो करथि 'नि संपत्ति लुटबा के डर नहिं, सुने छिये जे मौगी सब के हाथ पएर काटि क,की बुढ़,की बच्चा,सबहक इज्जतो सेहो लुईट लईतछैक'। आ अड़्गा डरे टोलक नबतुरिया विया पुता सब के बाड़ी मे फड़ल लताम,नेबो,त कखनो केरा, आम,कटहर,लीची,

बाटि क मोने मो न अपन फौज तैयार केने रहैथ जे बेर कुबेर गदहा केला प आन किओ आबै ति नहिं आबे अड़्गा मे स किछू नै किछू त अबस्से आयत । आ ओ सब कहबो करेन 'एक बेर हाक देबै त केहनो नीद मे रहबे,दौगल चलि आयब'।

ओ दुनु घरक बीचोबीच किछ पछाड़ी हटि स घसकिक तेसर घर सेहो टुकुर टुकुर,माय टुगर सन ताकैत ठाढ़ छल,मुदा तैयो ईर स भरल ओ घर हिनका सब के स्वीकार नहिं केलिकेह्ह ताही लेल उमहरक रस्ता टाट फटा लगा क बड़ पहिनहि बन करी देल गेल छल । ओहो घर अड़्गा दुनु घर प' अपन कि दृष्टि रखने छल फराके स ।

जेठ बैसाख क उकसनि गरमी, कतबो पंखा,कूलर लागल रहै,मोटका मोटका पदा खिड़की प रहै,मुदा नबका घर त राकसक मुंह बनि आवा उगलै, ईट के भटी बनल । तखन कनिया के माटिक ओसारा बाला दक्षिनबरिया घर,आहाहा,एकदम शीतल,जेना सगिट् बाड़ी झाड़ी स सीहकेत बसात । त बेसी काल गरमी मे बहिन

ओकर ओसारा िला घर मे नीचा कोछाओल पटया प,भात तीमन जे बना बथ कका पेम स,खा क,ओंघडायल रहैत छली । पहाड़ सन दन काटय लेल लच्छा के लच्छा ओझराल गप्प के पेटार खोलल जाय । आ पुरखा,सर् कुटुम,बाि बोन,अड़ोसीया पड़ोसया केकर कहा,सबहक कमटकुकमक कतेको बेर पुनमूल्याकन केल जाए । अहा एतहासक गप्प गोि मे,दुपहरया मे बेसी काल टोलक स्तीगन सेहो सब जुटथ,आ गामक जात इतहास के रपक आ केपक सहत ओह महान घड़ारीके सौजन्य स नीन दृव स जनैथ। ‘‘भूवंदर कका के पेलिर त बलाइए गेलै नै । देखयौ,केहेन उजाड़ लागै छेह हुनकर डीह । पहने जखन हम दुरागमन कर आयल रहए,काकी के भागक चचटघरे घर,सात टा पूत,दु टा छोटका भरसक कुमार छलेह,भर घर पोता पोती,काकीए के हुकुमक चलय छल घर मे । कया देखय त तीन चारबेर आबैथ, ‘‘कनी टा मुंह हमहु देखबै’ तीन बरखक पोथी के वजद,आ मया कोहबर मे आब क हमर घोघ उघार क देखा दईथ। चुहचुही स भरल,बड़का नाम गाम बाला कुटुम सब के आिजाही,,देखते देखते आब केहेन उजाड़ भ गेलै । बदल त सौसे गामे गेलै,भइयारी मे बाट बख़रा होइत गेलै,कओ बाड़ी त,कयो,गोहाली,त कयो खरहान मे चास बास बना लेलके,मुदा हुनक पेलबार त उपटए गेलै जेना एतय स’’। ‘‘से की कहै छथह,महाबा के डीह देखथुन,बड़का बड़का पाग बाला बेटा सब,ओहेन सुंदर घड़ारी तोड़ क नबका वड़जेन के घर त बनबा लेलथ,केहेन इलटल बलटल सन लगे छैक आब,कयो इमहर स खड़की नोचलकेह,कओ उमहर स दरजा,बाड़ी के चहरदेिरी ढाह पजेबा पयंत सब उक ‘ल गेलय। लोक के लोक कहे छै जे बन पूत के डीह बलक जाए छै,हुनक त पूत रहते उजाड़ भ गेलन। खेत

पथार त अपन अपन बेकच लेलक्थ ,मुदा सक्झया के मकान , ओक्हना संझा बाती किर लेल मुंह तकेत ,नॉर बहबेत ,के ताकय एलै घुईरक दसो बरख स' । ओते टा के दुपहकरया ,बुढ़ पुरान , की जुिनो सब पुरखा के गप्प ,दुरखा के गप्प ,संपक्त बटबारा के गप्प ,बुढ़ नब के रास लीला के गप्प ,ढेर रास गप्प क क्सडही प चढ़ैत उतरेत क्दिस काक्ट रहल छली। ओना आब ओहु ठाम टीिी आक्ब गेल छले,मुदा बेसी काल क्बजली कटले रहैक,आ रहबो करे तईओ एहेन गोषी के आनंद बुढ़ पुरान के लेल भगिती के बरदाने बुझु । पुरान क्दन के पागुर करैत हुनका सब के आंक्ख मे दोसरे चमक उक्ठ जाए । जोजो बाबू के क्खस्सा प कक्नया त हसेत हसेत बेहाल 'कोना हुनका लोक सब बकलेल कहेह ओ बताह नै घताह छलेथ,आबैथ अपन भाऊज स भेट करय आ भक्र टोल मे आंगने आँगन घुक्स क जनी जाक्त स ठठा करैथ,क्कओ कहेह ,कनी एक टा गीत सुनाऊ ,आ ओ ओक्ह ठाम िस्स स बेक्स जायथ,घेट क्हला क्हला क ,आंगुर नचा नचा क नचारी,कजरी ,त झुम्मरी गीत सुर कक्र देथ। सुनरो केहेन,पाच हाथ के िूि,दप दप गोर ,भाल प लाल क्संदूरक ठोप' ।

कालक पिाह के गास बनल कतबो लोक गाम स उपक्ट क सहर क्दस भागौ,गाम मे त लोकबेद रहबे करते न । आब कीछु सहक्र क भीड़ भाड़ स ,समस्या स ,बेरोजगारी स , गराकाट कंपीटीशन स , मशीनी क्जनगी स उक्ब क गाम सेहो आक्ब रहल छक्थ । विािहदान ,मुड़न उपनेन ,एकादशी के जग ,पूजा हिनि ,सब क्कछ त यथाित चलेत आक्ब रहल छल,नब लोक उत्साह स जीब रहल छल ,पुरना लोक सब हाफ़ैत,खीझैत,भोथरायल , भक्सयायाल बुक्द्ध ,कमजोर ,झलफल,झलफल दृक्ि स देक्ख रहल छल ,नब जुग के ,आ अपन मनोक्यथा के, कुंठा के ,अचटी ,कुचटी बाक्ज क क्काकल

लेत छल । कोनो एक खिस्सा प हुनका सब के हजार खिस्सा मोन पड़े । आ पचासो बरख पहिलुका बटखरा स आजुकसमाज के तराजू प तौलेत,केहन छुच्छ, केहन हीन,कतेक गहिंत लगेह ,से हुनके सबहक आत्मा जनेक ।'देखियो क्षरेन के बेटी के ,चतुरथी स पहिनहि बर संग , पदुि के रिकसा प सिनेमा देखय मिबनी जा रहल छल,त बापे बजलखिन ''रिकसा स जेमए त फिल्म छूटि जेतो ,चल, हम अपन मोटरसायकिल स छोड़ दैत छिओ,हमरो कोटट ज़ेबा के अछिए'। आ बाबिज क भवि पोख हसली मनोजक माय ।''ये बहिन ई कोन अजगुत गप्प कहलखिन , देखलखिहि नै चुनुलाल के बेटी के ,बापक विाहि कराओल बर के छोड़ि क अपन मन माफिक मनसा स दोसर विाहि कवि लेलकै ,म्या ओकर सेहो आब सीना चाकर कवि क बजेत छै ''ह त कोन जुलुम केलकै ,बापयकड़ छले, ओिबाि कवि क मारे छले ,त ककरो दरेग ने उठले हमर बेटी लेल आ ओ जौ ओकरा स बांड छोड़ा क पडायल त ,लोक् क करेज मे किएक िहि उठैत छैक' । आब कहथुन'।

ककिया के पुबरिया ओसारा दिस स आम रास्ता छल,त ओ सब ओहि ओसारा प नहिं बैस क ओहि स सटल कोठरी मे बैसारी करेत छली। कोठरी मे दू टा खिड़की ,एकटा पूब दिस ,एक टा दछिन दिस । दुनु प आि आि पतरकी ,छाप बालानूआ के परदा लागल,ओकरो मोड़ि क किम्हरो घुस्का दइथ,तखन ओहि बाट स जाए बला लोक सब प नजरि सेहो रखथि,ई मनसा कोन गामक छै ,किनको कुटुम त नहिं छैन,आ जौ कोनो टोलक एहेन लोग नजरि पड़ि जाथिजनका स आना माना रहेह ,त हुनक जतरा भंगटाबे लेल कागद ,िआचरिक खूंट के बाती सन बाटि क ,नाक मे घुसा क जबरदस्ती छीकल जाए ,कतेक बेर त अहि अपसकुन स लोक

सब आपस घुईर जायथ,। आ अक्ह स स्तीगन सब के बड़ पसनता होय । हुनक सबहक क्तक जका मोन बहक्ट जाए ।

भोर का तारा के देक्ख क दुनू गोटे उक्ठ जायथ अपनअपन ओछोन प स,नहा ि क,भगति नीप क,पूजा पाठ के काज स जाबेत क्ात ि होक्थ,ताबेत सुरज् क चका एक बीत ऊपर कक्ताज मे टंगा सब ठाम हुलकी मारेत रहेत छल । नबका घरक उपरका मंक्जल के गील मे बैक्स दुनु गोटे स्टील के वालास मे चाह पीबैत काल टोल भक्र के अलिोकन करैत छली। बक्हन त अपन ऊमीर के बड़का क्हस्सा सहरे मे काटने छक्लह,आब न गाम िक्सनी भेक्लह,मुदा आदक्त सब क्दन स काक बजबा स पक्हनक्ह उठबा के रही गेल छल। तक्हया त आि क्छि पूजा कक्र क क्पया पूता लेल जलखई,पनक्पयाइ बनाब मे जुक्ट जायथ,ओसब खा पीबी क स्कूल जाय त कक्तकाल मे घरबला के ऑक्फस ज़ेबा के समय भ जाए,हुनका गेला के बाद घरक झाड़ू पोछा,बाल्टी भक्र कपड़ा िबैत नीत क्दन बारह एक बाक्ज जाय । कक्हओ ओ एक टा नौकर ि काजबाली नही रखली,देहो भगति के कीरपा स तंदुरस्त छल,आ हाथो के बड़ सकत,जखन दू पाय ककरो दैतक्थन नक्हं,तखन क्कयो हुनका ओत अपन मुंह बाक्ह क त नक्हं काज कक्रतेह। मुदा िएह बक्हन जखन सासु के सोझा गाम आबैथ त अपन पुबक्रया घरक पलंग प क्चत पडल रहेत छली,काजबाली सब काम करबै करैक,हुनका जातय क्पचय लेल एक नौड़ी फराक स राखल जाय,जे हुनका नहाबए सोनाबय, नुआ फटा सेहो िबय।

सहर ज़ेबा काल कनी कि त मोन मे अक्सिसे होएन,मुदा ओक्ह सहरक नाम प त ई राजसी ठाठभेटल छल,ई सोक्च अपन क्दयाक्दनी सब प उपेक्ा के दृक्ि फेरैत तागा प बेसी क गाड़ी पकड़बा के

लेल मबिनी जाय छकलह ।

काक्तकी पूर्णमा के दिन दोसर गाम के देवी मंदिर प भागवति कथा के भव्य आयोजन छल।जगननाथजी स विद्वान पंडित सब आयल छलेथ, कतेक दिन पहिनहि स पचार भ रहल छल, लोक के उत्सुकता हृदय मे हिलकोर मारय लागले । कनिया स बियाहल बियाहल गामक ढेर रास स्त्रीगण,पुरखक संग ओहो दुनु बरकसा प बैस क नहा सुना क भोरे भोर विदा भेल रहथि ।

संजोग देखियो जे ओ सब उमहर गेलथि,आ इमहर बहिनक कुटुम आबि गेलखिन, दुनु घरक कुंडी मे लटकल ताला देखि क तेसर घरक दुरखा लग ठाढ़ कुटुम के हुलसि क सुआगत करबा लेल ओ दरबज्जा सतिह खुजि गेल रहे । भोजन भात कए क पाहून कनी काल विशाम करय लगला त हुनक स्त्री घरक और भीतर पइस तेसरा घर स अनुराग बढ़बय लेलअकुलाय लगली । भाई भौज छलखीन ,इमहरे समवयौन मे आयल छलाह ,त बहिनो मोन पड़ी गेल छलेनह । मुदा भौज के त नीक मौका हाथ लगले,ननदि के अतीतक उदान मे भमण करबके । हुनको ओ कहिओ कखनओ मोजर नै देने छलखिन ,ततेक गुमान छलेह। आ तेसरो घर के आय अपन पीर उवालबा के परसर भेटले ।

आ व्यवस्था के दोसर छोर कुम्हारक चाक प गढ़ेबा लेल उन्मत भ फर फर क बहरायत गेल ।

तीनो फरीक मे ,बाट बख़रा त कहिया कत नै भ चुकल छल,कहे लेल त आब दुइए फरक बचला बड़का आ छोटका,मुदा तेसर संसार स पस्थान करबा स पूर्व अपन स्त्री संग एक टा कंटरबी सेहो छोड़ि गेल छलथि। ओहि गुडकुनिया दईत विया के कपार देखि बाती

अपना ओत ल गेलथि, अपन बेटी त नहि देलथी भगिती,एकरे पालब पोसब, पढायब लिखायब, कन्यादान करब ,आब माय के कतबो मोन छटपटेलन्हि,सौस सेहो खुटा जका ठाढ़ भ गेलथि 'ओ आहा के बेटी के इंदासनक परी बनबय चाहेतछथी,आ आहा छुच्छ के विलाप कय रहल छी''। तखन सबहक बिचारे माय िी दुनू सहर चलि गेल छलिह।बरस दिन प माय त आबि गेली,खिस्सा के पेटार नेने मुदा बेटी के त स्कूल मे नाम लिखा देल गेल रहे ।

माय के मोन जखन बड़ छटपटाय,त पोस्ट ऑफिस स पोस्टकाडट मंगबा क जोड़ी जाव्ड़ क लिखनाय सुर करैथ त कनैत कनैत कतेक पहर बीत जाय ।अबल दुबल प सिथुया चोख,त मोसिबत के मारल के,अपन रक्ता करय लेल बेक्सि काल विजहा प दुिसा के बास ,कराबइए पडेत छल । ढोढ़िया साप के र प सेहो अख़्तियार करय लेल लोकिदि बाध्य कियर दैक। पान सन जीबन पहाड़ सन दिन काटे लेल गाम घर मे लोक बेद के अकाल नै रहैत छैक।पहिनुका जुग मे त गप्प सप्प संग भाक्त भाक्त के काज िि सेहो चलेक,कुमािर बेटी के विािहक लेल सिकी के मौनी बने,गेरआ के खोल प जोड़ा सुग्गा,गुलाबक फूलकाढ़ल जाए,जनेऊ काटल जाए चरखाकाटल जाय,मुदा तािहया बाजार घरे घर नहि घुसल चल,आ ने चीनक सुंदर सुंदर समान एना लोकके मोहने छल, 'एँ,के आंिख फोड़त अप्पन, बाजार मे एक स एक िनक चीज भेटे छै'बाला पलयंकारी बाढ़ि मे सब किछू भािसयाएलजा रहल अिछ। आब त विशुद गप्प,नबका िशक्ता के भूत,गाम घरक लोक के कोढ़ि बना रहल अिछ,तखनअिहना कतेको िखस्सा के जन्म होईत छैक आ सोईरीए स पािख लगा,बंद िखड़की,दरिजा के अछैत खुजल आकास मे उड़य लागेत छल । ओिह िखस्सा सब मे किनया के नॉर स

सानल जिनगी के कतेक रास दुख रहे,से कतेको लोक ले करेज मे बरछी सन गड़ैत रहलै। उपजा बाड़ी त हुनकर,जिनकर,समाग, खेत खरिहान छल,हिनका त मात घड़ाबिड़, आ ओहो साबिकक घर,बड़का विशाल जे रहल होय,मुदा भदबारि मे जानक आफत,कखनो इमहर स चूबे,कखनो उमहर स देिल खसै,आ एकर मरम्मति करबय लेल किनया के कतेको मास बरस दिन िक बिहन के चिटी प चिटी पठाबए पड़े तीन चारि बरख मे किओ सहरि स आबै,आ जाबेत ओकरा दुरस्त करै,ताबेत कोनो और समस्या ठाढ़ भ जाए ।एक बेर त बिहन गाम आबि क सबहक सोझा मे हुनका बड़ फज्झिति केलकिन 'अहा त अहिठाम आराम स बईसल खाय छी,आहा की बुझबै सहर मे पैलिर ल क रहे बला के कतेक किरीशनी स दु चारि होमए पड़े छैक। अहा के बेटियो के जिम्मेबारी हमी सब उठेने छी,तईओ अहा चैन स हमरा सब के निह जीब' देबय चहेत छी ।हिनकर ब्लडपेसर बिढ़गेल छिन्ह। हम त हुनका कोनो काज किहते निहं छिएन्ह, वारे पड़े छै घर त वारय दियौ,बारह टा कोठरी छै,जखन सब खिस पड़ते,तखन देखल जेतै'। ओिह बेर स ओ कतबो िक होयिन्ह, हुनका चिटी नैई िलखलखीह,' 'बुझल जे हमारा किओ निहं अिछ अिह संसार मे'। आ चारो कात स घर खिस क भुतहा हििली सन लागै, साझे लालटेम जराक' दरिज्जा प रािख देथ,जे खसल पजेबा स बाट बटोिहया के ठेस ने लावा जाय । खेबा वािबा लेल साल भिर के अन हुनके िदस स देल जाए,आ बाड़ी झाड़ी मे तीमन तरकारी त उपिजए जाए । मुदा किनयो के अपनघरबाला स बेिस कोढ़ बापक देल गहना गुिरया फाड़े,चंदहार,निथया,टीका,कणिफूल,बाला,अनंत,डढ़कस,पाजेब, सब टा त बिहन बैक मे रखबाबय के नाम उतरबा नेने रहिथ।बाद मे

कखनो ओकर चचटकरैथ, त बच्चन के कबौछ सन बोल स सम्पूर्णट देह मे आवा लेस दै "आब गहना ल क की करब ,लग मे राखब त ओहो डकूबा लुइट क ल जायत,भने बैक मे रखल छैक'।

अगहन मे कि माघ मे ,कंसयातओ कोनो जाड़े मास छल ,जखन बच्चन सपैलाकिर सहकर स गाम बेटा सबहक उपनेन् करबा लेल गाम आयल छथ्लाह। तखनया त गाम गामे छल आ टोल सेहो समस्त ऊजा स सम्पन ,जन कनि स सब डीह भरल । एकेदुग्गी लोक गाम स बहराएल छल ,मुदा गामक मजगुत डोर ओकरा खीचने रहै। मईया त बरख दकन पकनकह स अक्ह शुभ दकन के ओकरओनमे कोलहुक बरद सन रात्त दकन काबसरल लागल रहल छली। आँगन मेओसारा सब प ओछाओल पक्टया सब प पक्तयानी सराखल राहक्ड़,ऊडेद केराक ,तीसी ,मड़ुआ ,मकई ,कनि , सबरसब,आने की जतेक अन उपजा क बटेदार द जाईत छल,मईया ओकरा अपना कहसबे सइतने जा रहल छथ्लाह,दाक्ल दड़रबाक भूसा सकहत छोड़ने छथ्लाह ,आ ओकरा फटकबा झटकबा क पैघ छोट कोठी सब मे रखबय छथ्लाह । तखन एक दकन कक्नया के मोनमे अयलंक्ह, उपनेन हेतैक,एतेक लोककदि ,सर-कुटुम सब औताह,तखन ओ मड़बा प चढ़्क क बरआ सब के की भीख देतीह,हुनकर हाथ तठन ठन गोपाल । आ बड़ सोक्च कवचाकर क मरक्तया बाली पेटे दस सेर राहड़ी,दस सेर मकई ,पाच सेर खेरही ,पाच सेर केराक ,थोड़े गहूम ,थोड़े कनि बेक्च लेलथी ।कीछुपाय हाथ मे आबी गेलक्ह्ह त छौओ बरआ लेल गामे के सोनरबा स सोनक औंठी गढ़बा लेलक्थ,ओहो मैना दीदी के नेहोरा पाती करी क ।

ई सब कारोबार त ततेक गुप्त भेल रहै, जे घरक कोनो चार प कोनो कार कौआ सेहो नक्हं बैसल छल,नक्हं कोनो कोन साक्त मे नक्ढया,गीदड़ बा काबलक्ड़ए नुकाएल छल,मुदा तैयो ई गप्प जखन उक्जएले,ओही घर

मे बड़का भुईकंप त आबिए गेल छल ।

जखन बच्चनक सामी बाहि बोन दिस गेला अपन खेत पथार देखय सुनै,त कुलसयारक चोरि के दाग स मुक्त पाबय लेल बीसेसर हुनका कान मे हुनके आंगनक करनी फुइकी देलकेह।

आंगन मे पाहुन पड़कक आगमन पारम्भ भ चुकल छले,कनिया अपन कोठरी के पट बन कनि के कनेत रहली। हुनकर छुदरपन,हीनता,आ पापक पोथी नेने बच्चनक घरबाला ज़ोर ज़ोर स आँगन मे बाजि रहल छलेथ 'अही घर मे आब की उत्थान होयत ,जखन घरे मे मूस लागल अछि'' ।आ दुनु परानी हुनक हाथ के छूल पाईन निकि नहिं पबाक सप्पथ खेलाह ,जखन कि तहिया सबटा खेत पथार सबिझए रहेक। 'दसरथ के अंगनमा मे शुभे हो शुभे' बड़ ज़ोर ज़ोर स होमय लागल,मुदा काकी शुभे कोना कहितथ , ।

उपनेन् के दिन सब कुटुमक उपहास पूणटनजरि स बचबा के लेल ओ अपन कोठरी स नहिं निकसल छलिह, तीन दिनक भुखल पीयासल, चारीम दिन झलफल साझ मे ,छौओ बरआ लेल बनाओल औठी अपन सौसक हाथ मे राखि पट फेर बन क लेने रहथी। हिनको जिनगी स मोह कौन बाचल रहैक,बेटी के पार घाट लगबय लेल भगिती छलिह । तखन सुतली राति मे छुच्छ के लाज लिहाज के तिलाजलि दइत निकलि गेली नबकी पोखरि मे भसियाबय लेल ।कनीए दूर प बुढ़बा कोतबाल उहि टोकि देलकेह्न' 'कतय जाय छी मलकाइन?' ओ की चीह्नने हेतेक ओकर आंखि मे त रतौनी रहे ,मुदा उज्जर नुआ देखि भेलय कोनो दाय काकी हेताह ,आ जौ चुड़ैल हेते त तकरो काट छल ओकरा लग । तही लेल कनी उचगर सरि मे ओ बाजल छल, आ ओहि सरि प लगे के दालान प सुतल दिनेशक

आंखि खुजि गेल छल ,माझ बाट प आबि ओहो ठाढ़ भ गेला ।किछओ किछू ने बाजल आ ओ स्थिति सिस्तिविकरणी आगा पोखरि आ गाछी दिस बढ़ैत रहल छली। नब शोकगात दिनेश पहिल बेर कोनो भूत कि चुड़ैल के पछोड़ लिक ,संग मे उ कि मन बढेलके । पोखरिक महाड़ प आबि ओ पलटि क ताकली,दोसर पहर राति मे आकि चान आकास मे चमेकि रहल छल ,ई त कमतौल बाली काकी छथीन ,दिनेश चौकल,टोलक झंझट फसाद स पुरखो सब परिचते रहैत छलाह। छपाक के सरि स ओकरा सब मे चेतना आएल,आ हुनक पीठे प दिनेश पानी मे छलाग लगा देने रहैक ।पोड़ीक हुनका बाहर आनल ,ओ त अचेत भेल । पहिल बेर गामक इतिहास मे एहेन विखसा भेल रहैजे किसाराति मे भगविति पाति मे डुबल पाणी के बचा लेलथ। मुदा किओ इहो बाजल छल‘अकिखज ने मरै ,छुतहर नै फूटे’। बहिन के डरो पहिनहि बेर भेलन। पाण परबा जेका पुक पुक करय लागल छल ,आय जौ किछ अकिलाह भ जयते ,टोलक लोक जिनगी भरि हुनके उपराग दितेह्ह। दालान प बैसल झक झक उज्जर कुरता,साची िोती आ बंडी पहिरने रोआबी मालिक के एक टा अदृस्ट भय सेहो पईस गेल छल । तहन किबलक पछ मे उठल लोक् क दया माया देखि दुनु बेकती कनिया के हाथ पएरजोड़ी क शात केने छलथी । बेटी के बिहि मे त एक टा दमड़ी नै देबए पडलेह्ह,मुदा मुईला प आवा त जौते देतह्ही,आ कह्याक विाहि कतबो आदसट हॉक, घरबैयाके त बर ताक’ मे ,दौड़ बरहा करेइए पड़े छैक, जेना गीि के वियान मुइल जानबरक मौस प रहे छै तहिना कोनो कोनो लाथे हुनक बख़रा के जमीन जथा ओ अपन नाम प लिखबा लेने रहैथ,आ हुनका अहि सब झंझट स मुक्ति करि देने छलेथ । कतेको बरख बीतले, बहिनक सबटा बेटा के विाहि दान भेलहि ,सब अपन पेलाकिर बढाबेत आन

आन सहर मे जे गेला ,से आपस मुड़ क बच्चनक अहंकार के बरकैत नहिं होमय देलखिन, कोनो पुतौह हुनका अपन नरेटी प हाथ नै राखय देलकेन ।घर छिला के रिटायर भेलोपरात गाम मे अपन नब मकान बना क रहय लागल छथिलह,मुदा तखनो हुनक दोसरे छिह छलेह । ककिया के खसल घर के मरम्मत करबा देल गेल छल ,मुदा ओकर मालिकाना हक बच्चने सब के हाथ मे छल । कतेको बरख बीमार पड़ी क मालिक जखन गोलोकिासी भेला ,बच्चन तातात एसगर ि ।ककिया के बेटी बरस दु बरस लेल माय के घुमाबए फिराबय ले ल जायह्ह,सबटा तीथटसेहो करबा देलकैह्ह। देखि देखि क हुनक कोढ़ फाड़ेह्ह,आय ि त ओ दुकाए दारी मे रही गेल छलथी,आब त कोनो बेटो ने हुलकि मारे आबे ,ह कहिओ काल फोन फान कर लेई त सझले मुदा ओहो आबे ने खाली बजबे तोही आबी जॉ ,जखन अपन कोखिक जनमल आन भ गेल त आनक जनमल के कए गाक सराप दइतथी, कहबीओ छै जे जहन बौह लगतौ कान तखन माय हेतो आन । पोसने त ि ओकि बेटी के रहथी,मुदा कतेक सिनेह स से हुनक आत्मा जनैत रहेह। जखन बच्चन विहल भ क कनैथ, हिम्मत जूटा क ककिया हुनका लग एनाय सुर करी देलथी,आ नहुं नहुं बच्चनक खेनाय पिनाय के भार हुनका बिन पूछने ककिया अपना माथ प राखि लेलथी । आब त खूनक रिस्ता सेहो एहेन ने हेतै ,आि आि िमल क एक भ जाय छै ,नदी आ नाि,आह्हर आ लाठी ,डॉल आ रस्सी ,तहिना बच्चन आ ककिया,एक दोसरक िजबाक सहारा बनी गेल छलथि।

लघुकथा- घुइर ताकू

छोटकी काकी काल्ह राता ए अपन बायरका नुआ के सोडर मे उक्सनलक्ह। परात भेने बुचीदाय स बजलीह 'गे खुरलुच्ची ,चलमे गे बच्चा , पोखक स ई पखाक आनु । जखन नामे खुरलुच्ची पड़ल छल त बूच्ची दाय शात कोना रक्हतथ ,सदी खन सब ठाम ज़ेबा लेल बेकल पाच छौ बरखक उमक। 'चलू' ,ओ फट दनी गोटरस खेलेनाय छोक्ड़ जेबा लेल दुनु टाग पटकेत उठल । एक हाथ मे पीटना आ दोसर मे अलमुनायम के कारी खटखट ,बाचकल पाचकलछोटकी डेकची मे उक्सनल नूआ । भक बाट उठैत बैसेत रहली , चलल ने होय छन नीक स , अक्ह मध्य आह ,उह करैत अपन जुगक ख्सस्सा,गप्प सप्प बाचैत जा रहल छली। 'ओ जुग छल,बुझलही बुची,हमर सबहक ककओ पैर ने देखने होयत ,चौखक्ट स बाहक पएर राक्ख दी ककर मजाल ?सब दलान त बूढ़ा सब पकड़ने ,। बुढ़ पुरक्या के कतेक पक्तष ा ,कतेक लेहाज़ । ओ आराम ओ सुख आब कतय,कक्लजुगक पाप स आब त ने तेहन ि रक्ताए उपजे छै,माले जालक बरकक्त छै ,लोक सेहो तेहन खर्व िस भ गेले ,खेती छोक्ड़ नौकरी करय लागल अक्छ । लाजो ि िक नै बचले ,दलान प कोनो बुढ़ नै बचलेथ , घरे घर चुलही तर पुर ख सब घुसनाए सुर करी देलके । तक्हया कन्या बहुक्रया दर िजा की ,क्खड़ककओ ि िक स बाहक हुलकी मारब स परहेज करैत छल ,,,,आब त , की पोखेर ,की इनार'कत नै पैठ ओकर सबहक ।

'आ ओ जे मसूद पुर बाली छक्थ,हुनक ससुर बड़ गरीब ,एतेक गरीब जे पक्त भरनी ि क्र नै राक्ख सकैत छक्लह ,,मुदा कुलीन एतेक जे तेसरे पहक राक्त उठी क पोखरी,इनार स पाक्त बाला काज फक्रछा लैत छक्लह।पुतौहो एहेने सुशील भेटलनक्ह ,,मुदा आब हुनके पुतौह

के देखही ,गई म्या,घर बाला कत दन की दन करे छै,,कोट पक्हर क बुले छै मौगी'' । ,एक बेर जखन ओ गप्प सुर करी दईथ ,त लगबे ने करे की ,कोनो बच्चा बुतर लग मे छक्ह की कोनो चेतन । भाय भाय बड़ बड़ेने जाइथ। जौ ककओ नक्हओं होय सुनए बाला तइयो हुनकर ि एह चाक्ल ।

''ओह गे बच्चा ,गै हाथ पकड़ा गे,,,पएर मे बग्घा लावा गेले ,ओ हो हो ,अ ह ह ह ,,महादेि ई की केलहु '। हाथ त हुनक पकडबे पडले ,नूआ बाला बासन सेहो माथ प उठबय पडले ''ह चलू आब , एतेक कि होय अक्छ ,पुतौह ने पखाक्र देती'' । पुतौह के नाम प हुनका एक्ड़ के गरमी मगज प पहुँच गेलह्ही ''मार बाढ़क्न छूतहक्ड़या के , हम्मर नूआ ि ित की ओ अप्पन गजेड़ी भंगेक्ड़ बापक सारा क्नपत ,'' ।

पोखक्रक घाट प टाग पसाक्र काकी इतमीनान स बैसेत बजली ''ला गे बच्चा ,बासन ला '। तसली स नुआ उनक्ट,ओक्ह मे पाक्न भक्र लग मे राक्ख लेलक्थ आ नुआ प चुर स पाक्न ि ि क पीटना स पीटय लगक्लह ।''काकी बूढ़ मे ई पीयर नुआ '? ''गे चुप रह बेटी देलक ; देखै छै जे झुरकुट बूढ़ बसन पटी बाली ,केहेन छाप बाला नुआ पक्हरक्न अक्छ' ।

''काकी , मुदा नूआ मे कक्नको जान नक्हं, जे क्दन नै चरर बाक्ज जायत ,दोसर कीन लीअ' । ''ह गे तोरे बाप हमरा कमा क पठा देता' । 'मरट़ हमर बाप कक्नए पाए पठौता ,अपन जे कोसल रखने छी गाक्ड़ क' से कोन क्दन लेल' । काकी भयंकर तमसा गेली ''तोरे नाना देने अक्छ कोसल गाक्ड़ क राखय लेल '। बुक्क्यदाय चुप भ गेक्लह ।

ठेहुन कि स्ति उठा क,घाटक तेसर चारम सीढ़ी प ठाढ़ नुआ के एक छोर एक हाथ मे पकडली,आ शेर के जुमा क पाक्त मे फेकलक्त,नुआ छता जका फुक्ल गेले,तहन दुनु हाथ स नहु नहु छोट करैत,दुनु हाथे गार्व क पाक्त बहरेलथ्थ। ''हरे राम,हरे राम करैत पाक्त स बाहर भेली । फेर नूआ बाला बासन आ पीटना बूची दाय के थमा देलथी।

आि बाट पहुंचल हेतीह कक लुक्खया दौगल आबेत छल 'यए दाय,जल्दी चक्लयो बड़का गाम बाला पीसा अलखीनह'। काकी एक दमे क्यहुक उठली 'गैई म्या,जुलुम भेल आब?की कर की नही कर ,पाहून एला हे,दलाने प बेसल हेताह, कोन बाटे जायब आँगन,नूओ नीक नै पक्हरने छी''। बुच्चीदाय हुनक समस्या के समानि करैत बजली ''हमर बाड़ी दने चक्ल जायब'। आ काकी पछबक्ड़या बाट स ओकर बाड़ी के इंट देरि कहुना क पकक्ड़ पकक्ड अपन आँगन मे पइसल छक्लह।

''की काकी पाहून गेला'? ''ह गे,कखने गेलथ्थ । ओ राज काज बाला लोक,हुनका पलखक्त छक्त सरोजक बर जका नीकक्कर भ क ससुर क कप्पार प बेसबा के' ओ त ककरो बक्रयातीमे आयल छला त एक रती ससुर् क हेम केम लेबय चक्ल आयल छला,एक लोटा पाक्त चालथ्थ,चारी टा दछीनी सुपारी आ,दु जोड़ जनेऊ बस,आ जायत रहला'' ।

ओ ओसारा प अपन नूआ के सक्रयाबैत बैस रहली 'की कक्हएईन् बक्हन ।ई सौराठ बाली क्यरासी, हमारा क्जबय नही देत,की पाहून,की पड़क,ई अठा बज़्जक्र खसा दैत अक्छ,देक्खयो,,आय फेर भानस बन करी मुंह फुलौने अह्हारघर मे पेटकुक्नया देने पड़ल अक्छ, दुक्नया भक्र

के गबरओलक ,फजजक्त फजजक्त करी देलक । ओ त पैत रखलक्थ गोसाई जे ओझा खान पीन नक्ह केलक्थ। हम त हैया हाथ उठा क क्यकक्र क्यकक्र क उगलहा स कहैथ क्छएईह्ह जे कुमार बेटा रक्ह जाए ,,ओक्ह गाम नै वि हि करी ,ई कोन जनमक पाप अक्छ हमरा कपमार प '। बूची के दाय अचार मे तेल ढारैत मौन भ हुनक गप्प सुक्त रहल छली। तखने बड़की काकी सेहो आक्ब गेली "की भेल ए कक्तया ,कक्एक एना बताक्ह भेल छी,"? अक्ह आहे माहे मे बुक्क्यदाय के बड़ मोन लगेह । जो ओसारा प गप्प होय त आँगन मे फुसीओ कोनो काजक लाथे ठाढ़ भ जाए ,बड़ आजाकारी बक्त पान सुपारी के तश्तरी सेहो ल आबे । खास कक्र क दादी सबहक गप्प त क्खस्सो क्याहानी स रमनगर ,जे विशेख कक्र क पुतौहे ल क होइत छले , , आ रंग क्बरंगक भाि भंवामा । जे कक्तया के ओ बड़ नीक ,बड़ सुनक्र बुझे हुनको सबहक पोल खोलल जाए ,चीरहरण होय एहेन गोषी मे ।

बड़की काकी छोटकी काकी के दुख सुक्त तमेक पडक्लह 'ये एतबा मे अगुता गेलोह्हु ,हमर सतलखा बाली सन बज खसौनी स त लाख कच्छ नीक अक्छ ,ओकरा त भगिती र पो देने छक्थंह,आ ई कक्रलुटी। नहा सुना क भगबती के सीरा नीप ,ि दीप देखा क कहक्लए "कक्तया ,काक्ल ओ उपासे छल ,आईओ बड़ बेर भेले ,जे देब स द क्दय खाय लेल ,बड़ भूख लावा गेल' कक् ननक्द स लड़ी क जरैत चुली मे पाक्त ढाक्र बजेत अक्छ 'अंगोरा खौथ'। चूड़ा फुला क खेलहू कहुना कक्र क। {हुनका चूड़ा दक्ह नक्हं र चय छलेह}

कनी क्दन लेल एले ह मालती ,ओकरा देखय नही चाहे छै। भक्र क्दन हड़ हड़ खट खट ,कखनो क़हत हमरा नूआ नक्हं क्कन देत

छथि, कतेक बेर अहूना पड़ा क नैहर पहुँच जायत अछ ,मकहंदर त नहं जाय छन कखनो बादागरी करबा क आनय लेल ,अपने बाप भाय आब क सासुर मे बैसा दैत छे न । एतेक ईर ,की कहू कनया घुड़क मार िकवड़ए जनेत अछ , कखनो काल मो न करैत अछ जे बाि बोन मे पड़ा जाइ ,घर त्यावा दी ” ।

“काकी ये ,सबहक पुतौहे कएक खराप होईत छै? सौसे कए नीक रहैत छै”?बइसल बइसल बुकया अपन मौत् क फरमान जारी कर देलक । “गै , तू हमरा सब के अिलाह कहबे' ये मठौली बाली ,देखू अपन ,कबौछ लगा क जनमेने रही की ? हे दाय ,जह नग तू जेबए ,अखने स हकन नॉर कनैत हैत” । “तखन त ई हो नगर कानल हेतैक” । आ पूरा बाकजयो नहं सकल की गाल प बड़ी जोर् क थापड़ पड़ले , 'मर गेले हे हे” पाछा मुडी क ताकलक,त मा छलह घोघ तानने । “ऊँह मोने मो न त खुसी ए भेल हेतेन सौस सबहक कंदा सुक देखबै लेल मारैत छथी'कनैत बजेत भागल ओ ओत स ।

“की गे फुलेसरी ,आय तोही फूल ल क एला हे ,कहया एलही सासुर स , ,सौस केहन छौ ,माने दाने छौ की ?”

लालकाकी मकलकया स गप्प करय लगलह ,आ ओ नोरे झोरे कनैत ,सौसक देलहा दुखक बखान करय लागल ,ओह दुख स पड़ा क त नैहर आब गेल अछ । “बज़्जर खसो ,'लाल काकी ओकर सौस प बज खसब लागली । बूची दाय फेर उपस्थित “यै लालकाकी ,आब अह जुग मे लोक बज्जर ने बम खसबे छै । अहु ओकर सौस प बम खसबीओ ,एके बम मे सुरलोक चल जेते' । लाल काकी हसय लागली “ई छौडी त जुग मे भूर करैत अछ ,एखन की

बुझबहक दाय'।

कतय कोन गाम मे, सत्संग ि भागति चक्ल रहल छै,बड़की काकी के सब खबक्र रहैत छलनक्ह । अपने सब बुक्ढ़या विदा होइते छक्लह,आ हाथ हाथ भक्र घोघ तनौने कक्नया बहुक्रया सब के सेहो संग नेने जायथ।

"ये काकी{हलाकी ओ सब दादी छक्लह,मुदा वि ओ पुता सब हुनका सब के काक्कए कहेह}आहा सब त बुढ़ पुरानछी,पुतौह सब त आजुकाक्ल क छक्थह्ह,क्सनेमा देखा क्दयौ,मेला घूमा क्दयो,,ई की अपना संग क्हनको सब के बैतरणी पार करय लेल नेने जाय छी?' बूची के गप्प सुक्न छोटकी काकी अपना सब मे हाथ मुंह चमकबैत नहुं नहुं बजली"ई बुक्चया,बड़ बक्दयल,की कक्हयक्ह्ह, काक्ल कहक्लए जे हमरा संग कक्न पोखक्र चलबे,चक्ल त गेल मुदा भक्र बाट से क्दक केलक से बुझु नै, गाडल ि न,कोसल,क्ककालु,नबका नुआ क्कनु'। बूची के कान मे ई गप्प पडी गेले,ओकरो शोक्णत खौल गेले,मन मे उठले 'माथ प उठा क क्हनकर मईल बासन,हाथ पकक्ड़ क्हनक हम पोखक्र ल गेलहू आ ई हमर क्नंदा करेत छथी'। ओकरा खबक्र छले,कतो ज़ेबा काल हुनका क्कओ घुईर ताकू कक्ह दैक त ओ एकरा बड़ पैघ अप शकुन माने छक्लह ।हुनक देह स ि िरा उठय लागे छल,आ मुंह स लाबा फुटय लगे ।,आ नतीजा,बजनीहार के बड़का बड़का गाक्र आ सराप । जतरा सेहो स्थवात कक्र दैत छक्लह ।

बस बुची दाय क्चकरली पाछा स"यै छोटकी काकी,यै घुईर ताकू,घुईर ताकू'। आब की, क्बरनी के छता उजक्ड़चुकल छल।,छोटकी काकी ओक्ह माझ बाट प ठाढ़ भ सम्पूणटोलक स्तीगनक सोझा बुक्चया के दादीए के गक्रयाबे लागल छक्लह जे एहेन

उकटी पोती कहनका कोन पाप क कारने भेलक्हि।आ अपन माय के हाथे तूर जका िनाई सोक्य क , बुक्कया ओत' स लंक लगा क पड़ायल छल ॥

लघुकथा- माटीक मुरत

चारहु कात कुहेस् क सामाज्य ,मोटका ,मोटका ,उज्जर ,पि पि, िस ओढ़ने गाछ बरछ ,सोझा के लतामक गाछ जे घर स दस डेग पर ठुरल ठाढ़ छल ,आंखक दशत शक्त स, बाहर , , हमालय के तराई मे बसल अछ छोट सन शहर प,अहना पहनहु स ,शरद रानी शेख ित्सल्य पेम स आविभूत रहैत रहल छली,आ एखन त, सदः हुनके राय समय आ, सामाज्य । ओह पलयंकारी शीतलहरी मे घरक भीतर लोक दिक हाथ पैर सुन भेनाय सभािवक छल ,मुदा कोढ़ फाड़ैत कर न चत्कार ' "गै मया, गै मया" सुन कयो नहं सरक क' तर नुकायल रह सकल छल,ड़ािड़ अड़ोसीया पड़ोसया के दरजिा खुल गेल छले। ओढ़ना ,कंबल ,मोफलर ,सौल मे बाहल ,छेकल लोग हम मानि बनल टौिइत टौिइत एक दोसर स, ओह अनुतरत पशक समािन पाबए लेल बेकल ,मुदा केकरो कछू नह बुझल जे सेज ठाकुर के कएक गाड़ी प, उठा पुठा क, अस्पताल ल जायल गेल ,ि के एना हाकोश कर रहल छल । गपा खुजबा मे कल काल त, असिस लागले ,मुदा तखन ककरो सिस ने भ रहल छल सेज ठाकुर त, एना सपनो मे नह कर सकैत छली ,तहन केकरो पेट मे पईस क त' लोग नही देख सकैत अछ ।

असंख्य सम्भािन स संबोवित मनुख सन हुनको संग समय भेर बदल क; डेगा डेगी आगा आगा चलैत ,लुका छपी खेलाइत पाया कातक ओह राज्य मे जा क' नूका रहल छल ।

एक बीत के घोघ तानने, ओ दस बरखक बहुरया पाच हाथ

क ललका नुआ मे लेपटायल भट भट खसैथ, त बेस लाम चाकर सौसक बज बोलक लगाम तुरत हुनक कान मे पड़ेह "की खुआ क माए बाप पोसलक ,जे दु डेग चललो ने होएयै" ।

सासुर मे त जेकर जे रिश्ता नाता होए ,तही स,संबोधित करेह्र,मुदा परोछ मे सबहक लेल भानपुर बाली रहैथ,। अपन जन्म स्थानक नाम जेना अपन पीठ प'खोदबा क, सतीगन सासुर जैत अछि ,आ,जीविनपर्यंत ओकर िएह नेसान बनल जैत छैक । आब नीक सुभाि रहल ,ठोर मुंह नीक रहल,पीतमर रहल त' ओकर गामक मान मरजाद बढल,बकदियल ,मरखाह ,गुमान िली भेली त, परात उठि क, कुओ ओकर गामक नाम लेबा के सोचियओ नहि सकैत छल ।

भानपुर बाली के गोतियायो सब हुनक अदम्य जीिट आ, संघरशील जीिनक चचटपरोछ मे करईत कखनो ने कखनो नतमस्तक त' भ' जाएत हेताह ,मुदा पत्यक मे लोक ओकर लोक क पशंसा केनाय उचित नही बुझे छै ,जेकरा स कोनो पकारक लाभ नै होय ।

एक सिि नटी सन दु टा खुटा पर बाहल ज़ोर प पएर ,आंिख एकदम ,सीि मे ,माथ पर चारी पाच टा घैल ,,ह , भानपुर बाली एहीना पएर संभािर क, कतेको बेर अपन खूँट स' ओकर खूँट आ, ओकर खूँट स, अपन खूँट आबैत जैत रहली ,मुदा तखन त' हुनक िआ देिख क ढियाद सभक ह्रदय झरकि जाए । पेलिर क नजिर मे ओ अबला कतछिलह ,भिर मुह दात भ' गेल छलिन्ह,पीत देखाय पड़'लागल छल,आ, माथ प, कनी टा टा सीघ सेहो देखाय पड़य लागल छल । मुदा ओ त बाद मे । ,

क' ट' किर क' जोिड़ जािड़ क' चीठी पटरी लिखबा योग्य साकरता ,बेटी के पढ़ालिखा क जज बनेबा के छै की ?फुकते त' चूिलए, बाला जमाना

मे ,अतीतक डयोढ़ जे आब नब जमाए लेल पायस बनेबाक सेहो सामथटनक्ह रखैत छल,नमि दसम होइत ,सुखी सम्पन घर देख्व अपन माथ क' बोझ उतावर देल ,आब सासुर मे जे जेकर भाग्य ,भोगतै वजनगी ओक्ह भाक्त ।

तखन अपन छोट छोट हाथ स ओसारा प' राखल बड़का क्सलौट प' मोटका लोढ़ी स' मसल्ला वपसइत ,बड़की वदयाक्दनी स' नहु नहुं बजैथ ‘‘हम सबटा काज कवर दैत वछएइह्ह,ई भानस कवर लौथ हमारा रानहय नक्ह आबैत अक्छ,बाबू बड़ वखक्सयाय लागैत छक्थंह,’ । वदयाक्दनी मुसुक्क क' रही जायक्थ ,ससुर के गावर बात आंक्ख क' सोझा नाक्च उठेक ‘‘ई भानस मनुक्ख खेबा जोगर छै ,दाक्ल अनोन ,तरकारी मे एक ढ़ाकी नून ,’। सौस आवा प'ओक्डका ल क घी ढ़ारैथ ‘‘सोइत्क बेटी छक्थ,सुकुमावर’ ।

गोर नावर ,पातर वछतर ,कलसगर ,नीक आंक्ख नाक ,भानपुर बाली ,पीअर ,हवरयर नुआ के देह मे ऊपर स'नीचा लपेटने क्हुवर क्हुवर क' ओते बड़का टा आंगन मे दुनु साझ झाड़ू बहाड़ू करैत हाफ़य लागैत त' पनभरनी वबजूरी ल'ग आवब क' छीन लेह्ह बावन ‘है लभकी कवनया ,आहा कएए छूबे हीए बाढ़क्न,हम कक्थ ले क्छये’। त' घोघ क, नीचा स' हुनक दाक्ड़मक बीज सन दात चमक्क जायह्ह।‘‘क्सखबाक चाक्ह नै,तखन नै बुझबे काज कोना होइत छै’।

पाबक्न वतहार मे जे नब नूआ आबै त पक्हने घरक सब स्त्रीगन अपन अपन पसीन के चुक्न लइथ,आब हुनका हवरयर नै नीक लगे ,मुदा उपाय की ,दू नॉर काक्न लइथ ,कतेक वदन वफर ओ नूआ ओक्हना सह्दुक प' राखल रक्ह जाए ,सब हुनक अईठी प' हसैत रहे कोन कोन नै फकड़ा पढल जाए ,हावर क' हुनका ओ नूआ पक्हरैए पडैक ।

नहु नहु आब हुनको सौख मौज जागय लागल रहेह । अपन बड़का बड़का आंखि मे काजर लगा क' नीक जका नूआ पहिरै लागल छथिलह । भरल दुपहरिया मे ,अपन कोठरिक दरबज्जा सटा , नीचा पटिया ओछा क' सीकी के बड़का पौती स' कजरौटी,पोडर अफगान स्नो ,अलता ,टिकुली ,सिंदूरक कीया, किलपक पता ,ककबा संग बीत भरि के एना सिकािल क' पौती के सोझा ठाढ़ करैत । अपन बड़का बड़का केस के जुटी स' सिकािल क नािरकेर् क तेल स बड़ी बड़ी काल धिर माथ् क मािलस करैत रहेथ 'फेर ककबा स' थकड़ईत थकड़इत पिहने बाम कात के जुटी गुथेथ,ओकर नीचा मे ललका फीता के खूब पैघ बड़का फूल बनाक ,ज़ोर स पीठ प फेक ,दोसर िदस क जुटीगुथेथ, फूल बनाबैथ ,फेर दुनु के एक दोसर मे फसा क बीच माथ स कनी नीच किलप लगा क खोपा बनाबिथ। गमछा के एक कोन के लोटा के पािन मे िभजा क' सबुंदानी मे राखल साबुन प रगिड़ मुह पोिछ आंगुर स स्नो दुनु गाल प लगा बिढ़या स पचा क पोडर लगेला के बाद , टीकुली कपार प साटैथ,आंिख मे काजर लगाक ,एना के हाथ मे उठा कनी काल धिर अपना के िनहारैथ ,फेर नही जािन की सोची क' मुसुिक क ,सब चीज बोिरया ओिरया क मौनी मे ि,कोठी के ऊपर रािख अपन पलंग प कनी काल पडल पडल घरक़ िरक्त तकेत आंिख मुिन लइत छथिलह ,की बेरहट लेल आंगन मे िधया पुता के आिजाही सुर भ' जाय छल,फेर रतुका भोजनक ओिरओत ।किहओ जखन अिह टोल,ओिह टोलक ससुर् बािस बेटी सब नैहर आबैथ त' बड़का बाबा के हिलीी के नब किनया के देखय एबे करे जायथ,बड़की दादी हुलिस क' हुनका सभके अपन ओसारा प' राखल चौकी प,बैसबा स' पिहने चदरी िबछेनाय निहं िबसरिथ । आ' किन काल् क गप्प सप्प के बाद पछबिरया घरक केबाड़ लग

जा क' बाजक्थि 'दाय सब एलखीन हे कनी बहरैयो घर स' मुंह देखा क्दओ''। छोटकी कक्मया केबाड़ लग आबी क; बड़का टा घोघ क्काक्ल ,मुड़ी गोतने अपन दुनू पएर प बैस रहैथ

दादी कक्म झाकी क' देख लैथ फेर ,संतुि भाि स ,केबाड़ खोक्ल आगा बक्ढ कहक्थि ''गे फूलो ,तुही देखा दक्ह नबकी भौजी के मुंह''। अपन विािहक बाट जोहैत क्मक्तयौत ननक्द फूलो चट स घोघ उठा क, मुड़ी पकक्ड़ तीनो क्दस घुमा दैक । ''कक्मया बड़ सुनक्र , केहेन परोड़क फाक सन उछलल उछलल आंक्ख, ठाढ़ नाक ,पनमा ठोर '' । कक्मया के सुह्दरताई प अपन विचार परगट कक्र क जायत काल हुनका सबके दादी आने की भानपुर बाली के सौस् क विलाप करेज मे छूरा सन गड़य लागे ''माटी के मुर त एक टा गक्ढ क ि देलक,' आ' तेकरा बाद हुनक विपिन नैहरक खोईचा छोड़ा क बखानय लगेथ त' सुननहारो के अनसोहात लगे ''जाए क्दओ,बाप क िन स की होई छै, नीक लोक त भेट गेल'' क्कओ ने क्कयो बक्जए उठेक ।

गरमी मे सकाले भानस भात भ' जाए आ' घरक स्त्तीगण सब सेहो नीक्फकक्र भ; कखनो पछबक्रया ओसारा प;कखनो पुबक्रया बाड़ी बाला दुमुहा हिदार घर मे अपन क्कक्सम क्कक्समक गप्प क पेटार खोलक्थि। टोल भक्रक बेटी पुतहु सबहक बाजब, भूकब ,क्यिहार ,र परंग के अपन अपन तराजू प जोखैत ,कखनो ओक्कल त, कखनो जज के मुदा मे आक्ब जायथ। ओक्ह बइसारी मे बुढ़ पुरक्नया सौस लेल जगह नै रहे ,एक्छहे जुबती सब ;,क्कयाहल ,कुमाक्र, । ओत पाक्नभरनी, कुक्टया क्मक्सया करक्नहाक्र ,माक्लन ,ि क्बन ,खबाक्सन तेकरो सभक पैठ छल,मुदा उमक्र के मामले मे कोनो दरेग नही ,आब हक्स्सी ठठा लोक अपने

तुरीया मे करते न । बाजए के सबके समान अधिकार त नहि छले,मुदा कनिओ चुप्पो नै रहे,मुंह दाबि क त पुतौह सब हँसे,गामक बेटी त, खिलखिएबे करे ज़ोर स ।

एहने जेठक सुनसान दुपहरिया मे,जखन एक दिन अपन कोठरिक केबाड़ ओठङा क' सिंगार पटार करबा लेल पटिया ओछा क' जुटी खोलि कोठी पर स एना ककबा उतारक लेल हाथ बढोलखिन्ह की पएर दाबी क' चुप्पे स पईसल छलखीह,उघरल माथ कपार,छिटकल केस,भानपुर बाली के जेना ठकबकी लागि गेले,देहक शोणित बरफ भ गेलिमागक सबटा गर्माहट के अरिद कवर देलके, हुनक अहि मनोदशा के फायदा उठबईत टुनटुन भैया झट दनी हुनका बाम हाथ स पकड़ियाबईत दाहिना हाथे हुनक मुंह बन कवर देलखिन्ह। खूब बुझल छलनहि,एखन आँगन मे कियो नहि,माय अपन भवानी के बियाह क हकार पुरय लेल अपन नैहर गेल छली,बड़की भौजी अपन छोटकी बहिनक दुरागमनक लेल अपन नैहर गेल छलखिन्ह,तीनो बहिन अपन अपन सासुर,खबासीन दुनु,सेहो लगनक समय मे नौत हकार पूरय कतो कतो आन गाम गेल,।

टुनटुन भैया के मनोरथ प, भानपुर बाली पानि फेकैत अँगोरा फेकलखिन्ह,अचानक ओ सिंहनी बनि हुनक पकड़ स,छूटि हुनक दाहिना हाथ प' ततेक ज़ोर स अपन दात गडौलखिन्ह जे हुनक छरपटी छुटि गेलहि,एतबा मे ओ केबाड़ खोलि सोझे दलान दिस पेत बाटि स गसित मनुख जका पड़ेली,पितिया सौस जनादत्तक माए,जे अपन दलान स उतरि टेटरा म्या स,बागक गाछ लग ठाढ़ भ गप्प करैत छली, बड़की काकी के आँगन स दौड़बक आबाज सुनी दुरखा लग आबी कहुकि उठली ''की भेल ये कनिया,गई म्या,,''बड़का बड़का केस ओझिना खुजल,माथ प नुआ ने, आंखि मे भयानक भय,ज़ोर ज़ोर

स, चलैत सास,मुंह स त' किछू नही बहरेलन्हि,मुदा ओ हुनका भरि पाज पकड़ि ज़ोर ज़ोर स कानय लागल छलिह । इमहर उमहर कान ठाढ़ केने लोक बेद के देखि क जनारदनक माए हुनका हुनके आँगन मे पछबरिया ओसारा दिस डाढ़ पकड़ि क आनलखिन्ह । कनी काल दिस हुनक माथ प, हाथ राखि नोर पोछि,सप्पत तप्पत दइथ ,सब टा खिस्सा उगलबेलखिन । घर बला पढुया छलथी त, बेसि काल पदेसिए बनल । फेर त जा दिस सौस नही आपस अयली ताबे तक हुनका ओगरि क ओ हुनक ओसारा प सुतैत रहल छली ।

सौस के कान मे जखन खिस्सा गेलन्हि ,त' ससुर आ' भैसुर संग ओहो कीया चरित कीया चरितक डिडिंबी नाद करैत हुनक हाथक छूल नहिं खेबा क सप्पत संग पेटकुनिया द' पुतौह के सरापय लागल छलिह ,किएक त ओहि दिन स' टुनटुन भैया लापता भ गेल छलईथ ।

उमहर एहने नीकिकिर दुपहरिया मे जुबती सबहक बइसारी मे भानपुर बाली हीरोइन भ गेल छलिह । किओ कहेक''गाल प दात गड़ा दैतथि नै, जे जिनगी भरि के चेनहासी भ' जयतइन्ही' । किओ कहे ''हम जे रहितये त तेहन ठाम नै लात मरितएई जे ज़नानी के नाम दिस बिसरि जैतथि' 'एहने चालि प घरबाली छोड़ि देने हेतैन्हि' । तेकरा बाद सब अपन अपन गामक छिनार पुरखक अनंत खिस्सा बाचैत ।

आ , दोसर ठामक बैसारी मे,जतए ,थकुचल ,झुरकुट ,खुराट सौस सबहक गप्प चले ,टुनटुन बाबुके सुपिन के;हरेराम कका के माए अपन गरदनि के मोटका हसूली छूबेत ,भिकया भिकया क बाजेथ 'कहिओ हमरा सब दिस नजरि उठा क, नहिं देखलन्ही, तेहेन लजकोटर ओ ,सदिखन माठ झुका क छलेथ' । 'यै गरिब् क बेटी

आनलहु बीयाक्ह क तखन त एहने सन क्दन नै देखौता कािता ।‘कानक माकड़ी झूलबईत अनारस बाली बाबी बाजैथ । आ ओक्ह बइसारी मे जनादत्तक माय सेहो रहेत “हम सब मुरख छल पपंच की बुझबई ,कहबी छै जे घोर कक्लजुग आक्ब गेले,’।टुनटुन बाबू के जननी नॉर पोक्छ बाजेथ “ओ बतहा के की पता छले जे ओसारा प राखल लोटा उठा क क’ल स पीबा लेल पाक्न भरनाय ओकरा एतेक महग पड़ते ,देह मे त अक्ह कुलछनी के आवा नेसने रहे छै’।

छले त टूटल जमीदारी ,मुदा एखनो बड़का वारहस्थ ,,जमीन जायदाद गाछी ,माल जाल संगे दस टा विया पुता बाला नामी घर ,दू तीन टा पूत त’ ऊच क्शक्ष पाप्त कक्र बक्ढ़या नौकरी सेहो करय लागल छलक्थ। अक्ह पसंगक बाद भानपुर बाली के घरबला कोलेजक एक टा छुटी मे जखन गाम एलथी ,त’ फेर ओ आपस अपन कोलेजक मुंह देखे नही गेला ,कक्तया लग जे दु चाक्र पाय जोडल छल ,पेटी मे आ’ देह पर जे सब आभूरण छल संग ि,दुनु बेक्ती ओक्ह घर क म्ि‍र छाहक्र स क्तकक्ल दुक्तया के अथाह महासमुंदर मे दक्हया भसीया क अपन बाट ताकय लेल जायत रहल छला ।

कतेको बेर एहेन देखल गेले जे साि‍रिण सन बाट ,कखनो क तेहन भयौन मोड़ ल लेत छै ,जे एक क्दस उंच पहाड़ आ’दोसर क्दस लोमहरक्ष खाि‍व। लोकबेद के कहब छै जे अप्पन बाट मनुक्ख अपने कहा बनबे छै ,ओकर बस चक्लते त’ओ क्तकन चुनमुन गंगाजल स’ ि‍ल रस्ता प,पएर रक्खते,मुदा जीबनक रस्ता त’ ि‍ह बनबैत अक्छ ,जे जीबन बनेबक ,ओकर संचार करबाक ,आ’ ओकर संहार करबाक भार उठौने अक्छ । तखन सुंदर ,सूक्चकन बाट सेहो काट कूस ,पाथर ,पाक्न स’ भक्र दुसाध्य भ’ गेले कोना ,से अदृि जानेथ।भानपुर बाली संग क्कछू एहेने भेल छले।ओक्ह जमाना

के इंजीनियरीङ्गक पढ़ाई डेढ़ बरख पहिनहि छोड़ि घर बाला सड़क प' बौआ रहल छलथी। कनिया के मोसियौत बहिनक घरबला अहि मुसीबतक घड़ी मे सुगीि जका हुनक संग िने रहल।मास दिन किरअपन घर क छत हुनको माथ प' राखि वडिस्टलड िटर के फैर्की मे नौकरी के सेहो बेबस्था करा देलकन्हि।

भानपुर बाली के की नाम छल हेतैन्हि की पता,मुदा तत्कालीन व्रिाज् क मोताबिक,पहिलोठ संतान के नाम स म्या के नाम पड़ी जाए,असेसरक माय,बीनी के माय । विया पुता के बेर मे सेहो क्षािता जेना बाम बैिस रहल छलथी। मुदा कतेक बरखक बाद एक पर एक तराउपिर चािर टा विया पुता स भगमान आचिर आ' घर भिरदेलिखन्हि।आ ओतुका लोग हुनका सोना के मा के नाम स कहै लागल छल। घरबला के त' बुवि ए बाम भ गेल रहेह । अपन कुल खानदान क' घमण्डक संग ओहि अिविखजु वडगी के दंश हुनका सनकी सन बना देने छलन्हि। अपना ऊपर केकरो रोब जतेनाय हुनक पीत के तुरहते एड़ी स' मगज िकर पहुंचा दैक। कायटस्थल प' क्षत दिन झंझट होमए लागल । घर आबि क' भानपुर बाली प' तामस झाड़ईथ 'अहीके चलते हमरा आय ई दिन देखय पड़ि रहल अछि,बड़ कि छल त' नदी पोखिर मे भसिया जयतो,जहर माहुर खा सूती रहितो : व्रिािरया चिरत मे फिस क, हम बबाद भ गेलो''। की किरतिथ भानपुर बाली,बज सन बोल सुनैत सुनैत पाथर भ' गेल छलथी पहिनहि स । बच्चा चार इसकुल मे पढ़ैत छलेय । तनखा त' कोनो खरापो नहिं छल ।

पतिदिन भोर मे काज प' ज़ेबा काल पति कलह मचबैत 'अहा की बुझबै,अपने त दिरदक बेटी छी, सिमिमान की होय छैक। आय हम

अपन हिसाब करबा क रहबे ,ने बरदास होइत अछि कनहा के बोल’’। भानपुर बाली आगा बढ़ी क हुनक माय बनी जायथ ‘हमर गप्प छोड़ू ने ,मुदा अहा केकरो स याचना करय थोड़े जाय छी ,मेहनत करे छी,दुनिया करे छै, आब ई कोनो सरकार चाकरी बाला जमाना त रहले नहिं ,देखियो बच्चा सब के कोक इसकुल भेट गेले,सब त अहिं प, आशीर्वाद अछि ने’’।

एक बेर केकरो मुंह स कतो सुनली ,जे सेना मे नीक नौकरी भेटेय छै । एक दिन घरबला के नीक मूड देखि क बजली त हुनक रौद र प आ विकरनाय सुनि क सब धिया पुता कोठरी के मुंह लग आबि क’ ठाढ़ भ गेले “ हे देखैजाही एकर बुद्धि , तोहर बाप रहतौ घर मे आ हम जाऊ सेना मे मरय’’।

मुदा कतेक दिन ,आखिर मे ओ नौकरी स इस्तीफा द देलथि। तखन एहने सन किछू भवितब्य के सोचि विचार होसियारि भानपुर बाली पाच कोठरी के अपन मकान पहिनहि बना नेने छलथी ,एक टा बाईस कटा के जमीन सेहो कीन लेने छलिह। आब घरबला जखन त्यागपत द देलखीन त जे बकाया रुपैया भेटलनही,ओहि स खाली जमीन प, दू टा कोठरी वालेबा प, ठाढ़ करि क’ जुता के फैक्टरी खोललकिह। तीन टा कारीगर रखली । घरक सबटा काज सम्पन्न करि सीधे फैक्टरी पहुंचथि । कखनो पतिदेव के अनेरे कोनि देखि ,कारीगर सब के पोला क चाह पानि कराया क’ बुद्धि स’ काज लईथ। किछुए काल मे बिजनेस गति पकड़ नेने रहेक । दुनु बेटी के कन्यादान करि गंगा नहा नेने छलैथ । मुदा बिपदा के ई कोना सोहेतेह। ओ अपन चक चालि फेर स’ तेज करि देली । किओ कहलकैन सौस बड़ बीमार,किओ नै सेबा करे छेन । जे पुतौह सब बड़ नाम गाम बाली छलिह ,धिया पुता के पढ़ाबए के लाथे अपन अपन

घरबला संगे बाहक जायत रहली । एक टा बेटा त भावाए गेल छलेह,मुदा तइयो पाच टा पुतौह त बक्सते छल ,आय बुढ़ारी मे ,बीमारी मे क्कयो काज क नै ।ई सुक्त हुनक मोन कचोट स भरी गेलह्ही,आक्खर ओ हमर सिमी के मा बाबू छक्थ,आ शास्त्त कक्कानि अनुसारे हुनको मिक्क मा क्कता , हुनक करतब्य बोधि क्हय मे उत्पात मचबए लागल ।सबटा काज छौक्ड़ सौस लग आक्क गेल रहैथ।ओ रोबदाब बाला ाि ,मुटी भक्र के ठठरी बनल क्काछौन स सटल,ससुर सेहो दलान प पड़ल। मास क्दन रक्ह क सब क्यसिथा दुरस्त केली ।जखन हुनक मुंह मे ओ कौर खुिबक्थ सौस के आंक्ख स हर हर नॉर बहे लगै ,अपन दुनु हाथ जोक्ड ओ जेना हुनका स क्मा मागेथ । भानपुर बाली हाथ पकैड़ अपन माथ प राक्ख लइथ। ओछौने प नदी ,लग्घी होयह्ह , अपने स क्कन क्कनेने साफ करैथ ,दू टा मटकूक्ड़ राखीदेलथी,महेशक बेटी के हुनका कोठरी मे सूते के ,आ हुनक सब तरहक वियान राखय लेल गछबा क ओकर क्कयाह दानक सब टा भार गक्छ लेलक्थ। भनसीया सेहो राक्ख देलथी ‘हम पाय देब आहा दुनू पाणी के सेि करबै खेबा पीबा मे ,पथ परहेज मे कोनो कोताक्ह नक्हं हेबाक चाक्ह । कनी डेरो प हमरा देखनाय जररी अक्छ’’। आ एक पएरसासुर आ दोसर डेरा प, रखने बरख ि क्र काक्ट देने छक्लह । माय बाप संग ,गामक लोग के आत्मा जुड़ा गेलय,आब हुनक कुल सील क डंका क्कटाय लागल ।

कक्छू बरखक बाद जुता फैक्री बंद भ गेले ,घरबला के क्कक्या बीमारी आ, ब्लड पेशर दबोक्च लेलकह्ही। बेरा बेरी ससुर आ, सौस अपन अपन ठाम जायत रहला । इहो सबहक संग ससुरक संपक्त मे अपन क्हस्सा बटबा लेलथी । मुदा बटाई प, ने लगा क, अपने स’जन मजूर राक्ख खेती करबाबए के ठनली। परदेशक जमीन आ

मकान बेच क'गाम स सटल शहर मे जमीन खरीद क' मकान बना लेलथी जतय कियाद सबहक सेहो चास बास छलेन्हि। मकान क चार कट छहर द क सोझा बदक फाटक सेहो लाबा लेलथी ,आंच कटा के ओकर चास बास मे आगा पाछा फल फूल के किसम किसम क गाछ बारीछ लगाबा लेलथ ।गाम प बटला के बाद चालीस बीघा जमीन त' हिस्सा मे पड़बे केलन्हि,आ ओ पोखरा पाटन बड़का हबेली मे छ टा कोठरी सेहो हिस्सा मे भेटलन्हि। अन पानि, उपजा बाड़ी बड़ नीक, गाय भइस पोसिया लगा देने छलथी।

साल भर केअन ओकर ठाम राख क बाकी खेते स बेच दैथ। बड़का लगाा बाला उपजाऊ जमीन,जिनगी नीक जका कटय लागल । आ ई सबटा काज भानपुर बाली जनानी भईयो क' अपने करैथ ।आब उमर सेहो भेलन्हि, आ'बेतहासा रौद बसात सहैत सहैत हुनको देह मे बीमारी पइस गेलन्ही।छोटका बेटा के डाक्टरी मे नाम लिखा गेल छल, माय के सदी खन कहे, ''बस कनी दिन रुक जाऊ,चारि बरख आउर,हम नौकरी लिउ की आहा के रानी जका बैसा क' राखब,ई बातरस,ई दम फुल्ली सबटा दूर कर देब । बड़की पुतौह अपने सन कुलसील बाली आनली।बी एड कर रहल छल । पदगाई के संगे गृहकार्य मे सेहो दक,अपन परिस्थिति के बुझए बाली,पूजा पाठ करय बाली,सौस ससुर् क मान सम्मान देबए बाली ।

मुदा पहिने कहल जे बिपदा के ने सोहेले बिन हड़ हड़ खट खट के जिनगी ।ओ कोना चाहितेथ जे आस क किरण कोनो ने कोनो दोग स हुनक जिनगी के इजोत स भर दैक ।

दुनिया भर के दिया । ओकर नरक निरिण चतुरदसी के परात उठली त घरबला के पलंगक नीचा खसल देख सन रहि गेलिह

।बेटा पुतौह के मदद्द स कहुना कका ओछौन प' सुथौलथी सिसि चलइ छल। अपने दौड़ गेली पड़ोस्सया डाक्टर लग ,ओहो ओक्हना भोरका चाहक कप सोझा क टेबुल प राक्ख झटकारैत संगे चक्ल अयलैह्ह। नॉरखसेबक काल नही छल ,तुरत एंबुलेस मे लाक्द हुनका नक्संग होम मे भरतीकराओल गेल । पक्षघात क अटैक छल। शरीरक बाम अलंग सून।

अक्ह कापक्त मे दुनु हाथ क मोटका सोनक बाला आ' कागुक्रया आंगुरक बराबक्र मोट गरा के चेन कवका गेलह्ही। मुदा संतोर छल सती माय हुनक जान त बकक्स देलक्खन। पक्हनहु ओ घरे मे रहैत छला,आब ओछौन प ,मुदा आंक्खक सोझा त छलेथ ,आस त मन मे रहबे करेह्ह जे आए नै काक्ल ,सखरा भगक्ति के कक्रपा स उक्ठ क अप्पन पएर प ठाढ़ त अक्सिस हेता।आब जे साक्ू,संत ,बैद,डाक्टरक अजगुत चमत्कारक क्खस्सा लोग सुनबे ओ आस् क डोरी पकड़ने दूर दूर क्वि दौगक्त रहली । कोन जड़ी ,कोन बूटी ,कोन तेल माक्लस ,जादू टोना ,की सब नक्ह अजमबेत रहली ,मुदा हार नक्ह मानली ,कासबास जीक्त छलेनह।

अक्ह मध्य खबक्र भेटलनही जे छोटका बेटा जे अखन पक्हले बरख मेक्डकल मे छल ,कोनो पहाक्ड़न स क्विाह कक्र लेलके । दुख की आ कतेक होयतक्ह्ह,कक्छू क्दन भगक्ती के सोझा क्क्रयाती रहली ,मुदा मोन नै मानलकैह्ह त' बस पकक्ड़ ओतेक दूर बेटा पुतौहक मुंह देखय औ बरखा बूक्त के परबाह नक्हं कक्र क चक्ल पड़ल छक्लह। फोन प गप्प भेल रहेह ,सपूत बर न बस स्टेड प आक्ब दुक्नया के सोझा माय के क्हुक्र क गोड़ लगलक । होटल मे ल जाक खुआदेलकईह्ह,आ फेर ओक्ह घूरती बस मे, ओहने मौसम मे रतुका क्टकस कटा क

चढ़ा देलकेह । सोचने रहैथ ,केकरो स र्विाहि कर्क लेलके त की ,आब त ओ हमर पुतौह भेली न ,त अपन कणछूल छोटका र्वडबी मे राक्ख पसटमे ओकरया क ि नेने छलथी,कक्नया के खाली हाथ कोना देखब । र्किछू टाका सेहो राक्ख लेलथी ,नब नब वारहस्थी छै,ककरा स मागते।

अनहक्रया रा र्ति ,कड़कैत र्बजुरी ,बरसैत मेघ मे र्तातर्ल भीजर्ल ,जखन ओ दरबज्जा खटखटौली,पुतौह के डरे हदास पईसी गेले ,अंदेसा भेलर्हि,र्खड़की स झकर्ल ,मा के देक्ख र्किछू पूछताथ कर्रतर्थ तेइ स पकर्नक्ह घर मे पएर रखैत बड़की पुतौह के भर्र पाज ि र्र मोन भर्र कनली ''केहन भ गेल बर न ,अपन डेरो नै ल गेल ,आन लोक सन होटल मे खुआ क अर्ह पलय काल मे ,र्बान र्किछू सोचने रातराती र्बादा कर्र देल।

कतबो कहर्लए कनी कक्नया के मुंह देखा दे ,कहलक कोन सुनरी छै जे देखबै'।

कनी र्दनक बाद बर नक फोन आबए लागले ,जायदाद मे हमर बख़रा द दीय । हम अर्ह ठाम घर कीनब'।

घर मे भूकंप आबी गेले ,चार कात क ि र्रकाए टा नर्ह,ऊपर अकास ि र्र डोलए लगलै। भानपुर बाली के सोझा परसल थारी र्सरैठे रहए लगलै ,हाथ पएर मे बग्घा लागए लगले,माथ टनके ,अनेरे बड़ बड़ाए लागल छर्लह। ''कोन कोन र्दन देखेता र्बाि ता ,जायदाद मे र्हस्सा के मतलब जे ई घर बेचू ,गामक जमीन आि कर ,गामक मकान आि कर । तखन कोना कर्र क जीबनक भि सागर पार करब । तखन लोकबेद सलाह देलकेह , बाटल जेते दादा के संपर्त,बापक अरजल प हुनका अछैत

र्कओ ने अपन जुईत चला सकैत अर्छ आ येह गप्प बड़का बाबू के

सरबेटा जे नामी ओकील छलथि सेहो कहलखिन ।''अशक्त बीमार बाप के सेवा करबा के फुरसति नही छेन आ, संपत्ति मे बखरा तुरत चाही, पढ़ाई लेल जे पाय पठा रहल छी ,सेहो बंद कर एहेन कपूत के' ।

मौसम अहि बेर केहेन ताडि केने छल। भयंकर ठंड । कम्मल ,सीरक मे भरि दिन लपेट क त ओ बैसयबाली पाणी नहि छली , हाथक बुनल मौज़ा पएर मे ,साया के नीच गरम पैजामा ,कार्डिगन, ऊपर स मोटका पशमीना शौल मे अपना के नीक जका बानहि छेक क ब्रम्हबेला के स्नान ,पूजा के बाद स इमहार उमहर लुडूखुडू मे लाइग जायथ । पुतहुक परीक्षा चलैत छलै। सबके चाह द क ,बाहर आँगन मे बोरसी मे आवा सुनगा क राखि देली,कनी काल मे कमि भ जेतैक त' घरबला के कोठरी मे राखि,हुनकर मालिस करितथि। ताबैत चाह ल'क बेसकी मे आबि गेलीह ,थर थरी लागए लगलैन्हि त, पदा लग रखल हीटर जे कनी खराप छलै ,कतेक दिन स सोचने रहेथ ठीक करबाबक ,मुदा आय कपकपी बरदास नै भेलन्हि त जरा लेलखीह ।

कनिए काल मे गो गो के आबाज सुनि पुतौह पढ़ाई छोड़ि दौडलन्हि,ओकरा भेले बाबूजी के कोठरी स सरि आबि रहल अछि। मुदा ओ त बैसकी स आबेत छलै, खिड़की के परदा पकड़ने ओ त नीक जका झरकि चुकल छलीह सबटा कपड़ा सुडडाह ,बाक बंद ,तुरत हुनक उठा क ,सूती चादरि आ,कम्मल मे लपेटि बड़का अस्पताल ल जायल गेल डाक्टर नीचा मुंह करि नीरास भ मुड़ी हिला देलके, नब्बे प्रतिशत झरकल । तीन दिनक भनक कटि क उपरात आखिरी मे माटि के मुरत माटि जका भखरि गेल छलीह ।

इम्हर,मनुक्खक जाक्त, कयो कयो कारो उड़ा देलके ,आत्महत्या कवर लेलथ्,बेटा स परेसान छलथ्खन ,मुदा ओत उपस्थित सम्पूणट समाज कओ ने पत्ताएलके ,एहेन जीबट स्त्री त बड़ कम गढ़ैत छथ्हिं भगबती ।कानेत कानेत पुतौह बजली "हीटर खराप छल ,ओक्ह मे करेट आबैत छलै" ।

विलायत वाली कनिया

अप्पन निमिट पानि सँ दूर ेबागती सँ बड दूर ेओहि जनिा के हिसाब सँ ेबरखौं पहिने ेनिशा के केत मांदरा ि आबि क' चिरंजीब बाबू बसि रहलाह। पहिने त' किराए के किान ि रहैत छलाह ेिदा किन्ए दिन ि पॉच कटठा क' सुन्दर चाकर चौरस प्लॉट कीनि अपन निोरथ के पूणश करैत बडका टा के हवेली सन ठाढ कए लेलन्हि।एकदि पूरना रइसशसभक नक्कारी दार झरोखा वाला हवेली ेबड सुन्दरऊज्जर झक झक करैत संगिरिक हवेली ।धीरे धीरे आगॉ पॉछा के किछु आओरजिन सेहों खसरदलन्हि ।

िदा तखन इर् घर भरल रहैत छल ।िया छली ेबाबा छलाह ेयानि की चिरंजीबि बाबू के ि ेबाबू ेएकटा छोॅट भाए ेआ' दू टा छोॅट बहिन क संग अपन पेलवार ि दू टा बेटा आ' तीन कन्या ।नौकर चाकरक सेहों किि नहिं छल ।जतए गुड रहैतछैक ेचुटी ओतए आबिए जाए छै ससरनि ।

दूनू बहिनीक विवाह भ' गेलए बेटी सब सेहों अपन अपन घर चलि गेलन्हि ।िया आ' बाबा एकाएकी अपन आखिरी जतरा प' चलि गेलाह ।भाइशिास आ' छोॅटका दूनू बालक बाहरे पढैन्ह ेघर एकदि सुन भ' गेलए ।नौकर चाकरक मानती सेहों कि होॅिए लगलैन्ह चिरंजीब बाबू के वकालत सेहों कि होॅयि लगलैन्ह ।अपन आ स्ती दूनू व्यक्ति के स्वास्थ खराप ।घरवाली के डायबिटज छलैन्ह ेगठिया सेहों । अपन बी ेपी ेहाटशपाबलि ।

घरक सुन दूर करय लेल ज्येष बालक विभूति बाबू के विवाहक' योॅजना बनाओल गेल ।ओहों वकालत पढने छलाह

।माता के हाथ बॅटबए आबि गेलाह।विवाह भ' गेलन्हि ।कन्याके जौं चानक टुकडा कहि त' इर् हुनक अपनि होंएतन्हि ओं त साक्षात चान छलीह ।पढल गुनल कमि कमि ति बीए पास ।िदा हुनका सब के अपन पूतौंह सॅ नौकरी त' नहिं करेबाक छलैन्हि ेतािन्ह लेल कन्याक गुण आखानदान प' विरेष ध्यान देल गेलए ।

पुतौंह के आबए सॅ पहिने जेना ओंकि घर ि चुहचुही फेर सॅ आबि गेल रहै ।डाइरंग रकि सोंफा आ झाडफानूस के नवीनीकरण कराओल गेल ।बरखों बाद ओंकि िकान ि रंगाइर् पोंताइर् भेल छल ।चिरंजीब बाबूॅ क' पसनताक कोंनो ठेकाने नहि छल ।बड गुणवान े सुरील लकी कन्याया घर ि आबि गेलीह ।

विभुक्ति बाबूॅ के ािए सेहों बड पसन ।पूतौंह के बेंटए जेकॉ नाि सॅ बजाबथि 'भारती' ।आ' भारती साल भरि क' भीतरे हुनका सब के चान सन पोंता सेहों दए देलन्हि ।

िदा विवस्सा इर् नहि थीक ।नै हुनक दौंलतक ेनै सोंहरतक ।विवस्सा क' विषय छल विभूॅकि बाबू के छोंट भाए ेजे इंजीनियर छलाह ।आ' अपना पसिनक' आन जािक कन्या सॅ विवाह कहि लंदन चलि गेल छलाह ेसेहों फिकयों आने कहलकैन्हि ।

कतेक दिन धरि ािए बाबू के तािस ेदुःख ेददशाकोंढ करेज ि हिलकोंर िरैत रहलैन्हि ।पीर रहि रहि क' टिस िरै ।आ' कानैत कानैत ेािए बतािन्ह भ' जाइथ ।तखन चिरंजीब बाबू सिझा बूझा क' चुप्प करबथि ।पूवशजनकि पाप कहैथ आ" आन धिया पुता दिस ेपोंता पोंती दिस धियान लगाब' कहैथ ।पूजा पाठ ेरािायिाण ेभागवत सब त' चलिए रहल छल ।

सप्ताह पन्द्रह दिन प' िहाकालक' दरशन कहि ओं खूब मिनिती करैथ 'िहाकाल ेसब सुख देने छी।छोंटका बेटा घूइर

आबए ॅॅबस एक बेर िहि देख ली ॅफेर जतए रहै ॅआहाँ खुस रखबै ।’

पवासी क’ जीनगी भले सुख चैन सँ ॅगािणक’ हङ हङ खट खट सँदूर लगैत अछि ॅिदा इर् एकटा काल कोँठरी के सजा जेना भ’ जाइत अछि ।अपन सािज क’ नीक बेजाय सँ दूर ॅसंस्कृित आ’ रीित िरवाज सँ मिलबाक लेल कखनोँ क िनि ओँइना जाए ॅफूिसयाही गप ॅ...आहे िहे ॅ... ...इियौँत िपियौँत ॅ।ओँिह ि एकटा फराक िसनेह छै ।असगर ॅअसगर निह लगैत अछि ।ज्योँ ज्योँ उिमर बढए लगलिह दूनू व्यिक्त के अपन गाि िनि पङय लागल।िचरंजीबी बाबू के स्त्री सोँन दाय त’ अपन िितृभूिम लेल ओँिहना बेकल भ’ जायथ ॅजिहना छोँटका पुत लेल ।

अिहना करैत करैत िदन बीतैत रहलै ।तीनोँ बेटी के िबवाह ॅजबलपुर ॅभोँपाल आ” इंदौँर ि भेल रहै ।अिह पकारे िमिथला सँ संपकशटूटले जकाँ छलैिन्ह ।कहु त’ करीब करीब सबटा लगक ’ संबंधी इिहरे उिहर छल ।िदा सब अपन अपन काज ि व्यस्त ।पूतौँह भारती अिहना बङ कि बजैत छली ॅआ’ िमिथली त’ िबसिरए गेल छलिथ ।अिह ि हुनक कोँन दोँख ।नैहरोँ ि सब िकयोँ िहन्दीए बजैत छल ।

औँनाइत बौँआइत िनि ॅसोँनदाय के बङ िदक करैन्ह ॅत ’ रािरीिरक व्यािध आओँर बिढ जाय ।गिठया के पकोँप एतेक बिढ गेलिह िक दुनु ठेहुन जेना जकिङलेलकैन्ह ।जाङ िसि ि घरक बाहैर बगीचा ि लागल झूला प’ भारती बैसा दैत छलैन्ह ॅखवािसन चुप चाप हुनका िििलस करैन्ह ।दूर दूर ॅॅॅ धिर हुनक दृिष्ट घुइि िफर क’ वापस िाली वाली प’ िटक जाए ।आिदवासी छैक ॅिहन्दी बस दू चािर आखर जनैत अछि ।छतीस गढी बोँली बाजए लागैत

छै ˘जे सॉनदाय के बड़ कआिबै ।ऑकरा सॅ फालतु के गप केनाए सेहों व्यथश।पॉच बीघा ि पसरल हुनक कोंठी खे आगॉ पॉछा गाम्छए गाछ ˘ ˘ ˘सब तरहकफल फूलक' जेना आधुनकि कण्व आशि हों ।म्चर बाबू के पेड़ पौंधा सॅ बड़ लगाव ।

सड़कक दोंसर कात म्सन्धी ˘पंजाबी सबहक कोंठी छलैक ˘ ˘कखनों काल म्मातिण प' एनाय जेनाय होंइत छल ।ुिदा आब ओं ˘ ˘ ˘नाटक बाज म्जनगी सॅ तंग आम्ब गेल छलीह ।

म्बभुम्त बाबू म्पता संग कोंट चम्ल जायम्थ आ' भारती दूनू बच्चा के स्कूल पठा क' सौंस लग बैस कखनों कल्याण पम्ढ कए सुनाबम्थ ˘कखनों गीता ˘ कखनो म्हन्दी के एकबार ˘ ˘ ˘ ˘ ुिदा नब नुकूत आजू क' जुबती कखनों बोंर भ जाइत छली ˘ ˘ ˘।कतेक बेर घर वला के कहलम्न्ह ˘बी एड' कम्र लैत छी ˘ुिदा ओं अनठबैत गेला 'फुरसत कतए अहॉ के ।बच्चा सब ˘ि ˘ ˘ बाबूजी हि ˘घर दुआर ।" आ' अम्ह घर दुआरक मारहस्थी क' म्माम्लसि ि हुनका ओंझरा क' राम्ख देने छलाह ।

एक म्दन म्भनसरे म्भनसर जुलाइर् िास क' घनघोंर बादम्र आ' म्बजुम्र आकार ि होंड लगौंने छल ।पाम्न अखन पडबा सुर नम्ह भेल छलै म्क घरक घंटी बड़ जोंर सॅ बजलै ।नौंकर सूतले छल । म्चर बाबू चौंकला ।ओंना त' ओं चाम्रए बजे ओं उम्ठ जाएत छला ुिदा आए कम्न अस्वस्थ सन िनि लागैत छलैन्ह ˘ ˘ ˘ ˘ 'एखन के भ' सकैत अम्छ' ।उम्ठ क दरवज्जा खोंलला ˘ ˘ ˘ ˘ ˘। अन्हार छलै ।म्बजुम्र से चिकै ।बराडा के लाइट जरौंला त' धक सॅ रम्ह गेला ˘ ˘ ˘ वर ण छलाह ˘ ˘ ˘हुनक करेज त' ततेक जोंर सॅ धक धक करए लगलम्न्ह म्क ओं

एक क्षण ठमकलैक क' इहो नञि देखला' जे हुनक संग आर ककियो छलहि वा' नञि ।नेना जेकाँ चहकैत ˘˘ ' सुनै छी वर नक' िाए ˘˘˘यै उठु यै ˘˘देखू बौआ आयल ˘˘।' आ' भौँकासी पाड़ि क कानय लगला ।सौँन दाय हड़बड़ा क' उठि गेलीह आ बिना गप बूझने हुनका कनैत देखि क' अ अपनो कानय लगलीह ।ताबैत वर ण आ' हुनक स्त्री पाँच बरक कन्या सँग घरक भीतर पवेर क चुकल छला ।िाए बाबू के कनैत देखि हुनक पएर छूबैत बजला ˘'कष्ट लेल कनैत छी ।आब' त हि आबि गेलहू।' उम्हर कनबा के सोँर सुनि माँभुँम्ता बाबू आ' भारती से हो अपन कोँठरी सँ बहरैला ।सबहक ध्यान वर ण प छल ।भाए भायक' गल लगला ्र।पाँच हाथक गौँर वणश्वर ण ˘˘आओँर सुनर लगैत छला

कनि विलंब सँ हुनक सबहक नजरि संग आयल स्त्री प' पड़लैंन्हि ।तखन ओ हड़बड़ा क' बजला 'इर् हीना ˘˘˘ 'हीना िँ बाबूजी ˘भैया भौँजी के पणािं करियौँ" ।अंगरेजी िबजलाह ।भाउज के कहला 'इर् हिन्दी बेसी नञि जनैत अछि ।

सब अवाक भ हुनका देखय लागल ।छोँट सन ˘दूबर पातरि ˘˘˘˘मारस्थाि ˘˘˘˘ नाक नक्स सेहो नीक नञि ।नै जानि कि देखला वर न अहि ि ˘˘˘˘घर पेलपेलवार सब के बिसरि गेला ˘˘˘सौँन दाय िनि िनि सोँचए लागल छलीह ।

आ" पाँच वखक स्वीटी एनिन वर ण जेकाँ ।वएह छूरी सन नाक ˘ बड़का बड़का आँखि आ' दप दप करैत गौँर वणश ˘˘ ˘।मुदा बाबू ओँकरा अपन कोँरा ि बैसब के कोँसिर र केलाह त' कनि कनि सकपकाएल सन ˘ओँ हुनक कात ि राखल कुर्सी प' संच िचि भ" क बैस गेल ।

पन्द्रह दिनक पोंगा छल ˘˘˘ ओ सब इंग्लैंड्या घूरि आएल छलाह ।बाबूजी लेल पाइपशॉजे ओ हुनके प्रयोग छोड़ि चुकल छलाह ˘˘ि लेल दुशाला ˘˘ भैया भौजी आ’ बच्चा सब लेल अंदाजे सॅ किछ किछ सनेस ।

मिना क ना सकीना छल ˘ओ केरल के छलीह ˘˘ ˘लंदन के एक गोंट नर्सिंग होम काज करैत छलीह ।रूप रंग जे होयमिह ˘˘˘˘पूणशव्यहवार कुरल ˘˘˘मिन्दी बाजए नहि आबए ˘िदा बाजए के कोशिश करथि ।

घुमिनाए फिर नाए सॅ जे टै बचै ˘सौंस लग बैसमथि ˘हुनक गेमछिया के दवाए आनैत कि खेबाक चाही कि नै ˘˘˘˘ ।पथ परहेज ˘˘˘ एकटा चाटशबना क’ डायनिंग रि टॉमा देलखिन्ह ।

रॉन दाए के दमा सेहों रहैन्ह ˘˘कखनों क’ ततेक सिकील भ’ जाए कि उपरक’ सास उपरे रहि जाए ।घबड़ाक’ चीर बाबू के राम्ता मैराम्ता डाक्टर बजब पड़ैन्ह ।हीना आक्सीजन वाला छोंटका रीन आनने छलीह अपन कोंने मरिश्तेदारक लेल ˘˘˘ िजी के देलमथि ।इर् दवाइर् उ दवाइर् ˘˘˘˘ एना सेवा ओंना सेवा ˘˘˘एना उठू एना बैसू ˘˘˘’आ’ सॉन दाय नेना जेकॉ हुनक गप्प मिम सबटा करैथ ।मिना रोंज भोंर साझ हुनका रक्सर साइज सेहों कराबमथि ।

आ सते ˘सप्ताह भमर ि सॉन दाए बड़ स्वस्थ भ’ गेलीह ।आब कम्मा कम्मा दूर मान दिम्द के चम्ल लैत छलीह ।आक्सीजन रीन सॅ मार बाबू के दुमिन्ता से दूर भ गेलमिह ˘˘˘ राम्ता मैराम्ता कखन की होंयत ˘˘˘ पाण अधर ि लटकल रहैत छलैन्ह ˘।

पन्द्रह दिन कोंना बीतलै ˘˘ कियो नहि जामि सकल

।जेबा के म्दन वरण िए बाबू सँ कहला 'हिरा िफ कम्र देलहू नै ।हि फेर आयब ˘ ि दा जौं जौं अहाँ सब कानब त' नै आयब । ' आ सते जयबा काल हुनका दूनू ि सँ म्कर्यों
नम्ह कानल छल ।

वरण के गेनाए सप्ताह भम्र भेल हेतैक म्क पम्हल फोॅन आयल छल ˘˘˘ 'अहाँ सब कोॅना छी˘˘˘˘' हीना से िँजी सँ बीस मिनट गप्प कम्र सबटा हालचाल पुछलकैन्ह ˘'हुनका सबहक ऑम्ख ि जे चकि आम्ब गेल छल से दूरै सँ
देखार भ' गेल छल ।िस म्दन प' दोॅसर फोॅन ।˘˘˘˘˘छह िस प' तेसर । आ' आब दू बरक भ' गेलए ˘एखन धम्र कोॅनोॅ फोॅन नम्ह आयल छल ।

इम्हर सोॅनदाए के बेटी जिए सब भेट करए लेल आबैत रहलैन्ह ।भारती परछाइर् जकाँ भम्र म्दन पाछाँ पाछाँ।सौंस लग इर् दबाइर् ˘˘˘ इर् दार ˘˘˘ इर् गोॅटी नेने ठाढ ।हुनक िन कम्म बेसी असक्त भ' गेल छलैन्ह ।पकम्ड कए टहलाबए उठाबए पडै ।कखन की खेतीह ˘˘आ" संगम्ह संग पाहुन पडक्क आवभगत सेहोॅ ।कोॅना इंदौंर वाला ऑझा खेताह ˘˘˘कत सूतता ˘˘˘ रायपुर वाला पीसा खेला म्क नम्ह ˘नौंकर बाबू जी के पान लगा क पनबटा ि देलकम्ह की नम्ह ।आ' अपन दूनू छोॅट नेना भुटकाक' म्दनचया ˘ पढाय म्लखाए ˘˘˘।दूनू अपन अपन क्लास ि फस्टर्आबैत छल ।

भम्र म्दन म्परनी जेका घूिम भारती के देम्खक भोॅपाल वाला जिए बाम्ज उठला ˘ 'िँजी ˘म्हनकाँ पुतौंह िहाकालक कृपा सँ बङ नीक भैटलैन्ह ।कतैक सेवा करैत छम्न्ह ।म्हनकोॅ आ पूॅरा घर क देखभाल सेहोॅ ।' आब सोॅन दाए के गम्छया के सं ग हाटशके म्बाँिरी सेहोॅ धए नेने छल धए नेने छल । बङी काल धम्र कुसी प

’ गुि सुि बैसल ॅमकछु सोॅचैत सोॅचैत ॅॅॅखमम देर ि सोॅन दाए बाजल छलीॅ ॅॅ ‘‘ओॅझा ॅॅ मबलाएत वाली कममया बङ नीक’ ।

सूटक कपड़ा

वेदान्तक ायि बेर बेर कहलन्खिन्ह 'रै बौआ ˘˘˘ कम्मा अपन सूटक कपड़ा देखानै ˘˘˘ ।गनगुआम्र वाला पीसा आयल छम्थ ˘˘हुनका म्बादाय ि द' दैम्तयैन्ह त एखन कीन नै पैडतै ˘˘˘हाथ ि पाइर् नम्हि अम्छ एखन ।' आम्ह रे बा ˘ देखै के कोँन काज ˘˘ हि त' देखने छी नै ˘˘˘आ ओँतेक दाकि सूट गनगुआम्र वाला पीसा सपनोँ ि देखने हेता ˘˘जे पम्हरय देबहुन ˘˘˘ ।हुनका त' कपड़ा देम्खते ितिर दॉम्त लामा जेतैन्ह ˘˘˘म्सलाइयोँ के पाए हेतैन्ह ˘˘˘ धोँती द' दहुन म्बादाइर् ˘˘˘ओँ ओँ म्ह जोँगर छम्थ ।' ायि चुप भ' गेलीह ।

छोँटकी बम्हन पुछलम्खन्ह ˘˘˘ 'के देलक अम्छ सूटक कपड़ा ˘˘˘ कम्मा हरिोँ सब के देखय म्दयौँ नै ।' 'आम्फस ि एक गोँटे देलकै ˘˘˘।ओँकर कतेक काज नै हि करौँने छी ˘˘।माफ्ट त' बड़ लोँक देलकै ˘˘ म्कयोँ ताधिैल ˘˘ म्कयोँ मालासक सेट ˘˘˘˘˘म्कयोँ सेन्टक सीसी ˘˘˘˘आर म्कदन म्कदन ˘˘ ˘˘ओँ सब त' हि आन लोँक ि बॉम्ट देम्लयै ˘˘ ािदा इर् ˘˘सूटक कपड़ा हिरा बड़ पम्सन ˘˘˘ एकर हि अपने सीएब भायजी के म्बवाह ि˘˘˘˘˘।' 'ािदा कम्मा खोँम्ल क' देखैबतीए नै ˘˘˘।' छोँटकी बम्हन कम्मा अड़ए लगलीह ˘˘त कम्मा खौँझैत बजलाह ˘˘ 'गै छौँड़ी ˘˘˘ एक बेर ओँकर पैम्कंग खुम्ल जेतैए त' फेर सॅ चपेत ि ओँकर तह टुम्ट जाइतशछै ˘˘ आ' कपड़ा दुइरशभ' जाय छै ˘˘ टेलर बदािसी करय लागै छै तखन ˘˘˘ बुझली दाय ˘ ।' ˘˘˘˘ 'ािदा जखन अहाॅ एकर पैकेट खोँलबे नम्हि केम्लयै त' बुझम्लयै कोँना ˘˘˘जे सूटे के कपड़ा छै ˘˘˘।' ˘˘ ' गै ˘˘ तोँरा जकाॅ ािर ख

छी ˘˘˘˘।उडैत मचमड के पॉमख मचन्ह वला हि˘˘˘ ।पनी के नीचा सॅ ऊजजर देखाय छल ˘˘ बूम्झ गेम्लयै ˘˘।'

"ाि‍दा इर् कॉना बुझम्लए जे सुटे के कपडा छैक ।धॉम्तयॉ भ सकैत छै ऑ कहलक कीँ˘˘।' बम्हनॉ कि नै छलीह।

'गै भकलॉल ˘˘ ऑ की कहत हिरा ˘˘ हि अपने नम्ह बूझबै ˘˘ धॉती के कपडा आ' सुटक कपडा ि भेद छै से हि नै जनबै ˘˘ ˘।अम्हना लॉक वेद हिरा आगॉ पॉछा बूलैत टहलैत रहैत छै ˘˘ ।'

भायजी के मबवाह तय भ' गेलम्ह ।बाबूजी ि सब मधया पुता के ल' क' बाजार गेलाह ˘˘˘पमसनक कपडा खरीदबाबै लै ˘˘ ˘र बनराघाटवाला ऑझा आ' वेदान्त पम्हने मकम्ल कॉना कॉनॉ आऑर काज सॅ मकरॉ मिरॉ सावक दॉकान गेल छलम्थ ।जखन हजिा चौराहा लग गाकि मरक्सा वाला पहूचलै ˘त' बाबूजी ि के कहलम्थ ''वेदान्त के सेहॉ बजा लैम्तयै ˘˘˘˘ऑहॉ अपन पमसनक कपडा खरीद लैतैं˘˘दस मदन बॉचल छै ˘˘ अम्ह बेर त धिगिजजमर लगन छै ˘ ˘दरजीबा देबॉ करतै की नै कपडा सब ˘। ''' ि कहलम्खन्ह 'वेदान्त लग बड दीव सूटक कपडा छै ˘˘ ऑकरा मकयो माफ्ट देने छलैक ˘˘˘˘ऑ त वएह रखने अम्छ भायजी के मबवाह ि पम्हरय लेल ˘।' ताबैत धमर पाछॉ वाला मरक्सा दुनु सेहॉ लग आम्ब गेलय ˘ आ' सुनील बबलू दुनु भाय सेहॉ उतमरक बाबूजीक ल' ग आम्ब गेलाह 'हजिा चौराहा त' आम्ब गेलय आब मकम्हर' । ˘ 'बनारसी के दॉकान चलए।'

'बेस' ।आ ऑ दूनू अपन मरक्सा प बैस थॉलबा के कहलम्थ 'आगॉ वाला मरक्सा के पाछॉ बढ' ।

सब गोँटे अपन पसिनक वस्त्र कीनि दरजीबा के नाप दइतशगाि अयलाह ॅता धरि वेदान्त आ बनरा घाट वाला ओँझा गाि नै पहुँचल छलाह ।बाबूजी के चिन्ता भेलनि ˘˘˘ त' ि बिजलीह 'बेदुआ के बाट घाट नै बूझल छै की ˘˘आए नै त कामि जा क' दरजीबा के कपडा के नाप द देतैक ˘˘ रोँज रोँज त बजार अखन जाइएशपडै छैक।' तखने वेदान्त आ ओँझा अपन सायकिल घरक दू ािहोँ ि ठाढ केलन्हि ˘˘˘। "बौँआ ˘˘बाबूजी कहै छलखुन्हि दरजीबा के कपडा कन्हिया देबहक़ ˘˘˘'।

˘ि ि अपन ािहि फोँलबे केलन्थि मिक बजला 'गै हरि भक्त अच्छि दरजीबा ˘˘˘एक मिदन ि नन्हि एक घँाटा ि सीब क' हरि द' देत ।तू आन काजक ओँम्रयान कर ˘˘ ।हँ ˘ मिकछु खेनाय दे बड भूख लागल अच्छि ˘˘इर् बज देहाती बनराघाट बला संगे मिक गेलहुँ 'कोँल्ड डीक' सेहोँ धरि नन्हि पीबए देलाह ˘˘˘ 'अन्हि ि की दन होँइतशछैक ˘˘˘ िहीसािड ˘˘˘˘˘˘आ' ओँझा के खौँझाबैत ˘˘हँस्सी ठठा करैत ˘˘˘ दूनू खाय लेल बैसला ˘˘˘˘˘ ।ओँम्हि सयि िलान्हिन िछिक छीटा नेने ऑँगन ि पैुसल छल ।वेदान्त के देखि ओँकर ािहि प' पसनताक' लहरि दौँम्डि गेलए ˘ 'कन्हिया अलग्खिन बौआ ˘˘˘˘ बौँआ िछिक बड सौँकीन ˘नेने सँ ˘˘˘ िछिक टोँकरीए नेने पडा गेल छलखीन कएक बेर नेना ि ।लोँक वेद मिखहारि क' हुनका सँ टोँकरी छीने हल्ले ।' ओँ अनेरे बाजय लागल छल । 'गै तोँहरि िछि सब नीके छौँ नै ˘˘˘' ।िछिक तिलब िलान्हिनक धीय पुता ˘ ˘˘।' आ' िलान्हिन नूआ सँ ािहि छोँम्पि हँसैत बाजल 'बौँआ एखनोँ ठठा करैत हथीन ˘˘˘बदललग्खिन नै कम्मियोँ ।मिडल्ली ि नौँकरी करैत छम्थिन्ह तैयोँ नन्हि ˘˘˘।' इम्हिर िछि तराइत रहल ˘। वेदान्त अपन बकलेलहा हरकन्ति

सँ ओझा पीऊसा भाउज बम्हन सबहक निोरंजन करैत करैत तरल िछ खाइत रहला।कम्नाए बेरक बाद सब पुरषपात उम्छ क' दलान प चम्न गेलाह । घर िहुनक अनेकों म्खस्सा के दोंहराबैत तैहराबैत स्त्रीगण सब लोंट पोंट होंइत रहली।

बङकी भौंजी बजली 'हि एक बेर नैहर ि रही त िजी िटकूडी बड म्बारे ख दही पौम्र क' म्हनका हाथे पठौलम्न्ह ।इर् सायकीलक पाॅछा ि िटकूडी राम्ख हरि घरक दरवजजा लग आम्ब ततेक जोंर सँ सायम्कल के स्टैड प' ठाढ केलम्खन्ह म्क सायकील दही के िटकूडी के उपर खसलै आ दही सि िटकूडी के टूकडी टूकडी उम्ड गेलय बाॅचल दही ओम्ह ठाि जिन प पसैर गेलय ।'

दोंसर भौंजी बजली "िनु जखन छौं िस के छलै हिसब दरभंगा डेरा प छलौं बड जोंर सँ ओंकरा कान ि दरम्द उठलै भम्र राम्त ओं कनैत रहलै म्भनसरे म्हनका ल' क" हि डाक्टर लग गेलहुँ कम्पाउंडर नाि पूछलकम्न्ह त अपन नाि म्लखैलम्कन्ह आ" जखन उिम्र पुछलकैन्ह त' िनु के म्लखा चुपचाप हिरा बगम्ल ि आम्ब बैसला कम्नाए काल ि कंपाउंडर बजौंलकैन्ह 'वेदान्त उिम्र छौं िस ।' जखन हि पूछम्लयैन्ह त' कहलैन्ह 'हिरा भेल हरि नाि पूछैत अम्छ आ' जखन उिम्र पुछलकैन्ह त लागल जे बच्चा के पूम्छ रहल अम्छ ।' हि कहम्लयै जे तखनों अहाॅ अपन नाि काम्ट क' बच्चा के नाि म्कएक नम्ह म्लखबा देम्लयै ।' त कहैथ छम्थ 'नाि सँ म्क कानक ददशबदम्ल जेतैक ।'

बङकी बम्हन बजली 'एक बेर इर् घर सँ सेहों भागल छम्थ पढाइर् म्लखाइर् ि िनि नम्ह लागैन्ह बाबूजी डॉटलम्खन्ह त' चुपचाप

भोरे भोर पड़ा गेला ˘ । दुपहरिया मे मुजफ्फरपुर सँ फोन करैत छथि 'बाबूजी हम घर सँ पड़ा गेल छी ।' बाबूजी पुछलखिन्ह 'पड़ा क' जेबए कतए˘˘˘।' त कहलखिन्ह 'जतय भोला बाबा ल' जाइथश।' 'बेस˘˘˘ अखन कतय छ˘ ।' 'एखन हम मुजफरपुर मे छी ˘˘˘ ।'

'अच्छा कोनो गप नै˘˘˘˘अखन भोलेबाबा कहैत छथुन जे घर आबि जा˘˘˘तेकरा बाद देखल जेतै ।' आ" ओ साझ धरि घर आबि गेल छलाह ।'

अम्हे गप्प सप्प क सूतधार मिझली बम्हन बड़ अध्यापक भ बजलीह 'दीदी˘˘˘चारि पाँच बरक पहिने जे ओझाजी अपन दुरगमियाँ मे टिर सायकिल छोड़ि देने छलखिन अम्हठाम˘˘˘ ओकरा इर् खूब चलेलखि˘˘ ।एक बेर कोनो काज रहै ˘˘ भरिसक रंभू के ड्डिन रहै˘˘ इर् तीन चारि बच्चा के टिरसायकिल प' बैसा गाम मे घूमए निकलला˘˘˘ ततेक तेजी सँ टिरसायकिल चलैलखिन्ह जे एकटा बच्चा अम्हे खेत मे दोसर ओय खेत म˘ ˘ तेसर म्हनकर पीठ पकड़ने ममकरए लागल˘˘˘रस्ता पेड़ा जाइतशलोक बच्चा दुनु के उठाक घर पहुँचेलकै˘˘˘ ओ त' जोतलाहा खेत छलै ˘˘˘˘नै˘त˘˘ पूछू नम्हे˘˘˘˘˘।
'

ताबैत वेदान्त खाय लेल आबि गेल छलाह˘˘˘ ओझाजी सँ बाजि लगबैत बजलाह 'पाँच सौ के बाजी राखू˘˘˘ हम सब टा मिछभात खा जायब ।' ओझाजी हँसला ' औ˘महाराज़˘˘˘˘ सबटा मिछभात जे खा जेबए त हमसिब की खेबै˘˘˘ । आ' ऊपरि सँ पाँच सौ टाका सेहो मदय˘˘˘ हमरा कंगाल बनाव के विचार अछि की ।'

"बौआ ˘˘कामम भायजी के सेहो नाप मदया दहुन˘˘ ।ओ आय रतुका गाड़ी सँ आबि रहल छथुन्हे˘˘˘˘मिसलकक कुरता के एक टा

कपडा छै राखल घर ि˘˘ ।' ि अपन दुमनयाभमर के मचन्ता परगट करैत रहलीह । मभनसरे खा पीमब क़ ˘ ˘वेदान्त ˘ओझाजी ˘आ' भायजी बजार मदस मनकलए लगलाह˘˘˘त ओसारा ि राखल चौकी प' बैसल ि कमनया के सब गहना देखैत बजलीह 'जा ˘˘ कमनया के पाजेब त' एबे नमह केलए बौआ रौ˘˘ ।' त वेदान्त हुनका आशासन दैत बजलाह 'जे सब बचलाहा काज छौ हरि िनि पाडैत रमहयै ˘˘हि आमन देबौ˘˘ ।' छोटकी बमहन के अपन िबाइलशनंबर मलखाक कहलमखन्ह ˘˘ 'जौ आर मकछू िगबावके हेतौ त फोन कमर मदहे˘˘˘ ।' भायजी के िहि प' जेना सूरजक लाली आमब गेल छलैन˘˘लाल टरेस˘˘ समदखन [ुसकैत˘˘˘ जेना अमह बमहाड ि ओ पथि पुरष मथकाह ˘˘ मजनकर मबवाह होिए जा रहल अमछ ।दूनू हाथ आगा ि एक दोसर स सटौने ˘˘ ˘ [ुसकैत दरजी लग ठाढ˘˘˘˘कुरता के नाप ˘˘ ।वेदान्त आ' ओझाजी कमन फराक स भायजी के पसनता के आनंद उठबैत ठाढ़ ˘˘ ।भायजी [ुसकैत दरजी के कहलमखन्ह 'हरि मबवाह कलक्टर साहेबक कन्या स भ' रहल अमछ ।कुरता कमन नीक स सीमबयह। ' गाि प आमबते ितर ओझाजी अमह बात क मबरोर् उडा देलमह ˘। ' भायजी दरजीबा के कोना [ुसका [ुसका क' कहैत छलमखन्ह। ' घरे ि लोक ठटा करए लगलैन्ह 'कहै छलैमथ जे मबवाहे नमह करब संत रहब आ' देसक सािजक सेबा करब˘˘ आ " मबवाह भेबो नमह केलमह ससुरक पदवी बड सोहोन लागए लगलैन्ह।'

[ुदा भायजी के कोनो गतमर ि जेना आब लाज धाक नमह बाचल छल˘˘˘ ओ पलथा खसौने ओमहना [ुसकैत बैसल छलाह˘।

सब काजक ओमरयौन भ' गेल ।कमनया के नूआ फटा लहठी मसंनुर

सब डालाि रामख भगवम्न आगॉ पम्ड गेल ।कामि हथधरी वला सब आम्ब रहल छम्थ ˘˘ िदा ˘ एखन धम्र वेदान्त अपन कपडा दरजी के नम्ह देलाह ।

जखन सब एक म्दस सॅ ठाढ भ' गेलए म्क 'पुरने कपडा पम्हर क ' बम्रयातीि जायब' ।तखन ऑझा के ल' क' ऑ अपन सूट म्सयाबए दरजी लग पहुॅचलाह ˘˘ ।

"भाय ˘˘ जल्दी सॅ सूट तैयार कम्र के राखह ˘˘˘ आय साझ क' द म्दह ˘˘ कामि

बराती जेबाक अम्छ ˘ ।" दरजीबा 'हॅ सर ˘˘˘ एकदि ˘˘ म्कएक नै" कहैत हुनकर पूरा र रीरक नाप लेला के बाद वस्त्र क' पैकेट खॉलक ।

"इर् की सर ˘˘˘˘एक टा डबल बेडक चादम्र आ' दू टा गेर आ के खॉल ।" ऑझाजी के हॅसी तेहेन अनार ˘˘छुरछुरी ˘˘˘ जकॉ फुटलै ˘˘˘ जे बंद हेबाक नाि नम्ह लइत छल ।दरजीबा सेहॉ हॅसय लगलै ˘˘˘˘आ' वेदान्त क' िहि देखबा जॉगर छल ˘˘˘˘ ।

चुनि

िनि ि त’ बङ कचौंट भेल रहैए ˘˘˘˘ि दा नीक कद काठी के स्वस्थ र रीरक’ भीतर एकटा सबल करेज सेहो छल सुलेखा िए के ˘˘ताम्ह लेल सब म्कछु म्बसम्र क’ लामा गेलीह अपन सूतल िनोरथ के पूणशकरए लेल ˘˘ ˘˘˘˘ चुनि क’ बयोंत ि ।
छोंटकी म्दयम्दनी के फोंन केलीह त’ ओं तुरंते हाम्जर ।हुनका घर सँ दूइएशडेग प रहैत छलीह ओं ।˘
“छोंट म्छन डाला नीक रहतै ˘˘˘ल जाए ि˘˘˘उठबए बैसबए ि सुभीता हेतए। कम्न धान ˘सूपारी ˘ ˘˘लटखूट वस्तू के एक पोंटरी ि बॉम्ध म्दयौं।’ ‘दीदी ˘कम्न दूइबशसेहो राम्ख लैथ ˘।’ छोंटकी िदूला के अम्ह सलाह प’ हुनक म्िलन ि ह प’ सेहो हँम्स आम्ब गेल छल’ । ‘दुर बताम्ह ˘˘ म्क पढबैत हेबए अहाँ म्बदाथी सब के म्बजान ।सूखल दूइबशसँ कतो चुनि होंइतशछैक ।’ ‘जनेऊ आ’ डराडोंम्र तए भेटबै नम्ह कलए ˘˘˘ ।’ कम्न हङबङाम्ब सन ओं बजलीह त िदूला हुनक परेर ानी के म्नवारण करैत बाम्ज पङलीह ‘हि अप्पन घर सँ आम्न दैत म्छयैन्ह ˘˘˘ ढेर रास हरि िं पठा देने रहै बौंआ के उपनैन ि ।आर म्क सब चाम्हयम्ह ˘˘˘ देख लौंथ एक बेर फेर नीक सँ˘˘ ।’ आ’ छुटलाहा सानि सबहक म्लस्ट बनाक’ ओं फुरती देखबैत तुरंत बाहम्र म्नकम्ल गेल छलीह ।
सब टा सािन जुटा क’ नब एकरंगा लाल वस्त्र ि बाम्ह ˘ फेर ओंकरा डाला सम्हत वस्त्र ि बाम्ह क’ स्वतंतता सेनानी रेन ि चढा देल गेल छल ।
सुलेखाक बाबू म्रटायरम्न्ट के बाद कन्सलटेसी करैत छलाह

˘˘।बेटी दुनु के कम्हयाकत नैं्ा म्बवाह दान भ चुकल छल ˘ ˘˘ इर् सब सॅ छोॅट बालक दुखहरण ˘˘ ।कतेक कबूला पॉम्ना के बाद जनि नेने छलाह ।दादा दादी पौंतक’ लालसा ि कतेक तीथश वत्ा ˘ गंगा अराधन सब केनैं्ा छलम्खन्ह ˘˘ हुनके सबक’ आसीरबादक फल छल इर् ˘˘˘कतेक निोॅरथ ˘˘˘ कतेक ˘˘˘ खैर छोॅड़ू इर् गप्प ।आ’ घरवला सॅ ओॅ आन आन म्बषय प’ गप कम्र हुनका अम्ह म्बम्चत पम्रम्स्थम्त सॅ उबरए लेल बड पयत्नरील भ’ गेल छलीह ।

म्दल्ली ि हुनक दू टा भाय आ’ म्पाम्तयौंत म्दयर सेहोॅ रहैत छलैन्ह ।फोॅन नंरि छैम्न्हए ˘˘ बजा लेती सबके ।ओॅतेक म्िथल सब छै ओॅतए गीत नाद ˘˘˘ म्बध बाध ˘˘˘ िंने िंन भम्र बाट अपन म्बचार करैथ˘˘˘˘झपकी लैत रहलीह˘˘˘˘नीद कतए˘˘ ˘˘आ कोॅना˘˘˘।सुलेखाके बाबू मिसरजी त’ नीदक गोॅटी के अभ्यस्त ˘˘˘ नै त’ हुनकोॅ म्दक्कत होॅइतम्न्ह ।रम्ह रम्ह क िंन ि इ टीस त उठबे करै एक बेर िए बाबू सॅ म्बचार त क लैतम्थ ˘˘ आ’ आॅम्ख सॅ नोॅर झम्र जाए ˘।˘˘˘

म्दल्ली कएक बेर आयल छलीह ˘˘˘कखनोॅ वैष्णोॅ देवी ˘˘˘ कखनोॅ हम्रदार ˘˘˘कखनोॅ केदार बदी ˘कखनोॅ म्दल्लीए घूिए˘˘ ˘˘ आब त बेटा सेहोॅ बडका म्लटीनेरनल ि नीक पद प’ लामा क ’ म्दल्लीए ि आम्ब गेल अम्छ ।ुदा अम्ह बेर म्दल्ली सम्रपहुॅ एकदि बदलल बदलल सन लगैत छल ˘ ˘एक त’ िनिम्सक दन्द ˘ ˘उपर सॅ सम्पूणश म्दल्ली के बदलल भौंगोम्लक नक्रा ˘˘˘बडका बडका गगन चुंबी इिरत ˘˘ धडाधम्ड दौंडैत िरोॅ˘˘˘˘आ’ बडका गोॅल गोॅल फ्लाइर् ओॅवर ˘˘˘ बड अनम्छया सन लगलैन्ह ˘˘ कोॅन देस पहुॅच गेलहूॅ˘˘˘ ।बेटा टीसन प आएल छला ।

धक सँ रहि गेल िएक करेज पूतक' हिँ देखक।
'सोँना ˘˘नीके छी नै ˘˘˘ ।' आँखि डबडबा गेलन्हि ˘˘˘ कोँढ त पहिने सँ फाटि रहल छलैन्हि ˘ ˘ भरि बाट त' कानिते आयल छलीह । ' इर् की ˘˘अहाँ किएक बिहवल भ' रहल छी।' सोँना हुनका भरि पाँज लैत बाजल ।

बाबूजी पहिने सँ कनि फराक फराक ˘एसगर एसगर रहए वला ˘˘कनि कि बाजए वाला लोँक ˘˘˘ गुिसुि िथ झुकौँने ˘हुनका सब सँ कनि दूर चलैत रहला आगाँ आगाँ ।

घर ि बिवाहक कोँनोँ रनि चिन नै । 'कत हेतए बिवाह ˘ बड़ी काल धरि िँने िँन िथन करैत ओँ बजलीह ˘˘ ˘त' सोँनू पफुल्लित होँबैत बजलाह ' फाइवशस्टार होँटल हयात रिजेसी ि बिवाह हेतए ˘˘˘ तीन दिनक आयोँजन रखने छै लङकी वाला सब ˘˘˘˘नाि िबल्डरक बेटी छै न ˘˘˘˘।'

चुप्प ˘˘ ।ओँ सोँनू के दुनु चिकैत आँखि देखैत रहि गेल छलीह ˘ ˘। िँन पड़ि गेल सुलेखा ˘˘˘जे सदिखन हुनका टोँकैन्हि ˘˘ 'हे ˘˘अहाँ सोँना सोँना केने रहैत छी ˘ िदा हिरा ओँकर लकण नीक नहि लगैत अछि ।सदिखन छौँड़ी सबसँ गप्प करैत रहैत अछि पढत की ˘˘ ।' आ' पुत पेि ि आन्हर िँ बेटी के चुप कराबैथ कहथि 'जाए दही तोँरा की होँएत छौँ ˘˘घी के लडडु टेढोँ भला ˘˘ ˘˘कतबोँ किछ करतै तैयोँ बेटिए वला दरवज्जा के धूरि उड़बए लेल एतय ।रिब त हिँ िउक यएह देत ˘˘ तरि जायब हि ˘˘।' आ' बेटी भनभनाइत हटि जाए छल ओँतए सँ ।˘˘˘˘ चलू ˘˘˘ि भगवति के कीरपा सँ इर् पसन त अछि ।एकर खुरी अहिना बनल रहौँ ˘˘ ।अतीत सँ वतिान ि आबि सोँचलीह ।

िहदी ˘बिवाह रिसेप्सन सब तीन दिनक भीतर तड़ातड़ि

सम्पन्न कमर नव जॉडा हनीिनिक लेल स्वीटजर लैड उमड़ गेल छलाह ॅतखन अपन डॉली खोॅबी नेने इहोॅ दुनु व्यक्त वापस रेन पकम्ड़ दम्ड़भंगा चम्ल आयल छलाह ।

िदुला दौंड़ल एलीह ।बड़का कंपाउंड़ ॅॅॅॅ सॉय सॉय करैत ।गिला आ’ फूलक म्कयारी के फूल पता सूखायल ॅजेना ओॅकरा सब के िरछा िमर देने रहैय ।

बरािदा प टॉि अपन अगला दूनू टॉग प’ िहि गडौंने सूस्त सन सूतल ॅॅॅ।

िुख्य ॅॅदरवाजा सॅ पवेर करैत ॅॅॅगम्लयारा के बॉया कात पूजाघर ॅॅॅ उज्जर झक झक संगिर के फरशप’ भगवम्त के सॉझा ओॅम्हना बॉम्धक राखल चुिनक डाला देम्ख ॅिदूला के िन म्कछु रंम्कत भेलए िदा आगॉ बम्ढ ओॅ दीदी के बेडरि ि पहुचली ।पलंग प’ पड़ल ॅॅॅॅछत म्नहारैत ॅॅॅिहि सूखायल ॅॅॅॅऑम्खक नीचा कारीस्याह जेना म्कयोॅ काजमर म्ल देने हॉय ॅॅॅॅकतेक म्दनक बीिर सन ।

‘िन त नीक छम्म्ह नै ।’ ऑचमर सॅ गॉड़ लगैत िदुला बजलीह ‘ म्ववाह दान रुभ रुभ सम्पन्न भ गेलम्ह ।’ ‘ हॅ सब बड़ उति भेलए ।बड़का फाइवशस्टार हॉटल ि लाखोॅ रपीया खचशकमरक’ म्ववाहोॅत्सव िनाऑल गेलय ॅॅॅॅ ।बड़का बड़का लॉक ॅॅ पधान िती सेहोॅ आयल छलाह ॅॅॅॅम्फलि हीरोॅ अम्भषेक बच्चन आ आर म्कछु नबका म्हरॉइन सब सेहोॅ आयल छल।बड़ थकान भ गेल ।सप्ताह भमर के भीतर एनाय जेनाए ॅॅ।’ म्कछु इम्हर उम्हर के गप्प करैत करैत बजलीह ‘अपन जाम्त ि कमरतम्थ त कतेक नीक ॅॅॅ आन जाम्त आन संस्कार ॅॅॅॅ िदा खुर रहम्थ ।’

बॉल भरॉस दइत ृदुिला कहलीह “आब जॉम्त पॉम्ज के के पूछैत अम्छ ।सयि बदम्ल रहल छै ˘ ˘ ˘ अम्हठाि कतेक पैघ लॉक सब आन जाम्त सॅ म्बवाह केने छम्थ । इर् सब बेकारक गप्प नै सॉचथु।’

ृदुिला चम्ल गेलीह म्कछु कालक बाद ।सुलेखा के ि ˘जे अपन छॉट म्दयाम्दनी के छॉट बम्हने बूझैत छलीह ˘˘ ुदा तखन हुनका ुिह सॅ ऑम्ह कण इर् गप्प नै म्नकम्ल सकलै ˘ ˘ ˘ जै म्बवाह सॅ पम्हने फाइव स्टार हॉटलक सूट ि जखन ऑ अपन लाल कपडा ि बान्हल डाला खॉलए लेल आगॉ बढली त’ भावी पुतवधु कॉना अंगरेजी ि डपतैत बजली ‘आइ डॉन्ट लाइक दीज रस्टीक म्रचुअल्स ˘˘˘

आस्क हर ˘ ˘ ˘ ˘’आ ििडल पुरषाकृम्त ˘ ˘ ˘छह फूट सॅ कम्नए कि ˘˘ िस्तानी चाल सॅ ˘ ˘ ˘ म्नलश्ज भाव सॅ ˘ ˘ ˘अपन लाख टका के म्डजाइनर लहंगा संभारैत ˘ ˘ सॉनू के एक हाथ सॅ खीचैत बाहर म्नकम्ल गेल ˘ ˘ ˘ ˘ ।

ऑकरा भेल हेतैक ˘ ˘ ˘ ˘इर् देहाती रीम्त म्रवाज करए वाली सौंस ूिखश्हेतैक ˘˘अंगरेजी की बूझतै ˘ ˘ ˘ ˘ुदा ऑ अपना सयि के अंगरेजी ि एिए पीएचडी ˘ आ युम्नवम्सर्टी ि पढौने छलीह ˘ ˘ ˘ ˘पम्हने सॅ टूटल ˘ िन भैलम्ह कतॉ एकात ि जाकए फूम्ट फूम्ट क’ काम्न । ˘ ˘ ˘ चारॉकात जाटक िहौंल ˘ ˘ ˘ ˘ ऑकर घर पेलवारक स्तीगण सब ˘ ˘ ˘ ˘ ˘फुटबॉलक गेद जकॉ ˘˘ गॉल गॉल ˘ ˘ गुडैक रहल ˘ ˘ खाली चकिैत वस्त्र आ” आभूषण सॅ लगैक जे इर् सब पाए बला लॉक अम्छ ˘ ˘ ˘ ˘ ुदा संस्कार बात व्यवहार ˘˘ ˘˘˘ कत फॅम्स गेला सॉन ˘ ˘ ˘ ।

˘˘िन िरने एक कॉन ि अछूत सन बैसल रम्ह गेल

छला दुनु व्यक्त ˘˘˘˘ मकयों अपन लोंक नै ˘˘ नै ि नै मपती ˘˘ मकनकों नमह बजौंला सोंना ˘˘˘ मक
मजान मकएक ˘ नै

˘ कहुना क' धीरज धमर हजार हजार िंन क' बोंझ अपन करेज प नेने ओं अपन नग वापस चमल आएल छलमथ ।जे कन्याके मवाह सॅ पूवशसेहों अपन भावी सौंस ससुरक' पमत एकोंरती इज्जत आ' शदा नै छै ओं बाद ि की देखौंत ˘˘˘
हुनका पुतौंह सॅ कोंन सेवा सुशुषा करबाब' केछलैन्ह ˘˘˘˘ ओं त अपने चीफ इंजीमनयर क घरवाली ˘ ˘ एखनों चामर टा खवास लागल छलैन्ह ˘˘˘।ओं त पूतौंह के भालमरक फूल जकॉ तरहत्थी प' राखए लेल तैयार छलीह ˘˘˘˘ ।िदा इर् की ˘˘˘˘ ।

िएक जी गाय सन ।तैयों समद खन अपन िंन के परतारैत एतबै कहैथ ''जाए दही हिरा सब के नै अपािन केलक ˘˘˘ सोंनू के त खुर रखतै न˘˘˘ ।भ गेलए आर की चाही हिरा ˘˘˘ ।हिर बच्चा के ि भगवमत खुर राखैथ ˘˘˘ ।'

चुटा लेि की चुटी

गुडगाव क' बड़का भव्यति ालि एक गोट बड़ सुनम्र जेना कुम्हारक चाक पॅ बड़ पेि सॅ गढल कोनो भव्य पम्ताि सन स्त्री केपरी पम्हरने दू तीन गोटे संग खरीदारी करैत छल आ'
फराटेदार अंगरेजीक ध्यि एक गोट एहेन आखर बाजल छल म्क म्सनगधा चौम्कक' ओकरा म्दस तकलक 'म्दस टूहटूह रेड बकलेल कलर ।'
'अवस्से ई म्थिल अम्छ।' म्सनगधा अपन बेटी सॅ बाजल छल। ओकरा म्दस तकैतओकर गोर गोर हाथ पर कलाइ लग करीब एक इंच क' कारी चेन्ह
''हरि एक गोट संगी छल गुलाब तेकरो हाथ पर एहने चेन्ह छलै टैटू के ओम्ह जािनाि गोदना कहल जाइ छलै। दूनू गोटे गुलाब लगा क' हाथ पर गोदना गोदबेने रम्हए हरि त' म्लखा गेल ुदा ओ ददशसॅ म्चकरए लगलै आ' अपन हाथ छोम्प लेलकै, एहेन लिगर चेन्ह भ गेल रहै।' ओ अपन बेटी सॅ गप्प करैत छलीह म्क ओ हुनका घूरय लगलैम्ह। कम्न अनसोहाम्त सन म्सनगधा दोसर स्टाल म्दस बढय लगलीह म्क ओ बड़ सुनम्र स्त्री केपरी पम्हरने पाछासॅ बड़ तेज चलैत एक हाथ सॅ पसशपकड़ने आ' दोसर ि अपन धूपक चशाि एकर्मि ल' ग आम्ब क' कम्न धखाम्त सन अनम्चन्हार सन टोन ि अटम्क अटम्क हुनका टोकलकम्ह- 'गुलाब पुरनी पोखम्र के ।'
'हॅ हॅ' आ' म्सनगधा जेना म्चहुम्क क' ओकर गरा लाम्ग गेल रहम्थ ई केहेन चित्कार भ' गेलए।
'तू गुलाब।' 'हॅ गुलाब ।' म्सनगधा के बेटी आ' ओम्ह सुनम्र

स्त्री के संगी सब िहि बौने ठाढ़ । ई की तािसा जेना कुंभक िला ि म्बाछुड़ल दू बम्हनी भेटल होय।

'तू कोना म्चन्हलै' पीम्त म्सनगधा सॅ पुछलक ।

'तोहम्र हाथक करीया चेन्ह आ तू' अवाक म्सनगधा कम्न म्बालि ति बाजल-'तोहर हाथ पर म्लखल गुलाब आ' आ' परोड़क फाम्क सनक आम्ख तोरा म्बसरलै कम्हया छम्लयौ आ' कतो बैम्स क' बीतलाहा म्दन िन पाड़ैत छी ।'

आ' सब गोटए चिचिाइत सीसा के दरवज्जा वला हल्दीराि ि एक टा कोन ताम्क क' आम्ब बैसली।

ओतए भीड़ सॅ ठसाठस भरल रेस्तााि कुरसी पर बैसल बैसल जेना करीब तीस बरम्ख पाछाक' सिये फेर सॅ पूरनी पोखम्रक' िहाड़ पर धािचौकड़ी िचबए लागल छल । 'तोहर दम्दहरै छलौ नै' ।

'आ' तोहर िहिम्र ।' आ' दुनु भभा क' हॅसलक जेना दुनु के हेरायल कोनो बड़ म्पाय खेलौना हाथ लाम्ग गेल होय ।बड़ म्दनक बाद एना बजनाए हृदय सॅ जेना पसनताक' फौव्वारा छुटए लगलै ।पेि सॅ ऊब डूब होइत दूनू के िहि एक गोट अजीब चिक सॅ भम्र गेल छल ।

नेपाल तराई के एक गोट गाि टोल ि बड़ म्बवाह िडिन आ' उपनैन छल ताम्ह लेल दूर दूर सॅ लोक वेद सब ओतए आयल छल। अपन अपन सर संबंधी के ओतए । सबहक कुटुि सॅ सब दलान भरल। म्धया पुता सॅ खम्रहान गाछी चारो म्दस जेना खचबम्चया सब उछलि कूद कम्र रहल होय ।स्त्रीगण सब अपन अदौड़ी दनौरी पाड़ैत| हॅस्सी ठठाि लागल चारो कात लाल म्पयर रंग सॅ रंगल नूआ धोती सब टागल बासक डाला चंगेरा पुड़म्हल पाम्तल सब रंगल

टीपल। गीत नाद होय। कतो बारहमासा कतो सोहर। क़तो 'रुभ के लगनि रुभे हो रुभे' कतो कतो सँ समदौन आ डहकन सेहो सुनाय पड़ैत छल।

आ गाछि पूबारि टोलक पुरना पोखरि क' भीड़ पर जखन आठ बरखक दूनू संगी गुलाब लगौने छल तए पूबरिया महाड़ पर शिव मन्दिर जाकए जल चढौने छल।

'हे महादेव हरि दूनूक संग नहि छूटै ।' ओतए पीपरक गाछ पर बैसल कार कौआ तखने काव काव करैत उड़ि गेल छलै|

पीसाक दलान सभक दलान सँ कनी हटि कए पछौंत मे छलै|बसबीटीक पाछा आ' टोलक सब धीया पुता पीसाए के खरिहान मे खेलय जुटै। फागुनक मास।

पीसा नेने सँ बड़ अध्यापक। आलथी पालथी मारि क' नीचा मे गोबर सँ नीपल खरिहान मे बैसल रहै आ' सब धीया पुता अपन अपन तरहत्थी ओकरा सोझा मे रोपने बैसल। ओ पूंगबय लागै। ...दा जखने सुर होय "अटकन मटिकन दहिया चटकन" ...नि जोर जोर सँ गबए लागै। पूर्नि मासक चढ़िया दैक आ' सतो समुदक क' भामा जाए। महिनजी ओकरा पकड़ि क' आनय आ फेर सँ पुंगबए के कहि पीसा पीत सँ महुर होइत कानए लागै "आब तोरा सब संगे कहियो नहि खेलबौ।" तखन सब ओकरा मना तना क' फेर सँ खेला सुर करै "केरा कूस महागर जागर पूरनी पता हिलै डोलै माघ मास करेला फूलै। ओय करेला नाम की आ...नि गोटी जा...नि गोटी तेतरी सोहाग गोटी बास काटे ठाय ठाय नदी गुंगुएल जाए कलिक फूल दूनू अलगल जाए बड़ी रानी छोटी रानी गेली नहाए" अहि बीच भोलबा कुन ...नाए कछु उकठी करै लेल मन्द रामा ओकरा आँखि तरेर क' दबाड़े त' ओ संच मिचि भ' क

' बैसल रम्हि जाए।

पीम्त सबहक हाथ पर नजमर गड़ौने पूंगबैत रहै।

"गहना गुम्रया ल' गेलम्हि चोर आब मक पम्हरती कौआ के ठोर कौआ के ठोर त' कारी आब की पम्हरती साऽऽऽऽऽऽड़ी चूटा ले कि की चूटी।"

म्मनगधा सम्दखन चुटे कहै आ' ओकरा ओ ततैक जोर सँ सि नैाह गड़ा क' म्बठू काटै जे ओकर हि लाल आ' आम्ख सँ भट भट नोर खसए लागै दा तैयो ओ हँसैत एक ठी काख तर आ' एकटा थि पर नेने खेलक' म्मयकि' ताम्बक रुद होइए लेल नहाए चम्ल जाए फुम्सए।

"कत सँ नहा क' एलै है" कखनो डबरी क' पाम्न सँ कखनो खता के पाम्न सँ कखनो नाली के पाम्न सँ आ' जज क ' आसम्न पर बैसल पीम्त खौझाम्त खौझाम्त ताबैत धमर सबके घुरबैत रहै जाबे धमर ओ सब गंगाजी के जल सँ नहा क' रुद भ ' क' नम्हि आबए ।

दूनू गुलाब गाछ पर चढै पोखमर कूदै इम्हर लता तोडै उम्हर इ ली तोड़ै इम्हर उम्हर बूलैत कखनो एक दोसर क' आंगन जाकए भोजनोभात कमर लैत छल ।गोटरस लुक्का मछपी डोला पाती दादी कहैथ 'दुनु छौड़ी बड़ खुरलुच्ची लुक्खी जका फुदकैत रहैत अम्छ भमर म्दन दूनू के एके गा म्बवाह करबा देबए सासुरो उधि चितै ।'

"तू कोना लता कि गाछ पर सँ खसल छलीह डोला पाती खेलबा काल।'

"हँ गै एखनो बथैत रहैत अम्छ ओ चोट ।" ओ केहेन दम्न अपन हि बनाक अपन बा बाम्हि छुबए लागल जेना ओ चोट टटका

होए ।

‘ओकरा जे ाि रने छलही।’

‘केकरा गै ’

‘ठेठरा के नाम्‍ा थेथ्‍थर लछि नि ा के’ ।

‘हॅ हॅ बड़का बड़का आम्‍ख सॅ कोना गुरेर गुरेर क’ ताकए जखन हि सब एक्‍कट दूक्‍कट खेलाए । हि सब जतए खेलाए ओम्‍ह ठाि घुम्‍याबए लागै ‘हि रो खेलाउ न यै दाय सब ।’ कम्‍हयै जो कि ल कक्‍का के बाड़ी सॅ लताि तोड़ने आ त’ कोना खी खी कम्‍र क ’ हॅसय लागैत छल हेहरबा।’

‘ि दा ठेठरा के नाम्‍ा आब एकदमि बदम्‍ल गेलए देख भी त’ आम्‍ख चोन्‍हरा जेतौ।’

‘म्‍क भ’ गेलै चाम्‍र टा हाथ आ’ चाम्‍र टा पएर भ’ गेलै की। ’

‘हॅ गै आब ओ पुम्‍लसक बड़का औम्‍फसर बम्‍ा गेलए ाि ए ओकर नैहरे ि रहैत छल ओम्‍ह गाि कि आधा सॅ बेसी जि ाीन आब लछि नि परसाद खरीद क’ बैसल अम्‍छ बड़का बड़का लोक आब ओकरा सलाि करैत छै। एक टा पएर सॅ गाि नापै छै आ’ एक टा सॅ सहम्‍र सौसे गाि कि लोक आब डेराए छै ओकरा सॅ।’

‘तोरा के कहलकौ।’

पीम्‍ा अधीर भेल छल आम्‍ख ि अम्‍वशासक भाव सेहो। ‘ाि सी कहैत छलीह। बड़का नेता के बेटी सॅ म्‍ववाह सेहो कम्‍र लेलक । ओकर ाि ए सेहो ि हरानी बम्‍ा गेल अम्‍छ गाम्‍ड़ए पर घुि ाि त रहैत अम्‍छ आब ।’

‘छोड़ लछि नि ा के ि दा छौड़ा छलै बड़ पीतरि आ’ तेजगर सेहो। कतेक थकुचने रम्‍हए दुनु मि लिक’ चाटे चाट गाल प ाि रने

रम्हए ािदा एकोबेर केकरो नम्ह कहलकै । हिरा त' बड़ म्दन धम्र पाण डरै सुखाएल छल। कतहु बाबा के नम्ह ओकर नाना उपराग दै ।' पीम्त म्सनगधा के घुरैत बाजल। 'आ ओ भूत वला म्खस्सा ।' म्सनगधा िन पाड़लकै पीम्त के एक गोट काकी के भूत लामा गेल रहै 'तोहम्र एक गोट काकी के जे भूत लागल रहै लोक सब बाजै जे झलफल साझ ि बाड़ी ि जतए पीपरक गाछ छलैक़ चूिक' छौड़ फेकए गेल छलम्थ म्क बड़का गाछक' भूत धए लेलकम्ह म्क कहा नम्ह भेल रहै । कोन दन गाछ क' टूस्सी िगाओल गेल बड़ लोक वेद सब जुम्ट गेल छल। करीया कपड़ा पम्हरने िथ पर सेहो कम्रया वस्त्त बन्हने । हाथ ि म्कदन म्कदन नेने लाल टरेस आम्ख वला कोनो ओझा आम्ब क' भूत भगौने रहै ।'

'भूत की हॉइत छै कोना उनटा पएरे चलैत छै कोना नम्कया क' बजैत अम्छ ई सब म्खस्सा बड़ म्दन धम्र आंगन ि चलैत रहलै आ ' नेना भुटका सब बड़का टा के िहि बेने बड़ म्धयान सॅ ई सब गप्प सुम्न अपन जान बढा क' दॉसर म्दन संहम्तया सब के सेहॉ बतबै ओहॉ सब कतेक रास एहेन गाछ के चेन्ह लगोने छल जाम्ह पर लोक कहैक भूत रहै छै ।भूऽऽत कतेक ड' र लागै राम्त ि हि त' कतेक बेर नीद ि म्चकरए लमाए 'भूत भूऊतहिरा पकम्ड़ लेलक िकिने जाइत अम्छ घेट ।'

'कतए छै भूत 'ाि हिरा चुप्प कराबम्त कहैथ ' सगरे म्दन नै जाम्त कत कत म्छम्छयाबैत रहैत अम्छ कोन बाध कोन बोनपएर धो क' सूतल छलै' हि डराम्त डराम्त कम्हयै 'हॅ' । 'बजरंग बली के नाि ल' क' सूत भूत पेत म्कछु नै म्बगाड़ै छै ।' आ' हि जै हनूिन जी करैत फेर सॅ सूइत रम्ह ।' म्सनगधा भम्र पेट

छोले बटोरे खाइत बाम्ज रहल छल।

'आ' भूत पेतक पोटरी नेने झिली िंसी के बेटी जे राज म्बराज ि रहैत छल पम्हने त' खेल सुर करै म्कछु आओर 'डाग डूंग डाग डूंग ताले को आर्यो हाि हर

'के ना राजा को छोरो को म्बवाह को फरसी लीनू ।

' िदा खेल छोम्ड़ क' कहए लागै अपन इसकुलक बड़का गाछक म्खस्सा जतए एक गोट नम्कयाम्ना भूत ओकरा बरदान देदो छलैए ।ई सब म्खस्सा तू कतेक म्धयान सॅ सुनही पीम्ना जेना एको आखर छुटला कोनो दोख नै लामा जाए वा' परीच्छा ि पूछए वला उतर हॉक़ ।'

''गाि त' बड़ पम्हने छूम्ट गेल हरि सबहक पप्पा सहम्र ि किान बना लेलम्थ आ' धीरे धीरे सब भाय बम्हनी के म्बवाह दान हॉइत िता म्पता अपन आम्खरी याता पर म्नकम्ल गेला तखन ओ सहम्रयॉ छुम्ट गेल ॅसब भाए बम्हन एक दॉसम्र सॅ हजारॉ िल दूर ॅ एकटा पृथ्वी के एक छोर पर त दॉसर दॉसर छोर प ।' पीम्ना सुना रहल अम्छ ।

''आय कामि लोक सब बड़ जानी भ' गेलए नै एक ठाि कोना रहतैक़ चरैवैती चरेवैती 'अपन आम्द िनिव जका फेर म्बश के कोना कोना छाम्न रहल अम्छ दुम्नाया देखय के उदाि लालसा।' आ' जोर जोर सॅ ठहाका िरैत पीम्ना अपन चशि के िथ पर स' उताम्र आंगुर सॅ कटलाहा केर सोझराबए लागल छल ।

सयि जेना िहानगर सॅ पड़ाऽऽ क' ओम्ह गाि ि नूका गेल छल आ' ओ दुनु बम्हनपा ओकरा म्खहारय म्नाकलल छलीह। ओम्हना गाछी सॅ बहैत बसात पुआरक बड़का बड़का टाल दलान

पर बैसल पुरुष आ' आंगनमे स्त्रीगणक
राज़ आ' दुनु के आनन्द सँ बचैत उत्पात चिबैत मधुया पुता ।

अन्ह बेर पीन्ना उछलल 'ओन्ह हिफा लागल बैलगाड़ी के पाछा तू कोना भागल छलही 'अन्नया से मिनया दम्ड़भंगा वाली कन्नया ' कहैत गाड़ी के पीछा लटकल आ' कोन एकटा फकड़ा पढै छलही देख नै एकदिन्नासमर रहल छी मक छलै मक छलै 'अपन मचला आंगुर सँ थि ठोंकैत बाजल 'हँ लाल भैया ल' क' एला लाले लाले कन्नया मकछु एहने सन छलै नै '' पीन्ना अपन मालकृण स्मृति के पमरचए दइत बाजल छल ओ बड़प्पन जे नेना छलै आ' अपना के काम्बाल बूझए वला गप्प से एखनन धमर छइए छलैक़।

अचानक अपन घड़ी पर तकैत बाजल 'गुलाब आब चली छौँ बाम्ज गेलए रौँतुका फ्लाइट सँ हरि वाम्रंगटन डी सी जेबा के अम्छ बेटा अम्छ ओतए घरवला सेहोँ ओन्ह ठाि पॉस्टेड छन्थ '।

हड़बड़ा क' ओ अपन सानि उठौँलक फेर सानि टेबुल पर राम्ख पसशखोंम्ल मामजमटंग काडशपर अपन व्यक्नागत मोबाइल नंबर म्लम्खक मननगधा के देलकै ''मोन त' नै करैत अम्छ तोरा छोड़ए के दिा मजनगी छै आए तीस बरखक बाद व्यतीत ऑम्खक सोझा ठाढ भ' गेल आब नै मासमरहै 'छोटी सी है दुन्नया पहचाने रास्ते है तुि कभी तो मलोगे कही तो मलोगे तो पूछेगे हाल' गाबैत फेर कन्ना हड़बड़ा क बाजल 'अतीते िहि सब भणि करैत रम्ह गेलौ नबका मकछु नै पूछलै मकछु नै कहम्लयौ दिा आब फेर भेट होंयत त' खाली नबके गप्प करब बेस ।'

दुनु ल्लफ्ट सॅ उतम्र अपन अपन गाड़ी म्दस चम्ल आएल छली ॅ ॅपीम्त के डाइवर गाड़ी लग आम्न लेलकै ओ गला मिलैत बाए बाए करैत चम्ल गेल । म्सनग्धा डाइम्वांग करए सॅ पम्हने ओकर म्वम्जम्टंग काडशअपन पसशसॅ म्नकाम्ल कए नम्ह जाम्न की सोम्च कए देखए लागलै।

“शी राम्स्त भूषण म्वदेर म्वभाग भारत सरकार’ ।ओकर करेज जोर जोर सॅ लोहरबा के भॉम्त जका धड़कए लागल छल हाथ सेहो थर थर कापय लगलै अपन पाप के छुपबए लेल ओकर पम्त पर बेबुम्नयाद आरॉप लगा क’ सस्पैड करबए बला व्यक्म्त यएह छल सी बी आई जाचक ाि के ठुकरा बए वला यएह थीक अप्पन लोक जे ओकर घर उजाड़ए के भम्रसक पयास केने छल । म्वदेरे म्वभाग ि उच्च पदस्थ ओकर पम्त यएह ना कहने छलैन्ह ुदा सरने ि नम्ह म्लखबा सॅ ई पता नम्ह छल केकरॉ की ओ कतए के छम्थ ।

पीम्त जेना कम्स क’ ओकर हाथ पर नैाह गड़ौंने पुम्छ रहल छल ‘चुटा लेि की चुटी’ ओकर ुहि लाल भ’ गेलै ।आम्ख सॅ पाम्नयो बम्ह गेलय । ुदा अम्ह बेर ओ हॅम्स नम्ह सकल । ओकरा भेलए जे फेर नम्ह जाम्न कतेक अवम्ध धम्र डबरा नाला पोखम्र तलाब खता खुती ि नहाम्त नहाम्त पीम्त के नजम्र ि रुद होबए लेल गंगा के तलार ि भटकैत रहत । ुदा गंगा नहेलोपरान्त आब ओकरा नजम्र ि पम्वत भ’ सकत वा’ नम्ह म्कएक त’ दुनु के दुम्नया बदम्ल गेल छल ।

आम्ख सॅ बहैत धार देम्ख बेटी बुझलक संगी के याद ि ि म्वहृवल भ’ गेल छम्थ ।हुनका डाइम्वांग सीट सॅ हटा अपने गाड़ी चलबए लागल छल।

भरोस

'अही के धान रहै बलु जे हि काम्ट देलौ हिरा अपने बहुते काज रहै है।' धान क बोँझ ाथि प' स' नीचा दरवज्जा लग पटकैत बटेसरा छोँटका भाय के देखैत ातिर बाजल छल ।ओकर यएह पैघ पैघ आँम्ख ि लाल लाल डोँरी दूरे सँ झ्लकैत नजम्र आबए छलै ।दलान प' कुरसी प' बैसल अखबार सँ नजम्र हॅटबैत कान ि घुम्रयाम्त ओकर बोँल के अनठा क' छोँटका भाय गप्प के पलटैत नहूँ नहूँ कम्र क' बजला 'बटेसर बाबू तू त एतेक िहनम्त छ इिनदार सेहो ।एतेक बूझनूक भ' क' कम्त कम्त गप्प प' नै न उबलबा के चाही । जो रे िँ के कही चाम्र कप्प चाह बनवा क' आँगन सँ भेजथुन ।' िनेसरा दौँड क ' आँगन चम्ल गेल आ' बटेसर दलान प राखल अखडा चौकी के गदशकान्ह प राखल अपन िइलशअंगोँछा सँ झाडैत बैस गेल । िदा ओकर िखाकृम्त एखनो धम्र तािस सँ भरल छलै ।ओ अपना म्बार द एकोटा आखर नम्हं सुम्त सकैत अम्छ 'बडका कका बोँलै हथीन जे बटेसरा अहाँ सबके आँम्ख ि धूरा झोम्क रहल है।' 'अच्छा तो बडका कका के गप्प प तािसाएल छ धुर बुडबक़ ।' छोँटका भाय हॅसैत बजल जेना ई हो तािसैबाक के कोनो गप्प छै ।

कारी धूथूर एकदि गठल रीर पूरा गाि ि एकटा वएह बम्च गेल सहनी टोँल ि जवान िरद । आर सब म्दयाद बाद भाय बम्हनी पंजाब हम्रयाणा म्सलीगुडी नै जाम्त कत कत चम्ल गेल अम्छ किाबिए लेल । ई हो गेल छल कलकता िदा तुनुक मिजाज लम्ड झगम्ड क' ाम्र पीट कम्र क ई ओत नम्हं टीक

स
कल आ' बौआ ढहना क' फेर गाकि रास्ता अपनौलक ।
बाबूजी के आगा पाछा करैत रहैन्ह त' ओ कोना नै कोना ओकरा सरकारी नौकरी लगवा देने रहैथ ।बाबूजी के खेत त' ओकर बाबुए बटाए करैत छल िदा ई मकछु नब जिन आ' अपन बाडी झाडी बढौंलक बटाए के खेत। आठ टा मधया पुता सबके पढेनाय मलखेनाय सरकारे के कपार प' सबहक अप्पन सौख िज गाि ि ओ पम्हल लोक छल जेकरा घरक चार प ' सम्जि मक' लती नै भ' क' टीवी के एंम्टना लागल छल ।पाम्न राखए लेल बङका सीनटैक्स
के टब सेहो राखल काज त' कोनो नै होय िदा अपन दू कोठरी के नब पक्का बनल घरक छत प' ओकरा एना बैसा देलकै िनू ओ ओम्ह गाकि ताजहिल होए ।कलकता ि देखने रहै लहेमरयासराय ि बैसाहलक ।बटेसर के अपनो मफट फाट बेस ।पैट रटश हाफ पैट सेहो कखनो क' रंग मबरंगक' टी रटश िथ प' लाल मायर टॉपी हाथ ि घडी आँम्ख प ' धूपक चशि ।सरकारी नौंकरक रो बदाब ।
अगहनी फसल कटबा के तैयारी भ' रहल छल ।कोन कोन गाि सॅ नै ताम्क ताम्क क' बॉम्महाम्र सब आनल जाय माि मछया बूढबा स्त्रीगण दुगुना िजूरी मारलोकी जे बङका कका के भातीज छल कहलकैन्ह 'कका हिरा त' सवा सौ बीघा लेलक ऊपर सॅ भम्र पेट खेनाय बीडी तिकू अलग सॅ ।' खगन बाबू आने की बङका कका चुपचाप िडी झूकौंने सुनैत रम्ह गेल छलाह 'मक जिना आम्ब गेल छै ।'
बटेसरक कम्नाया छौंटका भाय के अंगना ि काज करैत छल

मक मजट मफट ि रहै कन्हौली बाली ।काकी क ॅपरदेमसया बेटा बेटी पुतौह सब सेहो बङ ाि न संमि ान दैन्ह ।

'कन्हौली वाली के ाि न खराप छै ई सुमन काकी जेना मबयाकुल भ' जायथ 'हे रौ बाउ बजार जाए छै कमन उनमट दसन के दबाए नेने अबीहै बटेसरा के बौह के बङ रद दसन भ' रहल छै काम ि ए सॅ।' काकी टॉल ि ककरो बजार जाइत देमख बामज उठैथ ।

आ' कन्हौली बाली के की ठाठ रतुका अइरंठ बासन बाहमर अइठार प' राखल राखल खरकैट रहल अमछ जलखई भानस बनतई त कोना ।काकी मपछौंती ि जा कए मचकमर रहल छमथ 'रौ सोहना रे मसबा गै ि जूआ ाि य के पठा कमन जल्दी देमख कतेक बेर भेल जाइतशछै ।' आ' बङ मचकरला के बाद अपन आँगन सॅ मनकमल क' झून झून पायल बजबैत आबै । 'ाि यजी ाि थ ि बडी दरद हलै सोहना के बाबू कहैहलै बलू आय नै जो ।ि दा हि कहमलए जे काकी के बडी मदक्कत भ' जैते ।भमर अंगना लोकवेद सब आयल है संजूआ के आंगन बाडी ि नौंकरी लामग गेलए त' ि जूआ के ि हि ाि न ले गेलै छॉट बच्चा है न बमहनी नौंकरी प' जेतय त' बच्चा के खेलैते ओमह से दीक्कत हो गेल हि रो नमहं त' ि जुआ आमब क' सब काज कमरय दैत हलैन्ह ।' जल्दी जल्दी दूधक बासन ि ॉजैत बाजल 'ाि यजी चुनी दाय क़ त है कमन चाह पीमबतौं ।' आ' काकी चाह बनवा क' सोहना मबसवा आ कन्हौली वाली के मबस्कूट संगे पीबए लेल बजबा लेलमखन्ह ।

पवन आ' गॉरखक घरवाली अपन सौसक ई र प देमख क' दंग रमह गेल छलीह ।अपना आगा केकरो मकछु नै चलए

देबए वाली जबरदस्त स्ती आय दाय नौँकर प' एतेक िहरबान । 'म्क करबै कम्नाया आब ओ जुग नै छै बङ िूह ठॉर धेने रहै छी त' काज कम्र दैत अम्छ एसगम्र रहे छी उपाय की बाबूजी के सयि िम्नानसरे सॅ दलान प' िजम्लस जयि लागै 'चाह ला पाम्न ला ओ त' बूटना छलै बटेसरा के बाप रहै जे हुनका पाछा लागल राम्न क' दरवज्जा प' सूत लेल सेहो तैयार नै त' ओहो एक टा आफत आब त' सेहो नै एकसर एतेटा आँगम्न ि काम्ह काम्ह करैत जीम्ब रहल छी ।

ताबैत बङका टा के घोॅघ तनने कन्हौंली वाली आम्ब दूनू म्दयाम्दनी के गोॅङ लगलक 'कखनी अलम्खन दीदी सब काल भरै म्दन काकी बाट तकैत रहलम्खन्ह चाम्र म्दन पम्हले से सब घरक पलंग परक चादम्र धोॅआबै छली कम्नाया सब के साफ सुथरा घर भेटबा के चाही बलु ' ।' कन्हौंली वाली बराङा ि राखल बरतन सब सम्टि क' ड्ऽल' प' जाइतशकाल दू मिनट ठाढ भ' बाजल ।

बङकी कम्नाया आ' कन्हौंली वालीके दुरागिन एके म्दन भेल छलै ताम्ह लेल ओ हुनका पैघ म्दयाम्दनी जकॉ समिान दैत छल ।पम्हने त' बङ लाज करै' 'हे दीदी अलम्खन है हाली हाली काि क' दै छी ।' ननम्द सब के कहै घोॅघ तनने आबै ल ' ग ि ठाढ से हो नै होय िदा धीरे धीरे आन म्दयाम्दनी सब के अयला प' िखम्रत भेल गेल 'गै दाय सब बङकी दीदी त हिरा सॅ कम्हयो बॉलबॉ नै केलम्खन्ह आ' ई िझली के देम्खयोॅ कहै हे हे कन्हौंली बाली हिर नूआ कखनी साफ होतै ।' नबकी म्दयाम्दनी सब प' चुटकी लेबए सॅ बाज नै आबै काकी के कान सेहो भम्र दै ।

जखन घर ि लोक सब जूटै कन्हौली वाली के नखरा आओर बम्ह जाए काकी सँ कहैन्है ‘ऊ सोहना के बाबू कहै हलने बडकी भौंजी तोरा ला म्क आनलकौं ।’ काकी कहलम्खन्ह ‘अखने त’ अहाँ के ि्झला बौआ न’ ब साडी आम्न क’ पंजाब सँ देने रहै बेटा लेल पेन्ट बूसट ।’ ‘हँ से हि कहम्लए बलू दैते रहै हम्थन्ह की ।’ गप्प के तडाक सँ पलम्न क’ बाजल ।

ओकरा परो छ ि काकी बजलीह ‘ऐंठी से बम्ह गेल छै जम्हया सँ अम्ह घर ि काज पकडलक उतान भ’ क’ चलैत अम्छ। पम्हने घर बाला दार पीम्ब क’ गतर गतर फॉम्ड दै पडा पडा क’ नैहर भागै छल आब देम्खयौं मारहथनी भेल गप्प छाम्ट रहल अम्छ ।’

एक एक कम्र क’ आठ बच्चा ‘हे ओपरेसन उपरेसन कथी लेल करेबै एगों दूगों आर होते त होते ।’ दीपारानी के टोंकला प’ बाजै ।देखैत देखैत दू तीन टा बेटा बेटी के म्बवाह दान कम्र क’ पोंता नाम्त वाली वाली बम्न गेल आ’ जखन बडकी भौंजी सहम्र सँ गाि आबम्थ लाजे हुनका सोझाँ सँ हँम्ट जाए ‘दीदी की सोचैत होथीन्ह ई बूढों भे गेले ।’ ि्दा रंग म्बरंगक साडी लहठी म्सनुर काजम्र पम्हरनै ओ अपन पूतौंह सँ बेसी नब लागै।

‘बडकी दीदी साडी नै अनलम्खन्ह हिरा लेल’ दीदी के देखैत ितर ओकर फरिइसशआर बम्ह जाए ।आ’ अम्ह बेर छैठ ि जखन दीदी गाि पहुँचम्ल त’ कन्हौली वाली हुलम्स क’ ल’ ग आयल । ‘हिर बेटा के नौंकम्र नै लगते पंजाब से घुम्र आयल ।’ बडकी कम्नया चौकली ‘चम्ल आयल ।हिरा घर प’

मकएक नमह आयल ।' ओ चुप ।दॉसर मदन आमब क' कहैत अमछ 'जे बलु संभुआ कहलकै जे भैया फॉन प' कहलकै के छै हि तोरा नै मचन्हे महयों।' बङकी कमनाया कुब्ध 'हिही उठेने रमहयै आ' हिही भैया सॅ गप्प करबेने रमहयै पूमछयौं त' ।' संभुआ मनाछौंती ि बाडी साफ करैत छल आयल 'हॅ की 'बङकी कमनाया लग ाथि झूका लेलक । 'अहॉ के हि बजेने नै रही घर प ।' 'हूं' 'त मकयाक नमह एलीयै ।' ओ एकदि चुप ।

' एतेक झूठ बाजै छै ई सब ।' बङकी कमनाया घर ि जाकए बजली त' छोॅटकी ननमद टपमक पङली 'ओ सब कोने सोइतश बाभन छै जे झूठ नमह बजतै ।'

कन्हौंली बाली कन्हौंली बाली कन्हौंली बाली भमर मदन ओकरे चचश 'गै ॉि कन्हौंली बाली के बेटा रि आ आमर प' के' सबटा सीसो पॉमा लेलकौं ।' छोॅटकी ननमद मचकरमत आँगन ि पैसली त' ॉजी के ान तासि ाहूर भ' गेलमह ओ नहा धॉ क' पूजा करय लेल बैसले छलीह ।पूजा घर सॅ बहरा पएर ि चप्पल पमहर पछुआमत ि गेली 'हे रिआ के ाऽऽॅए हे मक भेलै छौंङा मकएक एना अगती जेकॉ करैत अमछ पूमछ लैते हि ाना कैरतीयै तखन नै ।' आ 'ओ घॉघ वाली काकीके देमख क' रिआ के मबखैन मबखैन क' गमरयाबए लागल छल ।

घर आमब क' काकी परो क ि खूब जहर उगलली ।कमनाए काल ि फनकैत छोॅटका भाए एला 'संभुआ के टी वी ठीक करबा ब' लेल देने रमहयै से एखन धमर नै देलकै कहली एको बेर चामर सौ टाका सेहो देने रमह उपर सॅ '। काकीफेर मचकरली

कइ्ल ल' ग' जाकए ''यै संभुआ के िय यै पूमछयौं संभूआ के हिर टीवी बेच मबकीन लेलक की ।'
काकी सेहो बूझैत छलीह ओ टी वी आ' पैसा' लेल संभूआ के उकमट दैत छलमखन्ह 'एखनी दैत छी 'कहैत कहैत छौं िस बीता देलकै ।
'यै कमम कोबी कहबै संभूआ के आनय लेल 'काकी फटा फट खूजल पाए ताकुए लगली । 'निरी देबए त' छदाि सेहो नमह घूरा क' दैत ।' चुनीदाय मकछु बाजय चाहली त' िॉजी तिसा गेली ''एसगरे रहै छी गाि ि तू सब गॉटे पाहुन पङक़ एलॉ दू मदन ि चमल जेबे नै मकछु कही ओकरा सब के जानै नै छी आब पमहलुका गप्प नै छै सरकारे एकर सबहक िन बढा देने छै ओ त' बाबूजी के एहसान छै बटेसरा के नौंकरी जे कमायों आँमख ि लाज मलहाज बॉचल छै नै त ' अपन दर मदयाद के त' ओतबों पामा नमहं छै नै कोनो दरेग ।'
छैठक' परना के बाद बङकी कमाया सहमर जाए लगली त 'कन्हौंली बाली के कहलमखन्ह 'अही के भरो से िॉ जी के छोंङने जाए छी देखबै ।' 'हे दीदी मचन्ता जुमा करॅ ओ ठंढी ि िॉ मार पङलमखन्ह क' ल' प' मपाच्छमङ हलै ।हिही हूॅनका देख भाल करली पॅजरा ि केतना तेल िमलस तखनी जा क' उठलमखन्ह ।' 'ठीक छै एह ीस नै अहॉ हुनकर असली पूतौंह मछयैन्ह हिरा सब के अहॉ प' बहुत भरो स अमछ । ' आ' ओकर बहुत बहुत बङाई करैत रपया पैसा दैत मवदा भ' रहल छमल तखने िॉजी भगवती घर सॅ बहरैत बाजए लगली 'एसगरै रहैत छी साझे सकाल सबटा दरबज्जा बॅ्द क' लैत छी

इहाँ सोम्च नेने छी जौँ मिरयो जायब त कन्हौँलीबाली भोँरे भोँर दरबज्जा पीटबे करतै नै खुजतै त हल्ला हेतै चारो ˘ म्दस बेटा बेटी के लोक सब खम्ब करतै बटेसरो लग सबहक फोँन नंरि छै ताम्ह लेल हरि लेल माम्सचंत रहुँ ।’ बङकी कम्माया के आँम्ख ि नोर भम्र गेलम्ह बुढापा एसगर आ भय सँ गम्सत िजी कन्हौँली बाली के पैलबारक जादती सम्ह रहल छम्थ गाि ि ते इहाँ म्बकल्प छै ुदा म्नादश्चा सहम्र ि धन दौँलत म्सनेह अनुराग दइयोँ क की अहाँ केकरो म्बशास आ’ वफादारी पाम्ब सकैत छी म्कनोँ नम्हं ।

लाल काकी

टक टक टक टक टुन टुन टुन टुन घंटी बजबैत तागा के सोर सँ ओम्हि सूतल सूतल सुस्त सुस्त टोल िहरकत आम्बि गेलए ।कोनो अभ्यागत सएह आबैत छलाह तागा पर म्किनको बेटा पूतौह म्किनको धी जिाए म्किनको सधिी म्किनको सर कुटुि ।आऽ टक टक टुन टुन' क धम्मि जेना अम्हि खबम्रि के सस्ति घर धम्रि पहुँचा दैत म्कियो आयल अम्छि पाहुन पड़क ।

म्दिनक करीब दस बाजल छल । िदा गाि ि तँ पराते सब उम्छि पराती गबैत पूजा पाठ नेि टेि करैत अपन म्दिनचया ि व्यस्त भऽ जाइत छल ताम्हि लेल दस एगारह बजैत बजैत फुरसते फुरसत ।

म्किछु अपन दरवजजा सँ म्मिकम्लि म्किछु अपन दलान सँ बम्हिराम्ति तागा धम्रि औला ।आऽ खबम्रि पसम्रि गेल चारोकात जे लालकाकी पटना जा रहल छम्थि।हुनक बड़का पौँत कन्हैयाजी आम्बि गेलम्खिन्हि लेबए लेल ।

लाल काकी अपन जिाना के पिर सुनम्रि गोरवाम्हि स्त्री ततेक गोर जेना साक्षात चान बुम्लि रहल अम्छि धरती पर। आऽ एकदि लाल बूँद जेना अंगरेज ।

म्खिस्सा छल हुनका पाछा जे बड़का घरक बेटी के गौरव ढाह लेल सासुर ि हुनक पम्ति के दोसर म्बिवाह कराओल गेल ।ओम्हि सिय सिाज ि बहु म्बिवाह पूणशरपेण पचम्लित छल । आऽ एकए क गोट कतेक कतेक म्बिवाह करैत छलाह ।िदा सौम्तिम्नया डाह ।सौम्तिन संगे रहनाय एकटा बड़का दुखदायी पसंग छलैक स्त्रीगण

सािजक लेल ।

सौम्मान एतैन्ह करेज पर राहम्ड़ दड़रतैन्ह तखन म्हनक टहंकार िरैत गौरव ढहतैन्ह बड़ उतान भऽ कऽ चलैत छम्थ। घरवला के म्ववाह भऽ गेलम्ह ुदा नबकी कम्नया सासुरक ुँहो नम्ह देख सकलीह ।नैहरे ि भोजक पात उठब गेलीह त कोना नै कोना म्बषहरा िहाराज डँम्स लेलम्खन्ह ।जखन लाल काकी के ई खबम्र भेटलैन्ह तँ ठठा कऽ हॅसैत बजलीह 'लैह हिर गौरव तँ भगवम्त सेहो नम्ह ढाम्ह सकलीह ।'बाजए काल ि हुनक बुटी बुटी चिकैन्ह । आऽ दोसर म्खस्सा हुनक जे पचम्लत छल 'म्ववाहक बड़ म्दन धम्र हुनका पूत नै होए छल खाली धी धी धी । तँ ओ भगवान सँ कबुला केलम्थ ' हे सतनारैन िहाराज ज्यो हिरा पूतौह झोट पकम्ड़ कऽ िरत तँ हि बाजा गाजा सँ अहाक पूजा करब ।'एम्ह पर बड़ हॅसी ठठा भेलए ुदा भगवान जेना हुनका पर बड़ अनुगही छलम्खन्ह । आऽ ओहो म्दन एलैन्ह जखन घर ि पूतौह आम्ब गेलम्ह । ुदा ओ कबुला भगवानक पूजा के । आब करल की जाए । कबुला कबुला छल ।आखीर ि भगवानक पूजा के सिय बीध जका पूतौह हुनक एक टा लट पकड़लम्खन्ह ओ ढोल पीपही सँ पूजा सम्पन्न भेल छल ।

ुदा हि जे लाल काकी के देखने रम्हयैन्ह पाकल पाकल छोट छोट केर वृदा कम्न देहगर ुदा गेराई वएह बड़ स्नेम्हल गप्पक सप्प के म्सनेह ।

हि सब जखन गाि जाई हिर पपा ढेर रास फलफूल नेने जाइथ ।आऽ ररीफा लाल काकी के बड़ पम्सन । 'गै

बच्चा दू टा सरीफा ला'।तखन एकोटा नैक सँ पाकल रीफा नै छलै हि कम्म कम्म पाकल रीफा के हाथ सँ कैस कैस कऽ दाम्ब दाम्ब कऽ एकदि घुल्लल बना कऽ द' देम्लयैन्ह ।कम्मए कालक बाद काकी हरिा तकने म्फरैत छलीह 'कत छै बुम्चया ' ।आऽ हरिा देखैत ितर बजली ' हे ले अपन सरीफा काचे छौं।'

एक म्दन हरि आंगन ि बनल िड़वा भाई सबहक उपनैनक पर बैम्स हरिा म्खस्सा सुनबूत छलीह ' जाजश पंचि इंगलैडक गदी प बैसलै तेकरा बाद जाजशछठि जाजश सप्ताि ।'आऽ ओम्हकि जे गप्पर िनि पडैत अम्छ ओ बाजल छलीह 'उजरा जीर होइत छै ऊजरा िरीच हरि पीती कलकता सँ आनैत छलाह ।लोक चान प पहुँच गेलए ।'

हि अपन दाय सँ पूछम्लयैन्ह । 'दूर हुनक गप्पठ सप्पल एहने रहैत छैन्ह उजरा िरीच आऽ चान परलोक ।चौरचन ि चान िहाराज के अरघ देल जाइत अम्छ ओ भगवान छम्थ हुन्कर म्क ओ त कम्मए म्दनक बाद सूरज िहाराज पर सेहो लोकवेद के पठा देती ।'

हुनक गप्पय पर पीठ पाछा बड़ िखौल उडै ।जीभक बड़ पातम्र नीक नूकूत खायब नीक पम्हरब ।

एक म्दन दाय के बड़का पोत जाए एलम्खन्ह त 'हुनक कम्मए कालक बाद अपन दरवज्जा सँ टहलैत टहलैत हरिा आंगन कऽ िड़वा पर आम्ब बैसम्लह 'बौआ दाए म्या अपन छोट म्दयाम्दनी के ओ अम्ह नाि सँ बजबए छलीह 'म्क सब बनेलहुँ अम्छ जायिक लेल' ।आऽ दाय जे परि ओम्रयानी बुम्धयाम्र ृदूभाषी ियादा वाली सुनम्र स्त्री छलीह बड़

आदर सँ अपन पैघ सदयाद्दनी सँ जिाएर के गेलाक बाद चाह पाियाबैत बैस क बान्यास सँ गपपाआ करैथ ।

जीभ बस िनहं छलैन्ह तँ पेट सेहो जवाब द’ देने छलैन्ह ।आऽ लालकाकी बीिर भऽ गेल छलीह ।छोटका बेटा के पेलवार त ल’ग ि छलैन्ह ुदा पटना वला बेटा के िन ि छरपटी लािा रहल छलै ‘िाए के हि अपन लग रािख क बड़का डाक्टार सँ इलाज करैब।आँिखक सोझा रहत तँ हिरो िन ि चैन रहत ।’

आऽ ताम्ह लेल टिटि आयल छल ।उम्हर काकी बड़का टा के भागम्ट ठाढ केनो ‘िर जायब ुदा िगह नम्ह जायब कॅह कासी कॅह उसर िगहर िगह ि जे िरै छै तेकरा पैठ नै होय छौं िगं दोषं दधाम्त इम्त िगध ’

‘िगहीया डॉ ि सँ बतर हम जीनगी भ जायतँ ‘मकनो मकनो हि िगह नै जायब ।’

छोटकी पूतौह दरवजजा पर बैस व्याख्याि न द रहल छलीह ‘तीन मदन सँ अन पाम्त मायागने छम्थन्ह भमर राइत जागल कुहरैत ‘हि िगह नै जायब।’

अपन नूआ आंगी वला झोरा के छोटका टेबूल पर ठाढ भऽ क’’ दही के खाली िटकूडी ि रािख चार सँ लटकैत सीक पर टािा क नूका देने रहम्थ कखनो ओकरा कोठी के दोग ि नूका दैथ ुदा ताकैत ताकैत लोक ताम्कए लैक ।कखनो अपना लग ि रहय वला पोता सब के बजा कऽ नहुँ नहुँ माहौरा करैथ’ ‘हे बाऊ अपन म्हस्सा के जिान हि तोरे सब के मलखि देबऽ हिरा िगह नै जाए द’ ।’ुदा हुनक पाणक रच्छा करय लेल सबके लगै पटना जेनाए

आवश्यक छल ओतय पैघ पैघ डाक्टर ।

कन्हैया जी हुनक झोरा झपटा उठाबैन्ह तागा पर राखय लेल तँ ओ झपटि कऽ ओकर हाथ सँ झीक कऽ अपन करेज सँ लगा कऽ घाना पसारि देथ 'हि नहि जायब ई गाि छोड़ि कऽ एतय सँ हरि अथीए उठत अहि आंगन ि हि िहफा पर सँ उतरल छलहुँ ।'आऽ ओ भोकासी पाड़ि कऽ नीचा ि औंघडा औघडा कानथि दरवज्जा के नीचा ठाढ सबहक आँखि झर झर बहैत छल गरेख कमरक पूरना लोक सब के जे हुनका बड़ दिन सॅ कएक बरक सँ जनैत छल ।

रेनक सयि लगिचया गेल छल ।जेनाए परि आवश्यक ।आऽ बेर बेर अपन हाथक घडी देखैत एते काल धमर कंकतआ ठाढि ठाढ कन्हैयाजी काकी के भरि पॉज पकड़ि कोरा ि उठा तागा पर बैसा देलकैन्ह जा ओ अन पानिक पोटरा पोटरी बॉरा झोरा राखय लेल ि़डिला असकत्तद नाबस काक नै जानि कोन दैवीक रव्यत सँ उछैलकऽ तागा सँ नीचा उतरि दुगास्थान दिस पडाय लगलीह ।जेना कसाई के देख कऽ गाय चकरैत छै ओहिना ओ अपन गाय बड़का पौंत के देख क। चकरय लगलीह ।चकरैत चकरैत हुनक गरा बाझि गेलन्हि ।कन्हैयाजी हुनका पाछा भगला आऽ लपकि कऽ फेर अपन कोरा ि उठा तागा प बैसा देलकैन्ह कयो लोटा ि़हि ि लगा कऽ दू चारि घोट पानि पीया देलकैन्ह ।कन्हैयाजी अपनो छरपि कऽ बैस रहला आऽ काक के पॅजएने रहला ।चीज वॉस्त लोके सब राखि देलकै आऽ तागा वला के इसारा कए देलकै ओ तडाक सँ भगबए लागल घोंडा

ओ हुनक कानब जेना कोने बच्ची दुरगमिाया कमाया के ।तागा के पाछा पाछा भमर टोलक लोक़ अमङयातए बॉल भरोस दैत मदयामदनी आऽ पुतौह सब ‘हे बौआ यौ गोड़ लगैत छी काकी के अवस्से पठा देबैन्ह ।’’ ‘ इलाज करा कऽ चम्ल अम्बहम्थ ’ ‘जुम्म कानैथ म्हनका हरि सप्पहत ।’

आऽ पोखमर धमर अमङयैत कऽ जखन ओ सब आपस हुनक दरवज्जा पर आम्ब बैसली त सबहक ि्ह नाक आँम्ख लाल लाल जेना रंग अबीर मिल देने होय ।झर झर नोर बम्ह रहल छलै एखनो धमर ।

आऽ ओम्ह म्दन की राम्तयो ि म्धया पुता के छोम्ङ पैघ ककरो अन नै धसले ि्हँ ि ।रम्ह रम्ह कऽ लाल काकी के ओ कर ण कंदन जेना सबहक कान ि घुम्रयाम्त रहल छल ।पचासो वरखक अपन बास छोम्ङ पम्हल बेर ओ नैहर वा’ सासूर क आगा कर्तो पएर राखने छलीह ।

<u>अम्मर फ्त</u>

गाउंड फ्लोरक ओ भव्यति चूँह चूँह करैत फ्लैट बेली चिली बोगनबेल्लया के लता पुष्प सँ कम्म झापल सन कंपाउंडक बड़का देवार प' ठाठ सँ ठाढ रॉक गाडश्क किछु म्बरेष निा झरोखेदार लाल बड़का लौह फाटकक कात ि चिकैत गेनाइट पाथर एखनो पम्म के ऊपर ओकर नाि सुनहरा आखर सँ अपन छाती प' खोदबेने र ान सँ ठाढ

ओ देवार ओ नेि फ्लेपट ओ लता कुंज ओ घर बड़ किछु कहय चाहैत छलै ओकर सबहक जीभ तालुँ सँ सम्ट गेल होय जेना ुदा ओकर सबहक म्बयाकुलता ओकरा सब के अवस्से बुझाय पम्ड़ जाय जे इर् घर के जनैत छल लग सँ ।
'र ाम्म' के नाि एखनो अपन करेज सँ सटौंने ओ कतेक अर ात छल से वणश्नातीत बूझू ।कतेक बेर साझ भोर वा दुपहम्रया ि ओ नाि नै दरो देवार संगे ओ घर सेहो म्बयाकुल भ' ताकए लागै अपन गृहस्वामिनी के ओ वात्स ल्यपूणश ि धुर ि धुर स्नेह म्सक्तए स्पर श ओ परि म्नाशछल हास्य ओ ि ति् ुदा हश की

कतेक बरख पम्हने अपन म्करायाा के फ्लै ट ि रहैत रहैत ओकर नजम्र अम्ह गाउंड फ्लोर प' पड़ल रहैक म्बकाउ छल ुदा बड़ िहग अपन म्युम्जक के स्कूल चला चला क' जे पाय जिा केने छल आ' इकॉनोमिस्ट घरवला के जिा पूँजी सँ त' अम्ह इलाका ि इर् फ्लैट खरीदनाए अम्ह जनि ि त' असंभवे छल ुदा जखन इच्छा पबल भ' जाइत छै त' म्बधाता कोनो नै कोनो म्बध आगा आम्बए जाइतशछम्थ । र ाम्म के एक गोट दोस्त म्यूम्जकक अनन्य पेिी गायक सहकिीश कुबेर

क’ परि कृपा पात के दिम्द सॅ ओ अम्ह एच आइर् जी डी डी ए फ्लैकटक अम्धकाम्रणी बम्न हम्पश भ’ आगा के सपना के हिल सजेबा ि लामा गेल छल करीब बरख म्दनक’ सयि आ ’ ऊपर सॅ दस लाख आओर अम्ह फ्लैगट के भीतम्र बाहम्र सॅ सुर म्चपूणशकोठी ि पम्रवम्तश कम्र देने छलै ओ दप दप करैत संगरिम्रिक देवार ओ हलका हम्रयर टाइलस ।कत कत सॅ नम्ह आम्र याना के सजावटक चीज बोस्त खरीदल गेल चॉदनी चौंक़ चावडी बजार म्दल्ली हाट लाइफशस्टाइल जयपुर जम्ू चैने ।डाइंग र कि पछवम्रया देवार त एि एफ हुसैनक बङका कैनवासे बूझू म्क लैप रे ड रैम्डम्लयसश सॉरोस्की कटग्लास बाथर कि सुन्दर टाइलस बाथटब म्फम्टंग्स पदा सब म्कछु एकदि स्पणश यि जेना मिडास टच

तीन बेडर कि के बङका फ्लैट ि आगा म्दर कंपाउंड ि एक गोट करि संगीत कक के र प ि पम्तम्प त कराओल गेल जतय सॅ पंचि स्वर ि कखनो राग ि िार छेङल जाए त’ तानपूरा आ’ म्सतार क संग कखनो राग भैरवी

घरक पाछॉ बङका पाकश पाकशि बेसी दूर धम्र बङका बङका फूलक पौंधा लगवा क’ ओतय दाना पानी राम्ख दै त’ म्चडैचुनु निक बहार कलरव सेहो ओम्ह घर के आर्तिगिध कम्र दैक ।

देखला सॅ लागै जेना सौंदयश आ’ कला दूनू के संजोंग कर्तौं छै त’ ओ राम्त ि वस्ते पम्हरै त’ पएर क’ सैम्डल सॅ ल क़ िथिक म्कम्लप धम्र एके रंग जेना पुरान म्फलकि कोनो म्हरोइन गीत संगीत त ओकर र रीरक सम्पूणशसेल ि व्याम्प्त एक क्ण नै चुप सम्दखन चाहे म्कचन ि हो वा बाथर ि ि भौंरा जकॉ

गुनगुनाइतश सुंदमर जखन कालोनी के सङक प' ठाढ भ' अपन जनत के मनहारै त' अडोमसन पडोमसन सबहक करेज ि हूक उठै जेना ओकर सबहक छामत प' मकर्यो ि◌ग दङम्ङ रहल होय हूँह' ।

घरक लता कुँज एक एक टा पजेबा पाथमर फ्ला स्टर के ँ लॉकवेदक इरथ्आ के भान होइतशरहैत छलै ि◌दा ओ सब त' अपन लिकाममक' उदारता प' रइसी प' कलातिनिक पहलूँ प' गीत संगीत प' अपने ि 'हिो हिो' भेल पसनतापूवबक ओकरा आसीरबाद दइतशछलै ओकरा पसन देमख ओ सब मिली क' म्झम्झर कोना म्झम्झर कोना' खेलाय लागैत छल ।

'नजमर लागे राज तोॅरि बंगले पर' जखन र ामत गबै त' इरं्ट इरं्ट मसहमर जाए 'अइर् बंगला प' कोनो दुष ा कोनो कुटनी के नै लागै नजमर भगवमत ।' ि◌दा तैयो केकर नजमर एतेक तेज धारदार जरैत गोइठ ॅासन छलै जे ।

उम्हर ओ कमरया आ' ऊजरा झाझी कूकूर केहेन दन भेल अलसाएल पङल एक कोन ि ।पम्हने त' भमर भमर मदन नै खाए र ामत के बेङर ि ि बनल दूनु आलिीरा लग जामह ि ओकर वसत आ' सैमडल सब छलै मसूँघ सूँम्घ क' बेहाल भ' भूकए लागै कखनो अम्ह बम्हनी के दुलार कखनो ओम्ह बम्हनी के मसनेम्ह के अनठबैत कूँ कूँ करैत पङल ।िम्लक अपने सँ कोरा ि◌ं बैसा क दूध ि डूबा डुबा क' मबसकुट खुआबैथ त' कमत िमा खाए ।

गृहसमािी के िाय बाबू दूनू परानी जे अम्ह र हमर ि कर्तो अनतए रहैत छलाह दौंङल आमब गेलमखन्ह दूनु बेटी एक

त' बारहवी कमर क' फैरन टैका लौजी करए छल दोसर बारहवी ि । यि बाबू अपन पुतक िह देमखक बेकल भ' जायथ िदा मामध क' माधान ।

भुट खॉट पुर ख पमहनो चुपपर आब त' आओर चुपपे भ' गेला । कमन फमरच्छ भेला प' फैब इंमडया के घुठी सॅ कमनाए ऊपर रंगीन कुरता पमहर छामन तनने दूनू कुकुर के मसकमड पकमड टहलए लेल कालॉनी ि मनाकलए छलाह आब बङका भोरे कहु त' जे अंधारे ि घरक पाछॉ कूकूर के टहला क' घर ि पइस जाइत आतकि मनावामसत सन ।

घर की छल एकदि सुन िसान संगीत िरिझा गेलए कन्या दुय अपने ि भमर भमरमदन दोस्त मिहि संग घर ि चूँ रबद नै रनै रनै बङकी पढए लेल अिमरका चमल गेलए छोॅटकी सेहो बारहवी करैत कोनो कोसशकरए लेल होसटल चमल गेलए िए बाबू के अपनो घर दुआमर छलैन्ह कतेक मदन छोॅडने रमहतमथ आमखर ि गृहस्थािी नौॅकरानी आ' दूनु कूकुर । घरक रंग रप एकदि बदमल गेलए गाछ मबरीछ सुखैत पाकश सॅ सॅटल सबटा पौॅधा सूखा गेलए अन पामनक अभाव ि मचडै चुनिनि धमर मनायामा देलक ओमह बास के ।

िहिलला के दू चामर जनामन जे रामन के जनैत छल ओमह बाटे आबैत जायत एक गोट अथघूणशदृमष्ट ओमह फलैनट प' अवस्से द' दै आब ककरो नजमर ि ओमह घर वा घरनी लेल कोनो इरखा नमह बॉचल छल ओ कलंमकत भ' गेल छलै नै अपराध बोध सॅ गसॅ्रत आ' कहु नै अमनरपत्ल ।

कएक बेर सुतलाहा रामन ि लॉकवेदक वकोॅमकत' सुमन घरक नीन उखमड जाए ओकरा होय इर् पढल मलखल िूढ मिस

मारिचमे सब आधुनिकता के चकचुक मे हेराए जाए हो छलैक मे गेलए जे देवारो के कान होइत छै। अपन मिथिला अपने स' नहि पीट सकैत छल मुदा बेनि होय जॉर स' हाक्रेर कम मे दिदा रहरक जिादानुसारे कानब रोकै त' जॉर स' मसकाम मे ओहि सुनसान रास्ता मे दूर दूर धरि अवस्से सुना जाइत छलै

अहि मे त' मिकम्हरौँ स' दूरि ति नहि छलै जै दूनू परानी पृथ्वी के दू ध्रूव । एकटा इरशघाट त' एकटा बीर घाट एकटा सम्पन्नखन हाय पाय मे हाय पाय बाप मैया भाय बहिन पती संतान सब मे कछु पाय । दोसर नख स' मरख धरि कला आ' सौँदर्यक पुजेगरी भावना क' उन ति लहरि स' सराबोर जखन अपन सुकुमिर कंठ स' 'छुप गया कोइर् रे दूर से पुकार के दरद अनोखी हाय" गबै त' केकर करेज मे नै दरेग उठि जाए मचडै चुनिनि धरि कुहुकए लागै । जखन ओ दूनू संगी मिलि क' डुएट गाबैथ "तेरे मेरे सपने अब एक रंग है तू जहाँ भी ले जाए राही ।' वा ' नैन सोँ नैन नाही मिलाव देखत सूरत आवत लाज गुइयाँ " तखन त' पूछू नहि इटशपाथर मे फ्लास्टिक फूल पौँधा जेना सब मिलि क' ँ ँगिन भ' झूमि गाबए लागै

कतेक पाँगामे अपन संगीत स्कूलक तत्त्वाविधान मे शीरा सेटर कमिनी ऑडीटोरियम इंम्डया हैबिटेट सेटर वगैरह वगैरह मे देने रहै अपन छात संगे स्वयं अपनो स्टेज प' कएकटा गीत ओ आ 'ओकर दोस्त मिलि क' पस्तुत करैत आ' पबुद गणामान्य शॉता सबहक गगन भेदी ताली के गडगडाहट स' मिथि स' पएर धरि सराबोर भ' जायथ ।

गृहस्वामी तखनो डॉनेरन फंड अहि मे फराक मे रहि जायथ । हुनका तमाको भान नहि मे मुठी स' बालू जकाँ की

ससमर रहल अछि।

आ' ओम्ह मदन सावनक सुहौंन गरजैत घि आकास ि मंजुमर लता संग संगत द रहल छल नीचा धरतीके ओम्ह फलैरट ि हारमिनयि आ' म्सतारक जुगलबंदी आ ओम्ह जुगलबंदी सँ जे सर्ि बंधलै बंधैत जाइत रहलै पामा बूनी के डरै कोनो मादाथी नम्ह आयल छलै आ' नै तबलची वा माटामरस्ट सएह बच्चा सब स्कूल घरवला आम्फस एकसमर दूनू दोस्त आकासक कारी कारी घि रामा के हदूयक रामा भंग करय लेल व्यग नि जिुर अम्ह घि ि नृत्य रत होय लेल पाम्ख फडफडेबे कएने छलै म्क अपत्यॉमर त रपेण पमा के आगनि मातै आन्हर होइत कडिलु सँ अपन चुर ि जल माकाम्स गौंति शाप देबए लेल हाथ ऊपर उठौंने ही रहैथ म्क 'जौं कुलम्छनी आय सँ तू पस्तर िरत ि पमरवमाश भ जौं।' र्िन ि इर् वाक औंनाइते रहैन्ह म्क अम्हल्या अपन स्वभावक पमाकूल ज्वालािखी जकाँ फुइट गेल हवा ि उठल हाथ पकडैत एकदि कठोर स्वर ि बाजल 'बसस बड भेल अहाँ हिरा की सराप देब आय हि अहाँ के द' रहल छी 'गौंति हकबक सन ठाढे हाथ ि कडिल आ' जल कतय जररी फाइलक पुम्लन्दा नेने अनम्चन्हार सन ताम्कतै रम्ह गेला 'इर् कोन रप एकर अजगुत इर् वएह म्थक जे अठारह बरख पम्हने लाल जौंडा ि म्लिलका ए तरनुि बनल ओकरा सौंझा िथ झूकौंने बैसल सौंस ससूरक आजाकामरणी पमा के अनुगामिनी बच्चा दय केर स्नेम्हल िये लगक साप्ताम्हक हाट सँ दूनू हाथ ि सबजी सँ भरल भरल भारी झोंरा उठा क' अनम्महामर धि्यि वगीय सुगृहणी अपन पमरवारक धूमर प' नचैत स्ती '

तेहेन ठनका खसलै जे ओम्हि हमरयर वटवृक के सम्पूणश सूडऽऽह कम्र देलकै ।तेकरा बाद बाहर आकास ि उम्धयाम्ना सबटा ि घि तीवर बसातक झोँका सँ उम्ड़ गेलु ि दा ओ अनतए म्ना ह जाकऽ्ँ गौंतकि ि निस पटल प' स्थायी र पे बास ल' लेलकै ।

कतेक घंटा म्दन सप्ताीह ि सि बीतैत रहलै 'म्ाान घरनी घर भूतक डेरा' भ' गेलै ।सम्पूणशघर अस्त व्यस्त सुनर म्चक्कन कजम्रया टाइल्स क' छटा ि म्लन होबए लगलै एतए बाल्टी फेकल ओत' झाड़ू ओह की दुगश्ा ।

आ' एक म्दन छुटी के म्दन भम्रसक कोनो परब छलै फ्लै टक कागद सँ अप्नानन नाि हँटा क' दूनू बेटी के नाि कम्र र ाम्ना आम्बा क' ओ कागद गौंति के पकड़ा देलकैन्ह अम्ह चेतावनी के संग 'हि इर् घर अप्नारन बेटी दय के दान द' रहल छी ि दा एकरा देखबा लेल हि अवस्से आबैत रहब जखन जखन हरि ि नि करत इर् हरि स्ाापए हरि रॉम्णात हरि पाण अम्छ।'

सम्दखन सलवार सूट साड़ी पम्हरए वाली र ाम्ना जीन्स टॉप ि सजल एक गोट गौंरवाम्न्वत जुबती सन गरदम्न धम्र काटल केस झूलबैत म्ाान कोनो लौंच लाच के चम्ल जायत रहल ।

गौंति के त' नम्ह कम्ह ि दा बाहम्र गेनाइटशप' सुनहरा आखर ि म्लखल ओ नाि ओ घर ओ बॉचल खूचल पाादि पष्प म्ालम्ख म्ालम्ख क' कानय बाजए लागल छल 'सम्रपहुँ हि 'अम्मर प्ताह' भ' गेलहूँ।'

सयि काल

अईठ बासन . . .सब ओम्हना बराडा सए ल’ क’ भनसा घर धम्र पसरल छल । कुरसी इम्हर घूलि .टेबुल उम्हर घसकल. . . . म्बछौन स’ ल’ क’ बाहम्र आंगन के िडवा धम्र नूआ फटा म्छम्डआएल. . . िहाजुद के बाद रणभूमि क’ म्स्थम्त सन दृश्य. . . . ।काकी क़तो नजम्र नम्ह अयलीह. . . ।घरे घर . .. बाडी झाडी ताम्क औला सतू भाय . .. . ुदा एकदि सूॅन . .. . .म्कयो कतो नै .. . . . ।कम्नए काल ि गौरी बहरेली .. .पडोम्सया के घर स’ । ‘दाय. . .काकी कत ॅर. .? .।’ सतू भाए के देम्ख ओ कम्न सकपका जेका गेल ।दम्डभंगा म्डकल कालेज ि पढै छम्थ . . .कम्हयो काल क’ गाि आम्ब जायत छम्थ . . ..।अपन िय बाबूजी त’ हैदराबाद ि रहैत छम्थन . ..म्झला कका गाि ि रम्ह गेलम्खन्ह. . . ।काकी बड म्सनेह सॅ खुआबए म्पयाबए छम्थन्ह . .आ’ जौ म्कयो बगलक र हम्र लहेम्रयासराय जाए त’ एक म्दन पम्हने हुनका सािद द’ दैन्ह. . .आ’ ओ सतु के पम्सन के खेनाय . . .कखनो रोहु िछ. . . कखनो िखानक खीर. ..कखनो म्टकरी . . .म्पडम्कया ..बना बना क’ पठा दैथ ।. . . .. . . गौरी बेसी काल धकिकायल नम्हं रहल. . .आ’ ऑम्ख सॅ भटभट नोर खसबैत पूबम्रया टोल म्दस हाथ उठा क’ बाजल ‘िॅ. ॅ. .. हौआ .. .नैहर जा रहल अम्छ तिसा क’ ।’ म्रक्श दूरे सॅ देखाय पम्ड रहल छल ।सतू भायके गप्प बूझवा ि म्बलंब नम्ह भेलम्ह . .. . .।ओ तीवर गम्त सॅ दरवजजा प’ अयला आ’ दूरखा ि लागल िटुआ के सायम्कल खीचैत म्रक्श के पछोड धेला । ताबडतोड पैम्डल िरैत दुइए डेग प’ पकम्ड लेलम्खन्ह म्रक्श के

. . . ।काकी सन. .. ..ऑखि कामि कामि क' अड़हुल फूल सन लाल भेल . .. ।सतू काकी के किछु नहि कहि . . . मरका बला के घुरौलथि . .. ।अपना खिड़की दरवज्जा सॅ हुलकी ितैत लोक़ . . ।

दलान .. .आंगन . . .टपैत . . .काकी चुपचाप सतू के पाछॉ चलैत . .. अपन कोठरी ि आबि

पलंग प' बैस रहली. . . . ।गौरी के दू मालास नेबो के रबत बनाबय लेल कहि ओ काकी के पलंग ल' ग राखल एक गोट कुरसी के सोझ करैत बैस रहला "कतए जाए छलौ एना. ? . .बतामि भ ' गेलौ की . . .. . ।

रबत पीबि क' काकी के रीर ि किछु जान सन बूझैलैन्हि. . . ..।ओ' किछु बाजय चाहली . . .िदा फेर कंठ अवरद होयि लगलै आ आखर के स्थान प' दुनु ऑखि सॅ नोर कोरकी के उनति धार सन फुटि पड़लै. . . . .।आ' ओ' अपन ऑचरि सॅ िहि झाँपि करण स्वर ि कंदन करय लगली ।. .सतू किछु काल धरि हुनका ओहिना कानय देलथि. . . . . ।िनक सबटा गदशगुबार ....धुमि . . .िमटि. . . िवाद बहि जाए लेल ।

ई परि सम्हिष्णु. . खटमिहामि स्ती. . . कोनो लाख लोढा पथि पाथरि ' . . . गिर अठाहरि सदी के नहि छली .. . . जनक आिा सॅ मरटायडश . ..अपन धीया पुता के नीक स्कूल देने छलथि . . ..।िदा भाग्यक सोझा त' िवधाता सेहो नतिस्तक . .. ।िववाह एहेन पुरष सॅ भेलन्हि . . ..जे पाचीन कालक चामिस्तक दृष्टि कोण सॅ त' बड उति . .. नहि चोर बनोड . . .नहि लबरा लुच्चा . . .नहि कोनो जनी जाति के ताकब झॉंकब

ने दार . .. नै िसकरेट. . .. . िदा. अपने दुनिया ि िगन घर

पेलवारक कोनो म्चंता नै . ... .. छै. . सब म्कछु .. . पाय कौडी ि कतय कोताम्ह करैत छम्थ. . . . . ।हुनक परि यर स्ती म्पता के ई फरिन . . ..जे आय धम्र हुनक कुलक स्तीगण बाहम्र नौकरी करय नम्ह गेली .. ओ कोना जेतीह .. . . ।एतेक दुरम्दन त' हरि नम्ह आम्ब गेल जे स्ती के कमाई सॅ पेट भरल जेतैक़ . .. .त' काकीके पढेबाक रौख िनक कोनो कोन ि दाबल रम्ह गेलम्ह ।

घर वर देख क' . .. . नीक जकॉ पता लगा क' म्बवाह भेल छलै .. . बेस व्यवस्था मान क' .. .खानदानी छलैथ. .. जि न जायदाद छलैन्ह भाई सब आफीसर. . वर.. .

लग' क कओलेज ि लेक्चरर छलाह. . .।देखबा ि स्वस्थ. . . सुदर श . . .।आर म्क देखैत छै कन्यागत. . .।

काकी एकटा बुम्धयाम्र . ..कमिसुत आ' आजाकारी पुतौहक र प ि बङ पम्सम्ध त भेल छलीह ।रनैः रनै कालकि ि पेलवारक र प बदलए लगलै . . .वृदजन अपन अंतहीन यातर के याम्त्क होईत गेलाह . .. ननम्द . ..म्दयर सबहक अपन मारहस्थी . . .. ।हुनक अपनो पेलवार ि चाम्र टा म्धया पुता अवतीणशभ' गेलम्खन्ह. . . । ि दा पम्त ओम्हना म्वरक्त. . .अहू जुग ि भम्र चुर कडू तेल .. . मिथ ि चुभ चुभ करैत. . . . . धोती . . .मिटका खदम्र के कुरता पम्हरने . . .कॉख तम्र छाता दबने अपन फटफटी सॅ कओलेज जायम्थ .. . ।आ' बाकी समि अपन पढाय म्लखाय पूजा पाठ . . . ।

अम्हना चलैत रम्ह जैते. . . जीवन त' कोन खराप. . . . ि दा म्धया पुता लग पास क' इसकूल ..कओलेज सॅ पम्ढ जुवावस्था के दरवजजा प ढाढ होमिए के कोरम्सस करैत. . . .बङ बङ स्वप

ऑॅखि नेने ....अपन महत्ता के अधिकार गिय लेल पॉखि फड़फड़ाबए .. .लगलै. . . तखन एक गोट धिशिसंकट. .ठाढ़ . .. ।

कन्याक’ ाेय. . .कतेक रास .. .स्वाप. . .संजोगने. बेटी के मनुरदानक पतीक्षा ि. . .देवता मातर के नौतनाए आरंभ कम्र देने छलीह।

पैघक मवाह हेतय तखन नै दोसरक बान्ह खुजतै . .. ।आ’ मिनक गप्प करए लेल बेकल . भ’ क’ पम्ता ल’ग बैसथि त ’ ओ रिखाह बरद जकॉ मबदमक जाथि .. ‘एखन कोन पलय होएि जा रहल छै. . . .हेतय सब मकछु सयि प’ . . . . ।’ मचंतन निन ि डूबल . .. तत्र ीिसा बॉचए वला . . . माता कतो जेबाके नाि प’ चीज बोस्त ..फेकनाए. . .रुर क’ दैथ. ।. .अहंकार अपना सॅ सहस्त्र गुण भारी . . . .परदादा के गजराज त ’ चम्ल गेलम्ह ुदा ओकर स्वण घंटी नेने ई बुम्ल रहल छथि ।हिानंद बाबू के पड़पोता . . . . . .भलानुिष लोक आब बचले कत छै. . . . .जै छै हिही छी बस. . . . ।

काकी अपना भम्रसक पयत कम्रए रहल छलीह. . . ।पंजीयार के बजा कए. . .गोम्तया मदयाद . . . सर कुटुि लगुआ मार आ ि तरे तर. .

कतेक पाय कौडी खरचैत. . . .तर आ तीनि .. . खेनाय मानाय ।जखन मकयो कोनो नीक कथा के संदभशा मकछु खबम्र दैक . . . दौड़ क’ .. . .भरल उत्साह सॅ . . .घरबला ल’ग जायम्थ. . . . ‘अहॉ एक बेर देख लैम्तयै नै . . ..अपन ऑॅखि सॅ .. .बड़का गाकि लड़का छै. . . डाक्टर छै कलुआही ि .. ।’

घरबला सुम्नते भडैक जायथ. . ‘हे सुम्नयौन. . . .म्हनक गप्प. . .

अपने रहली बङौदा आ’ अहदिा बाद ि. . .. आ’ हरि बेटी रहत कलुआही ि. . . . . ।अहाॅ के म्दागि त नै खराब भ’ गेल अम्छ . .. . . ।ओकरा लेल भोले नाथ नीक सॅ नीक ‘बर’ पठौता. . ।’

कतेक बरख सॅ अम्हना चम्ल रहल छल ।कतेक सुद बीतैत रहलै . . . .कतेक सभा लगैत रहलै .. बागिती म्हिलियक पम्घलल बरफ स्ुिन्दर ि पठबैत रहल छल. । कन्या म्पाता के कओलेज सॅ एि ए .कम्र दू बरख बैसला के पाित .. . बी. एड सेहो कम्र नेने छल. . . ।वएस त’ ढाढ नै रहतै ... . म्दन प’ म्दन बीतल चलल जा रहल छल. . . ।

पोरकॉ सतुए एक गोट कथा देने छलै .. ।दम्डभंगे म्िडकल सॅ पास. . . एखन नौकरी नै छलै .. . .एि डी के तैयारी करैत छल .. . घरक बङ सुखीतगर. . . ।ुदा कका म्खम्सयाम्त म्बलाम्ङ सन धुरखुन्ह नोचय लगलम्खन्ह .. .जे सतू के ूहि अपान सन . .। ‘बेरोजगार डाक्टर गरा ि बॉम्ध म्दयै . . . .जा धम्र नौकरी चाकरी नै हेतै .. . . गाि ि बैस बेटी उसीम्नाया कुम्टया करत. . . जन िजूरक जलखई पनम्पयाई . .बनौत .. . . खबाम्सन बम्त क’ रम्ह जायत भम्र जीनगी. . ।’ .

‘त उम्छयौ नै अपने. . . .सवशुण संपन वर .. . ताकए लेल . .जखन पाए कौङी मानबे करबै. . . .त’ ई

ूरि छा म्कएक िरने रहैत अम्छ सम्दखन .. . .म्क घरे ि बैसा क ’ रखने रखने बूढ कम्र देबै बेटी के ।’ काकी के म्हब कतेक बेर फाम्ट चुकल छलैन्ह. . . ओ काम्त खीझ क’ बाम्ज भुम्क क ’ रम्ह जाय छली . . . की कम्रतम्थ. . . . . उपै की .. . .।ई उम्चत अनुम्चतक गहीङ सोच. . . घरक िम्लक सॅ म्बदोह केनाय

हुनका उम्मत नम्हं

लगैत छल ।ओना त' हुनका पीठ प' बड लोक .. . गोम्मया म्मयाद सॅ ल' क अपन भाय बंधु धम्म हुनका एक सॅ एक कथा पठबैथ. . . . अम्मिका वाला भाय त' पाए पठाबए लेल सेहो तैयार बैसल .. . .ािदा पोफेसर साहब के की कहल जाओ .. . . ओ त ' ादिम्मगार के' रतु बुम्मा ऑम्मख लाल म्मायर केने घर ा कूदय लागैथ. . . 'हे .. . हा ाूईल नम्हा छी. . . जे लोक हारि बेटी प ' दया करत. . . ।बेसी म्मक करब त' हा गरा ा ससरफानी लगा क' म्मि जायब. . .लईत रहब तखन .. . ।' 'बीस लाख ा ओ कारी धुतथुर. .. . . .अपन खानदान ा पम्मल पढल. . . .म्मम्मया. .के ईजोत ा पम्म पम्म क' इंजीम्मायर बनल .. .' 'ओहने हारि साम्मि .. . .काध प' अंगोछा. . . रखने . .. तरहत्थी प ' आंगुर सॅ ताािकू चुनबैत. . ।'

जखन रुदक साायि आबै. . . घर ा कलेस बम्म जाए. . . आ' पम्मणाा काकी आठ आठ साझ उपासल रम्म जायथ. . . .स्म्मास्थ सेहो खराप भ' गेलम्मह . . .सम्मखन ढैकरैत. . . . गैस सॅ पेट फूलल. . . ब्लडपेरर . .आ' हाटशक' बीाारी सेहो कम्म क' गम्मया लेलकम्मह. . . ।ािनम्मक

तनाव से फराक़ . ।

सतु के आायिशहोय. . . एतेक ओम्मयानी..... .. . . . एतेक बुम्मािम्मा. सॅ्रती. . . ािदा पम्मकूल पम्म के सोझाॅ कतेक बन्हैल. . . ।

ई माम्मिले अम्म जतय अनाािल म्मावाह धडल्ले सॅ चम्म आयल रहल अम्म। मारहस्थी क' गाडी के दुनू पम्मया. . . . .दू म्मस. . .भेलोपरात. .गाडी पटरी प' ससरैत. रहैत छै .. .

. ।कखनो काल लगैत अछि जे आब उनार हैत .. . . आब हैत. . .. िदा फेर कोना नै कोना ससरए लगैत छै .. ।
बतीस बरक वैबाहिक जीनगी िकाकी के मकयो भागैत . .पडैत. . वा ियादाबाहिन वा' उच्छृकल होइत नहि देखने छल .. . ।िदा आब सहनर मन जेना दि तोमड देने होए. . . ।
इम्हर राज्य िसरकार बदललै . . .आ' कम्हया कतय के माझाएल . . .घुनाएल बेकार सडैत बीएड .मडगी वला सब के मकसितिक ताला खुमज गेलए .. . ।मता कोना नै कोना ढमर गेलमखन्हि .. . . गौरी के सेहो लघीचक इसकूल िनौकरी लामा गेलए. . . ।िएक' करेज जुडैलमहि. . .. पढै मलखै वाला काज िधीया के िन बहटरेतैन्हि. . . ।आ' सुयोग्य वर सेहो. . . .. . ।
घरक िहौल ित' माधाते जे परिवत्तन आनए चाहितमथन्हि तखने संभव छल. . .।पुत दुनु कतो बाहरे पढाई कमर रहल छल. . . छोटकी सेहो बीएड कमर नौकमर पकमड नेने छलै. . .।
कतेक बरख बाद भगवमतक मकरपा सॅ पोफेसर साहबक िन डोललैन्हि . . .. एक गोट कथा पमसन पडलैन्हि. .. . . .।िदा ओ अमाला वैसाख िमावाह करता. . . ।बेस. . ..हुनके कोन हडबडी छलेन्हि .. . जे हडबडी आ' धुकधुकी छलैन्हि. .. . . .से त' कन्या वा ' हुन िएके ..।अमाला वैसाख िएखन एगारह िसि मालंब छल । .. .आब जे छल . . पमसन त' वएह कथा. . . मक ूलि गोत .. . टकर के . .. पेलवार नीक़ . .सिम्धि सेहो उच्चस्तरीय अम्धकारी .. . . .रहमर ि िकान. . . ।
काकी के चोटकल िह प' जेना मकछु हमरयरी आबए लगलै. . . .।भगवतीक' मचनवाड प' बैस गोहराबए लगलीह. . .'अहीक़ . असरा िया . . .जौ

ई कथा भ' जायत जोडा छागर चढैब. . . ।' गौरी के मिलन झलि हि प' सेहो किछु चुहचुही आबए लागल. . .सपन त' सबके देखबाक अधिकार छै. . .
ओहो अपन पृथ्वी के पाणी . . . ओकरो सहस्तो सपन दूरे सँ ऑखि मे झलकोर िरैत देखार होिए लगलै. . ।
अपन पुस्तैनी बडका घरक रिमिम करबा ओकरा रंगबा ढोरबा क ' एक गोट भव्य हवेली क' आभास दय देल गेलै. . . ।डयोढी के गेट बड चाव सँ अपने ठाढ भ' क' काकी लाल रंग सँ. . रंगबेलन्हि .. 'अपन गेट सँ हरि बेटी हिफा सँ बिदा हैत. ।बिवाह रात्ति बिजली के लडी
आ' लाईट सँ सजल ई कतेक भव्य लगतैक . .।' बजैत बजैत हुनक ऑखि ि इन्द्रधनुषी सपन जेना झलमक उठै ।
वर पक्क इच्छानुसारे दुरागिन चतुर्थीक पराते भ' जेबाक निधारित भेलै. . ।ताम्हि लेल . .. दान दहेजक चीज वोस्तक ओरियान होिए लागल छल. . ।
देखैत देखैत फागुनो आबि गेलए. . .।चारोकात हि हि करैत फगुनाहट .. . .लोकक रीर 'सँ भरगर वस्त्त उतरि क' हल्लुक वस्त्त स्थान गहण करि नेने छल .. ।वातावरण किछु सोहनगर भ ' गेल छलै .. .।घर सँ ल' क' अडोस पडोस धरि के नवतुरिया सब ि गौरी दीदी के बिवाहक उत्साह किछु बिरेषे रप सँ छल .. . 'बरियाती सँ से परीच्छा लेब हि सब कि ओ सार सब ताही ताही करता ।' िय मामतयामि सब मिलिजुलि क' कम्हिया कतए नै अदौडी दनौडी खोईट क' राखि नेने रहथि . . ।लकडी के सर सिन . . . ओम्हि लेल त' खेतक आमए आमि बड रीसो. . . .किछु बड

पुरान सीसो काम्टट क’ दलानक’ पछबम्रया ओसारा प’ गेम्टआयल .. ।तै छोटका कका फम्नाश्चर सब बनबए लेल . . .बढीबा के काम्नाके सॅ अपन दरवज्जा प’ बैसा नेने तहम्थ . . .।बचलै .. . वर कम्नया आ’ सम्भियाना के नूआ फटा .. . त’ ओ आब म्कक लोक जोगा क’ राखत . . .र हम्र बजार
ि तुरते भेट जाईत छै. . . . .. सबटा काज प इर्तिनान सॅ नजम्र फेम्र काकी सम्रपहुॅ बङ पसन छलीह . . .।
ओ म्दन भम्रसक रम्ब छल. .. .पोफेसर साहब अपन दलान प’ अराि कुरसीप’ बैम्स एकबार पम्ढ रहल छला. .
.।तखने पोस्ट िन पहुॅचलै. .. .गाकि पोस्टिन . .. अराि सॅ अपन घरक काज .. न्योता. म्पाहानी म्नबटा क’ छुम्टए म्दन बचलाहा डाक बॉटेत छल .. ।म्चठी पढलोपरात हुनक नजैर . . .एखबार सॅ उम्ठ क’ आकास ि अटम्क गेलम्ह . . .।
म्लखल त’ म्कछु म्वरेख नम्ह . . .एतबे छल दू पॉम्त ‘ हरिा िफ कएल जाओ. . .हरि बालक अपन औम्फसे के एक गोट सहकिी सॅ
म्ववाह कम्र लेलम्थ. . .।’ ॅ़िदा ई दू पॉम्त ओम्ह घरक लेल केहेन पैघ हङहडी बज साम्बत से वणशातीत . .. .अपन कोठरी ि पलंग प’ बैसल काकी
बरक ललका पाग ि सुईया ताग ल’ क’ घुनेस लगा रहल छलीह . .. .हाथ कॉम्प कॉम्प क’ जेना फङफङेलम्ह. . . . आ’ धुकचुके ि हुनक पाणपखेर संसारक सब बंधन तोङैत एकदि फुरश सॅ उम्ङ गेलए. . . . ।बौराएल सन धीया .. . .िएक छाम्त प’ िथ पटम्क पटैक क’ म्बलखए लगलै .. . . ‘हरिौ म्कएक नम्ह अपने संग ल’ गेलहूॅ. . . ।’ बेटी के हदयक भाव िय सॅ बेसी

आर के जामन सकैत अछ. . . . मान िलक ओकल. . . पैरोकार ।

मदन केहनो पलयंकारी होय .. .बीमाए जाईत छैक़ . . .िनुकख सन जीवट परानी . .. . जहाॅ अन आ' पामन र रीर ि गेल .. ..काया उमछ

पुमछ क' ठाढ भ' जाए छै. . . ।

जे हो . . . पमहने जकाॅ त' नमह िदा ओमह घर ि फेर सॅ गमन मामध त सुर ए भ' गेल छल . .।रोज रोज ऑच पजरै. . .सोहारी . ..भात . . .तरकारी .. .दामल .. .रान्हले जाए . .पोफेसर साहब अपन कओलेज़ . .बेटी. . दूनू अपन अपन इसकुल. . .. . नौकरी प .. ।

ओमह अन्हड. . पामन बामढ वला सयि ि .. . . .सतू के खबमर भेटलै. . .ओ. . .कहुना कमर छामत भमर पामन के चीरैत पहूचल छल. . .।

भेलए मक जे जखन िनहमर साझ बीत गेलए .. . भदवामर के घनघोर धार धार बहैर रामतयो ि जखन गौरी अपन इसकूल सॅ नमह घुरली. . .

तहन माता के करेज लोहरबा के धुकनी सन धुक धुक करए लागलै. . .भमर रात माता आ' छोटकी बेटी. . .अनदेसा क' बडका बोझ क' नीचा छटपटैत . . .जागल. . .. सगरे रामत बामढ क' घो . .. घो करैत. . . सोर .. .चारो कात बेग झीगुरक . .. .कुकुर .. . .नमढया के डरोन सवर .. . नदी के बाॅध सेहो टुमट गेल छलै . . .. यातायत ठपप. . . रेन . .बस. सथमात . . .जे जत छल. . .तते घेरोल. . . .कतेको लोक पामन ि दमहया भमसया गेलए .. . ।

ई सािचार रेम्डयो प’ भोरे भोर आम्ब रहल छल . .।
जखन सूरजोदय भेलै .. . पोफेसर साहब अपन छोटका भातीज सँ कम्म म्माहौरे करैत सन कहलम्खन्ह. ‘कम्म गौरी के इसकूल जा क ’ खबम्र आनए लेल ।ओकर ाए अपना घर ि अलगे कूदय लगम्ल पॉच पॉच हाथ .. ‘अम्ह दाहङ ि कतए जायत हरि पूत भम्सयाबए लेल. . . ।’ ािदा भाम्ताज गौरी रंकर ाए के परतारैथ. . .बङ म्हमति करैत भम्र भम्र ठेहुन पाम्न ि कहुना क’ सायम्कल खीचैत म्नकलल।
रोड प’ त कम्म कि पाम्न रहै. . .उचगर सङक छल .. .ािदा कतो कतो त’ ति पूछु. . . .सायम्कल सँ उतैर उतैर क’ चलए पङै.. . . . ..कखनो काल त’ सॉुयम्कल ाथि प’ सेहो उठा लैक़ . . चारो कात पलयंकारी दृश्य . . .. जतय धम्र नजम्र जाए. . . पाम्नए पाम्न. . . .।पाम्न ि ठाढ गाछ .म्बरीछ .. .
ओना त’ बङ नीक लगै .. .ािदा गाछ सँ बान्हल झुॅाला जकॉ खाट. . ओम्ह प राखल चीज वोस्त .. . गाछ प बैसल घरबैया. .. .सब देम्ख हदय टूक टूक होएि लागै. . दोसर म्दस जीनगी सँ भरल .. .म्धया पुता. . . पाम्न ि उकिैत .. . ।
तीन चाम्र गाि टॅम्प क’ रोडे प’ ओकर इसकूल उम्हर बाम्दक पकोप नैं्ा . . हैडिास्टरक गप्प सुम्न गौरी रंकरक हाथ सँ जेना तोता उम्ङ गेलम्ह .. . ।केहेन
जाचना के काल .. . .कोन पापक सजा द’ रहल छम्थ म्बधाता . .. ।
टुटल ानि. . . असोथम्कत .. .भेल दरवज्जा प’ राखल चौकी प ’ पोफेसर साहब पसैर गेल छला .. . ।
सतु आम्ब चुकल छलाह .. .ािईलो परात ायिक साध अधुरे रम्ह

गेल . .ओम्हर बङका गेट सँ बेटी के बिदा करबा के .. . गौरी अपन एक गोट सहकर्मी संग बियाह कए कतौ आओर चलि गेल छल. . ।कका के बोल भरोस दैत सतु एतबे बाजल छल 'ई त अवश्यंभावी छल .. .इएह छैँ सियकाल।'

कठजीब

नाि त' हुनक माता माताहि बड़ दीव 'अनपूणा' धयने छलखंन्ह ,ि दा कपार , कत के अन आ' केहेन पूणश? आ' र ने;र ने; लोक वेद हुनक नाि के छोट करैत करैत ,अंत ि पुरनी दाय बना क' भमर टोल मक भमर गाि लेल जेना मामि त कमर देलकइ।

हुनक आबक रैन बसेरा वा घर जे कम्ह दादे कका के गोहाली छल । ओ त' आब अपने नै छलाह ,काकी छलखन्ह।त' हुनके आगह प' ओ जखन अपन माता के डीह स उपाड़ी फेकल गेली त' हुनक अनंत धार नॉर के पोछै लेल नबकी काकी अपन आचमर बढ़ोने छलखन्ह ।अपान झोरा झपटा ,गेरआ ,सीरक ओछोन बीछोन टूटलाही फूटलाही कासा ,मातमइया बासन उसरगलहा लोटा सब सईत सिट क, रखलम्ह।आ' ओम्ह मदन स ओ हुनक अघोमात अडडा ।

भमर टोल ि दु चामर त आँगन एहेन छल जतए हुनक बैसब उठब छल ।ि दा हेि केि त' सबस ।बड़ कि लोक हुनका अनेरे बइसल वा तिसाइत देखने होयत ।समदखन कोि ू के बरद बनल काज ि जुटल ,पाईन बुम के हुनके मचंता, टहटहौवा रौद के हुनके मचंता , रोपम कटनी के हुनके मचंता ,ससुर बाइस बेटी के भार साठे के हुनके मचंता , दुरगिनीया कमाया के अम्हब के फड़ बनबए के हुनके मचंता ,भमर गाि के नौतल हकारल अम्हबाती के तेल मसनुर परसब के हुनके मचंता ,पाहून पड़क के आव भगत के हुनके मचंता, एतबा नम्ह परसौती के दबाए रानहब ,सोइरी ि मचलका मचलकोड़ लेल चिाइन बजाएब ,मकसुनि दोकान स चीज़ वोस्तआनब केकरो कोनटा लामा क सीआईडी मामर करब , सत पुछू त'

हुनक मचिंता अनंत छल ।नई घर , , नई घराड़ी आगा नाथ नई पाछा पगहा , , तखन िथ प' एतेक बोझ ,, , । तखन जे नही करबे पापी पेट , , ।

'दाय सुने छम्थिंह , कनी सोनरबा ओत चली जाथु , , ,एखन धम्र नंम्करबा के कानक कुंडल नही पठेलकई । , ,

कखनो कोनो गाि बाली बाम्ज उठेक "ये दाय ,कनी डोिबा के ओत जाकय चाम्र टा सूप ,, कोम्नया ,डगरा आ' दुई टा चलनी लेल सिाद पठा देथुंह '

,, [िनेर रा के कहने रम्हए िर बाढ़ेन जरलहबा के अपन ससुराम्र ि जाकए बईस रहलई , , कहथीन कनी परसू म्नानसरे पठा देतय'। आधा घोघ आधा िड़त काढ़ने कोनो भौज दूरखा स' झकैत बजा लईत छम्लह 'दीदी , , एखम्न धम्र संजुआ के बाबू नै एलखीन जोगबनी से , ,बड़का गाि बला ,जिाए आम्ब क' दलान प' बईसल छम्थन्ह,घर ि म्कछू कतो नै , , ,एक कप चाह देबए से नई दूध ,नई चाहक पम्त , , ,कनी म्कसुनिा के दोकान ि ई फुलही थारी बंधकी राम्ख क' म्कछू पाए ल'आबौथ आ' कनिा भरी घी आ' िखान सेहो ल' म्लहम्थ'।

आ' हुनक ई सहयोगातिक काज गाि टा ि नही अटकल छल ।दु ई कोर दूर िधबनी सहर "दाय ,, पर पाहून लेल तुलसी फूल चौर म्नघटी गेल छईक, , दुइयो सेर ल' म्लहम्थ , नाम्रकेरक तेल , कडु तेल ,हीग ,म्कनको खरपा, टकुआ ,लहठी ,म्टकुली ,म्सनुर , बाग , फुइस फड़क ,लटखुट ,चरखा,बेलना ,पापड़, पम्टया ,, ,जेठक कड़ कड़कडौआ रौद , , िथ प' पम्थया ि बड़का बोझ रखने , ,म्घपईत कारी स्याह पम्घलल म्नच रोड , ,

, पएर ि नै कोनो चटी , , ,घाि पसीने अपस्यात , , सबहक चीज बोस्त म्कन बैसाही क' आम्म दैत छम्लह त' ओय म्दन हुनक बड़ ि न, म्कयो म्कयो म्बयेन स' हौक सेहो दैन ।

म्दन त' म्दन ,घोर म्नर ा रैम्तयो ि हुनक म्नस्थाथशसेवा लेबा स' लोक नम्ह हीचूके ।संकराम्त के दोसरे राम्त धीरवा के पेट ि ि चाड उठलई , , जे ओ छर पटी काटय लागल ,, ,घर ि सुतल अम्ह खाट प' कखनो ि ए के उठाबै त' कखनो ओम्ह खाट प' सुतल काकी के , ,।अलसायल ,ओंघाएल दुनु म्बछाऊँन प' पडल पडल बजलथी 'की होएछो?' ''ि ए गे बाड़ी जाएब'। आब त' दुनु के नीद पड़ेल ।ललटेकि टेंि उकसबईत ि ए बजम्लह 'भरी म्दन हुरईत रहेत अम्छ आ' सुतली राम्त ि म्हनका म्दर ा म्फरबा के ज़ोर ि रे छैन ।अम्ह जड़ काल ि ,अनहार ि ककरा उठम्बए' ।काकी के तुरंत फुरेलेह 'पुरनी दाय के कहथुन नै' । ''आब के जेतय गोहाली हुनका उठाबै' । ि ए कनी ओकताएल सन बजली त' म्पतीयाम्त हाफ़ी लईत सीरक तर स' बजली '' म्बसरी गेलम्खन ईएह त' कहने रह थीन जे आय कोनो पुरख पात दलान प' नै छै ओसारा प सुम्त रहबई ,कहथून नै'। ि ए सेहो म्नसरके तर स'सोर पाड़ली ' दाय , ,यई पुरनी दाय , , ,यई म्नि गेलहू की म्जबते छी' ।ि दा हुनक स्पर बाहम्र के घोर अंधकार स' एकाकार होइत रून्य ि म्बला गेल छल।इि हर धीरवा पेट पकड़ने अम्ह कोन स' ओम्ह कोन ि गरी ि छ जका तड़फैत, , घरे ि भ'जायत गे , , दे ललटेि , ,हि एसगरे जायब , , ि दा ललटेकि पतीक्ा सेहो नही कम्र सकले आ' म्जन जका दौड़ीक बाड़ी के केवाड़ी खोली चुकल छल ।ि य हदबदा क' उठली , , 'भरी म्दन अगम्त म्धया पूता के चकर ि

कनी काल चैन स' पम्हुओ नही सकैत म्छ राइतो ि सेह' । आ ओसारा प' आम्ब भीि जका फोफ काटेत दाय के देह म्हलाइत बजली 'यई मामरं ड़ जका सुतल छी ,, क तेक िट मान भ' गेल , कुंभकरंक कान कटि ,'।दाय हडबड़ा क' उम्छ बैसली 'की भेले ,की भेले' ।त' िए बजल मखन 'हे ते की अंगोरा , , धीरवा अन्हारे ि भागले बाड़ी म्दस , डोलि पाम्म लक कनी जाथुन, हैया लीअ ललटेि ।बोरा ओढने खाम्लए पएर भुतहा बाड़ी ि डोल नेने चम्ल गेल छम्लह।

दाय के खेनाय कखनो अम्ह आँगन स' कखनो ओम्ह आँगन स' भेटय ।स्तीगन सभक कहबी छल जे ओ जीभ के बड़ पातर ,ओना सब कीछू भकोसी जाए छथी ,सब म्कछू ि की , , जेना चारी म्दनका िटकूम्ड़ ि सड़ल दही ,टायल खाजा ,बज़्जर भेल ठकुआ ,, आ' कटहरक को स' ल' क' ओकर काड़ि नेरहा धम्र । आ' पम्च सेहो जायन्ह ।आकड़ पाथर पचाबए वाला जीब ,गज़ब के पाचन रम्क्त । दुपहम्रया क' बइसारी ि स्तीगन सब हुनक पाचन रम्क्त के एक स' एक उदाहरण दैत हस्सी ठठा करैत अपन िन बहटारई छम्लह।

भम्र म्दन काज 'यै दाय ,कनी हिर राहड़ी राखल छै उलैल , दस सेर लगीच दरम्ड़ देथुंह कनी ,कनी अरबा चौर क म्चकस सेहो पीस म्दहथी कतेक म्दन स' बंभोम्लया के बमाया खेबाक िन करैत छै'.।आ' दाय टोलक भौजी स' ल'क' हुनक पुतहुओ सबहक अड़हैल काज ि दासोदास भेल ।कखन भोर होए आ' कखन साझ ,,के जाने ।

कखनो काल जौ कोनो काज नै त' जनानी के बइसारी ि कोनो अधलाह काज वा झगड़ा फसाद के गप्प प' कोनो पुतहु बाम्ज उठए

'ई काज पुरमनाए दाय के भ' सकैत अछ ,' वा 'ई लुतरी लाड़ब ि वएह ओस्ताद छथीन'।सेहो परोछ ि नै ि हे प' ।दाय गुसिुि भ' जायथ, , कखनो ''ह ह हि कीएक कहबई , ,सप्रात खुआ लीय' ।िदा हुनका त' पूतौह सभक टोट आ' अपिन सहबा के जेना आदमत पड़ी गेल छलैन ।

काज मताहारक घर ि दाय के काज पानक लती जका लतरल चलल जाए ।कखनो मसनेह स' त' कखनो आदेर स' मनारस्कार स' लोहछल बोल स , ''ऐ यै ,देमखयोन्ह त' मंकर सौख , , मकदन कहबी छै जे , ,जेकरे दादा ,, िर बाढ़मत ,मासमरओ गेमलये ,उठु ,ई अदौड़ी खोटय अहा की बैमस रहलहु बौवामसन सब जेका , ,जइयो कनी गुवरबा के कहने आमबाओ बीस

सेर दूध कािी भोर स' भोर पहुँचा दै आँगन ि ,'' '' ललबा अखन धमर नै एलई बजार स' चौक प' दार तार त' नै पीबए लगलई ,कनी देखथुन त , आ हे जो भेटईन्ह त' कमहहथी जे हि ओकरा नानी गाकि बाट िन पड़ा देबई जखनहिरा स' पईच लेब आयत'' । आ' पुरनी दाय ,भुट ,कनी िट गर गेद जका अमह ठाि स' ओमह ठाि गुड़कइत ।िसि चाहे कहनो होय लोक के त' अपन बेगरता पुर हेबा क चाही।ओय हुईल िमल ि केदन त' हुनका खाय लेल पुछैन्ह ,आ' साझे ि खाइतमथ त कोन जुलुि भ' जेतय ।

जमहया ककरो आँगन ि काज मताहार रहए ,ओय मदन हुनक िलि नुआ के जबदसती हटा क' साफ सुथरा व नब नुआ अपन आसन जिा लईत छल ,दाय के त' छमबा सेहो बदमल जायन्ह।ओ थुसस स' नई कतो बईसइथ, अपन पएर प', पीढ़ा प' चौखटी

प' ,पमटया प ,नब नुआ नई िलि भ जाए । अमह नुआ के एवज

ि िसि िसि मदिन धमर रामामदिन खटनाइ ,अमह बीच जो केकरो खड़ सेहो छुबए लगमथ त' घरक िलकाइन मचमचया उठेथ 'हे लोक सब देमखयोन्ह चक चामल महनकर , ,नब नुआ देलीयेन्ह भोजन बेर ि दौगल ओमसह , आ' काज क' बेर दोसरा के आँगन सूईझ रहल छनमह , ,कमनाओ धाक छईन आमख ि।

आ' एकर ओकर काज कमर क' पेट भरब के पमकया सुखद त' नहीये रहल हेतइक।महनका हुनका आँगन स थारी गोहाली ि पहुँच त'जाए आ' के जाने अमह ि कोनो मदिन उपासे सुइत रहैत हेती ।

लाचार बेसहारा अममम ित मजनगी के एक टा बडका ऐब सेहो गहूि ि सूड़ा जका सेनमहयाएल छल हुनका ि ,आंमख बचा क' कोनो बोसत इिहर स' ओिहर करब के , बड़का चीज क तय ,ि दा मकछो, , ।आ' ककरो गरड पुराण सुनबा काल जखन पंमडत जी क' पवचन चलै ,कोन पाप के कोन दंड भेटैत छै नरक ि , चोरनी के नाि प, दाय मदस ताम्क ताम्क क' सतीगन सब िसके ,एक दोसरा के बीटू कटे ,।एकर आभास भेला के बावजूदो दाय ममवकार भाव स' अपन बड़का बडका आंमख ,नाक ,कान सब के एक सीध ि रामख क' कथा वाचक् के चरण कि लि ि बकोधयान लगौने बइसल ।

टोलक कोन ि अपन सहोदर भाय भाउज , एकटा बमहन ,सेहो बाल मबधवा ,, सासुर स' देउर आयल छलेनह लेब' त' अपन जनक् क प ए र छामन कानए लगमलह दहो बहो मक हि आब नही जायब ओमह नगर ,। िए बाबू बेटी के दुख देखबा ि अपना के असिथशबुझेत कनीए मदिन ि धरती स' अलोप भ'गेलमथ ,आ' भोजाय नािी नटीन, , भाय घरबाली के िटी ि ,। पमहने त' सब मकयो संगे रहे छलमथ, कतबो गुहामाजजी होए ,ि दा

ओय म्द्दन नही जाम्त कोन गप्प प' झगड़ा झाटी भेलय ,आ' पटलपुर वाली हुनक म्सकी िनी, अड़जाल खड़जाल नुआ ,झोरा आम्द्द सबटा म्काम्ल म्द्दरघु कका के खम्रहान ि फेक देलम्खन ।गोबर स' घर आँगन नीप क' गंगाजल छीट डंका के चोट प' ई उदोम्षत करी देलथी जे पुरनी दाय ह ि रा लेल ुइल छम्थ। तहन बास के दईतम्ह ,नबकी काकी के छोम्ड़ए क' ।गोहाली ि त' आब गाय बरद छै ने । योग्य पूत सब ,म्कओ कीछू म्बगाम्डओ नै सकेत छल ।

ुदा सहोद भाय लेल हुनकर अनुराग रम्ह रम्ह क' चुबै न , ,छोट छोट भाम्तज भतीजी सब के इ हिर उ हिर स चोरएल ,नुकेल स ािन द' दैत ।राइत म्बराम्त सबहक आंम्ख बचा के ओकर आँगनो चली जाम्थ।भौज सेहो आब तेहन डाहीन नम्ह रहल छली ।

'नुनु (छोट भाय) कतदन पड़ा क' चम्ल गेलय ,नई खाय के ठेकान नई पीबय के, म्धया पूता सब म्बलटी रहल छै'' ।ककरो ओसारा प बइसी जखन ओ म्बलाप करैत त' लोकक ि न म्खन भ जाए ''ऊह फुटली आंम्ख नै देखेत छनही आ' म्हनक व्याकुलता देम्खयौन्ह'' ।

एक राम्त पटोर बाली काकी चुप्पे पएर दाम्ब म्हनका पाछा अपन आँगन ि अयली ,त'हीकर करनी देम्ख हुनका सौसे देह ि खौता फुम्क देल कैन ''हे ,हे ।हे दाय , , की करैत छी?'' कनी कड़गर सन स्पर ि बजली ,त' ओ घबड़ा क' ि डुआ के ढेर प'ख़सी पडली आ' हुनक ुहि स म्ाकम्स गेलन्ह ''ि डुआ चोरबे छी''।

म्ानसरे सौसे टोल ि हल्ला भ' गेले 'दाय ि डुआ चोरबे छली राम्त ि' ।ुदा हुनका लेल धन सन ,ओ ि जिगुत पाणी ,ओ हिर इ हिर बुलैत टहलेत ,कोनो कोनो काज् क ब्योत ि अपना के एना खटबईत जेना ई कथा कोनो आन के भ' रहल होय ।

पराग कका बनारस ि रहेत छला ,ाए के देख चाम्र म्हदन लेल आयल छ लैथ,नबका धुइस छलेन्ह ,, , बड़ गरि , , ,जाड़क ासि ,घर ि अलगनी प रखने छलथी ,कतेक ताकल गेल ,धरती माड़ गेलै की अकास खा गेलै, कतो ने भेटलै ।ओ अहुम्रया काम्ट क' आपस छली गेलाह बनारस । ''घर स आम्खर लेते के ?'आ' रक के सुइया सदी खन दाय प' जा क' अटकीजाए ,ुदा पाणि की ?' आ' एकटा धाक सेहो ,फुइस अकंड़ नई उठाबी ककरो ,।म्कयो इहो बाजी उठेक , 'जाय म्हदओ गरीब ,अबला छ म्थन्ह ,पराग बाबू के एकबाल बनल रहौक '। ''ुदा ओ केलम्खन की ? ओढ़ेत म्बाछबइत त म्कओ नही देखलख' ।
''भौजाई के द' आएल हेती रातारातीं'। आ' सब म्कओ बईस क' अपन अपन ागिज ारी करी क' गहीड शास छोड़ैत ानि भ जायथ।

हुनका खेनाय देबा ि त' सबके अखरए लगे ।नीत रोगी के पुछै के ,, भाम्त भाम्त के फकड़ा पढ़ल जाए ।एक म्हदन क' पाहून के तरवा तीनि ,स चार लगा क' लोक खुवा देत छै,ुदा नीत म्हदन ,'' । क हुना कम्र क' हुनका सोझा थारी पठा दैल जाए छल।केकरो भुखल ने रखबा चाम्ह ,धशिके नाि प, कतक्ष्य के नाि प' हुनका खेनाय भेटन्ह ।

ुदा ओय म्हदन जखन दुरगम्माया कम्माया के पाजेब कोहबरे स' हेरा गेले तखन त' हुनक सौस हिरक ाए के तािसे जेना बुटी बुटी चकिय लगलन्ह 'ई जुलुि आब ने सहबा जोगर छैक ,हिरक म्बवाह ि नबका नुआ देने छम्लयेन्ह'' ।ओ अम्हना अमाया बेताल छम्लह,तुरंत फाड़ बान्ह वाली ज़नानी । भानस चढ़ल चुाि प'तेकरा छोम्ड़ झटा झट बढ़ ली गोहाली म्हदस ,अपना पीठ प' चाम्र ज़नानी के फौज नेने ।चीज क' नाि प' गेरआ खोल ि डोरी लगा क'

एक टा झोरा ,दुई तीन टा नुआ,एक गोट चादरी,केथरी,आ' एक टा खूब ाटिगर सन गेरआ ।सब टा ैलि म्चकट ,कखनो काल साफ करैत ,इहिर ताकल,ओहिर ताकल ,अम्ह दोग देखल ,ओई दोग देखल,। ाम्टि ि त गाम्ड़ क'नम्ह रखने छथी,ािदा तेहन कोनो चेन्ह नम्ह देखाय । एक जन के जे अपना के जासूस क हितारी बुझैत छम्लह,के नजम्र ाटिका गेरआ प'अटकल छल ,सस्ति भीड़ के उकसाबईत बजली 'गेरआ के देखू नै' । नेता के आदेर के पालन तुरंत होब लागले ,आय जेना िहान रहस्यक उदघाटन होबए जा रहल छल ,अम्ह साजिक सब स' भष आ' पम्तात ,चोर क' चाम्रम्तक हनन होम्ब रहल छल ,पािणक संग । गेरआ के म्सयो न खोलल गेल, तेकरा म्याच्चा फेर ाहि बन,,आम्खर ि सवशसमम्ता स' गेरआ के फाड़ी देल गेल ,आब ओत ठाढ़ ज़नानी सबहक आंम्ख फाटल रही गेलय ,केकर सरौता,केकर पनबटा,केकर नुआ, केकर आंगी, साया, केकर कुता, ,, ािदा पाजेब कतो नम्ह म्नाकललै । दाय ककरो काज स' लोहरबा ओत गेल छलम्थ । ताबेत ि ढनिनाई त ढनिनाइत ओहो आबी परािन पुर बाली के दु आम्र प सुस्ताए लेल बइसी गेल छम्लह । गोहाली ि म्बरनी के छता जका उड़िल भीड़ देम्ख ओहो ओत स'उठी अकचकायल सन ओत आयल छम्लह ।आ' ई पलयंकारी दृश्य देम्ख ओ जेना बज भ गेल छम्लह ,एकदि रून्य ,जेना पाथर , , , ।चुप्प् चा प लद स 'ओत बैम्स रहली ।साकात ताड़का बनल हिेष् क ाए के ाहि स धधकल धधकल अंगोरा म्नाकम्ल रहल छल "पाजेब की केम्लये? नब नुकूत कम्नाया के छले ,एहेन कोन सौख ाजि बुढाढ़ी ि पईस गेल ,पाए के बेगरता छल त' हािरा कम्हतहु" । "यए काकी ,सोनरबा के ओतय राखी देने हेम्थह" आए का ि बड़ एनाय जेनाय होय छन।

सोनरबा ओत दिना के दौडएल गेल ।दा ओ एक्द नकारी देलके ,केहनो सप्पत खे बा लेल तैयार , ,।मकयो सिकी रित बाजल "ओ मकए नाक प' छी बैसय देतै, , कहबी छईक चोर चोर म्सियौत"।

बाम्ज ताम्ज क',थि कपार भंगैत ओ खोजी दल ओम्ह ठा स'आपस भ गेल छम्लह..त' लोक के लगलए आब बेचारी हि उठा क' कोना मजबती,कोनो पोखरी , धार संम्हया जेती वा जहर हुर खा क' सूती रहती ।मकछू दयाति सबके हुनक दुगश्ा प' आंम्ख झहरय लगलेन्ह ,'सब साय पूत बाली सब जेना दुधक धोल हौक ,अबाल दूबाल प'म्सथूवा चोख"।

त'मकछू करेजगर ज़नानी के अपन ऐब नुकबए के बहना भेट गैल ।'ई त'म्सन्हा चोर माकलली ,ओय म्दन दूध औट क चीन _बारे प' छोम्ड़ देने रम्हए ,जे कनी सुसु हेते तखन पौर क' म्सक प'लटका देबै ।दा कम्नए काल नहा क' आबे छी त'आधा दूध गायब ,दाय ओसारा प,म्सलौट प, सिलला मासेत छम्लह" ।दा सत छल जे बीरि म्दयादनी के गायक दूध मानाए हुनका नही सोहाए आ'कखनो,म्बलाड़ी के ना प,कखनो उम्धया क। खसबा के अड़ कनी पैइनफेट के अपने पीबी जायथ। ओम्हर साझ पड़बा स' पम्हने कम्नाया के भाय नैहर स, दौगल एलै ,पाजेब नैहरे छूम्ट गेल रहै ।हिर क ए अम्ह खबम्र के पीबी गेम्लह ,एतेक र म्बत त नही छलेन्ह जे जा क' दाय स फी मा लइतथी । ओए राम्त केकरो घर क थारी दाय छूबो नही कयलखीह ।कोना माड़ल जेते अन ,एहेन कलंक ◦बाद ।

मानसर भेने सब देखलक "दाय अपन गेर आ के सीबी रहल छम्लह । कम्नए कालक़ बाद टोल एकरा ओकरा आँगन जा क

कतो दाम्ल ,कतो म्चकस ,कुम्टया मामसया ि एना लागी गेल छली जेना म्हकछू गपमे नम्ह भेल होिए ।

कलंिकत चान

ओ टूहटूह इजोिरया . . सम्पूणश आकार पर पूणशचंदक एकािधपत्य. .दूर दूर धिर ठहका िरैत चाॅदनी।नीचाधरती पर रीतल अितक धार .. ।ओिह िारिल धार सॅ सीचल गाछ . िबरीछ .खिरहान. दलान . .. बाडी झाडी .. ।पूबिरया बाडी ि पिनतयानी लागल केरा के गाछ .. ि लटकल घौद .. .नीचा आलू के फसील .. . ओही इजोिरया रािि ि सब िकछु एक दि फिरच्छ देखाए पडैत छल ।
रंभु बाबू के भिर भिर रात नीन नै होबैत छलैन्ह. . चािर िदन पिहनिह जेहल सॅ छुिट क’ आयल छलाह .. .अंगरेजक जिाना. . कािन्तकारी सब के घातक अपराधी िििन लोिहषक यातना देल जाए. दुनु टाग बािन्ध क’ टेबुल पर रािख ओ िटका हंटरक िार .. .. दनादन . .बेहोर सेहो नै रहै दे. . पािन िािया िािया क’ होर ि आने . .पािनयो भिर छाक नै पीबै दै .. घोट भिर दैत िालास झीक लैक़ . पािन पीयाबए बला .. हंटर बरसाबए बाला सब स्वदेरी .। .ित एक गोट. . ललका िूिह वाला िबलािड के ऑिख वाला . .अफसर अंगरेज़ ।. .. ओ पताडना ओ कष .. सात िदन कोना एकात वास .. ई सब हुनक िदिाग के भॅभोिर क’ रािख देने छल. .त’ ओिह ि सुखद सुिगल नीन क’ पवेर हो त’ कोना हो ।
ओ पीडादायी .. एकाकी जीवन सॅ बचबा लेल लोक पैलवार आ’ सिाजक िनािण कएने अिछ. ।िकएक त’ ओ सािािजक पाणी अिछ ।िकछु ि त’ लागल रहैत अिछ जा धिर धरती पर रहैत अिछ। स्वराज्य क’लेल लडय वला के उदेश्य सेहो सएह छल नै िक अपन सिाज पर अपन बनाओल कानून के िधय जीवन यापन करब . .ई िवदेिरया सब हक गुलािी आ’ अत्याचार िकएक सहब ।हॅ .. नीन

नै अबैन्ह त' ि नि दुमया जहानक' खोम्च खॉम्च ि ओझरा जाएन्ह ।

ई भमरपोख इजोमरया के आनंद .. . .. ।अपन दलान पर ओ एसगरे नै सुतैत छलाह . .चामर टा खमटया आ' पॉच टा चौकी आओर मबछैल छलै. . सब पटोपट .. .नीन क' जादूगरनी खाली म्हनके लग नम्हं आमब रहल छल ।ि नि भेलैन्ह. . .मबछौन सॅ उमठ क' रस्ता पर टहली. . आलस लगलैन्ह. . . ..ि नि अपन खुरलुच्ची पन ि लागल. . नचबैत रहल बडी काल धमर. . ।जखन लग्घी लगलैन्ह. . त' उठैए पडलैन्ह. . ।दलान क' ठीक सोझॉ रस्ता छलै आ' तकरा लगले हुनकर आ ि मझल भायक खमरहान. .. . .सात भायक भैयारी ि बखरा बॉट हाले ि भेल रहे. . पम्हने त' साझीए छलैथ सब मकयो. . ि लि जोल पूववात ..बीच ि रस्ता खमरहान आ' दुनु कात सबहक पोखरा पाटन घर दुआमर. . .।बडका भायक घराडी . .पूबरीया बाडी के दम्हन .. बाि कात भालसमरक . . आि लताि .कागजी नेबो अररनेबा क ध्यि ि िसकैत कदंबक गाछ ठाढ़ । अम्ह टूह टूह इजोमरया ि सब मकछु ओम्हना चकिैत देखाय पम्ड रहल छल ।िसि कम्म समदथाय लागल छलै. . कम्म कम्म धुऑ धुऑ सन . .सेहो लगैक़ . िदा ई धुॅआ सेहो पम्घलल चानी सन लगैक।खमरहानक दॉया कात गोहाली. .एक कोठरी ि चार गाय पागुर करैत दोसर ि बरद चार. . ि्ह तकैत बैसल. . लग पास के चार सब पर सजि म्म कदीाि भथुआ . के लती छारल . ..सब टा मि लि क' बड सुनर दृश्य उपमस्थत करैत छल . .।एकरे सब के म्महारैत म्महारैत औचक हुनक मयान. . कदंबक गाछ तमर ऊजजर नूआ ि बुलैत स्ती पर पडलैन्ह .. एक छन के लेल देह क' रोईयॉ रोईया ठाढ भ' गेलमम्ह. . . . मकंस्यात कोनो चुडैल. . मार ाम्चन ..

.ओम्हना बाट पर ठाढ दि सधने ओ नारै रोग हरै सब पीडा. . .सुमिरैत ओकरे परनजम्र गडौने रहला ।नै बड लाि नै बड छोट. . धि्यि कद काठी के . . .देखैत देखैत. . कदंबक गाछ तम्र जाकए म्वाम्लन भ' गेलए. .।सब टा भूतक सुनलाहा म्खस्सा िन पडए लगलैन्ह।अम्ह टोल ि. .सैझला भायक पुतौह सोईरीए ि ूईल छम्लह. .म्चलका जीबैत रम्ह गेल छल. . ।लोक कहै .. एहेन स्ती के आति अपन बच्चा पर लागल रहै छै. . ओ ओकरा पर झपटा िरए के फेराक ि राम्त भम्र अहुम्रया कटैत रहै छै . .।म्कयो म्कयो कदंबक गाछ तर अधरम्तया ि कानब के स्वर सेहो सुनैक़. ।म्कयो . .बाडी ि.. पोखम्रक िहाड पर केर म्छटकौने नचैत सेहो देखै. . ुदा नेने सॅ काम्तकारी आदिी. .हुनका अम्ह सब पर कम्हयो म्वसबास नै भेलम्ह. . तखन जात जगत सॅ बेसी रहस्यिय अजात लोक अम्छ. . । ुदा ओ त' बीसीयें.ाँ बरख पम्हनुका म्खस्सा अम्छ ।कम्नए काल ि एक गोट लिगिर पुरख सेहो दृम्ि गोचर भेल रहे. .ओहो ओम्ह कदंबक गाछ तम्र म्वाम्लन. . ओम्ह गाछक म्पाछुआम्त ि बडका गाछी छलै. . ।ओ चौकला . .एहेन लीला त' ओ भूत परेतक कम्हयो नम्हं सुनने छलैम्थ. . अम्ह गंभीर म्चंता ि डूबल छलाह म्क कखन नीन आम्ब दबोचलकैन्ह . नम्हं पता ।बडका िटका लोहा के हथकडी . . .हंटर. . आ ..लोि हषक म्चत्कार . म्कयो हुनक टाग झीक रहल छल. . ड़रौन स्वाप सॅ घबडाक' ओ ऑम्ख खोलला. त' फम्रच्छ भ' गेल छलै. . खुम्नया खबास. .आम्ब क हुनक पएर जॉम्त रहल छल .।

ओकरा संगे अपन खेत पथार गाछी देखैत . ..ओ रतुका पसंग उठौलाह . .िम्स्तष्क ि बाध बोन के स्थान परवएह घुमि रहल छल ।खुम्नया बड बुम्धयार. .एक एक आखर सोम्च सिम्झ क' बाजए

बला . .आजाकारी सेहो . .हुनके सविषयस्क .. .ओकर पूरा खानदान हुनके सबहक रैयत . .।रतुका पसंग पर ओहो अपन अम्कल लगबैत चुडैल . .राकसक गप के सथिश कएने छल ।
दुपहरया ि ओ अपन दलान सॅ टहलैत बुलैत . . खमहान. . पूबरया बाडी के नाघैत. . कदंबक मद्स गेला .. ओ त' बडका कका के घरक पछुऔत छल . .दलान त' हुनक दलान सॅ सोझे देखाम्ह .. ि दा घर खमहान क ऊतर बारी ि बनल गोहाली सॅ झॅपा जाए छलै. कदंबक गाछ मद्स एकदि एकात .. ऊम्हर राहम्ड सॅ भरल खेत. . इम्हर ओम्हर केरा के ढेर रास गाछ .. . . . नीचा जमीन एकदि साफ़ . .एकदि अ'ड ।मदनो ि मकयो नुकैल लोक के देख नम्ह सकैत छल .. .।आ' अम्ह गुनथुन ि सुरज िहाराज अपन सातो घोडा के हॉकैत हाफैत . .अपस्यात भेल . पम्छि मक्तीज पर अस्त होयबाक ओम्रयौन कमर रहल छला ।.अपन . सुवणशियी रम्शि के मखहाम्र मखहाम्र क पकडैत अन्ततः अस्तगामि भेला ।ताम्ह सयि ि सूरज डूबबा सॅ पम्हनहीए घरक चार सॅ उठैत धूॅ स्वच्छ आकास के िलीन करए लागै. . ई धूॅआ कतै पैघ संकेत छलै सजि ि . .।जौं केकरो घर सॅ एकोम्दन धूॅआ नै मकलै. . पडोम्सया स हजो पीसी तुरंत टोम्क दै.थ . “आय यै . .अहॉ के घर ि कामि चूमि नै जरल की . .।' आ ओ मारहम्सथन डब डब भरल ऑम्ख सॅ नीचा तकैत नहूॅ नहूॅ बाम्ज उठे ‘म्क कहै छथीन . .बम्हन. . . घर ि एक टा दाना नै छै. . म्धया पुता सब के बाडी झाडी सॅ लताि तोम्ड क' द' देम्लयै. . .म्हन्कर िनि खराप छम्ह . .केना की करीयै . .म्कछु नै फुरैत अम्छ. ।' “ अॅ यै हिरा अछैत अहॉ उपास पडब . . .सुइद िर लगा क' द' देब जम्हया हैत. आय ई पसेरी भम्र अन राखू .।' आ' तुरंत चूमि पजमर जाए ।

साझे सकाले खा पीबी क’ पुरुष पात अपन अपन दलान ध’ लैथ छलैथ .|स्त्रीगण क’ राज त’ घरे आँगन टा ि. . .छहन्हि देबार क’भीतर ओ सब रे’रनी .बीर बंकाडा ..|ि दा जखने घर सॅ बाहन्हि के कोनो काज पडै. . त’ होर हवास गुि. .तखन पॉच बरखक पुरुष बच्चा से हो हुनका सब पर भारी पडय लागै. . |पुरुषक एतेक वचस्व एहै जे . .स्त्री की गाछ मारीछ सेहो डरे थरथर कॉपै |स्त्री आ’ पुरुष के मारहस्थी रुपी गाडी के दूनू पन्हया िनिल गेल अन्छ . तखन दूनू ि एतेक मभेद मकएक् . .रंभू बाबू स्त्री मुक्त के पक्धर छलाह .. . . .ओ राजा राि िहन राय . .केरव चन्द्र सेन. . गॉधी. .नेहरु सॅ मारेष पभामवत छलाह .हुनके सह पर सम्पूणश परोपटाके स्त्रीगण तकली :टकुआः आ चरखा पर सूत काम्ट क’ दैन्ह आ’ ओ िधुबनी जा कए खादी भराड ि जिा क’ दैथ. . ओही ठाि सॅ बाग .. :तूर : आम्म क’ सेहो वएह देथ |घर पैलवार के सबसॅ छोट भाय. .हुनकर गप गॉधी जी सुनने छलम्थ. . पंचकोरी के काम्नतकारी जुवक सब सुनै छल. .बम्हन ..भौजाय. . भतीजी सब के मचठी पतरी मलखए जोगर पढाय वएह करौने छलम्थ .|

राम्त आयल |फेर वएह उछनर .. नीन हुनक लग पास आम्बा के सब के बेसुध कम्र दै. . ि दा म्हनका छकाबए लागैन्ह. . |मारा राम्त . .. चारहु कात. .सुन िसान . बाध बोन सॅ नम्दया .गीदम्ड . .कूकूर क कानब. भौकब |वएह टूह टूह इजोम्रया .. फेर सॅ आकार देवी धरती परअपन अिृत घट ऊझीलबा लेल उत्सुक . . .रीतल बयार बहय लगलै. . |आ’ ई कहबी जे अदबा राम्त ि भूत पेत भिणि करैत रहै छै. . हुनका बड अनसोहॉत लागैन्ह . .|ई त’ बम्ह सॅ साक्तात्कार करबा क’ िहूत्त अम्छ |िनि अम्हना बऊआबैत ढहनाबैत .. . .ऑम्ख के अपना संग नेने ओही कदंबक गाछ तम्र मस्थर भेल

।रतौधी बला बुढबा चौकीदरबा के स्वर से हो बन्न भ' गेल छलै।ि दा आय कोनो पम्र वा चुडैलएखन धम्र नम्हं आयल छल ।
आ' हुनका भेलन्ह म्कंस्यात भि भेल होयम्ह । . .एहेन पम्वत जगह ि .. कदंब .केरा .नेबो लग कतो ओहेन ओहेन अतृप्त आति भटकै । आकार ि म्पतम्डया थारी जकॉ पूणशर म्र अपन हास पम्रहास ि लागल छल .दुम्धया चादनी. .बरैक बरैक क' ओस म्बन्दु के र प धम्र थारी सॅ खसैत रहल छल . .।आब हुनक म्धयान सबहक दलान .चार .. खपडैल . .कोठा खम्रहान गाछ म्बरीछ
सॅ ढनिाइत. . .लग पास ि सूतल चाम्र टा खाट आ' पॉच टा चौकी पर सूतल पैघ भाय आ' बेटा भातीज सब सॅ म्नकम्स म्वधु प पडलम्ह कतेक सुनर . . जेकर सहोदर म्बष हुए. जे खारा पाम्न सॅ उत्पन . .अराित उम्दघ जननी के कोम्ख सॅ एहेन रीतल सुनर संतान के जनि . .कुदरत वा ईशर. . अपरंपार हुनक लीला ।चरखा चलबैत झूकल बुम्ढया जेना इसारा सॅ हुनका म्दस सोिरिस फेकलकैन्ह. . ओ लोम्क क' पीने छलाह. . .।टुन टुन. . छिछि . .अप्सरा . .नाम्च रहल अम्छ. . इन्दक दरबार ि. . घूॅघर आ' तबला के जुगलबन्दी. . वाह वाह .. अप्सरा जीत रहल अम्छ .. झन झनन . .झन .. नीनटूम्ट गेलम्ह. . परात भ' गेल छलै. . .बरदक गरा ि बान्हल छोट छोट घंटी बाम्ज रहल छल. .कतो म्कयो पराती गाम्ब रहल छल. .।खुम्भया आय हर जोतय लेल बरदक सेवा ि अन्हारे सॅ लामा गेल छल ।नीकि 'ठाम्र निा क' दतम्नि तोडला आ' ओहो खुम्भया संगे भिरा बाला खेत पहुॅचला
''एतेक चाकर चौरस खेत अम्ह चऽऽर ि ककरो नै छै भायजी ।'खुम्भया जहन कहलकै .. त' ओ गॅम्हया क' चार कात हेरए लगला. . गौरव सॅ हुनक सीना आओर चौडा भ' गेल छल ।खेतक कम्नए

कात सॅ बडका नदी के धार बहै छलै .. ..िदा ओम्हर म्हद्स सॅ ओय खेतक लेल .. कोनो म्बाघ नै छलै. . िम्टि कटबा के कोनो भय म्फलहाल त' नम्हि हए छल ।लहलह करैत धान अगहनी. . ।म्किछु आओर अपन खेत घुिए लेल दूर दराज ि देखाए पम्ड रहल छल ।पम्हनुका जिमना .बॅटेदार सब सेहो ईिन बाला. . िम्लकक घरक भले पॉच बरखक बच्चे म्कएक नै ठाढ होय. .. हुनका परोछ ि.. कटनी नै करै ।एक एक टा खेत सोना उपजै छलै सोना . .सबहक दलान पर पुआरक बडका बडका टाल .. . . म्किछु के बडका बडका बखारी सब दूरे सॅ झलकै. . अन पाम्न राखए लेल. . िम्टक कोठी त' घरे घर छईए छल ।छोट सॅ छोट जिमन बाला के साल भम्र क' फसल त' म्नकम्लए जाए । जखन भूतही बलान ि बाम्ड आबै तै बरख त' तबाही िचबे करैक ।ओना कृम्ष पधान सिाज ि गािक सबलोकक पेट त' भम्रए जाए .. ओय सि के जाए छलै किबए लेल परदेस. . ताहू ि म्नारहुम्नया सब .. बड कि . .. ।हॅ आन आन जगह के लोग त' ताहू सिय ि म्नाम्नदाद. . िम्ररस. . कतएकहॉ नै जाए .. आ जौ लोक गेलो हेताह त' हुनक भत्सने भेल हेतम्ह तत्काम्लन सिाज ि. . ।म्किछु पंम्डत सब .. बंगाल चम्ल गेला. . म्किछु आगरा. कािी .जयपुर आम्द आम्द जगह .. िदा तखन हुनक भॉम्त भॉम्तक कपोल कम्ल्पत म्खस्सा जन साधारणक िनोरंजन सेहो करैक ।

धीरे धीरे अंधेम्रया राम्त होिय लगलै .. आब दृम्ष ओतेक ताकतबर नम्हं लगै .. चारहू कात घुप्प अन्हार. . सबहक दलान पर म्दि कम्र क' जरैत लालटेि . ..पन्दरह म्दन धम्र पकृम्त के लटािर अम्हना चलौत रहल .. आकास ि चिकैत .. कोम्ट कोम्ट तरेगन. . .फेर इजोम्रया आबए लेल जोर िारए लागल छलै. ।अध रम्नया क'

कम्लक टा के चान आम्ब धरती के छम्ब म्लहारए लागै । आय राम्त ि. . . . .जखन ओ गायती जप करैत बैसल छलाह .. फेर देखैत छम्थ. . अम्ह बेर स्ती के िथ पर नूआ नै बडका बडका झ‍िटगर केर. . .ओ बडका कका के दलान म्द्स बढल ुिदा फेर ओ कदंबक गाछ म्द्स ुिम्ड गेल. .।कम्लए काल ि.. एक गोट लिगर पुरष . .बडका कका के दलान सॅ उतम्र धड झुकौने ओम्ह कदंबक गाछ ि म्वम्लन भ' गेल ।

अकसि‍ात हुनक िम्स्तष्क ि कौधलम्ह ई त' कारी थीक बडका कका के पूत. . . .ुिदा ओ स्ती . . .ओ . .. के .. . ॅर.।आ अही पशक उतर पाप्त केनाय हुनका लेल अंग्रेज के देर सॅ खदेडनाय सॅ बेरी आवश्यक बुझाय पडय लागल छलैन्ह ।एक िन भेलैन्ह जे पएर दाम्ब क' एकर पछोर धैल जाए . .. . ुिदा दोसरे छन अपन छुद म्वचार पर हुनका ग्लाम्न भेलम्ह ।नीक बेजाए . .पाप पुण्यक तत्व िि‍सा ि पौडैत हुनका ओंघी धम्र दबोचलकम्ह ।

कएक म्दन धम्र बडका बडका केस हुनक िन के ऊनक बडका गुच्छा जकॉ ओझरेने रहलम्ह . .ककरा सॅ पूम्छ. . .कोना की सोचतै लोक़ . ।ुिदा नम्ह रहल गेलम्ह त' भोजन सािप्त केला के बाद आने िने सॅ ज्योम्तषक म्खस्सा सुनबैत बजलैथ 'स्ती के बडका बडका केस. . डाढ सॅ नीचा . .ओकरा राजरानी बनबै छैक़ . ।' अम्ह पसंग प. भॉम्त भॉम्त के ुिह म्वचकबैत. . हुनक . .गृहस्वाम‍िनी बजलीह 'ऐंऽऽऽऽऽऽऽऽऽह अंगोरा . . .बडका कका जे बूढ ि छौडी म्वयाम्ह क' अनने छलम्थ. . से त' बरकेसा रानी अम्छ. . ड़ाढ सॅ नीचा नागीन जकॉ लहरैत िटका जुटी. . .ुिदा राजरानी के कोनो लच्छन त' नम्हं देखाय पडलै ककरो ।सोलहि बरख होईत होई त कका के सेहो सुरधाि पठा देलकम्ह ।एक टा ुिसरी धम्र के जनि

नर्म्हं द’ सकलै बेचारो. ..जीब रहल छम्थ सतवा पूत आ’ पूतौहक नौडी बम्म ।कतेक गंजन करै छम्मह .. सनतीया के िए. . ।’ बस . . .हुनका सूत वाक्य भेट गेल छलैन्ह ।
जड काल नीक जकॉ सुर भ’ गेल छल. . िफलर सॅ कान बन्हने. . िटका चदम्र ओढने . . बाध ि बूलैत काल खुभीया सॅ बजला. “ ऐं रौ. . . .हरिा टोल ि भूत आ’ चुडैल क’ खेल कोना संभव छै .. . .. ई यज भूमि. . . हरि बाबा परबाबा कतेक रास यज .हवन पूजा पाठ केनौं छलैथ एतय .. ।’ खुम्मया गुिसुि . .िथ झुकौने धार क पाम्म ि उकिैत िछ सबके हेरैत रहल छल ।कम्म काल म्बलमि क’ बाजल ‘भायजी . . .जौ अहॉ सराप नै दी आ’ खराप . नै िनी त’ एक टा एकाम्न्त हरिो आहॉ सॅ करबा के लालसा छल ।’ ‘केहेन गप करए छ .. तोरा एहेन लोकके आय धम्र म्कयो गाम्र वा सराप त’ कात जाओ म्कयो रे कारो कम्र क’ बाजल छ. . तू अपने एतेक बुम्दयार. . पैघ छोट के आदर करए वला . .एहेन म्बचार तोरा िन ि कोना एलो .. तू त’ हरि सबस म्बसबासी लोक छ . ।’ बड गहीड सॉस खीचैत बाजल. . “िदा ई गप जौ तेसरा के कान ि जेतै. . त’ हरि सबहक जीबन परलय भ जेतै ।’ “नै नै. . हे ले. .हि अपान जनेऊ के सपात खाए छी ..तेसर कान ि त’ हरिा िहि सॅ नम्हए जयतौ. . ।’ “भायजी. . हरि आंगन बाली बडका कका के घराडी पर काज करै छै .. . एक म्दन बडकी काकी ओकरा सपात द’ क’ पेट माराबए के दबाय दोसरा गाि के एक टा बैद सॅ िंगबौलम्खन्ह .. ।आ’ ई कहलम्खन्ह जे जौ म्कयो जानत त’ हि जहर िहूर खा क’ त’ म्र जाएब . .आ’ ई पाप तोरे िथ पर जेतौ .. तोहर बाल बच्चा परजेतौ. . ।’हि त’ ओम्ह म्दन बुम्झ गेल रम्हए .. .िदा डरे हि की बम्जतौ .

.कासी बाबू सेहो आम्बा क’ हरि दूनू परानी के धकिा क’ गेल छलम्खन ।’ ओ ठक बक जकॉ कतेक काल धम्र खुम्भया के देखैत ठाढ रम्ह गेल छला. . ।सम्पूणशरीर ि अजीब सनक पकंपन होएि लागल छल्रौन्ह. . .. ।असकत्त भ’ खेतक आम्र पर बैस रहल छला। बडका कका के ई चाम्रि म्बवाह छलैन्ह. . . दू टा स्त्री त’ तेसर आ’ चाम्रि पसव काल ि वीर गम्त के पाप्त कएने छलम्थ . .तेसर के बाप अपन बेटीके सासुर के ूिहे नम्ह देखए देलम्खन्ह .. तीनो नाम्त भमानानि बम्त क’ ितृके ि रम्ह गे ल छला ।. .ई चाम्रि . .पचास बरखक वय ि. . . ओ एकर पुरकस जोर लगा क’ म्बरोध कएने छला . .त’ वृदजन हुनका दबाम्ड देने छलम्थ . . ‘तौ त राम्त म्दन गॉधी .. चम्चश्र . .चाऊ करैत करैत अंगरेजी म्बादा पम्ढ अंगरेज भ’ चुकल छ।आम्ह रे बा . .अम्ह ि हजशकी. . . घोडा आ’ पुरष कम्हयो बूढ होय छै. . जखन सिाज ि बहू म्बवाह पचम्लत छैक . चार कात तुरकक राज . .ओही कुकिी सबहक हाथ सॅ अपन स्त्री सब के बचेनाय . .अपन जाम्त बचेनाय हरि सबहक कत्तव्य थीक . .त’ अम्ह ि अहीके म्कएक दोष बूम्झ पडैत अम्छ. . सबसॅ बेसी अकीलगर अही छी।म्मरधनक बेटी के एक टा आशय भेट जेतै. . ।’ हॅ आशय त’ अवश्य भेट गेल रहै. . भम्र जीवनक लेल. . भले बारह बरखक कन्या पचास बरखक बर. .।छल . .छदि . .व्यम्भचार . .रोषण. . स्त्री के जीवन के जोक जकॉ गम्सत कएने अम्छ ।नारी िुम्क्त के लेल ओ म्कछु नम्ह कए सकला .।

म्कछु काल क बाद हुनक नजम्र ऊपर आकास ि अटकल . .जतए ओए म्दन बडका चान छल . .अखन म्दवाकर िहाराज स्थाम्पत छैथ।िुह सॅ म्नकम्ल गेलम्ह. “ .कजिोर चान कलंम्कत अम्छ म्क पचंड रम्कतािन भानु .. ।’। इम्त।

उतराक नोर

केहेन उदासी के िटगमर चदमर ि लपेटल लटपटायल . ई जगह .. .लामा रहल अमछ ।जेना सदाबहार गाछक सबटा पात झमर गेल होय ।सायं सायं बहैत बसात ि कतेको र दनक सघर ममल क' एकटा भयंकर मचतकार कमर रहल अमछ ।ओ गाछ . ओ मबरीछ. . ओ मचडै. . ओ चुन िनी .. .. अपन उतसाह मबसमर कहुना कमर अपन मदन कटैत हो जेना ।दूर .. पहाड .. . र ाशत भ कि परदाफार करबा क पयास ि पकृमत के रहसयवादी दृमष कोण सँ फराक हमट क' मकछु आओर राग अलामप रहल छल ।कतेक अपमरमचत भ' गेलै. ई सब जे कमहयो ओकर जीवन क हदय पदेर बमन चुकल छल । कसमक त' उठल रहै िन ।
बड मदन क' बाद . . आंगुर प' मानलक . .पॉच सावनक बाद .. . ओ आयल छल िसूरी फेर सँ .. ।जगह त' वएह छलै. . ओमहना आकास. . के छुबैत. . पहाड़ . .पहाड .. प' झूि ित हमरयर कचोर ऊँच ऊँच गाछ. . . ओमहना साफ . धोल च कि‍ैत वातावरण. . .ओमहना ि कान क छत प' कार . . . .िदा ओकरा ओकर जादुई आकषरश बड मनघटल लगलै ।ओ गप नै छलै. . जे ओकरा बौरा देने छलैक़ . . मक मखलमखल करैत .. जीनदगी सँ लब लब भरल।. . . ओ वसंत. . सन सनबहैत बयार सडकक कात
बेच प' बैसैत ितर ओकर मधयान दूर पवरश प ससरमत कारी सन कोने मबनदु जकॉ वसतु प' पडलै. . वायनोकूलर सँ झट देखलक़ . बकरी .. पहाडी बकरी .. ओकरा हँसी लामा गेलए. . ठठा क' हँमस पडल छल. . बकरीयो के की सूझलै. . ओते ऊपर चरय लेल गेल ।ओही मदन पूमणरशी के चॉद ओही बकरी के झुंड सँ कमनए उपर

म्बाशाि करैत ओही परि सुन्दरता के म्नहाम्र रहल छली ।ओकर नजम्र आब चॉद प'अटम्क्र गेलय ।ि्ह सॅ स्मर फुम्ट पडलै. 'चलो म्दलदार चलो. . .चॉद के पार चलो. . . । . . 'हि है तैयार चलो. . ।'आ म्बाकल के स्मर ि स्मर मिलाएब ओकरा फेर सॅ जोर सॅ ठहाका लगाबए प' िजिबूर कम्र देने छल .. जे कम्म कग के लेल ओही ठाि गूॅजए लागल छल।छुटी के म्दन ओ दुनु अम्हना साझ पडय सॅ पम्हने बौआबैत ढहनाबैत . .ओए पहाडी के चप्पा चप्पा छाम्न िरै. .गहराई ि उतरै. . चढाई प दौड दौड क' चढबाक कोसम्स ि हाफैत हॉफैत ओही ठाि ओंघडा जाए. .. िसिि त' अपने आप ि म्नाराला. . .भंगतडाह. . .कखनो र इस रहलौ. . कखनो. . कानए लगलहूॅ. . कखनो िदि िदि ि्सकी. कखनो म्छम्डयाएल. .. आब के संभारत. . .ि्दा पहाड ओकर सब र प प' न्योछावर. . . कम्नायो रोषराख नै. . ..सनातन पेिी जे छलै. . ।साफ सुथरा म्नापल पोतल आकार ि नम्हं जाम्न कतय सॅ औचक ि कारी स्याह िघ आम्ब झिझि बरम्स जाए .. .िल रोड प' घुडसवारी करैत दुनु एकदि भीग जाए. . .तहन थर थर कॉपैत देह ि गरिी आनबा लेल. . लग पास के कॉफी हाउस ि जाकए चैन पाबए ।कैलि बैक म्हलस. . प' घुिति. . कंपनी बाग के झुल्ला प' झुलैत. . .म्दन सोन म्चरैया सन फुरशसॅ उम्ड जाए .।

लोकक नजम्र के बेपरवाही सॅ फेकैत. . म्बाकल .. ओकरा एक छण के लेल एसगर नै छोडय चाहै. . ।. उतरा के ओकरा सॅ भेट सीम्नयसशके फेयर वेल पाटी के िचि प' भेल रहै. . जखन दूनू गोटे एक टा कोरस गेने छल. . .म्क जादू छलै. . ओकर आवाज ि. . राजस्थानी सूफी गायक बला . . देखैतो राजपुर ष. . .राजस्थान के बाम्सन्दो छलै.. . अम्ह सॅ बेरी ओकरा म्कछु जानबा के उत्कंठा

कम्हयो भेबो नै कैल रहै ।

गीत संगीत सॅ दुनु के लगाव एक टा नव म्शता कायि कम्र देने छल. . जे सर गि के सातो स्वर ि ओ दुनु सेहो सिम्हत ।कैम्टी फॉल ि नहैत. . .धनोल्टी के गेस्ट हाउस के बरादि प' राखल बडका कुरसी प' बैस. . ओ दूनू त संगीतक नदी ि पौडैत गप सॅ बेसी गीते गाबैत रहैत छल ।

सुरकंडा देवी के यातर लेल वएह म्जद केनॉ रहै. . नै त' म्बकल के धरि करि सॅ कोनो ितलब नै. . .ि दा ओतेक ऊॅचाई प' िघक अपन घर ि. . . देखलक एकरा की झूंड के झूंड म्खहारैत. . पकम्ड लेलक जेना ओकरे सबहक सुआगत लेल ठाढ़ . भयंकर नाद से म्बष विन करैत बरसैत रहल. . ।ऊतरा के त' म्हमति प' िनोिन पाथम्र लदा गेल रहै ।ओ त' गाम्डए ि बैसल रहल. . ि दा. . म्बकल पाम्स के म्चरैत. . ऊपरक चढाई प चढैत रहल िति ओकरे लेल ।ओतेक पाम्स ि म्पाच्छम्ड के म्बान परवाह केने .. अपना के चावाक म्र ष्य घोम्षत करए वाला. . ।

बाजै ओ बड किि . .ि दा ओकर ऑम्खक छलकैत भाव ि उतरा के सब पश क' उतर भेट जाय ।ओकरा पेि के आध्याम्तिकता पर नजम्र पडय लगलै. . .अम्ह इंस्टीच्यूट ि आबए सॅ पम्हने ओकरा होरे हवास कत छलै. . इम्हर ओम्हर ताकए झॉकए के. . .पढाई. . पढाई आ' पढाई. . .सम्दखन पथि पथि पाबैत .. .ओकर िनोबल. . अपत्याम्र त र पेन ताकतवर भ' चुकल छल. . . आ जखन अम्ह ठाि आयल. . .अहूॅ ि पथि. . .।ओकरा लागै असफलता की होबैत छै. . .केहेन होय छै आकाक्ष के अपूणशरम्ह जेनाय ।घर सॅ बाहम्र धम्र ओकरा प' ईशरक असीिि अनुकंपा. . ओ त' धरती सॅ जेना पचास फीट ऊपर .।आ' म्बकल सॅ मिलिब ओकरा लेल अपत्याम्र त

अनुभव छल .. .पेकि पथि अनुभूमत. ... . . .िता ममाता के ममरोध केनाय समभामबक छलै . क़तेको सुयोगम वर छॉमटक क' रखने रहैथ. .जै पर ओ आंगुर रखै. .।ि दा ओकरा पचंड मजद. . .आब ओमह ि अहंकार से हो संग ध' नेने रहै. . .जामत पॉमत .. आब के िनै. . छै. . ई मजन्दगी फेर नै भेटत. . . ।के गारंटी लै छै जे समजामताय ि ममवाह केला सॅ समगशजेबा के रासता खुमल जाए छै. .।आब एतेक योगम . . .ममाणथा लेबा ि िमहर संतान के सोझा कोन िता ममाता मटकतैथ. . .हमथयार खसा देलमखन ।

ममकल कहल. . .हरि अमह संसार ि अपमन कहए बला अमछए के. . पता . .नमह क़तय जनि लेलौ. . .केहेन िॉ के पेि ..होय छै. . केहेन ममाता के दुलार होय छै .. .अनाथालय ि पलल बढल . . ।अहॉ लेल त' अपमन जान देबा के िका आयत पाछॉ हटय बला पाणी हरि ा नमहं बूझब ।अहॉ सॅ हरि ा संसार भेट गेल. . जेना पेकि पथि पाठक जान क' संग संसारक जान भेल. ।'ओ कुिरक गमरदमन प' एक हाथ रखने .. गाडी के मखडकी सॅ बाहर . . पकृमत के अवलोकन ि लागल छल. . मक . .मकरर. ऽऽऽऽऽ्. संगे गाडी र मक गेलै. . । 'की भेलै. . .ओ अकचकाएल. . ''रैमफक जाि. .' . रहसमयि िसकुराहट संग ममकल बाजल । 'पहाडो प' रैमफक़ . .।' ओकरा िहि सॅ ममकलल आ' दुनू खूब जोर सॅ एक समर ि हॅमस पडल छल ।सोझा िति तीन टा गाडी लागल .. .पुमलस कंरोल करैत .. ।

जाडक छोटका मदन जकॉ अमत रीघ रेमंगक ओ अलपावमध बीत गेल छल. . .ममना झंझट. . खचशवचशके कोटशि जाकए. . अपन जनिजनितर के संबंध पर िहर लगबा लेलक .. ।एतेक लग रमहओ क'एक दोसर के मकछु जानबा बूझवा के िको नञॉ भेटलै . .

.तखन लागै संगीते जीन्दगी छै. . ुदा बाद ि लगै . . ओ त' ित .. दूनू के कॉ नि हॉबी. . आर की.. ।
अचानक ओकर हाथ ि जौंना िइकोस्कोप आम्ब गेलै. . .ओकर. . बैसब. . ओकर उठब .. पम्हने कोना बजै छलै. . आब. . .नै कोनो तिीज नै तहजीब .. . छोट छोट गप प' म्चडम्चडायल सन. . .एक म्दन जूता पर पॉम्लस नै लागल रहै त' तासिे आन्हार भ' म्मायुन प' जूता फेक देलकै. . हजाम्र रंगक अजगुत गाम्रक संग ।
पोम्स्टंग त' दूनू के एके रहर ि छलै .. ुदा दू म्मिमासरी ि ।आ अही बीच जेना पेकि रंगीन चादम्र के एके धोआन ि रंग जबरदस्त भखरए लगलै .. ।छोट छोट गप. . सोचलक . .आर सब िनसशत' सीम्खए जैतै. . .ुदा एकरा भीतर तासि म्कएक एतेक भरल छै. . ओ कोना कि हेतै. . .कोन दुख छै. . .कोन अपराध भाव सॅ गस्त छै. . बजतै. . तखन नै .. म्कछु सिधान . .कोनो काउंम्सम्लंग हेतै ।
अम्ह पोम्स्टंग ि ओकर पथि म्र रु के जनि भेल रहै. . .िटरम्माटी लीव प छल. . .कुदरत के अजगुत ईनाि पाम्ब क' ओकर आति पम्र तृप्त भ' गेल छल. . आब म्कछु नै चाही पभु. . .अपन कृपा अम्हना बरसेने रहब ।ओकर िॅ पापा आम्ब क' म्कछु म्दन ओकर सुख ि रामिलि भेल छलम्खन्ह. .।
म्बाकल के सुभाव ओकरा म्कछु म्बारेष बदलल लागै. . ।ऑम्फस सॅ आबैत ितिर बच्चा के कनी ि्ॉमकोरा कॉख ि ल क'. . चाह ताह पीम्ब क' सीधे अपन स्टडी ि चम्ल जाए. . ।कोनो खास गप सपप नै. गीत संगीतक दम्रया जेना सुखा गेल छल .. . .राम्त ि म्डनर करैत दोसर करिा ि जा कए सूम्त रहै. . बच्चा भम्र राम्त कॉय कूय करैत सूतै जे नै दैक़ . इहो सही. . ओ त म्दन ि सूम्त क'

नीद पूरा कम्र लैत छै. . [िदा म्बकल के म्दन ि कत चैन . . ।
छुटी ि पडल पडल. .आब ओ बड बोर होबए लागल छल. . बच्चा
के काकिाज देखभाल करए बाली बंगाली आया के वात्सल्य पेि देम्ख
ओकर िन एकदि पसन .. ओकरे नीन सूतै ओकरे नीन जागै. .
नहायब सफाई. . नैपम्कन बदलब. . म्डटॉल सॅ ओकर कपडा सब
के पखारब . .एकदि सिय प' दूध बना क' बोतल सॅ म्पयाएब.
.साझ ि पैि प' सूता क अहाते ि कनी ि्नॉम घूिि दै. . एक बेर
ओकरा कहबा क' देर छलै. . ओ फट स' सीख क' अनुकरण करए
लागै. . ।उिहर सॅ म्धयान हम्ट क' म्बकल प केम्न्द्रत भ' गेलै. .
.एतेक उदासीनता म्कएक एकर व्योहार ि. . .कम्नायो कोनो अपना
पन नै. . पी 0आर 0के स्टाफ जेना बस ठोर पटपटा क' हाल चाल
पूम्छ लै. . ।नै ऑम्ख ि ओ चिकि .. नै. . ठोर प' [िस्कुराहट. ..
. । ओकरा िन पडलै. . .पम्हनो त' ओ नम्हए बाजै. . छल बेसी.
. जखन दूनू के भेट होय. . त' गीतकार .. संगीतकार क चचा सॅ
सुर होय आ' गीत प' आम्ब क' सिाप्त. . .।म्कंस्यात म्कछु परेरािनी
सॅ गुजम्र रहल होयत ।घर ि पडल पडल ओकर म्दिाग रैतानक
अडडा बम्न गेल छल. सोचलक . बड आराि भेल आब डयुम्ट ज्वाइन
कम्र लेबा क' चाही .. दूिसि त' भैए गेलै. . ।

एक म्दन ओकरा जखन रहल नै गेलै. . ओ चुप्पे ओकर स्टडी ि
जा कए पाछाॅ सॅ ओर गरा ि हाथ धम्र क' अपन कान ओकर गाल
ि सटबैत बाजल 'म्क भ' रहल छै एतेक [िस्तैदीसॅ।' हास्य ि कहल
ई रब्द ओकरा एकदि चौका देलकै. . चट सॅ अपन डायरी बन
कम्र ओ अपना के ओकर बाहुपार सॅ [िक्त करैत ठाढ भ' गेल छल
.. 'अरे चलू तैयार भ' जाए हिसिब एक टा नाटक देखय चलैत छी
।'आ' हाथ पकडने बाहर बरािदा ि चम्ल आयल छल ।

ओय म्दन जे भेल हो ुदा एक टा संरय के बीजारोपण त' अवश्य भ' गेलै . .। ओकर नि औउनाइत रहलै. . ओ म्लख की रहल अम्छ जे ओकरा सॅ दुराव म्छपाव करए पम्ड रहल छै .।परोछ ि ओही कोठरी ि जाए त' आलरिरी ि ताला लटकैत. . .के जानै कुन्जी कतय छै. . ।आब जखन ठाम्नाए नेने रहै ..रहस्यक उदघाटन करए लेल तखन कोन गप . .।ओय कोठरी ि बगीचा म्दस सॅ सेहो एक टा म्खडकी छलै. . जै प' सम्दखन परदा फैलल रहै छल।म्दने ि ओ ओही परदा के कनी म्घसका देने रहै ।रात के बारह बाजल . .चारो कात अन्हार .. सनाटा. . ।सब म्कयो खा पीम्ब क' सूतल .. कुि र अंगेठीि चाड करैत कुरसी सॅ उठल. .. ड़ायरी के अनबीरा ि बन कम्र कुरसी प' चम्ढ कुन्जी के रोरनदान ि राम्ख देलक ।बस . .ओ म्दन छलै .. . ।

चक सुदरश सॅ ओकर गरा कम्ट गेल रहै . . .िस्तक . .कुरसी प' बैसल .. ररीर. . धरती प' खसल. .रोम्णात सॅ .. लथपथ. . .पॉच पॉच हाथ तडपैत. . .ुदा कतेक तडैपतैक़ . कम्नाए काल ि रान्त भ' गेलै. . टेबुल प' राखल िस्तक आब पूणशगंभीर भ' क' आगॅू के रणनीम्त सोचैत रहल. . .।िलिा गहीड छलै . .सोचबा ि सयि लगलै ।

घर के राम्स्त सािन्य रहलौ. . .भोजन बनै. . खेनाय खायल जाए. .बच्चा के झूला प' झूलायल जाय. ..दासी ुसीक ुसीक क' िसाहब के रंग म्बरंगी म्कस्सा कहै. . िि साहब ठहका िरै. . . ुदा ज्वाला ुखी धधकैत रहलै. . लावा नै बहरैलै. .तै स की . ।

अपन टा्रन्सफर नाथशईस्ट ि करा क' म्बना खड खडकेने . .म्नाःरब्द िहाति बुद जकॉ म्नारा राम्त के फ्लाईट सॅ ओकर ओही घर सॅ .. पलायन भ' चुकल छल ।

जीवन सॅ जीवन पथक लंबाई बेसी होइत एलैहै ।नीचा हेरब . .खाम्ध. . गुफा. . वन .. पहाड़ . सागर. . .उपर ित एक टा नीरभ आकार. .. .रंग ब्रांरंगी उडैत पाखी . असीि राम्स के खजाना .. .ऊपर सॅ ध्यान नीचा एलै. . ताकब सूर कयल.. ..कोन पना . .कोन पोथी. . कोन पंथ. . िम्दर .िमसजद. .चचश. .गुरदारा . .गोनपा. . .ध्यान . .योग़ . ।िमस्तषक फेर सॅ गम्रदम्म सॅ जुम्ड गेलै. . आब हदय ि जे पम्रवतश भेल होय. . म्दाािग एकदि रान्त. . ।जीवन क' ओही नाटकीय िड प 'यवम्नका पतम्न' कम्ह कम्हया कत नै पूणशम्वराि लगा देल गेल छल।कोनो 'हयु एन्ड काय' नै िचलै ।

िसूरी ि फेर अयबा के कोनो सरकाम्रए पयोजन छलै ।आय ओकरा संग ओकर कोसशिट वान्या छल।सिय अपन राशत फेरी लगबैत ओम्ह ठाि कम्न म्वसेष काल के लेल म्वलिल छल. .थाकल थेम्हयाएल. . ओंघाइत. . ओकर म्वशाि क' ि्ड देम्ख जम्ड चेतन सब अपन शॉस रोकने. . म्कयो कोनो उकठी नै करै. . कम्नयो सोर नै हुए . .।सडकक कात बनल बेन्च प' बैसल ओ ओम्हना सोझा के पहाड प' दूर्ऽऽऽऽऽऽॅचरैत

बकरी के देखय लागल।ओही म्दन जेकॉ आय सेहो बकरी चरैत छल. . कारी कारी म्वन्दु ित ।ऑम्ख ि चिक उठलै. . . 'गडेम्रया क' जीनगी. . पहाड हो वा रेमास्तान . असुम्वधा .. कष सॅ भरल. . दीन हीन लाचार बीिर ' भीतक छोट छोट घर .. .उजडल उडल छप्पर . . िटीक चूिि प' चढल िटीक बासन .ि . . .खदकैत. . भात. . . .िम्टए के परात ि .. सानैत. . बाजरा के आटा . .चुनरी सॅ गंदा हाथ पोछैत. . खीझैत. . धूऑ सन ि्ह वाली स्ती.

. नीकि गाछ तर पडल खम्टया .. चीलि पीबैत. . खोखी करैत जजश वृद. . .ताड के पम्टया प' चीकट केथडी .. .फुल्लल हाथ पयर . .पीडा सॅ कहरैत कृर काय वृदा. . . कम्नाए हम्ट क' पॉच. सात ..नौ .. बरखक नंग धडंग धीयापुता . कम्रका बकरी के बच्चा संग खेलाइत ..गाछ सॅ बान्हल िम्टक बासन ि पाम्न पीबैत बूढ घोडा चारहु कात पसरल म्लदी. .।' घबडा क' ओ ओही म्द्स सॅ िह फेर नेने छल. ।िदा कम्नाए काल ि नै जाने ओकरा की फुरलै ।वान्या के ई पसंग सुना ओ ओकर िन्तक्य जानबाक' कोरसीस कयल. . 'ई बता जे ओ गडेम्रया पैलवार केकर पम्नाका करैत रहै छल .. ओहेन म्नातात गरीम्बयो ि ओकरा केकर आस छल हेतैक ।' देवदार के सुडौल वृक म्नाहारैत. . वान्या कम्न काल िस्कैत रहल फेर ओकरा म्द्स ताकैत बाजल. 'आर केकर . .ओही रोटी ठोकए वाली के जे िल हाथ अपन चुनरी ि पोछैत छल .. आ .. जेकर तीनो बच्चा बकरी के बच्चा संग दौड लगबैत छल. .ओकरे .घरबला के .. आम्खर ओही पैलवार ि ओकरा अलावा और के हेतै किए बला . . ।'

''की।''

''नै एकदि ठीक ।कोनो पढल म्लखल अपन पैर प' ठाढ जागर क स्ती एहेन पैलवार के म्कएक र तु बनतै ।'

''ितलब' ।वान्या कम्न अचरज सॅ . कम्न गहन दृम्ष सॅ ओकरा म्द्स ताकलक।

''तौ नै बूझबही।'अनंत ि ताकैत .. अत्यंत म्वरक्त भाव स क'म्ह' ओ वान्या संग ओहीठाि सॅ उम्ठ वापस अपन गेस्ट हाउस ि चुपचाप चम्ल आयल छल .।।

हिानगर ि सुनीता

“हाली हाली खा लू भनसा हो गैल है. . आ’ भीतरी से कुंडी लगा के सूम्त रहब।आ’ हे गे म्तासा .. तू देखीहै बौआ के .. . कोठम्ारये ि खेलीहै सब कोनो ।’अपन घरक सबटा काज म्ताबटा क’ . . . तीनो म्धया पुता के खुआम्ाया क’एक गोट म्डब्बा ि सूती साडी के लता ि मान मान क’ सोहारी रखलक़ . दू गो नीसा. . दू गो रीता .. एगो बऊआ. . दू गो हि. . नीसा के पप्पा त’ खाईए लेलकै. . भाई जखनी औतै. . तखनी देखल जैतै. . ।अखनी त’ हि चाह पी के चल जाए छी .. ओ ठीना कोनो नै कोनो घर ि चाह म्बास्कुट भेम्टए जाए है. .. आ’ दुपहम्ारया के खाना बनाब सॅ म्ताम्चन्त. . .आ जम्हया नम्ह बनाबै . . भोर ि देर से ऑम्ख खुजै. . .त’ नीसा अपन सबके रोटी बना लैत छै. . पप्पा आ’ ाि के खुआ क’ ओकर लंच से हो बाम्न्ह दैत छै. . नि ि सोचैत गुनैत ुिस्कैत. ..नीसा के काबीलती पर गुम्हरैत . चप्पल पम्हर क’ घर से म्ताकलबा सॅ पम्हने सोझा ठाढ तीनो म्धयापुता प’ एक नजम्र फेरैत ओ नीसा के फेर से सब बात बूझौलकै. . .घरवला एक कोना ि बैसल चुपचाप बीडी धूम्क रहल छल. ।ुिह प’ कोनो भाव नै. . कम्हयो नै रहलै आब कत से हौक . ।

जल्दी जल्दी ओ घरक सीढी उतम्र गेल . . ुिदा भम्र बाट अपना संग चलय वाली संग फदकैत रहलै. . “हे गे सोनी .. कम्तायो देर हो जेतौ. .. .त’ ऊ जे बारह नंबर बाली हौ. . आमा उगले लगतउ ुिह से ‘एता देर क्यो हूआ. ..।’ हिरो बडा खीस बडलौ. . ।ठाि जबाब देम्लयै. . कोनो सरकारी नौकरी है .. जो हिको ऐसे डॉटते हो ।’ुिह चुप्पे रम्ह गेलै ।आ उ जे सात नंबर बाली हौ. . .एक कप चाह म्पाया क’ बेटा बेटा कम्र के’ढेर के ढेर

काज कराबे लगतौ . . ।कोनो नीमनि घर पकडा जैतै .. त' हि ओकरा छोम्ड देतीयै .. ।फोन अतउ त' कहतौ .. तुम्हारा तो बहुत फोन आता है ।'

काज से घुरती काल टहटहौआ रौद .. .सुरीला के काज सेहो एक बजे धम्र खति हो जाय छै. . त' एक घर बचलै . .कपडा वला. . जे कामि यो हो जैतै .. कौन बेगरता है. . सोम्म के ओहो ओकरा संग घर चम्ल पडल छल .. ।सुरेनदर भेटलै रस्ता ि. . .ई म्चकरल 'हौ जीजा .. .म्बजली बला कािह डेढ सौ से एक दिडी कि ि नही करबौ. . .।'ओ चुपचाप िस्कैत जाईत रहल छल .. .। 'आहाँ के म्बजम्लयो के काज आबै है।'सुसीला अकचका क पुछलकै त' ओ फुम्ल क' तुमि होईत बाजल ''हे हि सब काज कयले हीयै. . .घर बनाबे के रोजा मिसम्तरी बला .. िली बला .. सब्जी उपजाबए बला. . . .सब काज केले म्छए इहाँ पर .. .गाव ि रम्हए त' हिर बडकी म्दयाम्दनी. . राम्त क ले जाए रहै खेत ि कटनी करवाबै ।'

घर पहुँचल त' दरवजजा खूजल देम्ख क' ओकर करेज म्हल गेलै. . .नीसा के बाबू. . फोफ काटैत नीचा ि बीछल चादर पर ओंघडायल. . .तीनो ि से एको म्धयापुता ने घर ि. . उनटे पैम्रए भागल जेना म्बच्छा डंक िम्र देने होय पैर ि .. .पाछाँ बाला पारक ि ताकल .. पीपरीक गाछ तरे िझली बेटी रीता कानैत ठाढ .. .िय के देम्खक ओकर कोढ आर फैट गेलै. . ''िमिी बौआ हेराय गेलौ. . दीदी गेलौ है खोजे. . .।' ओ त' पम्हनही सँ आतंम्कत. . .म्बन कग गिने. . लग के िम्सजद ि िलवी लग पहुँचल. . .आ िलवी के कही सुनी के म्नहोरा पाती करैत िईक सँ एनाउंस करबा देलकै. ''डेढ बरक के बच्चा. . रंग गोरा. . गरा ि कम्रया तागा

.. लाल रंगक टी र टशपम्हरने. . ाथि पर बडका बडका झोट .. .हेरा गेल छै. . जे भले आदाी के भेटै. . .कृपाकरी क' ओकरा सेक्टर तीन के हिम्मजद पर आनय के नेक काज करौ ।त एही काजक एवज ि अहू के अल्ला दौलते असबाब से भमर देत।' ालिवी के बोल भरोस पर ओ कनी हल्लुक भ

क' अप्पन घर म्दसा बढल त' बडकी बेटी नीसा सेहो पारक म्दस से आबैत छलै.। .मिाी लग दौडल . . 'पप्पा सूम्त रहलौ .. .दरवज्जा खूजल देम्ख के बऊआ नीचा जाय लेल जीना से एतना तेजी से उतरलौ. . म्क जाबेत हि चप्पल पहीम्रय पएर ि ताल्ले त उ म्मपाता .. .।' भायक पेि से बेसी ातिारी के भयानक आतंक .. आब त' झोट पकम्ड क' हरिे ारित ई सोम्च क' सात बरखक नीसा ऑम्ख से ढरढर नोर बहाबैत जोर जोर से कानय लागल छल।

दूनू बेटी के ल' क' ओ घर आयल .. घरबाला तखम्न धमर फोफे कटैत रहै. . ।पीत से आम्हर सुनीता पम्हने त' अप्पन ाथि कपार के' पीट अपन भाग्यके सरापलक़ . जे केहेन म्मकमाी जोरे भगाानि ओकरा बॉध देने हथीन .. .।तेकरा बाद सूतल आदाी के पएर झीक झीक क' उठौलक .. ''हे उठू नै .. इहॉ परलय ािचल है आ अहॉ म्माभेर भेल सूतल हती .. देखीयौ. . .बौआ काहॉ चल गेलइ .. .ायि गे ायि ।'आ' कानय लागल ।. . .. ''बौआ कहॉ चली गेलै. .'ई वाक्य जेना ओकरा कान ि घुम्स ाथि फोडैत म्मकैल गेल होय .. ।बौआ .. पाथर पर के दूब .. .सोरह सोाबारी कैलकै. . तखनी भगाानि देलम्खन .. ततेक धडफडा के उठलै . . . जे म्खडकी के पल्ला से ाथि ि ठॉय चोट लगलै. . कपार दबने उठी के बैस त' रहल ादा एको आखर ाँह से बहरैलै नम्हं ।सुनीता बजैत रहलै . .कनैत रहलै. . ।फेर पाछॉ घुम्र क' कहलहक 'दूनू बम्हनी घर

बन केने रम्हए कोनो आदमी कहतौ त न खोम्लहै. . .आ’ अहाँ चलू हरि जोरे . .पुम्लस लग .. आ’ जीजा के सेहो फोन कम्र दैत म्छए।’ भाय परसू सेहो ताधम्र म्डउटी पर से आम्ब चुकल छल ।

सब मलिक’ फेर से मिस्जद पर पहुँचल .. .ताबैत घंटा भम्र भ’ गेल छलै . .आ’ म्कयो अनम्छया सेक्तर तीन के झूलाबाला पारक के गेट पर कानैत ओही डेढ बरखक बच्चा के उठा क’ मिस्जद प’आम्न क’ राम्ख देने छलै. . . बौआ के देखक सुनीता के जान मे जान अयलै।हुलम्स क’ ओकरा कोरा लेलक आ दूनू हाथ से कम्स क’ अपन करेज मे सटा लेलकै. . .अनमिल धन हरि. . ।

अम्ह अलबा दोलबा मे साझ पडय लगलै. . त’ दौडल साझ बला काज लेल । .. .राम्न क’ भनसा बनौँबा काल. . .घरबला के खूब खूब लोहम्छ क’ कुबोल सुनोलक़ . . ‘बच्चा तक ऑहा के देखे पार नै लगैय. . . . किान मिम्लक म्कराया मेगे आबे है त’ अहॉ लुका जाय छी .. एतनो नै .बोलल होइय जे दू तीन म्दनक बाद आऊ . .बा घरे प म्कराया पहुँचा देबए. . .पेम्छया से तीनि तरकाम्रए आम्न क’ राम्ख लीअ. . खाली मुँह लटकौने . .धौना मारौने बैसल रहता जे बलु है न सुनीता सरदार ।’

“तू ही न पम्हलुका नौकरी छोडबा के ई लगबा देले है. . जे इहॉ बेसी पैसा भेटत. . आब नाइट गाड के दूनू म्सफ्ट के नौकरी कम्र के त’हरि पराने म्नकल जेतै. . .हम नै करबौ ई नोकरी गावे चल जैबे .. ऊहे खेती पथारी करबै. . .।’ गाव के नाम सुम्न सुनीता के म्दमाग जेना आसमान से धरती पर आ गेलै .. . ‘नै .. दूनू म्सफ्ट के नोकरी नै कर एके बेर कर . . तम्नका आराम त जररी है.इए है .. .।’ ओकर अकड कम्न कमजोर पडलै .. स्मर सेहो कम्न मिलायम .. .’’सूतू त’ तम्नका कुंडी त लगा लैतीयै भीतर से

केते फकरीरानी होलै . ।’’

‘‘हे हि कुंडी लगाबए लगम्लयै त’ नीसा म्चकरए लगलै. . नै करहू बन .हि नीचा खेलय जेबै त’ हि की कम्रतीयै. . ।’पम्त अपन पल्ला झाम्ड सात बरखक बेटी के िथ प’ राम्ख देलकै. . .जेकरा इसकूल छोडबा के दूनू छोट भाई बम्हनी के देखभाल करै के म्जमिवारी के संगे आटा सानब .. रोटी पकायब बरतन िजब दोकान से बीडी गूटका आनब आ’ आर आर काजक संग कतेको काज करए पडैत छलै. . .उठौलक िय छोलनी आ’ दे दनादन .. .पीठ प’ दू चाम्रये छोलनी सॅ कजोिर बच्चा . .फरशप’ खैस पडले. . चान्ह आम्ब गेलय जनू .. . ई देम्ख ओकर िगजक पारा तुरंते नीच्चा आम्ब गेलै. . .’’हे संतोषी िय .. ई की भेलै .. .. गै .. बऊआ .. .नीसा .. गै .. ऑम्ख खोल नीसा .. .’ कोरा ि ल’ क’ पाम्न म्छटलकै ुिह प’. .ठोर अलगा क’ पाम्न ढारलकै ुिह ि .. . .. .कनी काल ि नीसा ऑम्ख खोललकै. . . । ‘‘म्धया पुता के एना नै िरि के चाही ।’ बाप कुन्ुिनेलै. . त’ ूिह लटकौने िए .. .सब के भोजन भात कराक’ अपनहू खा पीबी क’ सूम्त रहल छल. . .घरवला के त’ रतुका म्डउटी .. .ओ त’ गेल काज प’ ।

‘‘हे म्दन त’ सब कोने के फ्करीसाम्नए ि कटै हैक . . म्नाम्फम्कर चाही त’ गावे ि न रम्हतीयै. . ।ऑय हे. . राम्त एतना हो हल्ला िरपीट काहे भेल. . .।’ ‘‘क़थी कम्हयो बम्हना .. .छोटका बौआ के फल फुला के तुमि भ’ गेल है भम्र भम्र राम्त कानैत रहै है. . ई त’ म्नानसरे खा पीम्ब क’ अपन टैपू म्नकाम्ल क’ काि पर चल जाए है. . .. कम्नाये हम्ट क’ हरि बाप ितारी के घर है ।त’ कामि खुन बच्चा के ले के हि डाकडर के देखाबे गेलीयै. . .आबैत जात बेरो हो गलई आ थाक़ सेहो गम्लयै .. .हि िय भीरा खा

लेलीयै. . .सोचम्लयै. . .जे एकर पप्पा त' रोज बाहरे खाय है. . ।कामि बाहर न खैले रहै. . .रोटी के म्डब्बा खोललक त' खाली .. .बस पीते आन्हर. . .सूतलाहा बच्चा के डेगा उठा के जाय रहै फेके बाहर . . दार के नसा ि साड बनल. . त' हिहूँ पीता गेली. . गैस के पाईप खोम्लक अपना देह ि आग लगबै लगम्लयौ. . ओ' त' पडोम्सया हल्ला सुम्न के दौडलै. . आ' हमरि चुनी से आमा मिझैलकै. . .दू थापड रिदावा के िरबो कैलकै .. .तखम्न जा क' सात भेलै ।'

''जे बूझे म्छयै . .त' कथी लै नम्हं दू गो रोटी बना के सम्दखन घर ि रखने रहै छी. . ऊ न खतई त' म्धया पुता खा लेतै. . कोनो म्जआन थोडे न होत. .।' िना के म्हरदय एखेन धम्र ओही आमा ि झुलम्स रहल छलै. . ।ओकर स्पर बदम्ल गेलै. . ''िर ि झौसा के ओकर करेज नै डाहब जे आब दलीदर के भनसा कम्र क' खुएबै. . .हि त' जाय म्हए िय भीरे ।' सुनीता के करेज ओकर दुख से पसीझ गेलय ।ओ ओकर िदैद करए चाहलकै. . ''के भर म्जनगी बैठा के खुऔत. . .कोनो काज म्कए नै पकम्ड लैत छी. . काज के कोन कमी है. . ईहॉ पैसा बरसै है. . .कोठी वाली सब के कम्न आटा साम्न म्दऔ त' दू सौ टाका. . सब्जी काम्ट म्दयौ ..एक टैि खेनाई बनाए के अढाई हजार .. .। अहॉ के बीिर बच्चा ठीक हो जाएत त' पकम्ड लेब िय तम्न बच्चा के त' राम्खये लेत न. . ।' ओकर नजम्र एके संग पानी के टैकर आ' अपना घर के सोझा खटौली प' बैसल बुधनी प' पडलै. . ''हे बुधनी पानी के गाडी अलौह जो भर ले म्डब्बा सब ि. ।' ओकर सलाह प' बुधनी उछम्ल क' बाजल 'ओ जंग त' िरा पीटी हो रहल है ।'' 'है चल. . हिहू चलै म्छयो देखे म्हये केकर बाप के िजाल है . . . न भरे देतई.

. . ।’पॉच पॉच म्लटर के दू म्डब्बा ि .. .भीड ि घुम्स घाम्स क’ कहुना ओ भम्रये नेने छल।बुधनी के कहलकै. ‘जखनी देखीहै ..टैकर हिरा फोन कम्र दीहै. . हि दौडल आम्ब के पाम्न भरबा लेब तोरो आ’ अपनो।’चार चार म्दन प’ पानी आबै है .. त’ लोक की करतै. ।

सडक टम्प क’ सीधा पबलीक इसकूल छलै . .. आ’ ओकरे सीधा ि ओ कालोनी जाम्ह सॅ सटल ई गाि.. जतय म्कराया प’ कोठरी ल’क’ ई सब रहै छलै. . . ।काज प’ अबैत जायत ओकरा नजम्र इसकूल के गेट प’ ठाढ िली प’ पडलै. . कई म्दन सॅ ओ सोचैत रहै ओकरा सॅ गप करए के. ।ओही म्दन ओ झटम्क क’ ओकरा म्दस बढल आ गप सप्प ि पता चललै जे ओहो ओकरे ईलाका म्दसुका छै. . . अही म्छना िली मारी के म्छका नेने हैय. . .। ‘ िली के काि त’ हिहूॅ करैत रहम्लयै ह’ म्बजबासन के फारि ि . .. बडकी चूकी नरसरशी रहलै ह. . बडका बडका गिला उठाबी राखी. . .खाद पानी म्दयै. . म्नकौनी कम्रयै. . बडी म्दन तलक हि ऊ सब काि कयले म्हयै. . .।’. . . ‘‘त’ काहे छोडलू. . .उहॉ . ।’

‘‘फारि के िम्लक त’ बडा िनैत छलै हिरा. . .ओही ि ओकर बडका कोठी रहलै ह’. . हिरा बौआ के जनि ि हिरि कोठरीपर आके पच्चीस सौ रपीया देने रहै .. कहलकै. . ‘‘जे एकर जनि हिरे जनि म्दन हुआ हैं देखना ई कतना बडा आदिी . बनेगा. . .िदा ओ त’ सम्दखन बाहरे रहैत छलै. . . आ ऊ ठेकेदरबा पैसा देबै ि.. .बडा हराि . .. सब सम्न रम्ब के पैसा के खाम्तर ओकरा

से झगडा फसाद होय. . . ।अही से इहवा चम्मल अलीयै .. ।'' आ बड चलाकी सॅ ि सैक ि सैक क' ओ अपन घर बाला आ' भाय लेल िलीी के काज गछबा लेलक़ ''म्क होतै. . रात ि म्हडउटी करम्थन आ' म्द्दन ि िलीी के काज क' लेथीन. . दूनू म्सफ्ट गाड के का ि ि बडा परेसानी तम्मको आरा ि नै. . .।.'
पसनता के िरे ओकर पएर जेना हवा से बात करए चाहै. . .हाली हाली पहुॅची घर आ' हाली से बताबी ई खबम्र . . ।

''म्क है. . काहे एतना धडफडी देखा रहल छहू .. . ।'' जीजा सेहो कोठम्रये ि बैसल भेट गेलय. . ।आ डबल नोकरी के गप सुम्म सब म्कयो के िन ताताथैया करए लगलै. . .। 'चलू कुछो नीमि न पकाऊ. . .खीर पूडी बनाऊ ।. .पाटी कर . . ।आय हि रा तरफ से. . ... जो गे नीसा . . लछ्िया के दोकान से .. .एक पैकेट दूध आ' आधा लीटर तेल नेने आ. . .. . आटा है न म्क उहो ि गाबे के पडतै. . . .. ।' सुनीता के जबाब ि 'म्क आटा हो जैते' ओ बड अम्धकार सॅ अपन र टशके जेब सॅ नि री म्काम्ल नीसा म्द्दस बढौलकै. . त' नीसा उछेल पडलै. 'हि म्चप्स लेबै. ।' अपन उदारता के पम्रचय दैत जीजा पचास टाका और म्कालल़क . .. .रीता सेहो ठुि कल. . हि टॉफी लेबै .. ।' . ''जो जो जे ि न होउ खरीद म्लहै . .।'

जीजा सुनीता के बूझैलकै. . 'अब एतना पैसा के की करबहक़ . . दूनू के ना ि पर एल आई सी खोलबा म्दयौ. . .िहीने िहीने हजार वा पनरह सौ जि ा करै के होयत .. आ' छौ साल ि एके बेर छौ लाख उठैब त' देखाईयो पडत. . .. नाईट गाड बला पैसा खा पीब घरे भेज .. .आ िलीी बला पैसा जि ा करए .. दू गो बेटी है म्बयाहे के. ।'छौ लाख के ना ि सुम्म सुनीता के ि ह खूजल के

खूजले रम्हि गेलै. . .। फेर कम्मि काल ि बाजल . 'ठीके त' कहैत हथीन जीजा .. खोम्लि दहु आ' हि हूँ त' किटी लगौने म्छि्यै. . . ई सानि वाला कोठी. है न ललका फूल बाला . .इहाँ जे अंटी रहै है .. आ' ओकर बेटा दूनु मिल क' किटी चलाबे हैई ।बडा भला आदिमी है. . बोली केहेन िठ .. जेना िध चुबे हई. . .सब के सयि काल पडला प' िदम्दियो करे है. . ।' ''हॅं. . हॅं जनेत हीय ए हिलला ि भला ओकरा लोकम्नि के के नम्हिं जानै है. ।'

'इंम्निरा आवास ि जे पैतीस हजार के चेक दु िरतबे मिलतै. . .त' हि पम्हिले जाकए ईट ..सूरखी .. मारा लेबै. . आ' पनरह म्दिन के भीतर खाली जिमन पर िकान के जोडैया करबा देबै. . . .ताम्कि दोसर चेक .. जल्दी से मिल जाए. . ताले . हलबैया बला दू कटा जे घरे के सोझा ि म्बिकाऊ है. . ओ खरीद क' छोम्डि देबै ..'' ।अपन भम्बिष्यके योजना ि लीन सुनीता िडी झूका क' पूडी बेलैत बाम्जि रहल छल .. .। 'आहाॅ के घर नै ह' की . .।'जीजा पूडी आ' खीर के अचार संग सुआद लैत पूछलक .त' िडी उठा क' सुनीता चिक क' बाजल 'घऽऽऽऽऽर ।म्बियाह से पम्हिनही के है. . पका के िकान है. . ई पंजाब ि रहै हलम्खिन तम्हिये बनौने छलम्खिन. . .।' ''त फेर .. अहाॅ के इम्निरा आवास के पईसा कोना भेटल. . .।'. . ''सबके भेटलै परोपटा ि .. दू हजार दे क' आइल रम्हियै. . पोरकॉ .. .जे हिर नाि गरीबी रेखा के नीचे बाला म्लिस्ट ि आबे के चाही .. न त' हि सूद सम्हित पईसा बोकरा लेनाय जाने म्हियै . .।'घरवला एकदि चुम्पि .. जेना सुनीता िलम्कित .. आ ओ ओकर खवास. . .।भाय सेहो चुम्पि ।हब्बिर हब्बिर सबके खुआ म्पिया क' ओ अईठ बासन सिटय लागल छल .. दूनू नाइट गाडशअपन अपन कम्मिल. .ओढना झोरा झपटा ल' क' ओही पूसक

थरथराम्त हाड हाड कॅपाबैत राम्त ि म्डयूटी पर जाय लेल म्तकलल ।छोटका बच्चा त' साझे सूम्त रहल छल. . दूनू बम्हनी खाईत ितिर पटापट ओछेना पर खम्स क' बेसुध ।तीनो के पम्तयानी से सुता के कमिल चदम्र ओढबैत झॉम्प तोम्प क' म्तम्यंत भेल . .|पछवारी देबाल प बडका कलेडर टॉगल रहै. . हॅसैत लडकी के ।ई की. . ई त' फाटल है. .कम्त सुन अटकल. . .ओकर म्दािग फेर सॅ गरािय लगलै. . ई हे छौडी सब के कम्रस्तानी होतै. . ।िन भेलै. . सूतले ि एक एक लात दूनू के ािरी घीच क' .. ुिदा चुपचाप िन के बलजोरी काबू ि राम्ख .. कम्तसून आटा घोरी क' आम्त प' बरकौलक़ . आ' तपते तपते चिसि सॅ उठा क' देबार प' कलेडर के साम्ट देलकै. . .|

जीजा सेहो दूनू गोटे के संगे म्तकम्ल गेल रहै. . .ुिदा कम्तकबे काल के बाद ओ आपस कोठरी ि आम्ब गेलै|सुनीता बरतन धोकए दरबज्जा बन कम्रतै म्क ओ कोठरी ि पइस गेल रहै. . कम्त काल लेल त' ओकर ुिंह सूखा गेलै .. .ुिदा की बम्जतै. . .| 'हे देम्खयौ आय म्बदेसी बोतल अनने म्हयै. . .अहू पीम्बयौ न एक घोट. . ।'आ जबरदस्ती बोतल खोम्ल क' ओकर ुिंह ि लगा देलकै. . सात रंगक ुिंह बनबैत ओ बाजल . 'धूर िसा .. अहू नै हद करै हीयै. . जाउ न िहरार रस्ता देखैत होयत . ।' ' कम्त देरे से जेबे त' कोन जुलुि भै जेतै. . ।'आ' सौसे बोतल एके बेर ि पीबी गेलई ।

गोर नार . . लिगर पारत नीक नाक नक्स. . .बाली सुनीता . . . बीतबा कारी बूढ घरबाला. . .तखन जै जिना ि म्बयाह भेल छलै. . सुखीतगर घर छलै. . लम्डका पंजाब ि किाइत छलै. ।. ओ बजाज के गिकौआ तेल. . पचास रपया बाला. . .. . चिचिाेआ

नूआ पम्हर छडी सन देह . . लिकैन बाली रेखी सॅ चलै त' छोटका के संग बडका लोक के नजमर सेहो ओकरा प' अटमक जाय .। 'ओ पंजमबया के घर छोमड देमलयै. . .अंटी जी त' ममनसरही काज पर मनकमल जाए. . आ साहब भमर मदन घरे ि.. कहै ''सुनीता पैर दबा .. िथ दुखाता है िथ दबा. . ।'बजै जे हबाई जहाज के उडाबै है. . ि दा भर मदन त' घरे ि घुसल देखीयै. . ।जेने जेने काज कमरयै. . .मालास ि दार नेने ठाढ भ' जाय. . कहै. . जे तूिको पलौट मलख देगे. . .।ओकरे पलौट लेल हि खगाल हीयै. . .नि त' कमहया से घोर ि ठा हो रहल छलै. . ि दा बेटा के मबयाह के मदन ओकर घर के काज छोड देलीयै .. .।कतनो कहलकै. . ि डि जी तैयो न गेमलयै. . पइसो लेबे न गेमलयै ।' रानू के सुनबैत चलल जाय रहल छल ।

'' है हाली हाली मकएक चलल जाए छी ।' सुरीला ओकरा बडका बडका डेग िरैत देमख क पूछलकै त' चमलते चमलते ओ बाजल. . ''कुछ न पूछू मदािग खराप भेल है. . नीसा के पपपा के ठंढी िरि देलकै. . .जीजा के फोन आयल छलै. . .जाय महए डाकडर लग।'

घर आमब क' लहसून तेल बरका क' सौसे देह ि िमलस कैलकै. . .गरि गरि चाह बना क' देलकै. . दलदलली तइयो नै कि भेलै .. ।तखन पडोस ि रहय बला डाकडर ओत ल' गेलय. . देह ि गरिी आनै के सूईया देलकै . . .।गाडशके ठेकेदार के फोन नंबर ओकर िबाईल ि फीड छलै. . कोनो नै कोनो चेनहासी लगा देने छलै जीजा. . .सब नंबर के सोझा .. जामह से ओकरा कोनो पकारक मफरीसानी नै होय फोन करय ि . . .तुरंत ओ ओकर घंटी बजौलकै. . ''हैलौ. . हि

सुनीता बोलता है. . नीसा का पप्पा को ठंढी िर म्हदया है. . डाकडर के पास है. . आज रात का म्हडयुम्हट नही करेगा . . ।आ' हे भाई साहब उसको म्हदन का म्हडयुम्हट दे दो न .. बडी ठंढी है. .गरि कपडा भी जादा नही है. एतना त' कीरपा करो भैया .।'आ ओकर म्हडयुम्हट म्हकछु म्हदन क लेल बदलबा देलकै. . ।

इम्हर म्हकछु म्हदन से ओकर िथ चकरायल रहै छलै. . कुछ न कुछ गडबड हो रहल है. . .तेसरा िहीना चम्हढ गेलै. . ।जेठ ि बौआ के िडिन गछने हीयै भगता के इहॉ. . सब गुड गोबर हो जेतै. . ओ अपने नसबंदी करौने है. . ।ओकर िनि धुक धुक करैत बेसुध होबय लगलै. . .म्हक कर म्हक नै कर म्हकछु फुरैत नै है. . तुरंते फेर जीजा के फोन लगौलक़ . 'हे जीजा .. . . . ।' ओ ओकरा भम्हरपोख भरोस देलकै. . . 'अम्हह ि फीरीसान होबै के कौंना बात है. . सम्हाच्हर के दू बजे म्हदन ि आबै म्हहय .।'

घरबाला घरे ि रहै बजलक ' बडा तम्हबयत खराप लागे है. . पेट ि िचाड . .दस्त .. जाड .. जेकॉ लगैहै. डाकडर लग जाय हीये .. नीसा खेनाय बना देत त' खा पी क' म्हडउटी पर चल जायब. . उहॉ त' देखबे केले हीयै कतना भीड रहै है. . .।'

"म्हहपालपुरक एक गोट म्हकलम्हक ि जतय ओ एक बेर और आयल छल. . सुरेन्द्दर संगे. .पहुॅच त गेल िदा डाकडरक टेबुले पर ओ बेहोस भ' गेलै. . चाम्हर बोतल गुलकोज चढैल गेलै तीन घंटा के बाद ऑम्हख खूजलै .. त

ऑटो ि बैसा क' ओकर घर से तम्हका पम्हहनही उताम्हर जीजा अपन घर जैत रहल. . .।कहुना लडखडाम्हत .. .हॉफैत .. .ई अप्पन कोठरी ि आम्हब पम्हहनही से म्हबछौल चदम्हर प' धडाि सॅ पम्हड रहल. . ''िमिी िमिी' म्हधया पुता सब हल्ला कयने रहै त बड िसम्हकल .

से ऑखि खोलि क' अंगुरी ठोर प' राखि क चुप रहबा के ईसारा केलकै. .। सात बरखक नीसा बड बूझनूक तुरंत बूझि गेलै .. मिमी के िन जादा कराप है. . मालास ि बोतल से ढािर क पािन देलकै. . अपन छोट छोट हाथ से िथ ि गकिौआ तेल लगेलकै. . हाथ पएर जॅतलकै. . .ओ मािन पिड गेल छल ।

देह पीयर . . . ऑखि पीयर. .. .एकदि कजिोर । कोठी बाली सब फोन प' फोन करय लगलै. . .त' फोन के स्वीच ऑफ किर क' राखि देलकै. . . िने िन गिरयैलकै. . 'जरलाही सब रिलो ि चैन नही लेबए देत. ।चािर िदन अपने से बरतन िमिज लौंतै त' हाथ घीस जतई।' आठ िदनुका बाद कहुना किर क' काज प' पहुचल .. त' दू टा काज त' छुिटये गेलए. . .के ओतेक िदन िबन कोनो सूचना के .िबन आस के इंतजार किरतै. . ।

"हे ई की हल्ला सुनै हीयै. . .।सब कहै है. . लाल फूल बाला कोठी के अंटीजी राताराित अपन िकान बेच के भामा गेलय. . .दूनु िय बेटा. .।' "आय .. भामा गलई. . दादा हो दादा . .हिर एक लाख रपया ओकरे िहया जि रहै हो दादा .. . दू बरख से हाड हाड गला के .िरक्सा खीच खीच के .. पेट कािट कािट के ढेऊआ जि कयने रही हो दादा. . ।'बीरेन साह बेसुद भेल अपन िथ प' ुिका िरैत ठाि के ठाि बैस रहल छलै. ।नथुनी राय से फराक अपन छाती कपार पीटय लागल .. 'हिर डेढ लाख .. . रपीया .. कतबो कहलकै. . िमिलक .. पोस्टापीस ि राखे लेल. . ुिदा नै िनिलयै .. हि. . .कहिलयै जे हिरा लोकिन के अंटीये बैक आ' पोस्टापीस है. . न कोनो फारि भरे के झंझट .. .नै .. िलखा पढी करे के. . एको रिजसटर पर िलख लै है. . आ' अंगूठा छाप लगबा लैत है. . ओ भगतीन बेचारी सिदखन िततारानी के नाि

लैत रहै है.. .।' जहीर अल्ला के नाि ल'ल' क' करेज ि ि्का िरय लागल छल .. ''अल्ला हो अल्ला. . डूम्ब गेलो सब र पा. . . हो अल्ला .. आब काहाॅ से खराम्दबौ अपन एसकूटर हो अल्ला ।'

सुसीला. िलती .िीरा .जोती. .सबहक ऑम्ख कनैत कनैत लाल टरेस. . ''आब की होतै हो बाबा .. दुरगम्तया पर दुरगम्तया. . . .. बेटी के म्बयाहे लेल रखले रही पैसा. . .अब कइसे होखी म्बयाह. . .''। एतबे ि पी पी पी पी करैत सोर िचबैत .. िम्डया के गाडी सब आबे लगलै .. .लोक सब अपन ब्याकुल चेहरा नेने न्याय के आस ि ओकरा घेर लेलकै .. .'' . ..आजतक बाला के टीि अपन कैिरा ल' क' कखनो फूलबाला कोठी के फोटो लै. . कखनो उपम्स्थत .. जन सि्दाय के. . .।एकाध गो पुर ख पात से पूछताछ कम्र. म्चकन चुनि्न जनानी सब प'अपन कैिरा फोकस करय लगलै. . .।आगाॅ खडा सुनीता सॅ िइक नेने पुछलकै. . 'अहाॅ बताउ .कम्हया से ओकरा सब के जनैत छलीयै। आ' अहाॅके कतेक पाय ले क' भागल. . ।'' ''हि त' इहाॅ साल भर से हीयै. . .इलाका ि अंटी जी के बड इजजत छलै. . भंडारा करै रहै. . कीरतन करै. . सब लोक पएर छूबै. . .।हिर त' अस्सी हजार छलै. . ि्दा हिर भाय के एक लाख पचीस हजार .. ।' गाडी जहीना पीपा करैत आयल छलै. . तम्हना पी पा करैत चम्ल गेलै. . .।

ओय म्दन भम्र 'आजतक' प इएह सिाचार आबैत रहल छल .. .।हजारो लोक के र पैया ठैक क' ओ सब नै जाने कोन पताल ि घुम्स गेल रहै. . पुम्लस के थू थू होबैत रहल. . ।

कम्त म्दन सब काम्त खीज क' गाम्र सराप द' क' अपन िन के आिा म्झबैत रहल. . . ।एक दोसर के बोल भरोस दैत बाजै.

. “चलू बूझबै जे कबि‍े नम्‍फ्रा कयली. . ।सािग रहतै त’ आरो कि लेबे. . .लेम्‍कन ओही पपीयहबा सब के नरक ि‍ से मांजन होतै. . ।’ “एकनी के की कहल जाव अपन घराडी आ’ जनानी दूनू बेच म्‍बाम्‍कन क र पीया कायि ि‍ ि‍म्‍हर .. .जनाम्‍मायो एकर सब के एहने होबै है. ।न कऊनो दीन न ईिन. .।’ “परदेस हीकै की करबीही भाय. . .केकरा भीरे जेबीही. . .टीभी ि‍ त’ देखेलकौ की होलै. . .गरीबन के आबाज के सुनै है ..।’टप टप टप ऑम्‍ख सै नोर िति खम्‍सस रहल छल सबहक .।

बड म्‍दन से जीजा के फोन नै आबै है. . करबो करै म्‍हयै. . त’ कहै है. .जे ई नंबर िजॅूद नै है. . ।कहले रहम्‍थन जे कत दन त सौ गजा पलाट खरीदै म्‍हये. . पचास गज आहॉ के आ पचास गज हमरि. . दूनू गोडे उहे मिलके
घर बनायब. . ।पइसो पचास हजार देने रम्‍हयै. . ।म्‍कि भेलै. . जिीन के रजीसटीरी भेले की नोई .. .।’अपन कोठरी ि‍ बैसल . .बडका थारी ि‍ आटा सानैत सोम्‍च रहल छलै म्‍कि भाय आम्‍ब गेलै. . “हो भैया तनी देखहू त’ सुरेन्‍दर जीजा के बड म्‍दन से कोनो खोज पुछारी नै भेलै. . कहैत रहै जनू अपन बेटी के म्‍बयाह करतै. गाि घर त’ नै चम्‍ल गेलै. . .।ओकर आंगन बाली सेहो नै फोन उठाबै है. . तम्‍म ओकर कोठरी प’ जा के बूझतीयौ . .हाल चाल म्‍मिनि है न।’

परसूराि अपन देह से कंबल उतारेत. . उनटे पएरे म्‍बदा भेल. . ।जायके त’ तम्‍माको िनि नै करे. . .सोचने रहै. . कोठरी ि‍ जाकए खायब आ’ सून्‍त रहब. . ुदा जौ सुनीता के बात नै िनितै त’ ओ बेनगान कम्‍र देतै. . .।ई गली छोम्‍ड के तेसरा गली ि‍ त’ ओकर कोठरी छलै. . .।पतरकी सीरही चम्‍ढ क’ ऊपर तीन तल्‍ला

प' पहुँचल त' देखैत अछ. . .दरबज्जा प' ललका परदा टागल. . .।केबाड खूजल रहै. . .परदा हटा क' भीतर घुसय चाहलक .. त' कोठरी के कोना ि इसटोप प' भनसा करैत जनानी दबाडलकै. . .''के छहू . .एना अनछया लोक केना घूसल जाय है. . ।''फेर ओ बाहर नकैल क' पूछलके ''केकरा ताकै छहयै ।' परसू अकबकायल सन बाजज उठल. . ''ओ बजली मिसतीरी सुरेन्दर अही छना रहेत हथन नै.. ।' जनानी के कछू नै बूझैले सरही के दोसर दस आंगूर देखबैत बाजल '' हुनकारा से पुछयौन ओही जानैत होथन्ह ।हि सब नाया करायेदार हीयै ।'

परसू के उदास उतरल हि देख सुनीता तुरंत चुि पर से ताबा उतार गैस बन क' बेकल भ' पुछलक़ . '' बीिर सीिर है की ..।'भाय के कछु नहं बाजैत देख क' ओ तेजी से उठ क' घर से बाहर जयबा लेल पएर ि चटी पहरए लागल क भाय के हि से फुटलै 'कहया से जानैत छलही ओकरा. . .'ओकर िथ प' ओही ठंढी ि सेहो पसीना चुहचुहा गेल छलै. . ''कएक पूछै छहू. . . दू तीन बरख से जनतै रहलयै ह'।'' ''ओकर कोनो पता ठेकाना िलूि हौ. . ।''

''से त' नई अ. . .कहने रहै जे बलु अहॉ के गाि के बगल के गाि ि हरि ससुरारी है. . .. अब कोन गाि से त' नई पूछले रहयै. . .। से की भेलै. . ई लाल बूझकड जेना काहै बूझाबय लगलहू .. .हाली हाली कहू नै की बात है ।नै त' हि अपने जाय ही ओकरा घर ।''

''अब जाय के कोन फायदा .. . होतौ. . .ऊ त' कोठरी छोड के कतहू आर चल गेलै. . यैलाईसी के नकली एजेट बनी .. कतना

आदमी के पईसा ठकक लेलकै. . अपन किान मिलक के सेहो चूना लगा के भगलै. हमरि मकसति हे भगबान. ।' सुनीता के चकर आबा गेलय ओ एक डेग आगाॅ डू डेग पाछाॅ झूमि झूमि. . .ठाढे ठाढ धडाम सॅ जमीन पर खसस क' बेहोस भ' चुकल छल ।।

संटू क उपनैन

बसकटी धम्र त' सब म्कछु बड नीक जकॉ चम्ल रहल छल . ।िझौल वाली काकी अपन .चारो पोता के उपनैन लेल कम्हया .सॅ नम्ह देवता पीतर के भखनै छलीह. . . . . . चारो परदेया बेटा आम्खर छुटी ल क' गािि आम्ब क' उपनैन करए लेल तैयार की भेला . . कका काकी के जेना बूडल राज्य भेट गेलम्ह. . .चार म्दस जेना रोनके रौनक ।
पूरा घर दलान ढौरल गेल. . .खेत खम्रहान साफ सफाई भेल ।दलान क सोझा राखल जारैन गोरहा सब के पछुअैती ि आकि गाछक तर तेना क' तह लगा क' राखल गेल जे क'ल' प' हाथ पैर धोबै लेल आबय वला लोकक नजम्र ि नै गडै ।
पछवाम्र टोल .. .टोलबा प' कत कत नै लोक दौडैत रहै म्दन भम्र. . . काजक ब्योत ि .. ।
"हे .. ओकरा सब के साफ सुथरा ि चलए. . बूलए के आदम्त छैक .. . .ई गाकि रस्ता .. .आ' ओम्ह ि बसम्बटी. . . . . . . कम्त ि हेसबा के कम्हयौ. . .नीक जकॉ एतए सॅ अपन बसम्बटी धम्र के रस्ता साफ कम्र देतै. . .भम्र टोलक लोक त' जेना . . . ।" काकी. ि हेसबा के ियि सॅ बजैत बजैत. .नाक भौ म्सकोडम्त अपन ऑचम्र उठा क' नाक प' राम्ख नेने छलीह ।ओ कठजीव. . . तुरंते आम्ब क ल'ग ि ठाढ़ 'हजार रपैया सॅ कि नम्ा लेब .. .एतेक गंदा है ऊहॉ .. . . ।"ओ अलगे नाक ऑम्ख ि ूनैत. . म्मनकैत म्मनकैत जेना बाजल त' काकी तुरंते हाि ि भम्र देलम्खन्ह. 'रे .. .जो. . न । .. पाय कौडी जे हेतै से त' देबे करबौ न।'
आ. बसकटी के बाद ि हेसर. . अपन गाल बजबैत .. . जनानी सॅ

भरल ऑगन ि अंगेठी. िचाड लईत बाम्ज रहल छल. ‘दू .म्दन से. . बलू. . . . . . टोली वला सब के रोकने रम्हयै. . .ऊहॉ गंदा नै करै लै .. .छौडा सब के म्बास्कुट चॉकलेटक लालच देम्लयै. . . देखम्लयै . . .आहॉ सब कते साफ सुथरा हल्लै. . .सडक . .. आ’ बसम्बटी. . . एतेक साफ त’ कलक्टरो के नै रहै. . . ।’ गणेर .सुरेर .. .म्दनेर तीनो संगम्ह बाजल. . . ‘‘तै न तोरा प’ ई बडका काज छोडल गेल छलौ. . .तू बड काबील छै. . .।’

ताबैत ि सॅझला भाय िॅ के तकैत आंगन ि अयला . ‘हलवाय के कत बैसैल जाए. ।’ काकी झट दनी भगवती घर सॅ कोनो काज छोम्ड बहरेली. ‘‘ललन बाबूके दरवज्जा प’ बैसाबही नै .. . ओतय अ’ड’ छै. . . आ’ जगहो चौरस. . ।’

िॅझला भाय जे चारो कात खम्रहान सॅ ल’क’ म्पछुबाम्ड धम्र साफ सफाई भेल जगह के फेर सॅ साफ करबा ि लागल छलाह ‘कुटुि सब के एला सॅ पम्हनही चारो लैम्र न बाथर ि एकदि चकाचक भ’ जेबाके चाही।’’

छत के ऊपर िडबा बनाओल गेल छल .. िडवा. छाजए के .. . .. .चरखटी के .धिुर .. गीत नाद सॅ चारो कातक वातावरण िह िह करए लागल छल . .. लाल पीयर धोती .. .अंगना सॅ छत धम्र डोरी प’ सुखैत. .बड िनोरि दृश्य उत्पन केने छलै. . ।

कुम्हैम्नया के ऑगन ि पैसैत िितर .. .दीसपुर वाली पीसी म्चकरए लगलीह ‘आय गै. . .आब तोरो सबके म्बदामारीए करबा क’ आनल जेतौ .. . .दू म्दन सॅ िुनिि . .दौग दौग क’ जा रहल छै. . कुम्हर टोली .. .आ’ तोरा सब के कम्नयो दरेग नै .. जे जल्दी जल्दी हाथी घोडा रैग ढोर क’ पठाबी. . . अखन बर आ सब बरम्स्थान जेतै .. .घोडा चढाबए लेल. . . आ’ तू एखने आम्ब रहल छै. . िर बाढैन

तोरा. . ।'

कुम्हैम्नायॉ .. .गोगै करैत बाजल ''दीदी. . .केते लगन हैक भम्र गाि ि . . .ि्डन . .उपलैन. . .म्बयाह. . . हाली हाली त' सबके सिन पहुॅचाईये रहल म्छये . .''आ हुनक कोध सॅ बचाबा लेल दॉत म्नपोम्र क' म्टम्टयाय लगलै. . . ।

''नेग म्दयौ. . बडकी पीसी बर आ के. ।''

''हे . .हि बर आ के बापे के पीसी म्छए. . . .म्छनरो .. .ई हो नै .. बूझल छौ. . .।'' बडकी पीसी ओकरा दबाडैत. . . .म्चकरैत बजली 'गै आबै जाही बर आ के पीसी सब. . .कुम्हेम्नाया के नेग दै जाही ।''

नेग खोईछ ि राखैत. .ओकरा ि्हे प' पसनता के लहम्र दौड गेल रहै ।

गोटागोटी करैत सब कुटुि सब आम्ब गेलाह. . .दलान प' पूर ख आ' घर ओसारा प' स्तीगण . .. ।

म्बाध बाध सबटा ऊपर छत प' ि्डबा लग भ' रहल छलै. . .जेठ िस. . .सरबत लस्सी सब के इंतजाि कम्र क' राखल छल. तौला के तौला जिल दही बोरा ि भरल चूडा. ि्गबा पैनतोआ . ि्दा परसनहारे म्नपता . .. हलवैया .. .एखनधम्र. . .आमा नै पजारने . '' िर बाढम्न जनम्पटा के. . .रै बौआ .. .केहेन हलबैया आनलैहै. ।'' संझला भाय कुरसो वाली पीसी के गप प' ही ही कम्र क' हॅसए लगला ''ततेक लगन छै. . .सबटा हलवैया .. .पम्हनही सॅ बुक .. . एक गोट पीपरौम्लया बाला गछने छल. . .एन िका प' धोखा द' देलकै. . .ई नब छै. . .हिरे ओतए सॅ काज सीखतै. . . ।''

''केहेन जुलुि केलही तुहु रे .. ऐ सॅ' नीक त' हिरे कम्हतम्ह त' सब मिल जुल क' भानस कम्र दैम्नयौ।''

मकनको पामा भेटमह त' चाह नै. . .मकनको दबाए खेबाके रहैन्ह .. ादा माानसरे सॅ बासी ाहे. . .।भीषण अवयवस्था . .... बडकी कमाया घोघ तर. सॅ छोटकी ननमद के बजौलमखन्ह .. ''कीचन ि जाकए फटाफट .. कुकर ि भात चढा मदयौ. . .दीदी सब भूखले छमथन्ह .. .हलबाई सॅ दामल तीनि आमा क' महनका सब के खुआ दैमतयैन्ह . ।''

िमझला भाय के सासुर सॅ बड बेरी पाहुन आ' सबसॅ कि चुिन .. . .. ।पाहुनक खामतर दारी हुनके प' छलैन्ह .. .ादा बडका पद सॅ मरटायडशससुर के कुरसी लग नीचा बैस क' ओ हुनकर ाँहि देखैत पैर ि चुर क भमर तेल पचब 'ि लामा गेल छलमथ ।बडका भाय बह बनल िडॅवे प'बैसल .. .सॅमझला हलुवाई के टीक प' ठाढ़ . .कतहूॅ मकछु चोरा नै मलअ .. .छोटका. . जै पाहुन मदस खेनाय मानाय ल'क' जामथ. . . ओमह ठाि बैस ाखयािती बनबा के अपन उतकृष हितयकाछा के घोडा प' घोडसवारी करए लागैथ. . . बचला . .कका सवयं . . .त' अससी बरखक अथबल . . सुनाईयो नमह पडैन्ह. . ।

िझली भौजी . . .अपन तीनो भौजाई . .बमहन आ' िये के ल'क' घरक पट बंद कमर लेलमथ ।दू घंटा के बाद पट खुजलै. . .त' छोटकी ननमद सबहक कान ि फुसफुसा क' कमह रहल छलीह 'देखमलयै .. जादू. . .आयल छलैथ त' सब केहेन कारी कारी झारिल झारिल . . . .आ' घर बंद कमर क' कोन एहेन कीि पाउडर लगौंलथ जे सब गोर गोर. . .मक कपडा लता. . .बनारसी . पटोर. . ।''

बडकी भौजी छोटका भायके बर आ के केर नेने छलमथ तामह लेल

ओ अनौने .. . . ।काकी .कहनौ छलखिन्ह. "बडकी बीरिे रहै छै. . .झिॅलीए ल' लैतै केर. . ।" त' झिली चट सॅ चमिक क' बजलीह "ीि हरिा सधा क' पठौनाह. . ।" हाम्र क' बडकीए कमाया के लेबए पडलै केर . .।

सबसॅ ि्हजोर मिझली. . . . . कत्थी लेल ककरो एक रती पामायो लेल पूछतम्थ ।बेर बेर नूआ फेर क' अपन संबंधी लग जा बैसैथ ।बाध लेल सोर होय "है झिली भौजी .. .है. . संटु के धोती दयौ नै. . .।' कम्म भन भनाइत कम्म ि्ह चकिाबैत .. . रानी रपिती के अंदाज ि अपन पएर उठबैत आबैथ ।

"चार बरआ के सािन एक ठाि डाला प' राखि दयौ. . ।बेर बेर आबए पडै छै. . .।' ननकू बाजल त' झिली अपन कमरया ि्ह चकिाबैत .. . बजलीह "सबहक हि ठेका नेने छी की. . . हिरा संटु बाबू सॅ ितिलब अछ ।'

दनौही ि . . .बरआ सब नहा 'क' ठाढ़ . .बडकी भौजी छोटका बरआ के बाधकरी .. .ओकरे ि लागल. . .अपन बेटा के धोती कुरता बासमर गेलम्थ ।काकी के तािस चढय लगलै. . झिली के छोट बुदि के जबाब नै. . एतेक दिन सॅ बाहमर रहै छै. . तैयो. .कछो बाजबै त' भरल आंगन ि घनािघन करए लागत ।" कल्याणपुर वाली पीसी एईठ क' बजली" ऐ बाहर रहने की होय छै. . चाम्ल .. पकृमा .. बेिय .. ई तीनो संगमह जाय. . .िय केहेन छै. . ककरो सॅ बजबो नमहकेलकै. . दमछनाहा सब. . ।" ननमद सब फेर ननकू के माहोरा कमर क दौडेली . 'जो बौआ भगवती के सोझा ि ललका डाला प' रुभि के पीरा धोती राखल छै. नेने आ दौडल .. ।"ओ बाफरल "हि त' झिली भौजी के पमहनमह कहने रमहयै. . कहलखिन्ह जे ठेका लेने छियै ।" ि्दा ननकू जल्दी सॅ

सायकिल सँ जाकए धोती नेने आयल ।
उम्हर पोखरि सँ घुमि क' आँगन पहुँचैत भितर दोसरे दृश्य . . .हलवैया एखन धरि भोजन नै बनौने .. . तरकारी बनि क' एक भिदस राखल . . .आब पूडी छानय लेल लोहिया चढा रहल छल. . . "ऐ रौ. . .एतेक देर मकएक भेलौ. ।साझ पडि रहल छै .. कुटुम्ब सब भुखलै. . बैसल छथि .. ।"बडकी पीसी के गप प' हलवैया बाजल. . . 'तखनी सँ चाह कौफी. . बनाय रहल छलीयै. . झिली कनिया आबि क' कहलखिन्ह. .दस बीस गो परोठा बना दिय हुनकर बाबू भाय सब नै खेने छथिन्ह .. ।" "हलबैया लग सँ सब टा रसगुल्ला गायब छै. . कन्हैया कहलकै .. झिली कनिया कोठरी मि पहुँचा दै लेल कहने छलखिन्ह ।"छोटकी ननदि क्रोध मिज प' चढल .।काकी क' ल जोरि के बेटी के चुप करौलखिन्ह. ' . चुपना नै . .कतो सँ सुनतौ त' जुलुम भ' जेतै .।'
"छोटका दियर आबि क' झिली भौजी के कहलखिन्ह "भौजी अहाँ अपना सर कुटुम्ब के त' भोजन करा दियौ ।"
रंगल टीपल मुँह प' बाम्हन सन भाव आनैत पटुआ सन सात सम्हार मि बाजि उठलीह 'लाज नै होईत अछि .. ।'ई वाक्य के व्याख्या तखन भेल जखन पोल खूजलै जे ओ त' पहिनही अपन कुटुम्ब सब के खुआ पिया चुकल छलीह .. मुदा चाहै छली जे सब मिलकयो हुनके कुटुम्ब के आव भगत मि लागल रहै .
भिडबा प' बरआ सब के भीख देबा काल .. झिली फेर अड़ि गेली "पहिनै हुनके मिय भौजाय भीख देथिन्ह. ।"काकी के मनि घोर भ' गेलन्हि ।बडकी पीसी आगाँ बढि क' बजलीह "कनिया पहिने घरक लोक भीख देतै ..तखन बाहरक़ . ।अहिना विधि होईत छै. . .।हुनक आँखि लाल होमि लगलैन्हि . .मिथ प' कनि घोघ तानैत .. .कन्हुआ

क’ बडकी म्दयाम्दनी म्दस देखली .. । ‘एकरे खाम्तार ाथि प’ नूआ आ घोघ तानए पडैत अम्छ .. ।’ाने ान गरीयेने छलीह ।ुदा ान ासोम्स क’ म्मकाटनक म्वम्ध संपन होाय देलम्खन्ह ।

उपनैनक परात चार कात अम्ह बातक चचशहोाय लगलै. . ‘झिली कम्नाया के सबटा कुटुा म्वगैड क’ चम्ल जायथ रहलम्खन्ह. . .नीक जकॉ सुआगत जे नम्ह भेल रहैन्ह. . ।’ छोटका भाय अपन कपार ठोकैत बजला ‘‘आम्ह रे बा. . सब के छोम्ड क’ हुनके सब ा लागल रम्हतहू सब गोटे. ..अपन जाय बेटी त’ सब लाज धाक तम्ज क’ लागले छलैन्ह ।जै कुटुा के आव भगत ा तुम्ट रम्ह गेलम्न्ह. . ओ बेचारा सब त’ म्कछु नम्ह बजलम्खन्ह. . ।’’ काकी ऑम्ख सॅ ईसारा कम्र ओम्ह पसंग के साफ्ति करबा लेल कम्ह क’ ओम्ह ठाा सॅ उम्ठ क’ जायत रहल छलीह।

रात्रिशत कथा

पाटी सम्पन्न होबैत होबैत. . . रात्रि के बारह बाजि गेलए. . . ।भरि पेट खा पीबि क' लोकवेद त' जाईत रहल . . .हिंदी घनश्याम गाडी के कम्ना कात हि जेबा लेल ठाढ केदारनाथक हाथ कसिक पकड़ि बड करुण स्वर हि बाजल. . . 'आय अहाँ नहि जाऊ भाय. . . हिनि बड उदास लगैत अछि. ।'

'उदास. .' . केदारनाथ के हँसी नहिं लगलैन्ह. . . एतेक बडका धूमधाम . लाईट साउंड़ . ...पौप .. . .. फिल्म स्टार वाला पाटी. . .सुरा .. सुन्दरी. . . .के बावजुदो जीनगी के ओ रस नहि पदान कयल .. .जेकरा लेल. . .असंख्यात हुनक हिनि चातक पाखी सन लालायित रहैन्ह. . . ।लिफ्ट सँ दुनू सीधे टॉप फ्लोर के अपन भव्य डाईग रुमि हि जाकए दरवज्जा बंद करि संपूर्णसंसार सँ ओझल भ' गेलथि ।

"की गप कर. . . . आफिसक . . .स्तीक .. . पॉपटीक़ . .रहरक़. . . ." ।

"नै ......नै. . .किछु आन .. . फुरसयाही. . . खिस्सा कहूँ ।"

"आन कोन. . .बीतलाहे आब खिस्सा छैक़ . यथाथ . . .भोगल. . ." ।

"रहरक खिस्सा हि की छै. . .कोन सुआद. . .खाली भटकाव. . .निरासा. . .भय .. .आतंक़ . .। ."

"बेस. . तखन गामक खिस्सा सुनब. . .।'

"कोन गामक।"

"कोनो गामक . . . नामहि की राखल छै. . . चमरत त सबहक एकरंग .. . .हिमिट पानि के गमकि त' एक .. . . आ मिस्टफ हि

बसल सुसुप्त आकाक्ष. .. अतीत के फेर सॅ जीबाक चाह .. . हॅ गाि के कहू. . . . हालाम्कि गाकि जीनगी बड कि म्दिन बीतैलहु. . .. बड अम्भिलाष छल सिस्थागस्त गाि सबहक उत्थान लेल . . .अवस्स म्किछु म्बिरेष काज करब. . . ि़दा साथिश्वान भैयौ क' तेहेन नै जीनगी के किडजाल ि ओझरा गेलहु. . .जे िनि अहुम्रया काम्ट क' रम्हि जाएत अम्छि. . . देखाबम्ट ि पाम्न जकॉ. .पाय बहा देल जाय छै. . .अम्हि सॅ अपन ितृभूमि. . के. . .कतेक हाथ. . .के काज़ . .कतेक के रोटी. . . .आदम्र सॅ भेट सकैत अम्छि. . .आस नम्हि छूटल अम्छि . ..एखनो. . आब भगवानक कीरपा जम्हिया. . . . .तखन सुर कर म्खिस्सा .. . . ।'

म्खिडकीसॅ दूर. . .अन्हार सि़दि ि. . .चकैत लाईट. . .कोस्ट गाडश्र. वा व्यसाम्यक जहाज के म्नहारैत . .. कम्न काल धम्र िनि रहला. . .हुनको ऑम्खि म्किछु भरभरायल सन छल. . . .जेना अतीत क ताप सॅ दग्ध भ' सीिि म्बम्हिन होयि लेल बाट ताकैत छल. . .नहुॅ नहु. . कम्र क' ि़हि खोलला. . "राजा जनकक जुग के सुनब की. . .लम्खिि ठकुराईन जुगक .. .की
सोम्नया गॉधी के जुगक़ . ।"

"वाह. . . ईम्तहासक की काल म्बिभाजन कयल अपने. . .अदभुत. . .। इंम्दरा आ सोम्नया के ध्यि सियिक म्खस्सा कहू।' " म्खस्सा ि काल के बड हित्ग छैक़ ।अम्हि सॅ अहॉ ओम्हि कालक राजनैम्तक आम्थक़ . सािम्जक आ िनोवैजाम्नक म्स्थम्त के अवलोकन कम्र सकैत छी ।सुनु. . ..

गाकि स्त्ती.. सिजक म्खस्सा. . पोस्ट इंम्दरा गॉधी पीम्रयड .. . ..

"एकटा छली सोनदाय एकटा चानदाय ।दुनु एकदोसरा लेल साक्षात

जिराज .. .जौ एकटा के अवसम्र भेटतैन्ह त' दोसरा के सदेह जिलोक पहुचा दैतैम्थ. . .ि दा .. .िनुकखक िजबूरी. . . .ताम्ह लेल कतेको दरक सॅ एक दोसरा के सम्ह रहल छलम्थ. . .।ओना दुनु अपन अपन बल देखेबा सॅ बाज नम्ह आबैथ .एकटा अपन घरक बल .. दोसम्र सिजक़ . .।

आ' अम्ह धिगजजम्र ि आनंद उठाबैत सिज .. .।

ओही म्दन आंगन ि उसीम्नाया भ' रहल छल. . .धानक़ . .जाड िस .. .सोनदाय खबाम्सन लग िडहा प बैसल देम्ख रहल छली. . . .म्क ताबैत चानदाय डगरा ि कनी चाऊर आ बूट नेने अयलम्थ।डगरा कम्न कात ि ओसारा म्दस राम्ख मिझैल एकचुमिया प'राखल खापम्ड उठा क' कहलम्खन्ह. . ''गै .. िरदनी बाली .. . .ई खापम्ड चढा क' ओय चुिि प'हमिर चाउर आ' बूट भूम्ज दे।'धान उम्सना गेल रहै. . हॉय हॉय कनस्तर उताम्र क' िरदनी बाली आंगन ि उझीलए लागल. . . ।जरैत ऑच देम्खक चानदाय खापम्ड चढा देलम्थ आमा प' ।ई देम्ख क' सोनदाय के सौसे देह ि खौता फुम्क देलकम्ह. . .।चट सॅ िढा सॅ तिकि' क' उम्ठ धीपल खापम्ड हुनक देह प' फेकैत धधकैत अंगार सन बोल बजली 'बड रौख अरशेलम्ह अम्छ भुजजा खायक˘ .. त' कनसार ि भूजा लौथ नै दरवजजे लग त' छै. . . अन्हार भ' रहल छै. . .म्हनका सूझै नै छम्ह .. ।''ओ िम्ड क' डगरा उठबैत छलीह . . ....धीपल .खापम्ड हुनक पीठ प' खसलैन्ह. . .ओ म्चम्चया क' दलान म्दस भागल छलीह .. ।पीठ पर का नूआ कारी सॅ रंगेबाक कि ि कम्न लहम्कयो गेल रहै ..।''

''सोनदाय एहेन चंठ म्कएक़ . . .म्क चान दाय हुनक सौम्तन छलीह।''

''ओह अहॉ की बाम्ज गेलौ ।आय के जुग ि सौम्तन के बॉम्ट खूम्ट क' सरकारे म्मन कम्र दैत छै .. .तै ओ दूनू सौतीन त' नम्हए टा

छलीह .. ।
खैर .. .जे. . .से. . .चान दाय कुहैर कुहैर क ओ राम्त कटली .. .जेना म्वागत ि अनेको अवस्से कटल हेतैन्ह. . ।आ म्मनसरे म्कयो आंगन ि सोनदाय सॅ कहय एलैन्ह जे तीन पहम्र राम्त ि . . .एकपेम्डया सॅ बाध म्दस हुनका जायत देखल गेल ।
सोन दाय दस ठाि सॅ िंह म्वचुका क’ अपन अनंत घृणा
देखाबए चाहली. . .िदा कण ित ि अपना के रोम्क क’ एकगोट िॉजल कूटनीम्तजक जेकॉ अडोम्सया पडोम्सया के सुना क म्चकरैत अपन छाम्त पीटय
लगली ‘‘ई हिरा कतो के नम्ह छोडलम्थ. . आब त’ ई की की नाच नै नचौती।दैव रौ दैव ।आब हि कर त’ की कर .. .क़तेक पैघ ई फसादी छम्थ गै म्या। ’’ िदा के गेलय धडफडायल पोखम्र . . .तालाब. . .रेलक पटरी प’ ताक़ . . . .।
म्दन चढैत. . . बीतैत .. . .ई खबम्र टोल की सौसे गाि ि बूलए टहलए लगलै. . . आ’ राम्त देम्ख सबहक संग खबम्र सेहो म्नम्फम्कर भ’ सूम्त रहल. . .छल ।
म्दन .. सप्ताह. . .िहीना बीत गेलै. .टोल सिाजिक म्दनचया ओम्हना चलैत रहल. . . ।आ’ फेर एक म्दन. . . .चानदाय. . ओम्ह गाि की. . .ओम्ह टोलक अपन ओही दलान क चौकी प’ बैसल देखाय पडली ‘‘बम्हन बजेने छल. . . .. दुम्खत छै. . .के जेतै देखय .. . रोम्णतक म्हलकोर हिरा रोम्क नम्ह सकल छल. . .छोट बम्हन . .बेटी दाम्खल. . .कोरा कॉख क’ खेलौने म्छयै. . . ।’’
सोनदाय आंगन सॅ चाम्रटा सोहारी . आ’ कम्त भाटा अदौडी के तरकारी. . .एकटा .. . कनकटा अलिम्नया के झॅपना ि राम्ख .. .. .जखन की हुनक भनसा ि स्टीलक थारी बाटी भरल छल . .

. . ..भामतजक हाथे पठा देने रहैथ .. . ।
“ ई कोन मखस्सा भाय. . .एहनो कोनो मखस्सा होय छै. . . ई त’ मारुद रप सॅ मताया चमरत के बखान कमर रहल छी. . .जेकरा रास्त सेहो ‘नेम्त नेम्त’ कमर मषेध कयने अम्छ ।”
“मतायाचमरत कत. . . .ई त ानिव ानोमजानक रहस्ययि वणश थीक़ . .. .अबल आ’ बलानिक’ .. दीया आ’ तूफानक़ . .मखस्सा छै .. . राशत कथा. . . .जुग जुग सॅ चलैत एलैए. . . .की दमरद .. .की ातिवर .. . की पढल . .की ूरि ख .. .की रहमर .. की गाा. . .सब ठाा एकरे ताडव .. .ादा आधुमनक साजि आब एकर मशलेषण करय लागल. . मक आखीर एना मकएक़ . . ।त’ अपने कमन अपन वाणी के माराा मदयौ आ’ हरि शवणाृति वाणी सॅ अपन कणशकुटीर के गुंजायाानि कर ।
सोनदाय चानदायक संघषशक’ कथा अपन चरातिकषशप’ चढल चलल जाइत रहलै आ’ मनका हुनका .. बडका छोटका .. सबके भावनातकि धरातल प’ सब पकारक रस पाप्त होबैत रहल .. . ।
ादा मखस्सा त’ मखस्सा नमह भ’ क’ जीबनक अंग बमन गेल छल तामह लेल लोकवेद के तेहेन कोनो उत्सुकता नमह बॉचल छलै . .।
उत्सुकता भेलय .. . . ादा तखन .. .जखन हंसा एसगरे जायत रहलै . .. .कलपैत. . . .कनैत. . .बोकरैत .. . पेटकुमाया . . .देने. . .उपमस्थत साजि सॅ क’ल’ जोमर क’ ाफी ागैत. .. . . एकला चलो रे. .. एसगरे जाए रहल छली. . . .ानि अपानि सॅ मान. . . भूख मपयास सॅ ाक्ल. . .अपन आन. . .नीक बेजाय सॅ पृथक़ . . .।
. .. कोठरी फोलल गेल. .त’ ऊपर चार ा . लाले लाल. .सुखैल जारैन खोसल. . .मकालल गेल त’ करीब ानि भमर. . . .

टिकुडी सब ि . .सरबा सँ ि्हि बंद कमर राखल. . . चीनी. . . चाहक पती. . .अचार .. .दाम्ल. . . आमिल. . . सतु. . .अदौरी .. .चाऊर. . .घीऊ. . . .नम्ह जाने कतौ्क चीज पम्नयानी सँ लगा क' राखल. . . .चौकी के नीचा .. टुटलम्हया बाकस ि .. .एगारक जोड नूआ. . .चाम्र टा रॉल. . .पाँच टा . . साया .. चाम्र टा आंमा ..दू टा स्वेटर. . . . . . चानी के हँसुली.. . . .पनरसै टाका .. .बीस पैसाही .. .एक टा टिॅिल सन बटुआ ि ि्हि बाम्ह क' राखल .. ।.. . कतेक रास अठनी .. चौअनी पँचपैसाही. . .एक टा लता ि लटपटायल. . . .। ओकरा ऊपर ि नीकि पात. .बाकस के ऊपर गोईठा .खडही. . बोरा. . .केथरी. . ।.

ई एते टा . . .राज पाट .. .लोकक ऑम्ख ढाबूस बेग जकॉ बहरायल. . . टोलक लोक संगे भम्र गाकि लोक ई रानी िहारानी के साज सिान देखए लेल आबैत काल अपना ि्हि ि म्कसीि म्कसीि के गप सप्प भरने. आबै. . .आ .. पागुर करैत . . .गप के उनटैत पनटैत अपन म्वचार के परि सत्थ िनैत. . .जाईत रहैत छल ।

''घोर आियशनै दिन भाय. . . .जेकरा की नै .. .।' ''जौ पम्हनम्हं सँ बूझल रम्हतै. . .।'नबका घरक सीिटी बाला सीढी प' बैसल आन आन लोकक संग ..सोन दाय के पच्छ ि सयि जेना ठाढ भ' गेल छलै .. .सहस्तो म्जव्हा सँ बाजय के िका दईत ''से सएह अहाँसब कहै जाईयौ. . .बडका बाबू .. .तखन हिर कोन दसा बाकी रखने छलीह .. .ईरनी म्बरनी सन बगै बनौने. . .फाटल पुरान पम्हरने . . .म्हनका हुनका दरवज्जा प' बैसल पहम्र धम्र. . . .नोर बहाबैत. . .म्खधास करैत. . .अपन दुखक फकरा पढैत. . . . .कोन मान्जन नम्ह कयलम्थ हमिर .. . .हुनका गेला के बाद त' जेना आर साँड बम्न गेल छलम्थ .. . बजजर खसौ ई सरकार के खैरात की बँटनाय

सुर कयल .. .नीक नूकूत घरक नककटौन जनानी सब लाज धाक तम्हज क' पॉत ीि जाकए ठाढ़ . . . . ।''

" जाए म्हदयौ. . .ई काल. . .अम्हि सब तरहक म्हिसाब म्हकताबक लेल नम्हि अम्छ. . . .आब सोचू जे की कयल जाय. . .।बेर त सरासम्र ससरल जा रहल छैक .।' झिॅला कका आगॉ बम्छ क' सोनदाय के व्यतीत सॅ वतशीन ि तीर ताम्र क अनला .त' ओ हडबडा गेलीह. . . 'गै म्या. . . .केना की हेतै . . .।' .'हुनक ऑम्ख भटभट चूबए लगलैन्ह .. . ताबैत भीिनाथ आम्ब क बाजल ''तोही जे कनबीही तखन कोन काज हैतै. . .भायजी सब बाहरे. . .।' ओ धडफडा क' ऑचम्रक खूॅटी सॅ ऑम्ख िडैत बजली. . ''हॅ म्झिला बौआ .. .आमा त हुनका भीि देतैन्ह .. . जीम्बतौ एयह सेवा सुशुषा कयने छलैन्ह. . . तखन आब. . की. . ... ।'

उम्हर हुनके सॉॅजोगल लकडी घी आम्द ल '

क'हुनक आम्खरी काज लेल लोक वेद पस्थान करैत गेल ।

कहुना कम्र क' राम्त कटल. . .तीन म्दन ि अम्ह सॅ उगास भ। एकाध नोर काम्त सोनदाय अपन दलान प' बैसली. . ''गेली बेचारो. . . .अही लेल दुम्नया ि अतेक छल कपट. . . अतेक हाय हाय. .' आध्यातम संग बैराग्य सेहो हुनका गम्सत कम्र लेलकैन्ह.. ''कहै छै लोक . . .करनी देखीह िरनी बेर. . . चटपट ि उम्ड गेलीह. . . हम्रि की गम्त होयत. . .।''

''केहेन म्खस्सा अपने पसाम्र रहल छी शीिनि. . . जेकर नै कोनो ओर नै छोर. . . .ई की बॉचल जा रहल छै. . .अम्ह ि कोन िनोम्बजानक झलम्क .. . . ।'

''िनो म्बजानक झलक़ . . . .एके बेर थोडबै झलम्क उठतै ..

आकास ि पूरनिासी के चान सन . . . .संच िच भ' क बैसू सोिरस क' आस्वादन करैत रहू .. . कमा िनन कर तखन नै िरि धमर पहुँचब।

तखन िकछु िदन टोलक चचशक' िवषय सोनदाय. . . . सोनदाय .. . सोनदाय .. .।आब हुनक सब हीत एतय .. .आ' िहान बैरी. . .अधिी सासुर बाला. . ''िर बाढमा .. झॉट बाढैन .. ओिह नगरक लोक के. . .देिखयौ त' करेज़ . .सिाद प' सिाद पठाओल गेलै. . .तखनो नै िकयो धुमर क' अयलै. . . िहससा बॅटवा काल सतािसोढे पैलवार छै. . .जाऊत सब पिहने खोजो पुछािर करैत छलै. . .''. . .।

''जाय देथुन्ह बम्हन. . .ओ बेचारी के जे गमा लीखल छल से गमा भेलय ।'

िदा सोनदाय के हुनक गमा वा दुशमा सॅ कोनो तेहेन िफकीर नै छल .. .ओ त' अपने िचन्ता ि डूबल. . . .ओिह िदन सॅ. . .अहुिरया कटैत छलीह .. .दू बजे िदन सॅ चािर बजे धमर सब लोकवेद ओही काज ि ओझरायल आ' ओ िका देिख ओही कोठरी ि पैिस . . . ढकना ढकनी गेरआ सीरक . .िटकुडी .. . पेटीए टा निह .. .छोटसन ठेगा सॅ चार के कोन कोनसॅ झॅिार क' अलगा क' देखलिथ. . .िदा क़तौ नै भेटलै. . . .पहसौल वाली के बजा क' घर ओसारा नीपबैत काल. . .सेहो अपने िसतैद रहली. . . कतौ ककरो हाथ नै लागा जाए .. .।िदा कोन फल .. . ।

भीिनाथक िय पुछलिखन्ह. . 'पाय के की करिथन्ह बम्हन. .' .।

'हि अपन हाथ उठाक' िकछु नै करबै .. .अहॉ सब के जेकरा देबा तेबा के अिछ . नूआ फटा. . सब बॉिट िदयौ .. .हि की करबै रािखक।'

सोनदायक पवासी पूत सब अयलम्हि. . . ओम्हि रहस्यमयि वातावरण के चीरबा के कि ि व्यम्थत भ' बजली 'बौआ रौ. . .ओ त. घर सँ पडा क' राधेश्यामि कि दरवज्जा प'जा बैसलखून. . . .. भम्र गाकि लोकके कहने म्फरम्थ. . .जे फलनाि के बौह हिरा खाय लै नम्हि दैत अम्छ. . .।राधेस्यामि कि घरवाली सोहाडी पका क' चाम्र साझ खुऔलकैन्हि त' बाडी झाडी सँ तीिन तरकारी .. .लतािकेरा .. नौं .बो. . .अररनेबा . . चोरा चोरा क' ओकरा द' अबम्थन्हि. . .।की पाबम्न की म्नहार सब िभंगट. . ..छम्छयो ि अम्हना कयलम्हि. . . परना के परात सीताराि कहलेम्हि जे ''काकी .. .अहाँ हुनका खाय लेल म्कएक नम्हं दै म्छयैन्हि .' बाजय पडल 'जे बौआ आंगम्न ि पाँच परकारक अन सुखाम्न रहैत छै .. .ओ उठा क' ल' लैथ .. हि हाथ पकडबै तखन नै. . . .।ि दा बौआ .. हिरा बड बेनगान कएने रहैथ छम्थ .. . .भात रोटी पठेबै त' ककरा दलान प' . . . कोनो ठेकान म्हनकर .. . ।''

''बेटा .. .. .तौ हुनका दू सौ अढाई सौ टाका द' दहुन. . .जे सब हुनका खुएने छलम्खन्हि. . .।''

ई कही ओ अपन िहान उदारता के पम्रचय देलम्थ त' बेटा एक पहर सोच ि पम्ड गेलाह. . .जीबैत हुनका चोरा क' पाय दी . . तैयो िय हुनका आने िने सँ गम्रयाबै. .. अपन पैलवारक दू बरखक नेना के सेहो हुनका लग ठाढ नै होिय दैथ ..जौ कोनो पुतौह िथ ि कम्न तेल कुड द' दैन्हि ..वा पएरजँतबा के दुस्साहस करैथ.. पकडा गेलीह .. .हुनका वा हुनक म्धया सबहक नजम्र सँ तखन फेर ओकर गंजन गंजन. . . तखन चोरा नुका क' म्कयो म्कछु सिन .म्कछु पाय देबा सँ नम्हि चूकै .. .. .आय एहेन उच्च म्वचार ।

''म्रवस्सा के अंत एयह अम्छ जे पचासो वरखक अपन रोआब ..

कूटनीम्त .. .बदला .. .ईष्र्या.. . देष प’ परदा देनाय सोनदाय के सिजक संग अ.पनो नजम्र ि आवश्यक भ’ गेल रहै .. .म्कएक त’ चानोदाय आब बेचारी बम्न क’ सबहक सहानुभूम्त हसोम्थ नेने रहैथ. . . आब हुनक सबहक िह बन करबाक जर रम्त अम्ह लेल पम्ड रहल छलैन्ह जे आब ओहो एसगर आ भ’ गेल छलम्थ. . . म्धया पुता बाम्लग भ’ क’ अपन अपन लोल ि म्तनका ल’ एक गोट नव घोसला के म्नाि ण हेतु उम्ड चुकल छल. . . .असहनीय एकात .. . भातीज भीिनाथ. . पीसे काल सॅ आम्ब क’ नागनाथ जकॉ र रण ल’ नेने छलाह. .िदा ओकर अपन स्वारथश. ।तखन उठबा बैसबा लेल लोकक आवश्यकता त’ पम्डते छै. . .चाहै .. कतबो भरल पेट वाला होथु .. . ।

चरखा ि पूनी जकॉ गप कटैत म्कछु लोकक जीवन कटैत रहैत छैक़ . .आब अपन पच्छ ि लोक सिजि के करबाक छलैन्ह . ..त’ दलान प’ बैसारी ि चाह पाम्न सेहो आंगन सॅ पठबए लागल छलीह. . .।

“कथा के कि ि म्कछु उटपटाग तथ्य सोझा आयल अम्छ. . . जेना सोनदाय बेकल भ’ क’ की तकैत रहल छलीह. . .।”

“अम्हरेबा. . . .अहॉ एखन धम्र ओम्ह सूत के गम्हएने बैसल छी. . . . .बेस. . . ..त’ भेलय की जे चानदाय के कान ि सोनक िटगर िकिडी छलैन्ह. . .दप दप पीयर . . . .ओ गत भेला सॅ पम्हनही सॅ हुनक कान सॅ गुि भ’ गेल छलै. . . ठोस. . एकदि दू भम्र के. . .गरा ि सोनक सीकडी. . .।सोनदायके नजम्र ओम्ह प’ गीद जकॉ गडल छल. . . भॉम्त भॉम्त के आसंका िनि ि घेरने. . .कतहु अपन बम्हन के त’ नम्ह द’ देलम्थ. . . .वा राधेस्यािकि घरवाली चाम्र साझ राम्ह क’ खुओलकम्न्ह . . .वएह त’ ठम्क फुम्सया क’

नम्हि ल’ लेलकैन्ह. . . ।’’
आ’ ओ निोम्बजानबला कोन गप. . .एखन धम्र त’ हिरा पकम्ड ि त’ नम्हि आएल अम्छ ।’’
‘‘नम्हिं आयल त’ सुनु .. .अब्बल दुब्बर सेहो अपन भम्बष्यक’ लेल कतेक म्चम्तत रहैत अम्छ . . . . ।जखन चान दाई के कोठरी सॅ जारम्न अनपाम्न सब म्नकसल. . .त’ म्कछु लोकक कहबा छल जे ‘भम्रसक संभाम्बत बाम्ढक आसंका सॅ ओ अपन सबटा चाक चौबन्द बन्दोबस्त कए नेने छलीह .. जे कि सॅ कि कोठरी ि पडल पडल दू टा सोहारी त’ पेट ि जायत. . .। म्कछु आओर लोकक कहबा छल जे ओ अपान आम्खरी कि्ष्क तैयारी अपने सोझा कम्र चुकल छलीह. . . . . .जानैत छलीह जे आगॉ नाथ नै पाछॉ पगहा के आमा देत .. . के म्कया किशकरत. . कोना क’ पैठ होयत .. से सबटा ब्योत कम्र क’ रखने छलीह. . . । ि ष्क गप ई भेलय जे भम्र जीनगी ईलटल म्बलटल सन रम्हयो क’ हुनका अपन अमालका जनकि म्चन्ता छल. . . .सोनदायक पैलवारक लोक नूका चोरा क’ म्कछु पाय टाका सम्दखन दईतै रहैन्ह .. . आ ओ अन्तत .. गहन र प सॅ एकरा ओकरा िध्यि सॅ चीज वोस्त ि बदलम्न रहली. . .ि दा ककरो कानो कान खबम्र नै भ’ सकलै. . ।’’
‘‘बेस. . . .आब त फरीछाऊ .. जे सोनदाय आ’ चानदाय ि कोन तरहक संबंध छल. . .।म्कएक ओ एक दोसराक’ रोम्गतक म्पयासल छलीह. . . ।’’
‘‘एखन धम्र अहॉ बूम्झ नम्ह पयलहु. . .त’ हिरे ि ह सॅ सुनु. . .सोनदाय भाऊज छलम्थ चानदायक .. . ।’’
म्खस्सा सुनम्नहार व्याकुल भ कानय लगला. ‘‘भाय .. .ई त अहॉ हिरे पैलवारक कथा कहलहूॅ. . . चानदाय हिर पीसी छलीह .. ।’’

मखस्सा कहम्महार के नरा सेहो चम्ह्ल चुकल छल ।ओहो म्बाहृवल भ' कानय लगला. . . ''चानदाय हरिरे काकी छलीह .. . जरीन जायदाद क' कागद प' औंठा त' लगबा लेलम्थ . . बाप म्पाम्त. . .ुदा कम्हयो घुम्र क' झाँकय नम्ह गेलम्थ जे पम्त म्बम्हन अब्बल नाम्र भाऊजक खोरनाठी के ताप सम्ह कोना जीबैत अम्छ .. .।'' आ' दूनू धनाढय मति नवी ुबिई नर ल के ओही एन आर आई म्बम्लडंगक बारहवी म्फिजल के अपन पैट हाउस ि फफम्क फफम्क क' एक पहम्र धम्र कानैत रम्ह गेल रहैथ ।

कम्माया पूतरा के मावाह

बङका बङका अटैची. . .सूटकेस. . एसी .. टी वी . ..फीज पलंग .. .अगङि बगङकि' पैम्किंग .. ओम्हना बान्हल. . .राखल छलै . ओही बङका हॉल सँ लऽ क' ओकर कोठरी आ' तीनो कातक बरान्डा धम्र ।घरक बाहम्र कंपाउंड ि ललका चरपम्हया ठाढ झक झक करैत छल .।लोकवेद के गेलोपरात. . ओ अपन िथ सँ घोघ हॅटौलक़ . .नम्थया बङ भारी छलै ..नाक बथैत बथैत फूम्लक' घोघा जकॉ गोल भ' गेल रहै .. ।नहुँ नहुँ ओकरा उताम्र क' डेम्संग टेबुल प' राम्ख देलकै आ' छोटकी नम्थया मकालय लेल महुम्र क' अपन अटैची खोम्ल रहल छल मक कान ि मकछु अनसोहात . . अम्याय . . . पटुआ सन तीत .. .लोमाया मचे सन लेसैत. . मकछु कटु वचन तीर जकॉ घुम्सक' हदय पदेर ि खलबल्ली िचा देलकै . ।कोधक लुती जेना सम्पूणशकाया के एकेबेर पजज्वम्लत करबा लेल बेकल. . .ि दा िजबूरी . . नब अपम्रम्चत िहौल आ' मातृगृह के मछौह . . .सब एके संग मलिक' िन के उम्दम्ग कम्र देलकै .. .आ' डोका सन बङका बङका ऑम्ख ि नोर डबडबा क' काजर सिित खसबा लेल बेकल भ' गेल छलै. . . ।अकसित नम्हं जाम्न कोन देवयोग सँ . ओकर सृम्त पटल के गुप्त खोह ि व्यतीतक मकछु .. . . .अन्हार आकास ि मबजुम्र जकॉ चम्मिक उठलै .. आ' कण ित लेल बाम्ढक' पाम्न सन पलय िचबय लेल उबडूब करैत. . .ऑम्खक पाम्न ठािठा ि ज्यो के त्यो . . . .ओम्हना म्थर रम्ह गेल रहै. ..।ठोर प आयल म्सित ि सकी सँ. . श्याि लि ख चान सन चमिक उठलै. . . आ' नोरक िधम्य ठाढ भ' गेल छल .. .कम्माया पुतरा के मावाह . . ।

ओ म्दन . . . .छुटी चम्ल रहल छलै गरी के . .. दूर. . .संथाल परगना के कठोर पथरैल .. .ललका जीन के भीजैबा लेल . ..उडैत घुडैत .. .कारी खरकट बादमर . . नाम्च नाम्च क' ल'ग ॅ त' आबै. . .ुदा बरसऽ के नाि नै लै .. .खोझा रहल हौ जेना सूखल टटैल .. .मायासल धरती के ।घि त' लगले रहै सम्दखन . . .कतो भमरसक बरसल सेहो हेतैक .. .तै. . .म्दि .. .तेज बहैत बसात . . .मखडकी दरवजजा के परदा के उडबैत बड सोहनगर लामा रहल छल ।

आ' एहने सुखगर िसिकि दुपहमरया. . . ओकर कोठरी ि होिए लागल कम्नाया के मवाहक बोत. . .।लाल िलायि . . रबडक गुम्डया सब के साबुन सॅ नहा धो क' एकबार प' पसामर पंखा के नीचा सुखबा लेल राम्ख .. लाडो . . अडोस पडोस ि अपन मकछु संगी सब सॅ राय िसम्वरा करए चम्ल गेल . . ।आधे पौन घंटा ि त' घुमर आयल छल .कोठरी ि पैम्सते . . .ओ दृश्य देम्ख ओ ततेक कैस क' म्चकरल छल .. .जे दोसर कोठरी ि म्वशाि करैत दादी जे आइये गाि सॅ आयल छलीह झटकारैत बडका बडका डेग भरैत ओकरा लग आम्ब ठाढ भ' गेलीह .. ई देम्ख हुनको कोढ कॉम्प गेलम्ह . ..ुहि प' दुखक भाव के संगे कंठ सॅ ' च्च .. च्च' . .माकम्स गेल छलैन्ह ।कोन ि बैसल दूनू अमालका पएर सॅ दबने .. .टॉि .. .लाल लाल गुम्डया के हबार हबार म्चबा रहल छल ।हाथ पएर मछम्डयाबैत. . . . औल बौल भेल . . .ओकर ुहि सॅ गुम्डया म्झकऽ चाहै .. .त' ओ लाल टरेस ऑम्ख केने . . .नाक म्हलबैत . . .सबटा दॉत देखाक' 'हूॅ.ऽॅऽऽॅऽॅऽकार करैत आर बेसी डरौन बम्न गुरेऽॅ लागै ।

''हेऽॅऽहे. . .िर बाम्दम्न' कहैत दादी के मकछुओ नम्ह फूरैलम्ह त'

बरान्डा ि राखल एक टा पैना उठौलम्हि .. . आ' कहुना कम्र क ओकरा ि्ह प' िरिने छलैथ ।एके डंटा ि गुम्डुया छोम्ड म्कम्कयाइत कोठरी सॅ पडाऽ गेल छल ।गुम्डुया के त' दुगम्ला दुगम्ला भ' चुकाल छल. . . िहनजोदडो के खोदाय ि बहरैल िूम्तशसन. . .अंग भंग . .एक टा ऑम्ख म्मापट. . . . हाथ टूटल .. .गल ि छेदे छेद .. दुनू पएर चूसल म्चबैल. . . .। ''ई गुम्डुया पपा कतो बाहर सॅ अनने छलम्थ. . .आब कत भेटतै. . .'ओकरा म्हचुम्क म्हचुम्क क' कानैत खीझैत देम्ख दादी ओकरा गरा लगाक' दुलारैत पुचकारैत बजम्लह ''ई हो कोनो कम्माया छै. . म्बलैम्त िि .. .एकर भला लोक की म्बयाह करतै .. . इ त' अपने म्बवाह करै छै आ' छोडै छै .। ... . तोरा हि एहेन कम्माया बना देबौ. . .जे खॉटी अपन देसक'. . एकरा सॅ हजार कच्छ नीक .. कम्म जे सब कहै म्छयौ सबटा सिन जुटा दे .. देम्खहै संगी सब ि्ह बेने के बेने रम्ह जेतौ .. . ।''

म्मदोख बालपन . . .म्पताहिी के आशासन ित सॅ कम भम्र ि अपन अपार कम्त म्बसम्र पुलकैत. . .नाम्ह नाम्ह हाथ सॅ अपन ऑम्खक नोर पोछैत . . .दू बीतक लाडो. .. . फुदी जकॉ उम्ड गेल छल .।रइया के बङका बंडल .. .बैडेज . ..आलिीरा ि राखल पपा के पुरना लिलि के कुरता . . .लाल. उजरा. . कम्रया ताग सुइया .. .कैची . ..सूखल पातर पातर लकडी आम्म अपन पलंगक कात ओछाओल पम्टया प' राम्ख देने छल ।

ओकर ऑम्ख खूजलै . . देबाल घडी ि चा.म्र बाम्ज रहल छल. . . 'एते काल सुम्त रहलौ' िने िन सोचैत .. . पलंग सॅ नीचा झकलक . . . . .तीन टा सुनर पुतला बम्न क' तैयार . .. कम्रया रेरिी ताग सॅ डाढ धम्र लटकल . .कारी कारी केर. . पैघ ..पैघ

ऑम्खि उपर ि तीरछा भौ .. .ठाढ नाक़ . .लाल लाल ठोर .. . ।एक टा पुतरा के जुटी गुथैत ओ िथ उठौने छलैथ .। आकरा देम्खि अहं भाव सॅ िस्कैत फेर सॅ अपन काज ि लामा गेली ।म्दयासलाय के म्डब्बा सब जे ओ रेलगाडी बनबऽ लेल रखने रहै .. .दादी ओकर बङ दीव िहफा बना क' ओम्ह ि नव पुरान कतरन के ओहार लगा क' . . .िहक बना देने छलैथ . . .म्डसपोजेबल सीम्रंज के एक दोसर सॅ गोद सॅ साम्ट क' पंखा बनाओल गेल ।

आब सुर भेल छल असल म्बवाहक तैयारी .. .कम्नया के कपङा लता गहना गुम्रया. . . .िती के छेद ि सूइया नै घूसै. . .त' सोनी अपन घर सॅ फूल काढ बला पतरका सुइया अनने छलै. . .कएक टा िला गॉथल गेल. ।. .िॅ के पुरना रेर िी . .सूती नूआ फाम्ड क' बनल नूआ. . .घागरा प' गोटा लगाओल गेल. . .टीन के चॉकलेट बाला म्डब्बा सब ि . .गुम्रया के नूआ फटा .. .जेवरात . कीचन सेट टी सेट .. . .. एक टा म्डब्बा ि लट खूट सि िन राखल गेल. . .छोट छोट िम्टक चुकङी के कान प' छेद कम्र क' ओकरा तराजू जकॉ बना ओही ि चौर दाम्ल .. .िखान. . .चीनी . . लिनचूस. . म्बस्कुट . . .भार दौरक सब सि िन राम्खि एक गोट सम्पूणशनब मारहस्थी के संसार सजैबाक पयत कएल गेल ।

संगी .. . संघम्नया सॅ भरल ' बुदक' दूपहम्रया ि बङ धूिधाि सॅ कम्नया के म्बवाहक आयोजन भ' रहल छल ।गुडडा अ म्स म्पाय सखी जया के छलै .. ।ओ अपन गुॅडडा के सजा धजा क' चाह वला बङका रे ि लता म्बछा . . ओही प' ओकरा चीते सुता क' . . .अपन िथ प' नेने चाम्र टा बम्रयाती संग आम्ब गेल छल ।

म्बवाह हेतै कोना .. . . ।लाडो त' अम्डयल घोङा बनल . . . 'म्बनु पंम्डतक कतो म्बवाह होइत छै .. ।' सम्बता जे ओतए सबसॅ

बूझनूक आ' उमरि ि पैघ . . .करीब नौ बरखक छल. . .. अपन चारम बरखक लजकोटर भाय के परतारक पंडित बनौलक . . . .ओ अनेरे लाजे ि हि नुकौने . . . 'बि. . बि.' करेत कनाया बर दूनू के एक हाथ सँ कनेरक फूल के िला पकरौलक आ' दोसर हाथ .के . .ि ठी बन्हने पीठ क पाछाँ रखने ।जल्दी सँ िला पकराक दौमा क' दोसर कोन ि गेल आ' ि ठी ि राखल चोर का टॉफी अपन ि हि ि झट दनी राख नेने छल ।

लङकी बला के भोज भात करेनाय आवश्यक छलै. . ।मकएक त' ओहो सब पैघ लोक संग क़तेको मावाह क पाटी ि गेल छल त' खेनाय मानाय सएह ि ख्य गप होय। ओकरे बङाय वा महनताय ।

भोजक व्यवस्थात' ओ अपने द ि प' कमर नेने .चूमकया फोमङक' अठनी चौवनी के ढेर देमख मसंघाङा .. गुलाब जा ि नि .. आ' मजलेबी त' ि तू साह के दोकान सँ ि गा नेने रहै. . आ' ि ँ सेहो भनमसया के कम्ह पूङी आ' खीर बनवा देने रहैथ ।घरक बङका बरा ि दा प' दरी चादमर माछा लाडो सबके भमर पेट. . . पतल प' खुऔने रहै. ।. 'देखी त ..हि अपन गुमरया के मावाह ि केहेन महय खोमलक भोज कमर रहल छी .. . .आ इ सीि जे केन्ौं रहै. . .एकए क टा मास्कूट खुआ देने रहै. . .. . . आ इ ि ि ला अपन गाछक लता ि क' एक एक टा फॉक पकङा देने रहै ।''

खा पीब क' सब गोटे गीत नादक कायक्र ि ि जूटल. . .''चलनी के चालल दू ि ि अंमखयो नै खोले है. .सँ सुर होइत 'बाबूल की दुआए लेती जाऽऽ्।' प स ि फ्त भेलोपरात कनाया के घघरा बदमल नबका नूआ पकरा क' बङका टा के घोघ ताना ि ङ ि म्ङ ओही ि हँफा ि बैसाबऽ के कोरसीस करै .. त' कखनो कनाया के ि थ बाहर भ' जाए त' कखनो पएर । .. . .हामरक' ि हफा के ऊपर

कन्याया के सूताक' लाल डोरी सँ बॉन्ध क' मादा कराओल गेल ।पलंगक दोसर कोन ि बछल ललका दरी जया के अस्थाई बासा बनल .. . कन्याया ओम्ह ठाि पहुँचली ।
मादाइ के पछैन्त थाक्क क' चूर भेल सब मकयो लूडो खेलय ि लामा गेल छल. . .सम्बता के छोटका भाय सेहो ।

तेसर मदन जया आयल छल ि्हि बनौने . . दस ठाि सँ नाक भौ कोम्चयाम्त "ई की. . . .हि्र गुडडा के त' तू ठम्क लेलही. . . नै औंठी . . नै .. गरा ि चैन .. ।" .. लाडो त बकलेल जकॉ ओकर ि्हि ताम्कतै रम्ह गेलै. . ।ओ त' अम्ह ि ऐंठल छल जे एतेक खरीच कम्र क' रान सँ . . .अपन कन्याया के मवाह केनौं छल. .. . . एहेन भव्य सिारोह त' ओही परोपटा ि मकयो नम्ह केनौं छल । ओकर िूडी मित िडली ि खूब उँच भ गेल रहै ।अकसाित इ आरोप सुम्न िूहे भरे खसल "इहो सब होय छै मवाह ि . . .पम्हने मकएक नै बजलै .. हि ओम्रयान कम्रतौ।' "हिरो कत बूझल छल. . .आय हिर नानी आयल छम्थ. . ओ कहलैन्ह .. लङका .के दान दहेज देल जाए छै. . .गुडडा हिर एतेक नीक . . नै एको टा कपङा देलही नै बरतन जात. . ।केहेन मवाह गरीबहा जकॉ. . ।" ओकरा गेलोपरात ओ गुिसुि बाहर कुरसी प' बैसल रहै. . ।साझ नहूँ नहूँ भम्रयाय लगलै. . .।एना उदास. . .उदास देम्ख कंपाउंड ि टहलैत दादी. . ओकरा लग आम्ब पूछलम्थ त' ओ अपन िनिक सबटा व्यथा उम्ङल देलकै. .।दादी बजली "हे. . . लैह. . ओ कोठा सोफा बला बरक िए. . .ओ कत देलकौ तोहर कन्याया के गहना गुम्रया. . .नै नम्थया नै टीका .. .नै नूआ .. नै लहठी. . एहनो कतो मवाह होय छै ..सासुरो सँ भार दोर आबै छै .. .तौ त'

एतेक सानि देबे केलही .. .. . ओना त' सासुर ि राजा के बेटी के सेहो दूषै छै लोक़ . .जे हाथी त' देलम्थ िदा ओकरा बान्हय लेल कडी त' देबै नम्ह केलम्थ ।िदा ओकर कोन ि्ह छै दूसब के'' ।

इ सुनैत ितर लाडो के संपूणशररीर ि जेना सौसे ललका म्पपरी लुधैक गेल होय . . . ओ दौगल जया के घर ।

जया अपन कोठरी ि टाग पसारने बैसल कम्नया पुतरा के पेटार खोलने असार पसार करैत . .चीज वोस्त समरया ब्ऽ ि व्यस्त छल ।लाडो एकदि सॅ ननस्टॉप रेकाड जकॉ सुर भ' गेलै '' हरि त' पच्चीस टाका खरच भ' चुकल अम्छ. . तोहर कतेक पाय खचश भेलौ. . .चुम्कया हमरि फुटल की तोहर . . ।'' आ' अम्ह उकटा पैची ि गप ततेक बम्ढ गेलय जे जया गुम्डया के ल'क कैस क' बजाम्र देलकै .. ''ले ल जो अपन गुम्डया के''आ तासि म्कटम्कटाक' ओकर हाथ ि अपन बीसो दॉत गडा देलकै. . ।लाडो ददशसॅ म्बलम्बला उठल .. .हाथ छोडबैत ओ ओकर गुडडा के अपन पएरक नीचा लतदिश करैत ओकर िकुट .. .तोम्ड देलकै. . ि्ह म्पचका देलकै. . ''एहने बर .. नै हाथ . .नै पएर ..'' कहैत. . तासि आन्हर होइत. . जया के झोट खीच क' चाम्र िका पीठ प' िरैत. . लंक लगा क' ओत सॅ पडाऽ गेल छल ।

अम्ह घटना के उपरात त' दूनू ि तेहेन तनातनी जे एक दोसर के रोम्पात पीबए लेल उदत. .।नेना भुटका ि दू फॉड भ' गेल रहै. .।म्कछु दूनू पख के धेने .. .नारदक कायशसंपन करबा ि लागल । ओही म्दन घि बरम्स गेल रहै . . .चारो कातक जिीन भीजल. त्. .. . . .जलखई कम्रक' म्धया पुता के झूंड़ .. . . . पडोस ि

.. . पिछला हफ्ता रक सॅ . .उम्झलल बौलक ढेर पर उछलि खूद करै .. पहुॅचल । . . .केकरो घर बनैत रहै. . कि िका बारीर सॅ बौल भीजल .. .ओकरा खोम्द खोम्दक ओही ि अपन पएर राम्ख घर बनाबए ि असीि उत्साह आ ऊजा सॅ जूटल छल . . म्क तखने कोनो अगती आम्बक लाडो के कहलकै. ‘‘हौआ अपन गाछक नीचा बनल चबूतरा प’ बैसल जया तोरा देम्ख क’ िहि म्बचकाबै छौ. . आ’ म्कदुन म्कदुन बाम्ज ओम्ह चार छौडी सब संगे खूब ठहका िरै छौ. . ।’’ओकरा जेना म्बरनी काम्ट लेलकै. . .अपन पएर प’ थोपल बालू के एक झटका ि फेकैत ओ दौगल चबूतरा म्दस .. . ।ओकरा पाछॉ आन म्धया पुता सेहो अपन अपन िहल के धरार ायी करैत. . .तूफान ि लि बनल पहुॅचल ।

दुनू पाटी घरक पाछॉ वला इनरक कात के बडका चबूतरा प घो घे करैत फॉड बन्हने .. .।इ वाक् युद. . .िल्ल युद ि पम्रणत होिए लेल बेकल ।तखन दूनू .. म्ककेट खेलैत अपन अपन छोट भायक हाथ सॅ बैट छीन नेने रहै. . .।धोम्बम्नया जे संजोगे सॅ कपडा नेने उम्हरसॅ आबैत रहै .. . .. दौगल लाडो के घर. . .चपरासी दौडा क’ ओकरा पडबाक आनल गेल ।एतेक गरिगरिी देम्ख क ितारी सब अपन अपन वीर बॉकुडा के खूब थपम्डयेने रहैथ ।. . .सब म्कयो छगुन्ता ि डूबल . . . नेना भुटका के संसार ि कोना एतेक कडुआहठ भम्र गेलय ।

तेकरा बाद त’ कम्नया पुतरा के म्बवाहे बन ।सबहक घर सॅ इ आदेर ‘खेलबै त’ खेल . . िदा म्बवाहदान म्कनौह नम्ह. . . ।’

ओ त हॉस्टल चम्ल गेल छल चौदह बरखक बनवास ि . ।ओत सॅ पपाके रन्सफर भेला के बाद म्वस्से खति .. इ म्स्तष्कक कोन गम्हर सॅ मांकैल ओकर स्िम्त पटल प’ चान सन चिकि उठले सेनम्ह

जाम्त ।ओ तुच्छ सन बेकार खेल वास्तव ि असल जीनगी के खेल छल .. . जतए उत्साह उिग आ' उल्लासक िधम बड़का काज पारंभ करैत लोक छोटका छोटका चीज ि उलझ अपन जीनगी नकश बना लैत अछ । मादाइ के काल िॉ के बोल कान ि घुरय लगलै. . 'नैहर खूजल. . पढल मकताब. . सब मकछु स्पष .. ि दा सासुर ..नब अपमरचत पोथी. . गुढ रहस्य सॅ भरल. . कतेको बरख लागै छै बॉचबा ि . . मकछु िगज ि घूसै छै .. ि दा सम्दखन मावेक सॅ काज लेबए के पाठ पढबैत .. ।'

डाइंग र ि सॅ एखनो धमर व्यंग .. आकोर सॅ भरल अचम्ट कुचम्ट क' स्वर आम्ब रहल छल ''िहनजी त' गोनू झा के बाप माकलला .. जम्हना कहम्लयैन्ह दू टा वस्त ि कम्मया चाही तम्हना दू टा वस्त ि पठा देलम्ह ।बड़का पाग बला लोक ..' 'इजे छहौर िहौर केलम्थ . . गाड़ी देलम्थ . .से त' बेम्टये के कािए हेतैं न .. .एतेक म्दन सॅ किा रहल छै ।' 'एहेन कंगाल कुटुि .. . कहु त' वरक ािय के एकटा डायिडके सेट धमर नै देलकै ।कत फॅसा देलम्थ बजभूषण बाबू हिर बेटा के .. ।. जटाधारी बाबू केहेन नीक कथा देने छलैथ. . .इनकि टैक्स किािशरक एकलौती संतान .. कतेक िकान . . .क तैक फारि हाउस. . .ि दा जो रे कपार. . ।''

लाडो क' ऑम्ख ि थीर नोर भरभरा क' खसय लगलै .. .िनुक्ख एसगरे मान पैलवार के रम्ह नम्ह सकैत अछ .. .क़तबो पैर प' ठाढ . . भ' जाए .. .पगम्त के . . संपम्त के सवोच्च मर खर प' ठाढ भ' जाए .. . .एकरा संग वा ओकरा संग .. .केकरो नै केकरो संग त' चाहबै करी .. ।

संयि त्याग आ' बुम्द के बल प' पैलवार चलै छै. . ।अही अतकही बतकही ि नम्हं फॅम्सक' नब जीनगी के नीक जकॉ कोना जीबी

तेकर सुरआत करबाक चाही ।आिखर पढल गुनल अपन पएर प' ठाढ के तिलब की ।तोङनाय त' एक कगक काज छै .. बना क'राखब ि न' कामबलती ।व्यवहार सॅ अपन बनबय पडतै सबके ।घरक चारदीवारी सॅ बाहर . . . आिफस ि. . . कतेको तरहक गप सुनबाक . . सहबा के पडै छै. .. जौ घरे ि सम्हले ली त' अनथश की .. ।हॅ .. जखन जान प' पमङ जायत तखन त' सोचले जेतै .. ।अनेको तरहक सद ञाचार सॅ ि न हल्लुक भ गेलै. . ।ऑिखक नोर पोिछ लाडो कान ि इयर फोन लगा आइ पौड प' गीत सुनए लागल छल ।

<u>डाम्बानक्क बानर</u>

ओम्ह सूनसिान बङका गाछी बला चौबम्टया प' ओकरा देम्खते ितर. 'ओ' म्सताहल नम्ढया सन दुि दबौने . . . पङाए . लागल। . 'ओकर पडेनाय देम्ख 'ओ' गाछ प' सॅ छरपल. . .धेलक ओकर पछोड. . . ।ुदा ओ' गहॅूकि म्चकस . सायम्कल प' पाछॉ बन्हने कम्नायो घुम्र क' नम्ह तकलक़ . . आ' ताबङतोङ पैम्डल िरैत अप्पन दलाने प' आम्बक शॉस नेने छल . .।

एना हॅफसैत . . . फागुन िसि .. घाि पसीने देम्ख़ दरवजजा प' बैसल म्पाताजी. कम्न घबङैल सन पूछला. .. . . ''म्क बाऊ. . . म्क गप्प .. . एना म्कएक म्फरीरान छहक़ . . . .म्कछु अनसोहॉत त' नम्भ. . .'' म्पाताजी के म्चंम्तत ुिह देम्ख बाऊ ुिस्कैत बजला. 'नै. . नै . . तेहेन कोनो गप्प नम्ह . ।ुदा .. .गुिटी बला चौक प' जे बतहबा दाढी बला बुढबा गाछ प' बैसल दूनू टाग िगि झूलबैत रहै छै .. . . . म्कएक नै म्कएक हिरा देम्खते ितर. . अपन बङका बङका पकलाहा दाढी प' हाथ फेरैत .. . डरौन सन ऑम्ख चिकिबैत .. . .ऑगुर सॅ ईसारा करैत. . .थि. . . थि' कहैत हिरा लग दौम्ङ क' आबए चाहैत अम्छ. . . . हिरा बङ डर होईत अम्छ .. . आय त' ओ आिकि िटका डाम्र सॅ धमि सॅ कूम्द हिरा म्खहारने म्खहारने नरेरबा के आरा मिल धम्र चम्ल आयल छल .. . ुिदा बीचे िबहेङा बला रोड प' िटरक आवाजाही सॅ ओकर दौङनाय ि व्यवधान उपम्स्थत भेलए. . . .आ' हि देकुली .. .बला रस्ता धम्र जान बचौने .चम्ल आम्ब रहल छी . ..।'

म्पाताजी बेस म्चन्ता ि पम्ङ गेल छलम्थ. . ।सब लोक त' ओम्ह बाटे सहर बजार जाईत अम्छ राम्स .. म्बराम्स .. सेहो . . .केकरो

मकछु नै कमहयो भेलए .. . . ।ओम्ह बडका गाछी सॅ कम्म हम्ट कए . . .रेलवे गुटी लग . . .के दोकान दार सब सेहो मकछु तेहेन नै कहलकै. . 'कतो सॅ आम्ब गेल छै साधुबबा .ओ अपाम्हज .. . .ओ मक मखहारतै . .. आ' मक गाछ प' चढतै. . ।'

िदा बौआ . .उफशतंतू के डर अजस्त. . . ।गाि सॅ बहराए के एक ित सोझ बाट त' वएह . छल. . ।आ' बौआ घर ि बन भ' रम्हतम्थ त' कोना ..कोनो छौ म्सिया त' छलैथ नम्ह .. कओलेम्जया .. . .मकलास करए त' जेबे कम्रतम्थ. . .. ।तखन मपताजी रम्किसुनि के छोटका सार के लगा देलमखन्ह संग . .जे मवरेष म्डलडौल क' पहलवान लोक छल.. . ''खाली तौ गुिती टपा म्दहक ।''

अपन बम्हनक सासुर ि भमर म्दन ओ बैसले रहै. . . त' गुिती प' सेहो कओलेज जेबा आ' एबा काल बैसै. . .मपताजी के पाय सॅ चाह मबस्कुट खा पीम्ब क' सिय काम्ट लैक . .।आियशम्क ओकरा संगे रहला प' तंतु ओम्ह दम्दयल के ऑम्ख ि ऑम्ख दैत टकटकी लगौने रहै .. .तैयो ओ बडका गाछक जम्ड लग संचिच भ' मनम्लक्षा भाव सॅ बैसल रहैक .. ।

िदा अम्ह सॅ सिस्या नम्ह पडेलै . ..।आन पकारक उतपात त' बम्दते चलल गेल छल. .।भेलए मक जे ओम्ह म्दन म्दनकर कका के छोटका बालकक मबवाह छल. .. .. टोलक सबटा जर जुआन. .. बूढ पुरान पुर ष पात बमरयाती चम्ल गेल रहैथ .. . । तंतु बाबू के एि ए फाइनलक पमरच्छा चम्ल रहल छलैन्ह. . .त' िन िसोम्सक' रम्ह गेलाह. . .बमरयाती के सरस खेनाय सॅ ऑम्ख िूम्द नीरस मकताब ि म्धयान लगौलौन्ह. ।. .पराते भ' क' पेपर छल ..ताम्ह लेल ओ दलाने प' रम्ह क' पम्द रहल छला मक आंगन सॅ म्चकरैत िे

कहलखिन्ह. . 'बौआ रौ. . . कनि पछबरिया बाडी सँ चारि टा नेबो तोड़ि क' आनि दे. . .ओलक सना ि देबए . ..'।ओलक सना हुनका बड़ पसिन. . ।ओ जहिना पछवारि खेत दिस जाए लेल करिया कका के खरिहान सँ ि‌ड़ला . .कि हुनक एकि‌ति बरद . . .अचौक उठि जोर जोर सँ पोछ हिलबैत .. कूदय लगलै. . . जेना ओकरा ि बिजली पवेर करि गेल होय .. .ओ रंभाय लागल आ' खूँटा के एके झटका ि उपाड़ि .. .खूटा समेत हुनका पाछाँ पडैल. . . ।ओ बेचारे त' बिटीर एयिरक गवर्नर सबहक कायदकाल ि ड़ूबल . ..हाथ ि कौपी नेने ि‌ड़ी झुकौने . . . .नेबो के गाछ दिस बढल चलल जा रहल छला. . . कि पाछाँ सँ बरद हुनका धका िदि क' खेत ि खसा देलकैन्ह . ..अकबकैल सन ओ .. . .कनिकाल त' हुनका ठकबकी लागि गेलैन्ह . .. ओ चारो नाल चित खेत ि पड़ल रहला . . . ि‌दा ओहो बारह सँ पनरह सोहारि खाय बला . . .बेस तंदुर स्त . .जुआन लोक छलाह .. .त' नीचा खसले खसले बरदक दुनु सीग पकड़ि जोर सँ जुि क' लात िरैत ओकरा कनि फराक ठेलवा ि विजयी होइत .. . ठाढ भ' क' अपना के बचबैत ओकरा दिस झपटला .. . .ि‌दा बरद के नहि जानि की भ' गेल छलै .. . .ओ फेर हुड़कि क' हुनका प' पूरा जोर सँ दौगल . . .आ' ओहि गँहुि बॉग भेल खेत ि पटकि .. . .अपन खूर सँ हुनक पैजाि के डोरी फोलबा के कोरसीस कयने छल .। . . .ताबैत ि कोनो जनानीए अपन आंगन सँ देखि क' चिचिएलकै .. . तेकरा बाद आओर स्त्रीगणक जोर जोर सँ सोर सुनि दोसर टोलवैया सब हाथ ि डंटा नेने दौड़ल आ' बरद सँ तंतु के कहुना करि क' छोड़बेलकैन्ह. . . ।आ' ओहि दिन सँ बरद आ' बौआ ि अघोषित जुद रुर भ' गेल छल .. . . आब ओ बरद .. . . बरद नै भ' क'

साकांत. . . .पकलाहा दाढी बाला बुढबा भ’ गेल. . .कोध सॅ पागुर करैत. . हुनका घुईर घुईर क’ ताकए लागल छल. . ।
ओम्हर सबहक आयिक्ष ठेकान नै रहलै. . . एतेक सीधा बरद. . . जेकरा पॉच बरक नेना सेहो सानी पानी दैत पीठ प’ .. हिं. . प’ . . हाथ फेर दैत छलैक .. .औचक ओ एहेन रिखाह. . .बम्दयल आ’’ डरौन कोना भ’ गेलय. . आ’ ओहो खाली तंतुए प’ म्कएक गुम्हरैत रहै छै .. . ।अपन हिं निरा क’ कतो सॅ .. .तंतु के देम्ख पगुरैत भोकरए लागे छै .. ।
म्पाताजी के आयिशत’ साति आकास प’ .. .आन म्घया पुता छलैन्ह . .. टोल िसेहो जनसंख्या कि नै. . .दिा एकरे प’ म्कएक़ . .लाल वस्त्त सेहो नम्ह पम्हरम्त अम्छ ई. . . ।
सब गोटे मिलिक’ एकर सािधान जे म्नकाललैन्ह. . . ताम्ह सॅ ओम्ह कात हुनक गेनाय वम्जश भ’ गेलम्ह . .. ‘कोन बेगरता छै उम्हर जेबा के. . ।र्ीिं के आदेर त’ सवोपम्र .. . ।
इम्हर टोल ि जखन सब म्कयो अपन अपन काज म्नबटा क’ म्हनका लग म्जजासा करए पहुॅचल. . .ठटा केनाय रुर. . ‘आम्खर तोरे प’ म्कएक झपटै छ सब म्कयो. . ।’ तंतू कम्न सीम्रयस भ’ क’ अपन टेबुल प’ खुजल म्कताब ि हिं गोम्त क’ आई ए एस के तैयारी ि लामा जायथ ।ओना जतेक पकारक पम्त योगी परीक्ष होईत छै .. . .आ’ आटम्स के छात ओम्ह ि बैस सकैत अम्छ . ..ओ सबहक फारि िगबाबैथ . .. आ’ म्कताब खरीदम्थ. . ।एवि पकारेण ई त’ म्नमित छल जे हुनका अपना भीतर सॅ कोनो पद क’ लेल ‘हूबा’ नम्ह छलैन्ह .. . ।जे कम्न भम्रगर पदक नाि सुनैथ .. .त’ ओकर फारि अनबाबए लेल लोक वेद के बजार दौडा दैथ ।दोसर उल्लेखनीय गप्प जे कोनो पोस्टक लेल एप्लाई करबा सॅ पम्हने ओकर

बेम्सक सैलरी आ’ अपन ज्येष भाता के बेम्सक सैलरी सॅ तुलना कम्र क’ पसन भ’ जायथ .. ।एकरा पाछॉ निोवैजाम्नक के कहबी छल . . . म्सबम्लंग म्रवालरी .. ..ॅ म्पताजी सम्दखन अपन ज्येष बालकक बडाई करैथ त’ ई बेचारे न्हिुआईलसन अपना के अम्स्ततम्वम्हन पाम्ब िने िन म्नलमलाईत रम्ह जायथ आ’ ओंघीओ ि इएह स्पप देखैत जे भायजी सॅ नीक पोस्ट हाम्सल करी जे ताम्रफ हिरो हुए. . . . . ।

रटबा ि हुनका साक्षात देवी के बरदान जेना .. . .. ि दा म्बसम्रयो ततबे करैथ. . . आ’ एक के पॉम्त दोसर ि जोम्ड तेसरे वाक्य बना दैथ .. . .कतेक आलेख सब रम्ट क’ इसकूल ि पुरस्कार सब सेहो जीत चुकल छलाह. . . ।अम्ह रटबा के कि ि अंगेजी म्हन्दी म्डकर नरी सम्पूणशसंपुट लगा क’ रम्ट चुकल छलाह .. .ि दा जखन भायजी के म्चटी ि “चूडा म्बल बी रान्सममटेड” म्लखला .. त’ जनानी के िध्यि सॅ गप्प पसैर क’ म्पताजी के कान ि पहुॅचलम्ह .. जे चूडा के कोन म्बदुत तरंग ि बदम्ल क’ रासमिट करता . त’ एक क्ण लेल बाबूजी सेहो थककिा गेल रहम्थ .. ।अपान अम्ह ओजस्वी संतानक बुम्द्ध प’ त’ हुनको यदा कदा संरय भ’ जाम्त . ।ि दा गलती त’ केकरो सॅ भ’ सकैत अम्छ’ ई कम्ह क’ तंतू बाबू कम्हयो अपन नाक प’ िछी नम्ह बैसय देलम्थ।

उम्त ष तः .. .जागृतः. . . .धावत :’ ई हुनक बीज ति . .. जेकरा ओ रोज घोटैथ. । . घोटैत घोटैत ओ बैकक पी ओ के परीक्ा देबा लेल सेहो तैयार .. ।. गम्णतक कम्ठनाई. . . ि दा बहादुर बौआ. . . गम्णतक सवाल के .. . . एबीसीडी .. .इम्हर सॅ आ’ ई एफ जी उम्हर सॅ. . . ..ह गएातएर तहान्। । । । ।ल्एसस् तहान्ह् .....
.. . .

. . . . .रटैत रटैत भरल दलान प’ ओम्हि म्दिन ई उदघोम्षत कम्र देला जे आब ओ पी .. ओ .. के परीक्ष लेल पूणश र पेण लंगोट कम्स क’ तैयार छम्थ. . . ..आ’ अम्हबेर कतो नै कतो ओ अवस्स म्नकाम्ल लेताह . . .सफलता आम्खर जेतै कत .. . .ऋ

बेस. . .र्ि दही चीनी सॅ जतरा करा क’ म्बदा करोलम्थ. . .।म्वरेष उत्साहक संग म्कसुनि के सार आ’’ हुनक अपान दुनु अनुज दम्ङभंगा आम्ब पटना बाला बस प’ बैसा देलकैन्ह. .।

परीच्छा दैत तेसरा म्दन ओ घुरला. . .।म्कसुनि के सार बस स्टैड प’ पम्हने सॅ ुस्तैद. .. .अपन सायम्कल गौआ पानबाला के दोकान सॅ उठबैत दुनु अपन अपन सवारी प’ बैसला .. ।ुन्हम्र साझ र्िं . . .पधानति म्वकास योजना के तहत बनल सुम्चकन पीच रोड टपैत . .. गाकि खरंजा प’ बढल चलल जा रहल छलम्थ. . .म्क नम्ह जाम्न कतए सॅ एक गोट सङल पीम्लया कुकूर आम्ब क’ हुनक बाि कातक पैट भम्र ुहि पकम्ङ लेलकैन्ह. . .अम्ह कि ि ओ घुटी सॅ ऊपर हबैक सेहो लेलकैन्ह. . .।एकरा एकटा अपरगुन िनैत. .. . सबटा पसनता क्णार ि कपूश जकॉ .. .उम्ङ . . . .चार कात जरल िछ जेकॉ गंधाए लगलै. . ।

म्पताजी के म्चन्ता जायज़ . . . ‘ई कतो नौकरी चाकरी करैथ . .. तखन नै .. .कतो म्बवाहोदान. . . .।वएस त’ भइए गेल छम्न्ह . . .।खरच दुम्नया भम्र के. . .।

बङ म्दन धम्र ओ अपार म्चन्ता ि डूबल रम्ह गेल छलाह. .।

बौआ. . . .ऊफशतंतु .. . . दुम्नया जहान सॅ म्भन . . .।पूब ि म्कम्रन फूटबा सॅ पम्हने उम्ठ क’ घंटा भम्र दंड बैठक करैथ ।. ..कसरम्त करैत ितर. . . .ओ ‘िनुक्ख गंध’. . ‘‘िनुक्ख गंध’ जकॉ

.. . 'भोजन गंध' ' भोजन गंध' करैत खेनाय प' झपटैथ. ।भूख त' हुनका सुतलो राितयो िनफिकर रहए नै दैक .. . त' ओ तुरंत जोड़ऽन देल दुध के उठा क' पीबा जायथ .. . ।मनसरे िय तालकते रहै जायथ. 'भिर सक बालाम्ह पीबा गेल हेतए ..'आ' दही पोरहार के अकिता प' आरोप लगबैत . .अपन िनक भङास माकार्म लैथ नौकर सॅ झपने नहि हेतैक .. ।'

ि दा कतेको बेर जखन ई पकिया दोहराओल तेहराओल गेल त' िा पूतौह आ' बेटी के कात करैत अपने हाथ सॅ टिकूडी के ऊपर चकला . . . . . ओहि प' लोढी सेहो राख देलथ .. .चूमि के एकदि लग' ि. . . भनसा घरक सबटा खिड़की केवाड़ बन. . . ।ि दा तैयो जखन परात भेने टिकूडी खाली. . . भेटलैन्ह .. .त' हुनक आियक ठेकान नै. . . ''कियो टोना टापर त' नहि कए रहल अछ. . . .दियाद बाद त' अहिना दुष . . . नजिर त' हिर घर प' लागल रहै छै .. .बजर खसुआ सबके'. . .. ।'तखने दनदनाईत जलखई करबा लेल बौआ तंतु अयला त' ियक' ई बालाप सुन रहस्योदघाटन करैत बजला. . 'गैऽऽऽऽ. ..हिरा रामाक पढैत पढैत भूख लागा जाईत अछ. . ..हिही. . .पीबा लैत छयो।' ताहि दन सॅ िा चािरटा सोहारी आ' तरकारी .. .अरबेस क' हुनक चौकी प' राख दैथ. . . जतय ओ पढैत रहैत छलाह. . . जाहि सॅ सुतली राित भनसा घर त' नहि जायथ .. . ।ि दा भनसा घर सॅ की परहेज . . .ओ त' भगबन्त के उसरगए लेल थारी ि राखल केरा दूध. . .भजनबािर प'स' दन दहाडे उठा क' खा गेलाह. . ..पाथर भेल िा. . .थरथर कॉपैत. . .भगबन्त लग क'ल जोड़ने कलपा कलपा क' हुनक सदबुद्द लेल पाथर्ना करए लगली. . ।

जहिया सॅ बरद पटकने रहैन्ह तहिया सॅ बाडी झाडी बाला खास

कम्मक' घरसँ बहराए .. बला काज त' छुम्टए गेल
छल जे हुनक आलसी सुभाव लेल बरदाने म्सद भेल छल । आब अपन म्बारेख सयि ररीरे प' लगाबैथ. . . [निहम्र साझ ि सेहो घंटा दू घंटा . .. .कसरत करैथ . . . .ड़ाऊ डाऊ कम्र क' खेनाय प' छूटैथ . . . .।सेर सवा सेर . . .चाऊर बूटक भुज्जा फॉकैत . . . .दरवज्जा प' . . .लैम्प जरौने . . कुरसी प' बैसल झूम्ल झूम्ल क' आई ए. एस क' तैयारी सुर कम्र दैथ. . आठ बजैत बजैत. . .भोजन भात भइए जाए. . .दस बाजैत बाजैत ओंघी सेहो दबोम्च लैक . .. .गाि ि तम्हया साढे आठ धम्र त' लोकवेद खा पीम्ब क' म्नाम्फम्कर भ' क' सुम्तायो रहै. . .।
ओम्ह राम्त बड़ धुऑ धार बरसा भेल रहै. . . भदवाम्र ि सि. . . चारो कात. . .बेग़ . म्झंगुरक जुगलबंदी. .. .सब तम्र म्पाचम्छम्ड. . . ..।परात भेने .. ..कम्म अंधारे सन छलै. . . म्पाछौत ि . . .नहाए लेल चप्पा क'ल चलब गेला . . ..।औचक ि पएर म्पाछैड़ गेलम्ह. . . . .आ दू .
िूंहा घरक सीढी के कोन ि पाम्न बुनी सॅ नूकैत घुरिम्हया क' सूतल म्बलाम्ड क' उपर धंमि सॅ खसला. . .. ओ त' पम्हने म्याऊ म्याऊ करैत एक दू .. .क्ण कराहलक .. .. िदा तेकारा बाद म्खम्सया म्खम्सया क' हुनका से भंभोरलक जे म्हनकर होर हवास गुि .. .।
ई अन्हार ि पडल पडल 'िॅ गै .. . िॅ . .' करैत म्चकरए लगला. . त' बगलक कोठरी ि चाम्र िसुआ नाम्त आ' बेटी के संग सूतल िॅ म्चहुक क' भकुआयल ऑम्ख िजैत िजैत .. . बहरेली. . .।लालटेकि टेिी ऊच करैत .. .बेटा के ई रप देखैत .. . हुनक एडी के पारा िगिज प' चम्ढ गेलम्ह. . . ।सब म्कछु म्बान कहने

बुझ्झ गेलम्थ. . 'तोरा कम्हया भगबती अम्कल देथुन. . .।धीया पुता सेहो म्पाच्छम्ङ के डरै . .. क'ल प' ओम्ह म्दस सॅ नम्ह जाए छै. . . ।'उम्हर म्चलका जे बीािर छलै. . आ' भम्र राम्त नम्ह सूतल छलै म्हनकर म्चकरनाए प' नीद सॅ उम्ठ क' . चेहुॅ चेहूॅ करैत गला फाङय लगलै. . .।आँधाएल बम्हन .. .कहुना कम्र क' बैसैत .. . पलथा प' ओकरा नेने .. . .आरे मामाया. . . . .आ'. . . ।'कम्र ओकरा सूतब ि लागल .. . आ' नहूॅ नहूॅ फुसफुसा क' अपन 'तंतूभाय' प' आन्ताम्रक पीत सेहो. . .व्यक्त कम्र लैत छली. 'म्हनकर ताल अलबते. . . भम्र भम्र राम्त .. . लोक जागल छै. . .आ' भोरे भोर म्हनकर ताल. . ।' बाम्ज भुॅम्क क' ायिक हदय ाि जकॉ म्पघैल गेलै. . . ओ कङूक' तेल आमा प' पका क' आनलम्थ . .. 'ला SSSSदेखो. . . देखी त' . . . एकटा .. म्बलाम्ङयो तोरा नै गुदानै छै.ॅा .. . आर सबसॅ लङबा लेल त' म्संग मकाम्ल क' सम्दखन तैयार .. . ।दादी के त' सौसे भंभोरने छलौ .. . .नै लागै . ..छै एकर म्बष . . .।ओना त' तू कुकूरो बला सूईया सेहो त' लगबैनेए छलैह . .।' फम्रच्छ भेने तंतू. . .चाम्र टा पजेबा आम्त म्पाच्छङ म्दस सॅ लगा देलम्थ. . 'आब नै खसतै म्कयो. . ।' भौजाए बम्हन सब हॅसए लगली .. ' अपने नै खसू . ..सएह .. .बङ. . .छै. ।. . आन सब त' ठेकनगर छै . .।'

म्पताजी के कोनो जोतखी कहलकैन्ह. . जे तंतू बाबू के म्कछु म्दन स्थान पम्रवत्तन भ' जेनाय आवश्यक . .म्कएक त' म्हनक ागिल बङ खराप .. . ।तंतू अपनो बङ म्दन सॅ. ाािन ि मयारने रहम्थ जे भायजी के' पम्टया क' कहुना ..कुरीनगर पवासक इंतजाि करी. . .।आब ई सब ताल बेल देम्ख म्पताजी सेहो सहषशतैयार भ' गेला . . . 'अहू ठाि तैयारी करै छ. . .ओहु ठाि कम्रयह. . .।'ताकल

गेल जे ओतय कोन संबंधी छन्थि. . . आ' सबसँ नजदीकक भायजीक सासुरक कुटुंब. . . ..ओही माद्राथीक डेरा प' आसन जमौला. . । अजगुत लोक़ . .अजगुत पढाई. .. ।भिदा नीके छै. . .कसरत्ता करैथ . ..होटलक खेनाय . ..भूख पेट सँ फाम्जल लागै. ..।कोठरी मि चना . . मिंग . . गेहुँमि फूला क' अंकुरी क' संग़ . . सलाद लेल पता कोबी .. टमिटर खीरा . .के संग कॉंच भॉंटा सेहो अजमिलाह . .।भिदा भॉंटा के सलाद देखिक' ओम्हि ठामि' माद्राथी सब ठटा केलकैन्हि आ' अपनो रम्चगर नम्हि लगलैन्हि .. . त' भॉंटा के सलाद सँ मवासित कमिर देलन्थि .. .।

भिदा अहु ठामि सेहो हुनका बङका बङका दाढी बाला बूढबा के लाल टरेस ऑंमिख पछोङ नम्हि छोङलक़ . .।आ' नीन मि .. .जेना मिकयो घेट मिईक रहल होयम्हि. . . जखन. तखन ओ घोम्घयाय लागैथ .. .औंचक शास बन भ' जायम्हि . . . .।तखन कमिरतम्थि त' की. . .घुईर अयलॉ अपम्न गामि. . ।मिँ कहली. . 'जे जान रहतै. . त' .गामि मि रम्हि क' खेत पथार देखतै. एते त' देने छन्थिन्हि भगवान।' उम्हिर कुटुमि' संघम्ताया सब कौचबैन्हि. . ' मिक भाय. . . कतए गेला अहॉं के मिचम्ङया घर सँ पङाएल संबंधी ..? . .भाय हमि त' कहैत छी जे म्बारुदर पेण ओ अपन गाम्जथान के ठम्क रहल छैक .।एहेन वज. . . दू दू घंटा कसरत. .। . ओम्हि मिदन इम्हिर सँ हमि जाईत छलौ .. .सुनलौ .. .अहॉं के कोठरी सँ ठहका . ..भेल अहॉं अपन घर सँ आपस आमिब गेल होयब . . . मिखङकी सँ झकलौ .. . .त' देखैत छी . ..कुटुमि एकसरे जोर जोर सँ ठहका लगा रहल छन्थि. . . .पूछलोपरात कहलम्हि जे हँसी बला कसरत कमिर रहल छी .. . .।'

तंतू दोबारा घुईर क' कुरमिनगर नम्हि गेलाह .. .।ओ स्थान सेहो

हुनका नम्हि धारलकैन्ह .. . ।तखन आब की कयल जाओ. . .।बड़ सोम्च म्बाचाम्र क' अपन छोट पुत संग लगा क' म्पताजी हुन का अपन बड़का सुपुत लग ियानगर पठा देलम्खन्ह .. ।
भायजीक म्बवाह सॅ पूवशसेहो ओ ियेनगर ि रहम्थ .. . ।िदा कोम्चंग .. . . .आई ए. . एस आ' पी .. ओ क'. . . .सिपत्त कम्र फेर सॅ गाि आपस आम्ब गेल छलाह .. ।आब त' खाली तैयाम्रए करबा के न छै .. .एयह सोम्च क'।
पम्हने त' हुनक ईलाज कराओल गेल .. ..एना जौ सुतली राम्त ि शॉस अटम्क जेतै. . ऋ. . कतेक म्दन भाय सब अगोरने रहतै. . . ।आ' भगबम्तक बड़का असीरबाद जे डाक्टरी दवाए सॅ िसि भम्र के भीतरे शॉस म्नम्बाध्य सुचार रप सॅ चलय लगलैन्ह . ..।िदा ओ भयौन स्वप ऋ.. . .ओ .. म्चंहुम्क क' नीन सॅ उठनाय. .? . बूढबाक लाल टरेस ऑम्ख़ . ऋ. ड़ाक्टर सॅ पूछला प' कहलकै .. .साइम्कयाटीर्.स्ट सॅ इलाज कराऊ ।
भायजी सॅ अनुरोध कम्र क' िदगर. . .वेट म्लम्फ्टंग के आन सिनि सब सेहो म्कन नेने रहैथ. . ।आ' बेसी काल आब डाईग र ि ि वा .. .बालकनी ि ठाढ भ' क' िदगम्र भॉजैथ .. .।कखनो काल त' कम्न अनसोहॉत भ' जाय .. . जे भेटघॉट करबा लेल लोक वेद डाईग र ि ि आबै .. . आ' ओ बीच दीवान प' िडी नीचा पएर ऊपर. . ।
अम्ह बीच भायजी अपन फ्लैट बदम्ल क' कम्न दूर दोसर ठाि चम्ल गेल छलाह .. .।बड़ म्दन सॅ ओतए रहैत छलाह .. .त' सर कुटुि . ..गौआ सब के आबए ि कोनो म्फम्रर ानी नै होय .।िदा नबका पता .. . । 'तंतू भायजीक िकान म्र फ्ट करबा काल स्वयं िस्तैद छलाह ।भाय के अनुरोध प' ओ सब सर कुटुि के नबका पता

ललखक' पठा देलखन्ह .. . ।अम्हि बीच ओ' गाि चमल गेलाह .. । उम्हर सब मकयो मफरीरान . . .नबका िकानक पता गलत छै. ।मकएक आ' केकरा कहने फूम्सयाही पता देल गेल ? .. .अम्हि िगाकि लोक के नब नुॅाकूत कम्नाया के कूट चाम्ल बूझाए पडलैन्ह. . .।

कम्नाए मदनक बाद .. तंतु बाबू. . .फेर सॅ ियानगर पवासक लेल पधारलम्थ। ओहो भायजीक डेरा िकेकरो आओर के पाम्ब क' घबडा गेलम्थ. . ।ई की केलम्थ भायजी चालाकी . .।झोरा झपटा नेने अस .पस ि पडल. . .कतजाऊ. .। .. .तखने िन पडलै. . . . रुकवारी हाट त' अम्हि सडक प' लागैत छैं ।. ..ई पूछला प' लोक हुनका पौकेट सी पठा देलकैन्क ।.. .आ' अम्हि ठाि भाई जी िजूद छलाह .. ।सी के स्थान प' बी मलख क' ओ सबके ईएह पता पठौने छलैथ. . ।एहेन गलती त' ओ' सम्दखन करैत छलैथ ।ुदा हुनका के की सकैत छल . .।

एहेन एहेन त' कतेक रास पिाण छल .. .ुदा तखन तंतू बाबू अपन गलथोथम्र प' उतम्र जायथ .. 'हिरा जएह कहब सेएह नै. . ।'ियानगर पवास के ई खूब नीक जकॉ ुदिगर घुिबा ि. . .अखबार ि कपडा के सेल देखबा ि .. . .आ' छह िसक भतीजी के मडब्बा के दूध .. आ' फैरेक्स चोरा क' फॉकवा ि . . ...कम्न नुका क' सडक प' आबैत जाईत आईटि गल्स के देखबा ि .. .आ' सूतबा के संग मकछु जेनरल नॉलेजक पम्नका रटबा ि लगौलम्थ .. ।

एक मदन सीढी सॅ उपरका फ्लैट ि चढैत उतरैंत. . हुनका आध्याम्त्कि भान भेलम्ह जे मकंस्यात .. .ई सब गिला बाहर सॅ आबए वला रुद वायु के अवरद कम्र दैत छै .. .आ' ओम्हि पदूम्षत वायु के कारणे. . जे बी. बी . .सी . .के अनुसारे मदल्ली ि बड बेरी छै. . .हुनक

नाक अवरुद्ध करए लागै छैन्हि .. ।त' ओ अपन भायक सोझा िएकर पुरकस प्रतिरोध . . .व्यक्त कएर . .. हुनका प' दबाव देलखिन्ह .. .जे पडोसी के गलिा के सीढी प' सँ हॅटवा दियौ. . ।भाय के कनि संकोच त' अवस्से भेलैन्हि. . .िदा अमायाबेताल अनुजक आगह ओ नहि ठुकरा सकलखिन्हि. . ।

गलिा त' बाहर छलै . ..हॅमट गेलए .. ... िदा हुनक दरवज्जा सँ सटले ओकर दरवज्जा जखन खुजै. . .आ' ि टिका पसकडी सँ बान्हल बडका अलरेमेशयन कुकुर पूरा पूरा िंहि खोलि जीभ निकालने .. . हॉफैत हॉफैत .. . . . . .नौकरक हाथ के डंटा के अछैत हुनका दिस ताकि लैक .. . त' ओ' जेना पैजाि ि नदी . .लगघी करबा लेल पस्तुत .. ..।िदा भायक एते औकात कत जे .. ओ बॅ्रिगेडियर साहबक घर सँ कुकुर के सेहो हॅटबा दैथ. . ।ताहि लेल ओ हुनक नौकर सँ चिरौरी मिहोरा पाति कएर क' टाईि पूछि लैत छलाह ओकर बहराय के . .।ओहि टाईि के ओ बड िसतैदी सँ व्यवहार ि आनए लगला ्रि।. . .किछु भ' जाए .. .चाहे .. दुनिया एम्हर सँ ओम्हर ..

ओहि सयि ओ घर सँ बाहर पएर नहि निकालथि. . ।

ट्रांजीस्टरक बड पेरिी .. . ।पायः सबटा सािचार आम्हि सँ अंत धरि सुनैथ ।अम्हिना एक दिन रीषासन करैत न्यूज सुनि रहल छला .्रि। भीषण गरिी के बडका भोर. . । . .भायजी बाथरूि सँ दौङल अयला 'बौआऽऽऽऽ .. .कि कहलकै. . राजीव गॉधी के बारे ि .. ?' .. . 'भायजी अम्हिना कहैत छै . ..दू टा . .बच्चा छै .. पैलवार ि त' की कहतै. ?'रीषासन जारी छल .।भाय ठाढ ।

'अवस्से किछु भ' गेलए अछि ताहि लेल कहि रहल छै. .।'बस तडाक दिन पएर जिीन प' ।.. 'खट द' उठि बैसला .. 'कनिाए

काल ि न्यूज जग जाम्हर भ' गेल छल।
सिय अपन याता जारी रखने छल . ..।बरख प' बरक बीतैत चलल गेल . . .म्हनकर कंपीटीर न कम्हयो सिफ्त होिए के नाि नम्ह लै. . . . जाम्ह परीक्ष सबहक उि र . ..वा चास बचल छल. . तेकरे नागम्ड पकम्ड लैथ. . . ।उम्हर गाि ि लोकवेद म्पताजी के बूझबैन्ह. . ''बड भेलए कंपीटीर न सब. . . . ढेर रास नौकरी सब छै .. .अपान साथिशदेम्ख कतो धय' लेताह. . . . .ियानगर ि नौकरी के कोन कर्मी छै. . ।वा' अम्हं के एतेक लोक जनैत अम्छ . .. कतौ लगवा म्दयौ. . . ।आन म्धया पुता प' म्धयान देब . . . . . ओकरो म्बवाह दान .. ।. ियानगर ि रम्ह क' कंपीटीर नक तैयारी करैत छै. लडका . . सुनबा ि त' िधुर लगै छै. ..िदा कतए छै . ऋ.. .. भायक कपार प' कतेक म्दन एना बोझ रखबै. . . ओ कोन टाटा वा अंबानी अम्छ .. . ..।'म्पताजी के तखन म्दिग खुजलैन्ह . . ।आ' व्यथक्ष उर्मीदक म्कला ढाहैत ओ' म्कछु ठोस कदि उठबतैथ. . .म्क अम्ह सॅ पम्हने हुनक तेसर बाम्लग पुत्र बाम्ज उठला 'म्पताजी .. . हुनका गाि कम्थ लेल बजैबैन्ह. . . व्यथक्ष बदनािी. . . .लोक वेद अम्हना म्खस्सा गढैत अम्छ. . .आ' ओ अलगटेट . .. कोन गप्प प' उखम्ड जेता तेकर कोन ठेकान. . . ।पोरके. . .गगन चचा के बडका बेटा के करेज प' बैम्स क' ततेक िम्र िरने रहम्थ जे ओकरा सप्ताह धम्र हरम्द चून लगबए पडलै. . ।चाची गम्रया गम्रया क' टोल भम्र के' एकटा कम्र लेलम्ह. . 'ई िचंड . . .िम्र दैत हिर बेटा के. ।' आ' ओहो छोटसन गप्प प' ।ओ' कहलकै 'तंतूभाय आब जंतू सब सॅ ड'र नम्ह होबैत अम्छ ..? 'अहॉ कतो बाहर गेल रम्ह. . ।ताबैत ि छोटका बेटा सेहो बाम्ज उठला ''हॅ ..म्पताजी .. .छोटका पीसा के सेहो अम्हठाि अम्ह चौकी

प' पटकने रहथीन्ह. . . ।ओहो फुम्सयाम्हए गप्प प' ।पीसा त' सप्पत खा लेलम्थ .. .जे जौ ई एतय रहता त' ओ घुईर क' सासुर नम्ह औता .. ।अपन हॅसी केर बलजोम्र रोकैत . . .आगॉ बाजैत गेल 'ओय म्दन पीसा के सोझॉ हुनका म्बरनी काम्ट लेलकैन्ह .. . बाि ऑम्ख आ' गाल फुम्ल क' लालटरेस .। .. .आ' फेर हुनके ािथ लग उडै. . .त' हॅसैत पीसा बजला 'म्बरनी कटलकौ .. .तूंबा फुलेलकौ. . .फेर गुम्हरै छौ तोरे प' से म्कएक हौ।' अम्ह प' कम्म पीता क' ओ बजला 'हे हॅसू जुम्म . .. हिर जनि ओम्ह नक्त ि भेल छै. ..जाम्ह ि गॉधी जी के भेल छलैन्ह. ।' 'जुलुि गप्प. ..तखन त' तोरो हत्या कैल जेतऽऽऽऽ।' कतेक कहल जाए . .. 'बङ्का कका के ओतए म्बवाह ि कुटुि सब आयल छलैन्ह .. .त' म्कछु लोक म्हनका दरवज्जा प' पढैत देम्खक म्हनका लग आम्ब बैसला . .. सब पढल म्लखल . ..नौंकरीहारा .. .।गप्प करबा ि त' तंतू भाय सबके पछाम्ड दैत छम्थन्ह . .. ।चीन प' गप्प चललै .. त' ई बङ जोर ि आम्बक टाग झूला झूला क' बाजय लगला 'चीन ि देम्खयौ .. .कतेक म्बकास भ' गेलए .. .सास्कृम्तक म्रवोल्युरन. . . . 'चलू गाि कि ओर' .. .नारा सॅ ओकर गाि गाि एकटा रहम्रक कान काटबा ि ाम्हर भ' गेलै. . .देखैत देखैत .. .ओ' सुपर पावर .. . .ािओत्से तुंग की नेता छलै. . ।' 'ि दा ओकर नेता सब बङ अत्याचार सेहो केलकै. . ।' कोने कुटूि म्हनक गप्प काम्टक बाजल त' ई म्पनम्क गेलम्खन्ह .. 'की जनैत छी अहॉ ािओत्से .. के बारे ि. . . खाली नाि सुनला टा सॅ नम्ह होइत छै . ..गहीङ ि जा कए जानए पङै छै. . ।'ताबैत बङ्का कका के सार फुदी बाबू बाम्ज देलम्खन्ह. . 'हौ. . ािओत्से तोहर ाि छ' जे ओकर म्हनताई प' एतेक म्पनकै . .छ ।' "ाि त' अहॉक हेताह .

..।'गप्प गर्' लगलै. . म्कक हि तुरंते हुनका र्ि के बहाना कम्र आंगन पठा देने रम्हयै. . ।

उम्हर अगती म्धया पुता सब अपन दलान प' बैम्स बुझौब्बल खेलाय. . 'म्खस्सा कहै . .म्खसनी .. सुन भाय ि्कड़ा जी जान लगा क' चाम्र टाग केकरा. . .।' 'तंतू भाय के' . . सब एके बेर म्चकरै .बुॅझकड़ फेर सॅ पूछै. . . 'म्खस्सा कहे .. . . जी जान छोम्ड़ क' चाम्र टॉग केकरा. . ।' 'तंतुभायके।' 'अै रौ .. .जी जान छोम्ड़यो क' आ जी जान लगाम्बयो क' तंतुए भाए कोना .. ।' त' चट दनी जबाब भेट जाए. . . 'जखन ओ' चौकी प' सूम्त क' रवासन करैत छम्थ. ..तखन जी जान छूटले रहै छैन्ह .. .आ' चौकी के चाम्र टाग .. . ।आ' जखन ओ दंड़ बैसकी लगाबैत छम्थ .. .तखन दुनू हाथ आ' पएर धरती प' रोपने. . .भेलै नै जी जान लगा क' चाम्र टाग . .।'आ' तखन जे सवित ठहका के स्वर गूजै. . .तखने म्कये बाम्ज उठै. .हे . .सुनता कतो सॅ तंतु भाय त' म्खहाम्र म्खहाम्र क' अधरि शकम्र देथुन ।'छोटका बेटा अपन कान सॅ सुनने छल ई सब ।

र्ि सेहो अम्ह गंभीर सस्थिा प' .. . . .भोजन करबा काल . . .म्माताजी के सोझॉ ि बैस क' .. . . .बाजल छलीह . .. 'ओहू ठाि त' ओकरा म्दकते होईत छै. . . भौजाए सॅ पम्टते नै छै. . ।छोट सन बरख म्दनक भतीजी. . . .तेकर लता के म्बालड़बा. . . ह.टैडी म्बायर हृ .. . .सॅ खेलाईत खेलाईत .. .तेना नै . ..जोर सॅ फेकलकै. . .जे नेना ाृहि भम्र खसलै. . .दुनू दुधी दॉत उखम्ड़ .. . खुनि खुन चारहु कात .. . .।हहिुँ त' ओम्ह ठाि छम्लयै पोरकॉ . .. .ओ' ततेक डेराए छै आब ओकरा सॅ. . ओकरा देम्खते ितर पलंग .. .कुरसी केदोग ि नूका जाय छै. . ओ त' भाए एहेन नीक छै. .

जे बदाश्त कम्र लैत छै. .. . .एतय गाि ि लोकवेद घटक िम्झ दैत छै. . . आब त' सब ईहो कहय लगलै .. .िचंडक संग ओकरा भूत सेहो म्खहारै छै. . ।कहम्महारक िूहि ि ऊक लागै .. ।'
अम्ह बतकही सॅ फराक म्पाताजी गहन म्चन्तन िनिन के बाद अपन ज्येष संतान सॅ टेम्लफोन प' वातालाप कम्र ियानगरक र ख धेलम्ह .। . . .अम्ह होनहार म्बरवान के' क़तो नौकरीक जोगाङ ि कतेक लोकक दरवजजा खटखटबए लगला .. . .. ।अम्ह बेर हुनका लोक सब छुच्छ आशासन द' क' टाम्र देलकैन्ह . . .।भाग्य तंतू बाबू के. . .कतो दाम्ल गलबे नम्ह करै. . .जे म्पाताजै केकर कहॉ के नौकरी लगबा क' अपन हाई कनेकर नक परचि लहरौने छलाह .. .अम्ह बीर बालक ि .असोथम्कत भ' गेल छलाह .. ।
अम्ह बीच गरिी के ताम्सल ि छोटकी बम्हनक म्बवाह ि सब गोटे गाि गेला. . . ।गाकि राजनीम्त . . .म्दन प' म्दन म्बम्चते भेल चलल जा रहल छल .. . .भोरे भोर लछिन ककां आंगन ि आम्ब क' िॉ के सुनबए लगलाह. . .. 'पूबम्रया बाडी के िलभोग आकि गाछ हिरा जिीन प' अम्छ .. .से . ..एकरा कटबा म्दयौ .. ।' म्पाताजी कतो बाहर गेल छलम्थ. . .।िॉ तंतू के कहलम्खन्ह. . 'बौआ रे . ..ई त' अजगुत गप्प करै छथुन .. एतेक म्सनेह सॅ तोहर म्पाताजी अम्ह िलभोगक म्बरबा के कतए दन सॅ नै आम्न क' अपने हाथ सॅ. ..रोपने छलाह .. . .एकरा एहेन िधुर फल अम्ह परो पटा ि त' कोने गाछक नम्ह छै. .।ुदा ई त' आब नब गप्प .. . . .हिर जिीन ि .. .जखन की अम्ह आम्ङ सॅ दू बङका डेग आगॉ धम्र अपने जिीन अम्छ।तू अिीन के बजबा ले आ' अपना सोझा ि नाम्प करबा क' अहू कलेस के ... . पॉच लोकक सोझा ि जल्दी सॅ फरीछा ले. . नम्ह त' जम्नते छी म्दयादबादक कूकूर चाम्ल. .िझ

काज म्हाहारक आंगन ि अडंगा लगा देत. . ।'
तंतू तखन भारतीय इम्तहासक म्कछु पना रटैत चौकी प' बैसल.. बङका म्पातम्ङया बाटी ि . दूध .. .चूडा चीनी बङ पेि सॅ पलथा झूलबैत खा रहल छला . .।िॉ िनिसरा के अिीन ओतए दौङा देने छलैथ. . ।ुिदा एखन त' आधो घंटा नम्ह भेल छलैक ।ओ खेनाय सािफ्त कम्र हाथ ि कॉपी नेने .. .अकबरक नीम्त संबंधी म्कछु पाठ घोटैत बाडी अयला. . . लछिन कका ओम्ह ठा' म्वम्चत सन िनः म्पथम्त ि ठाढ छलैथ. .।अम्ह बेर ई गाछ लुधम्क क' फङल. . . .बङका. . बङका टा के आि .. . । 'तंतू बाबू . .. ई गाछ त' हिरे निीन प' छौ .. .देखहक .. . .अम्ह ठाि सॅ ओ जे गाछी सोझे सोझ भीखना के दरवजजा लग देखाय पङै छै. . एत सॅ लक' ओत धम्र .. . ।'ओ अपन आंगुर सॅ देखबए लगला . .. ुिदा तंतू के कम्न हङबडी छलैन्ह . . 'बेस कका अहॉ फुम्स थोङबे कहबै. . ..।एना कर . ..जौ अहॉ के जिीन ि गाछ अम्छ त' पम्हने एकरा काम्टए म्दयौ. ..।' कहबा के देर छलै .. . . ..कोदाम्र हाथे ि .. .लछिन कका तङातम्ङ बङका िटिका गाछ के घॉंटा. भम्र लामा क' जङ ूिल फङ सिित . .. असहाय अवस्था ि अनाथ सन. . . धरती प' खसा देलम्खन . .।ताधम्र अिीन सेहो आम्ब गेल .. . . जिीन नपलक .. .त' गाछ. .तंतूए के जिीन ि आ' दू डेग आगॉ धम्र हुनके जिीन .. ।' िॉ बाडी जाकए देखली . .. .हुनकर त' िथे घुिि गेलम्न्ह. . ।कम्न बेरक बाद तेना म्वयाकुल भ' क' कर ण स्वर ि कंदन करए लगली .. .जे लग पासक कतेक लोक जिा भ' गेलए .. ।तीन म्दन धम्र ुिह ि पाम्नक एक बूॅन नम्ह लेलम्थ .. . . .नै ुिह सॅ एक आखर बहरेलैन्ह. . ।ुिदा ऑम्ख अपन नोर बहा क' िनक उदेग के हल्लुक करैत रहलै. . ।

तंतू बाबू सँ लोकवेद बड्ड स्नेह सँ गप्प करै. . ।पिताजी सेहो हुनका परोछ मे बाजैथ. . 'हौ . .दुर्ग खक लाठी बीच्चे कपार. . ।कखन कोन नोकसान कऽ देत के जनैत अछि . .।आब जे छै . .से त' भोगबा के छै ।

उम्हर बरियाती मे बरक पिता के पाकल पाकल दाढी देखैत पितर. . ओ' पंडाल छोड़ि लते पते पडेला .. . ।पिताजी पीते आन्हर .. . 'बरियाती के सुआगत करबा लेल कोन कामिलती के काज़ . . अहि काजक लेल त' कोनो . ..कोचिंग के आवश्यकता नहि. . ।' दुर्गा एकर परवाह नै करैत ओ' अपन छोट भाय सँ बजला. . 'पिताजी के बूझेनाय हरिा बूता के बाहरक चीज़ . . .ओहि बूढबा.. के दाढी आ' लाल टरेस आँखि हरिा फेर सँ निखहरनाय सुर कऽ गौंलक़ . .आ' हरिा प' की बीतैत अछि . . .हिही जनैत छी. . ।'अनुज हुनका रात कऽक' भरारक डयुटि संभारय लेल कहि अपने बरियातिक सुआगत मे चलि गेल छला. . ।

भरार घर मे राखल छोटका मिचया प' बैसि आगाँ एक गोट स्टूल प' अपन किताबक पना खोलने .. .किछु रटबा मे लागल छलाह .. . आ' कागदक एक गोट प्लेट मे . .किछु लडडु . ..पैनतोवा रखने खाईत सेहो छलाह . ..कि तखने रोरनदान दऽस हुनक नजरि गेलन्हि .. ।लाल लाल बड्का बड्का आँखि . .पाकल पाकल दाढी .. . आँगुर सँ किछु ईसारा करैत. .. ।ठाकुरजी कोल्ड ड्रिंक्स के बोतल लेबए एलथि. . . त' देखैत छथि .. . तंतू भाय .. . लडू के चंगेरा प' ओंघराएल पड्ल छथि . .. ।सोर पाड्लखिन्ह 'तंतू भाए. . .औ' तंतू भाय'. . .दुर्गा किछु कतो नै. . ।ओ घबडेलाह .. .आन सारसबके बजौला .. 'तंतू भायके दाँती लागल छैन्ह .. .।' भरि पाँज उठा पुठा क' . .चारि चारि गोटा मलि क' हुनका दोसर कोठरी

ि आम्न पलंग प’ सुतौलम्नह . . ।कम्न पयासक प ित हुनक िरछा टूटलैन्ह .. . पाम्न पीबी . .स्नस्थ भेला. . . ।उम्हर दलान प’ बम्नयाती . ।. .एक गोटे के छोम्ड सब म्नकयो दलान प’ भागल. . ।

कम्न काल ि तंतू बाबू उम्ठ पुम्ठ क’ बैसैत बजलाह. . ‘भरारक रौर न दान सॅ झॅकैत ओ पाकल पाकल दाढी वला बुढबा. . . ।’ठाकुरजी दौगला .. . भरारक रौर नदान सॅ कम्न सटल. . . पडोम्नसया के खपरैल प’ कारी म्नबलाम्ड सूतल . . ।आब ई कोन काजक जोगर. . . कम्न म्नबलम ि क’ ठाकुर जी हुनक छुच्छ स्नाम्नम ािनक रच्छा करैत कहलम्नखन्ह. . ‘भायजी अहॉ पढबे कर . . . भरार ह ि संभाम्न लैत म्नछयै. . ।

ँ ियक कबूला रहैन्ह. . बरह ि स्थान ि घोडा चढेबाक़ . .तंतूके हाथे. . . .।आ’ अम्नह कन्यादानक सेहो. ..। .जेठक धूप. . . सकाले जा कए बर ि थान सॅ आपस भ’ जैब नै त’ बडका टहटहौआ रौद पकडा जैत. . .हालाम्नक एखन सातो नम्नह बाजल छलै. . िदा सुर ज ि हराज अपन म्नढठाई देखबए लगला जे म्नहनका सॅ पंगा नेनाए नीक नम्नह .. .यथार ीघ्र पस्थान करबा चाही. . । . ।त’ तंतू बाबू बाजा गाजा .. ठोल म्नपपही के संग गा ि कि टेढ ि ढ कच्ची रस्ता सॅ हाथ ि घोडा नेने बढल चलल जाईत छलाह. . ।ि ि म्नपम्नयाम्न .. ि ि सी म्नपसी .. .बम्नहन भौजाय .. .आहे ि ि हे स्त्रीगण सब पाछॉ सॅ गीत गाबैत चलल आम्नब रहल छलाह. . .।

एतबै ि तंतू के हाथक घोडा सम्नकय होईत हुनका तेहेन कम्नस क’ दुलम्न ि िरलकैन्ह . .म्नक ओ त’ सीधे जोतलाहा खेत ि उनटल . . . ।संगक छौडा सब दौगल. . . ।ि ि म्नपम्नयाम्न गीत गबैत लग अयली त’देखैत छम्नथ जे म्नपपही ढोलबाला त’ आगॉ बढल चलल जा

रहल छै. .]दा म्चया पुता ओम्ह खेत ि . . झुंड बनौने की क' रहल छै .. .ऋ।

तंतू कतो देखाए नम्ह पम्ङ रहल छला. . ।ियक िथ ठनकलैन्ह . .. ओहो एकपेम्ङया सॅ नीचा उतरम्लह. . . देखैत छम्थ . . .तंतू आ' हुनक घोड़ा दूनू दू ठाि खसल. . .।तासि त' िहुर भ' गेली. .]दा कोध के' म्पाबैत बजली. 'रे अनिल. . .तू घोड़ा उठा ले. . आ' तंतू .. .चल झटम्क क' बेर बीतल जाए छै . . .आंगन ि सेहो पूजा छै. . ।'

घर आम्बक ियक कोढ फाम्ट गेलम्ह. . 'आब त' तंतुआ के िम्टयो के घोड़ा पटैक दैत छै. .म्क म्पम्त छै . .म्कजाने. गेम्लयै. . . ।हुनका लेल ओ' कोन वृत्त उपास नै करै छलीह .. ।

तंतू के अम्ह बेर ियानगर जयबा काल िय म्बलम्ख क' अपन बड़का होम्सयार पूत के कहलम्खन्ह 'तू ही देखही .. . हिरा त' एकर लच्छन कोनो नी क नम्ह लगैत अम्छ. .कोनो नोकरी लगबा दही. . .सतिा अठिा पास लड़की सॅ. . गरीबक बेटी सॅ .. म्ववाह दान करा दही जे एकर घर बसा दैक़ . ।']दा बड़का बेटा म्हम्मति नै हारलैन्ह .. 'िॉ अहॉ म्मम्फम्कर रहूॅ . .सब नीक करम्थन्ह भोलेनाथ . .।'

भायक एक गोट संगी जे हुनका बारहो बरीख सॅ जाम्न आ' देख रहल छल. . .आ' हुनक बौम्धक कृिता के संग .. .रारीम्रक रम्क्त के नाम्प तौल रहल छल . ..बड़ सोम्च म्बचाम्र क' गप्प के घुिबैत म्फरबैत . . .जाम्ह सॅ हुनका खराप सेहो नम्ह लागैन्ह . . .आ' बेचारा के म्जनगी सेहो बम्न जाए .. . सलाह देलकैन्ह. . 'एकबेर म्हनका बालाजी ल' क' जईयो राजस्थान ि .. ।जौ म्कछु उपम्र चकर हेतए त' सेहो दूर भ' जेतै. . ।'

अपपान आम्फस सॅ छुटी लईत भाय राता राती गाडी प' हुनका बैसा क' बालाजी के लेल पस्थान केलम्थ .. ।ई िसक ओ' टहटहौआ .. रौद . . .चारो कात जेना आमा बरैस रहल छल. . .।ुदा भाय त' अपन अम्ह भा एक लेल म्हािलयक बरफ प' सेहो म्बर टी पम्हर एक टंगा द' तप करय लेल तैयार छला . . .त' ई फौटी एट म्डगी तापिन की छल .. ।

आ' आियश. . . .. . ओम्ह सीझैत गरिी ि. . ओम्ह बडका गाछक चबॅूतराके नीचा . . ..लोबान अगर बती के िहक सॅूघैत ितर . .. थरथर कॉपैत तंतू . . .अपन दूनू ऑम्ख सॅ दहो बहो नोर बहबैत बाजए लगलाह '' हि त' म्पाछला दू सौ बरीख सॅ अतृप्त अम्ह अम्खल बंहाड ि भटम्क रहल छी. .।अपन म्कछु आरोम्पात म्सदात प' लोकवेद संगे हिरो संरय छल . .. ताम्ह लेल हि गाि गाि गली गली भटकैत ओम्ह म्सदात के परि सत्य के कसौटी प' कसबा लेल म्बलम्ख रहल छलहॅू . . .म्क . .कओलेजक पछौम्त ि आकि गाछ प' चम्ढ क' पोथी पढैत ई देखाए पडल. .।दोसरा म्दन अपन बुर ट के ऊपर पैजाि के बन्हने. . .एक बीत डोरी आगॉ ि लटकल .. .संघम्ताया सबहक िखौलक परवाह नै करैत . .. जाम्ह आति म्बशास सॅ ई अपन कओलेज सॅ चलल आम्ब रहल छल म्क हिर गॅहकी नजम्र एकरा प' पडल. . .।हिरा लागल छल . ..हिर 'सबजेक्ट' हिरा सोझॉ ठाढ . .एकर म्कया कलाप .. एकर व्यवहार .. .गप्प .. र प्प .. . सबटा हिरा आम्द िनव के िन पाडैत रहल .।कतेक साल धम्र . .. असंख्य . ..जीव जंतु सब प' अनुसंधान करैत अम्ह म्नचोड प' पहुॅचल छलहुॅ .. .म्क िनुक्ख . .. .बानरक म्बकम्सत र प अम्छ .. .।ुदा अम्ह िनुक्ख के देम्ख हिरा आियश भेल . .म्क िनुक्ख एखनो बानर अम्छ. . . वा . ..बानर िनुॅक्ख

बम्म क' बूम्ल टहम्ल रहल अम्छ. . ।
हि अपान रंका के सिधानक वास्ते एकरा पाछाँ लामा एकर पैजाि उताम्र क' ई देखबा के पयास ि छलहुँ .. म्क एकरा पोछ छै. . .वा नम्ह .. . . ।आब .. . .जौ पोछ नम्हयो हेतय .. . तैयो ई म्बसवास भ' गेल जे ई बानरे थीक .. .पोछ म्बम्हन बानर .. . ।हरि आति जुडा गेल. . . पम्रतृप्त भेल .. . ।हि एकरा स्वीकार करैत छी . .जे बानरक म्वकम्सत र प िनुक्ख .. .नम्हं .. .परंच .. .िनुक्ख आ' बानरक आम्द पुर ख म्कयो एके गोट छल होयत .. ।आब हरि भटकाव सिाप्त भेल . . . म्लअ .. . हि अपान ठाि चललहूँ .. . ।'
तेकरा बाद तंतू त' तंतुए रहला .. . िदा फेर कोनो जंतु हुनका प' कोनो उपदव नम्हं केलकैन्ह. . . ।

टूटल तारा

एखन फसरछ हेबा ि मकछुए मबलंब छल ।मकसतज धोॅ िमफ क' अपन रतुका कारीख साफ करबा ि लीन ।चैती बयार गाछ मबरीछक पात के हलसुके सॅ छुबैत दुलराबैत सहलाबैत बमह रहल छल आ संगमह बमढ रहल छल जि ना नदी के पाशशवती मबरीछ प' रैन बसेरा करैत खग मबहगक िधुर कलरव गान ।उमहर रमश ि रथी के सुआगतक तैयारी चमल रहल छल इमहर अंतःपुर ि रतवजमडत बङका पलंग प' सूतल सुलतानक ऑमख फूमज गेलै पाशश ि सूतल चंपा के मखलल मखलल कली सन ृिग नयनी अपन सुतवा नाक गुलाबक फूल सन लाल लाल ठोॅर ललाट प' कि िनी सन सजल भौं सॅ अलौमकक आभा पसारने ।सौंदयशके साकात पमतू ि मतशके देमख वजीरे आजि भाव मबभोॅर भ' उठला ।ओॅ हुनका अपन आगोॅर ि भमर लेलमह ।सुनरी जामा रहल छलीह ि दा लाथ केने पडल सुलतानके बमलष बॉमह ि कसि सामन सन पडल नहूॅ नहूॅ ि नुहामर करैत मकछु पेि कि फकडा दोॅहराबैत रहली कोॅन ि आमसर दान जरैत रहल छल ।मखडकी सॅ आकार क कामल ि ी छॅटेत देमख र पसी हडबडा क' उमठ बैसली'

''जहॉ पनाह अनदाता बङ मबलंब भ' चुकल अमछ आब हि रा यथारीघ पसथान के आजा देल जाओॅ ।' सि ्रिट क' ऑमख ि पीडा के लहमर सपष देखार भ' गेल छलै ि दा ततकलण हुनक हाथ फराक भ' गेल छलैन्ह आ' ओॅ एकदि ि िन मखडकी के

बाहर नदी ि दूर सॅ आमब रहल कोॅनोॅ कशती के देखबा ि लामा गेल छलाह ।

सुन्दमरक' मबदाइर् के पछैत ओॅही रतेजमडत ि हिलक दरोॅमदवार जेना

एकदि बेरौंनक सून सून सन लागए लगलै सुल्तान एतेक उदास भ गेल छलथि जेना कियो हुनक ाथि स' ताज छीन नेने होंयि बडः असहाय हारल जुआडी सन ।

मिस्तष्कक सोॅर गुल कि करबा लेल ओॅ पलंग सॅ उतरि अपन पएर ि बेस कीिती नागोॅरी जुती पहिर सुन्दर सुवासित बागीचा मदर टहलए जेबा लेल पस्तुत भेला ि दा नहिं जानि ाॅनि ि कोॅन तरंग महलकोॅर ामि रहल छलैन्हपएर दीवाने खास क' िवपरीत संगिरिरिक' शेत धवल झरोॅखा मदस बढैत गेलिह मजिहर जिुना के कारी कचोॅर पानि बडः राात भाव सॅ कश्ती वाला के िधुर रस सॅ भरल गीत सुनैत बिह रहल छल ।कनि िवलिति नहूॅ नहूॅ ओॅ वाटिका मदस अगसर भेला ।सुनर िहल एखनोॅ औॅधायल अलसािन सन पडःल छल ।जौॅवन सॅ पफुिल्लत पुष्पदल प' िडरानि भिरा सबहक गुॅजन आ' नदी के धीर गंभीर हहरानि स्वर ऊपर अकास ि भोॅरक राहानी आध्यात्मिक ताकत मचडः चुनिुनी के िधुर तान ि दा सुल्तानक गि इश्क प 'ककछु िरहिक काज नहिं कमि सकल ।कतोॅ कना ाित नै िवलि मि ।जेना छरपटी लामा गेल होॅयिह ।उमदगन हद य सॅ ओॅ खुदा के इबादत करबा लेल ािती मिस्जद मदस बिढ गेल छलाह । दूरस्थ मिस्जद सॅ आबैत अजानक स्वर हुनक हदयय के छूने िवान दराॅ मदरा ि झहैर झहैर क' िवलुप्त भेल चलल जाइत छल ।बडः कुिन सॅ कहुना कमि अपन आसन िवछा ठेहुन ामिडः नािज पढलिह।कॉच पाकल अपन नाि नाि दाढी प' हाथ फेरैत अतीत ि डूबल भमसयाएल सन स्नान करबा लेल ओॅ हािि मदर ि मिडः गेलाह ।चढैत सूर जक संग मदवसक िकया कलाप पारंभ करए लेल दीवाने आि ि दरबार सजए लागल ।आब नै ओॅ गुल रहल आ' नहिं ओॅ गुलर न सुल्तानक ओॅ बुलंद साख सेहोॅ नहिं बॉचल छल ि दा तैयोॅ

बङका नाकि टेग त' लागले छल लाल मकला के संग ।राजकाज सीमिते िदा छलै त' अवसस ।बेसकीिती वस्ताभूषण ओ राजिकुट पम्हर राजमसंहासन प' बैमस राजकीय िहिर लगबैत परािसक़ पबंधक आ' न्यायाधीरक' भूमिका माभाबैत माभाबैत ओ' जेना फेर सँ नरािि ितिल बहकल बहकलसन व्यवहार करए लागल छलाह ।चतुर सुजान िरम्त सबहक नजमर सँ इर् नमं बॉम्च सकल छल ।मकंकतक्षामबूिढ ओ सब ।आमखर कमरतम्थ त' की ।लाल टरेस उनिति ओमख आ' नरािके आगोर सँ सुन्न होइतशम्दािग क' तंतु तंतु के सुरा आ' सुनमर अपन हुश के हुकुिति बंधक बनौने नचा रहल छल ।हुसन जाि आ' इश्कक' भॅरिि घेराम्ल ऊबचुभ होइतशिम्हत नजमर सँ ओ अपन चार कात देखल ।सम्पूणशदरबार दरबारी पजा आ' मि पमरषद हुनका रतुसि दृमा गोचर होिए लागल छल मसतष्कक खोह ित' िडीलक घंटी आ' मसजदक अजान सन एकेटा स्वर पमतधमात होिति रहल छल इमतयाज़ इमतयाज़ इमतयाज ।हुनक वर चम्लतैन्ह त' सम्पूणशसंसारक ममलकयत ओकरा नाि मलख ओकरा मलकाए तरनुि बना मवश िनिम्चत प' अिरि बना दैतम्थ ।रनैः रनैः बढैत पचंड धूप हुनक बेचैनी के अनमिसकता के आओर बेलगाि करय लागल छल ।तखने मवराल मवराल कारी चारी टा अश अपन वीर जोदा संग ओत'पधारल ।सहायक के घोङा सौंम्प सैमनक सब जहॉपनाहक मखदमि ि अपन आदाब अजशकरैत बङका बङका डेग भरैत दीवाने खास के मदस िमङ चुकल छल ।संपूश मिािडिल संग कमाकाल लेल सुलतान सेहो मचंता के अथाह सागमर ि डूमब गेल छलम्थ गुप्तलचर सब कोन सनेस ल' एहेन व्यग भ' पहुँचल अम्छ ।ओ सब यथारीघ ओमहठाकि कायशवाही सिािप्ता कमर उम्ठ चुकल छलाह ।

तीन सौँ बरक सँ जे सामाज्य जनिनस ि घुम्सक' ऑकर रग रग ि अपन जम्हः जिा चुकल छल जेकर असीि सता आ' पचूर दौँलत सॉन चानी हीरा जवाहरात लॉकक हदुय ि भय वा इज्जतक कारण बनल छल जेकर म्बराट न्यायम्पयता वा कूरता के रासन पबंधक' चार कात पताका फहरा रहल छल ऑम्ह म्बख्यात सामाज्यक हाथ सँ एक के बाद एक कम्रक' म्रयासत सब म्नकलल जा रहल छल ।चार कात म्बदॉहक अमाा पजज्वम्लत हॉिए लागल ऊपर सँ म्बदेसी आकणि घाघ आ' राम्तर खेलाडी इस्टइंम्डया कंपनी त' बङ चालाकी सँ टािसि रॉ के पठा जहॉगीरे के रासनकाल ि व्यापार करबा के अनुिम्त लइतशर नैः र नैः अंगुम्र पकैङ क' पहुँचा पकङनाय पारंभ कम्र देने छलै ।िती के नािप' एते पैघ छलावा ऑ पम्हल अंगरेज के पछाम्त कतेक रास राज के अपन भािकि िहाजाल ि फँसबैत चलल गेल ऐम्तहाम्सक दस्तावेज अम्ह दुभाग्य पूणशगाथा के पर्त्रायक पििण अम्छ जे भारत भूिम के अनेकानेक राज रजवाङा के कूप िडूकता आपसी इरश्या देष आ' अदूरदम्र शा के लाभ उठबैत सबसँ फराक फराक संम्ध करैत ऑकर नाि देलके रीरी फॉर फेन्डम्र प रीरी एडॉप्टे रन चलाकी सँ कखनॉ संम्ध कखनॉ खेल ि हार जीतक बहाने हम्थयाबैत रहल सबटा राज्य ।

उम्हर अंगरेज क सतक्क चुस्त म्दाािग इम्हर अभाग्यक पतीक़ इर् सुस्त सूतल सुल्तान ।लॉक चकॉर सन म्हनका म्दर ताम्क रहल छल सल्तानतक पुरान कला रण नीम्त देखाबए लेल ािदा एतए त' नजारे म्कछु औँर ।दीवाने खास ि गुप्तािचर सबसँ वाता कम्र आपसी म्बचार म्बािरिशक' पिात दरबार उम्ठ चुकल सुल्तानक कायशअकुर लता क़तव्यहीनता आ' म्बलाम्सतासँ उदास म्नािगण ािथ झूकौँने अपन अपन घर म्दस पस्थान त' हॉिए लगला ािदा नाना म्बाध दुिम न्ता सँ

आरंका सँ भरल मिस्तष्क पएर ि जेना भारी भारी पाथमर बॉम्ध देने छल कहुना कम्र म्धम्सया म्धम्सया क' आगॉ बढैत रहला अकसीत बङ म्हमति कम्र क' वृद वजीर हाजी मियॉ अपन भारी भरकि कम्न बझल बझल सन स्वर ि बाम्ज उठल छलाह 'दौलते आजि म्बपम्न के कारी कारी घनगर बादमर आब राही आकास सँ बेरी दूर नम्हं छैक खुदा ाफि करम्थ ुदा म्कछुए म्दन ि इर् लाल सुखशइारित सुसम्जजत वैभव पूणशम्कला अंधार शिरान घाट बनैत कालक तीवर पवाह ि नम्हं म्बलुप्ता भ' जाए ।अपने म्कछु फरािन जारी कम्रम्तयै अम्ह म्बपम्न ि आम्खर कएल की जाए सेना सब के कतेकों ासि सँ दराहा नम्ह भेटलै ऑकरों सबहक ािन ि आका्रेरक' लुती पजज्म्लत भ' रहल छै तइयों जहॉपनाहक आदेर प' ऑकरा सब ि नब स्फूम्तशनब ऊजा उत्पसन कएल जा सकैत अम्छ ।'नम्हं जाम्न कॉन गप प' सुल्तान एकदि हत्थाव सँ उखम्ड गेला खौंझाइत बाम्ज उठला 'खुदा के इबादत कर सब मिल जुल क' पाक कुरान ररीफ पढू उपर वला के रहिांकिरि सँ सब म्बपम्न टैल जेतै अहॉ सब व्यथशभयाकात भ' क' काम्फर जकॉ गप कम्र रहल छी ।'हाजी मियॉ के नजमर पम्हने सँ झूकल आब आऑर झुम्क गेल छल ।ऑम्ह वृद बुम्दािन पुरख के संग देबए बला कतेकों अािर उरा ।कतेक षङयॅंरंत भ' रहल छलै सब तमर ।राही सेना के जाबाज सेनापम्न क़तेक बेर हाजी साहब म्दस सकि नेतृत्व् के उमिद सँ तकने रहै ुदा पुरान लॉक कृतजता के चासनी ि डूबल सुल्तान सँ बगावत के गप सॉम्चऑ नम्ह सकैत छल राजघराना ि कॉनों सकि नेतृत्वा दूर दूर धमर नजमर नम्हं आम्ब रहल छल ।

गुप्तन षडयंतक' ाध्यि सँ ऑम्ह सुनमर के जान सँ ारिब के कतेक पयास कएल गेल ऑम्ह म्नराबद सुतली राम्न ि ऑकर घर के आमा

लगा सुपुदे खाक कम्र देल गेल रहै िदा म्कसति ऑकर ऑ त' ऑम्ह राम्त अपन भवन ि नै भ' क' हवेली के नशिनाजुक अलंकृत पलंग प' रॉभायनि छल ।अम्ह अमात काड सॅ सुल्तानक ररीर ि अपन पूवशक वीर खून पवाम्हत हॉएि लगलै । तािसे िूह सॅ झाग फेन बहराए लगलै चारॉ कात गुप्त चर सतकशभेल आम्खर इ कॉन आदि जातक कम्रस्तानी अम्छ ।कएक म्दन धम्र ऑहॉ राज काज ठप्पा रहलै ।चार कात िचिल भयानक ड'र आरंका आ' अम्स्थरता के बीच फम्रयाम्द सब छाती म्पटैत कानैत कलैत आपस जायत रहलै ।इ' त' आऑर म्बकट िहौल ।आम्खर कूटनीम्तक चाम्ल चम्ल ऑही नतक्षी के सिझा बूझा क' सुल्तान सॅ कहाऑल गेल जे आमा आर म्कयॉ नम्हं ऑकर अपने असावधानी सॅ जरैत िरिाल सॅ लामा गेल छलै हवा तेज रहै म्खडकी खुजल ।इएह सब सॉचैत हाजी मियॉ आसिनि ि रहानी ताकत के म्दस आस सॅ तकने छलम्थ ।सूरज के भीषण ताप सॅ बचवा लेल त' ऑम्ह संगिरिरिक वृहदाकार भवन के जिना के पाम्न झीक क' भीतरे भीतर रीतल बनेबाक साधन त' वतशिने छलै िदा तैयॉ खस चाननक लेप आ' म्बम्बध ठंढा सरबत के िध्य ऑम्ह सहस्त जीव्हा बला धाह के रॉकबा के भम्रसक पयास कएल जा रहल छल।

उम्हर पचंड भास्कर नहूॅ नहूॅ कम्रक' अस्तगािी हॉबाक फेराक ि छलम्थइम्हर साझ ि सुल्तानक िनॉरंजनक लेल रंगिहलके फरशके झाड फानूसके रॉरनदानके दरॉ दीवार के धॉ पॉम्छक' चिका चिका क' सुसम्जजत कएल जा रहल छल ।रंग रािलाके देवार ि चुनैल बेरकीिती पाथम्र हीरा िािती पना जवाहरात कंदीलक रॉरनी ि स्नगक्ष सुषिा बखाम्न रहल छल ।जिना म्दस सॅ अबैत रीतल म्दि बयार इत फुलैल केवडा रातरानी के गंध सॅ िहि िहि करैत सुखयि

वातावरण ।रिालची तबलची ढोलमिकया तानपूरा मिसतार सरोद पखावाज जलतरंग़ सारंगी अपन अपन वाद यंत नेने मिारेषज सब अपन मिाधामिरत सिथान ध' नेने रहमिथ ।हारमिोमिनयि प' राग छेङल जा चुकल छल ।अपन खिोबगाह सँ मिाकमिस रामिपमिरधान ि सुलिान बङका भवय फौवारा सँ कमिन धििय राखल गावतमिकया प' सिथान गहण कमिर चुकल छलाह मिक तखने िुनिहमिर साझ ि संधया सुनमिर जकाँ छि छि पाजोब खनकाबैत अवगुंठन सँ िुिह झँपने नतिकी के पवेर भेलै ।कमिन झुमिक क' मिोमिहनी अदा सँ सुलिान के सलाि पेर करैत घोघ उठा क' फेकलक़ भमिरमिदन औंधायल मिचनिातुर िुखिडिल प' जेठ ि जेना सावनक हमिरयमिर आमिब गेलै ।ओ िुसिकैला हिमिफल धनय धनय भ' गेल नाििि माराििि िुिह लगुआ अिििर उिरा झरोखा सँ झकैत गुलाि मिकनर दास दासीगण । िोँिध सँ सनल सिर लहरी हवा ि तूर जकाँ दूर दूर धमिर मिछतरै लागल छल 'ऐ िोहबात तेरे अंजाि पे रोनाॅऽऽॅऽऽऽॅ आयाऽॅऽऽॅ।'बनल ठनल दू टा सुनमिर अंगङाउर् लइत सुलिान लग' नििगर बङदीव नकानसी बला सुराहीदार सिणशपात सँ सुवणिक मालास ि भमिर भमिर क' रराब परोमिस रहल छल ।गजल ठुमिर कजरी नृतयवगान सँ भरल िहौल ि जाि प' जाि पीबैत सुलिान आ' अििर । जखने सुर कयल 'आज जानेऽऽॅ की मिजद नाऽॅऽॅऽॅकरो यूँ ही पहलू ऽऽऽॅऽॅ बैठे रहोऽॅऽॅऽऽ'आ' सुलिान मालास हाथ ि नेने ठाढ भ' झूि लगला ।रपकुवँमिरक' के सिर रंगरिला सँ उछैल उछेल जिुिना के मिवसितृत पाट प' मिवमिलन होििति रहलै ।मिकछु रियर लोकमिन सेहो अपन रेर सँ ओमिह रंग ि आओर रंग मििलाबैत रहला ।कमिन काल ि सुनरीक सोझाँ तोहफा के ढेर लािा गेल रहै ।भीतर बैसल बाहर सँ झँकैत अििला सबहक रोिि रोिि मिससमिक रहल छल िहलक बाहर चारोँ कात मिवदोह सिर सुनाइ दैत छलै

राजकिशोरी के पकम्ड पकम्ड लॉक गिरै ।आकुल व्याकुल जनानी सब हिल सॅ पडेबाक बॉत िलागल कतेकों नाह कश्ती मकला के सुरंग ि तैयार केहनों आपद म्स्थम्ना जि्ना बाटे पडेबा लेल ।अन्तःपुर सॅ मातम्कपम्त कना रॉहट के आवाज़ ऑ असहाय स्तीगण दास दासी के ि्ह सॅ बाहरक गप सुम्न ि्तुंभय सॅ कॉपैत जॉर जॉर सॅ घाना पसारबा आ’ इबादत तम्ज औंर की क’ सकैत छलीह ।
ि्नॉरंजन खेनाय म्पानायके बाद गहराम्त राम्त ि अपन आरािगाह ि पसरल र प सुंदम्र के रंग ि ितिल सुल्तान आय ऑकरा अपन घर नम्हं जाए द’ रहल छल । ‘‘आब औंर नम्हं कणभम्रक अलगाव हिरा पागल कम्र दैत अम्छ कहूॅ त’ इ लाल मकला इर् संपूणशसम्मम्त अहॉ के नािम्लख क’ आम्ह प’ र ाही िहिर लगा दैत छी।’
‘आलपिनाह हि अपने संग अम्ह वैभव म्बलास ि त’ अपार आनंद आ’ हषक संग रम्ह सकैत छी इ त’ हिरि अहॉ भाग्य हॉयत िदा ऑ दुम्दशक हिरि सखी जे िहिलक बाहर खरभुजा बेचैत अम्छ हि आ’ ऑ दू ररीर एक पाण ऑ कॉना जीतै म्बलैट जेतै ऑ ।’सुंनम्र के अपन आगॉस ि नेने ितवाला उनित पेिी सुल्तान आॅम्ख कनी खॉलने खॉलने बाजल छलाह ‘हि अहॉ के संगी के अहॉ के दासी िकिशर कम्र रहल छी आब त’ खुरर्ड्ड्ड।’सुल्तान अपन छाम्त सॅ ऑकर ि्ह उठा क’ पुछने छल कारी कजरारी बडका बडका म्पापनी फडफडाबैत ऑ इतिीनान सॅ िस्कैल छल जेना ऑकर बड पाकल गुरक’ इलाज भ’ गेल हॉए ।
आराि गाहक कॉन ि जरैत िरािल सल्तानत के अम्ह दुभाग्य प’ फफैक फफैक क’ कानला के बाद िझा गेल छलै ।दूर कतेकों नम्छया गीदड कूकूरक कननाय पारंभ भ’ चुकल रहै ।
चारॉं म्दरा भीषण अंधकार ि म्बम्लन ऊपर आकास ि आय चॉन

सेहो नै भयंकर अंधेरया अपन आधिपत्य कायि कर चुकल छलै तखने दक्षिन दिसक आकास सँ एक गोंट लहकैत टूटल तारा हिलक' पागण िखस पड़ल छलै ।

अप्पन राज्य

खलघाट ीथि व्यवस्थित व्यत राज सिंहासन सँ उम्ठ बेचैन भाव सँ इम्हर ओम्हर बूलैत दूनू हाथ पाँछा बन्हने ककाजी के म्फरीरानी सँ ओतय उपस्थित सब म्फयोँ म्फरीरान सब हक ऑम्खि हुनके िहि प' गड़ल ।कएक घंटा सँ चम्ल रहल छल इ घरिथन िगजिरी ।कोनो पस्ताव प' कखनो म्फयोँ म्बदम्फ जाए त' कखनो म्फनको ऑम्खि भौँ चिकिए लागै ।म्फछु लोक त' म्बरेष गरिगरी देखाक' तिकि क' पड़ाइयोँ गेल छलाह । म्फ छु के हँकार प' हकाँर पठाओल जा रहल छलैन्ह तैयो नै टघरलाह ।

पजातंतक जादुइर् रक्म्स सँ लैस ओही पकाड म्बदान लोकम्तक ध्रिय पैम्सक' अपन गािण के नम्महरक प्रेफेसर साम्हब उफशककाजी के सिस्या म्फछु सरल करबाक कोरसीस करै लेल नहुँ नहुँ बजलहुँ 'म्र क लेल फुदी बाबू सर्वोतशि बड़का कऑलेजक िननीय पोफेसर कतेक रास पोथी सेहो म्लख चुकल छम्थ आ' जनता जनादश सँ स्चम्मत सेहो लै आयल छम्थ तखन ।'ओ बूलैत रहला एकदि गुम ।हि हुनक पाँछा पाँछा ।म्फछु काल ि कम्स झटम्फ क' ओ बाि कात क' रेरिी परदा बला दार खोम्ल कोठरी ि पैम्स दरवज्जा बन कम्र लेला ''इ त तौँ उम्चत कम्ह रहल छ िदा अम्ह चुनाव ि त' सात सात टा परफेसर जीत क' एलाहै सबहक अपन अपन डॉली खोंबी सब क़तेको पोथी छपौने छम्थ आ' सबके इयह म्बभाग चाही ।तखन ।'

'तखन की ।'

“‘रा‍ि खेलौनक ना‍ि प’ ककरो आपमत नम्हं बूम्झ पम्ड रहल छै ।’ “‘रि‍खेलौन ’हि‍ अकचकैम्लयै ‘ओं कत के पोफेसर ।हरि‍ा जमातब त’ बी ए कहुना चीट पुरजा सॅ पास केने ओंहों थडश म्डम्बजन स्ती पम्ताका समरता गृहरोभा आम्द पैढ पैढक’ राजनीम्त के ककहरा जानबाक कोरम्सस कएल ।’ ‘हॅ हौं से सब त’ रत पम्तरत सत्य छैक ि‍दा आयकाि‍ ओंकरे सबहक राज्य छै देखहक़ केहेन पैघ बहुति‍ सॅ जीत क’ आयल अम्छ ।दोंसर बङका जाम्त जको घि‍डि‍ सेहों नम्हं सबहक ि‍हि‍ ठोंर पकङने रहैत अम्छ ।’

‘फम्रछा क’ कहु नै जे दरदारी छै बरो के ि‍ए कम्मयों के ि‍ए जतए कोंउ नृप होंहूॅ हि‍ का हानी बला म्खस्सा छै ओंम्हठा‍ि ओं घरे घर जा क’ सबहक ि‍नि‍ जीत चुकल अम्छ ।ओंना इहों सूचना अम्छ जे चोंरी चपाटी ि‍ सेहों ओं म्बरेष पारंगत कओंलेज ि‍ पढनाय सॅ बेसी ओंकर म्धयान कोंनि‍ रकि‍ सा‍ि‍नि‍ चोंरेनाय ि‍ छल ओं हों टेम्सक टेबुल एते पैघ सा‍ि‍नि‍ से धम्र गायब कम्र देने छल ।’

‘इ सब गप बाजय बला नम्ह छै तौं बेवकूफी नै करहक ओं अम्ह पाटी के एकटा ि‍जिगूत हाथ छै कोंनों दलके पूणशबहुति‍ त’ छै नै तखन सबके मि‍ला क’ गाङी हॉकबा के छै’।” “‘आ’ ओं जे सभा ि‍ध्य ि‍ रपकुम्र आसन गहण केने बैसल छम्थ हुनका कोंन इन्द्ासन प’ बैसेबा के ि‍नि‍ बनौंने म्छयै ।” हरि‍ इसारा बॅूम्झ ककाजी कनी म्बहुॅसला ।हुनक थाकल झा‍ि‍रल ि‍खि‍ ि‍डि‍ल प’ पथि‍ बेर सलजज भाव सॅ ऊजा के पवेर भेल छल आ’ ओं कनी तोंतराम्त कनी हकलाम्त बजला ‘ओंत ओं त स्ती कल्याण म्बभाग ।’

जखन सब मकछु मणश्च लइये चुकल छी त' घोॅषणा करय ि मबलंब मकयेक ।रीघ एकटा सस्थिया त' घटत।'

"हेऽऽऽऽ एना उमधयेला सॅ बौँआ काज नै चलै छै ।कमन थमि जा ऽऽ ।देखहक राजनीमत के रतरंजी चामल ।' हुनक िहक कोॅलि भाव दुत गमत सॅ बदमल गेल रहैन्ह आ' कोॅच सॅ उमठ पुमछ क' कोॅठरी सॅ बहराइत फेर सॅ अपन मसंहासैन प' आमब बैसला । "अपने सब की अथ उथ ि पडल छी बमजयौं मकछु आमखर नब राज्यक गठन भ' रहल छै।"

ककाजीक कठोॅर अध्यादेर सुमन कंटीर बाबू सोॅझॉ टेबुल प' राखल बङका टाके कटोॅरा सॅ रसगुल्ला मनकामल चमसे सॅ िहे ि रखला आ' मचिडा मचिडा क' लगला बाजै 'एतेक रीघ कोॅना भ' जेतै इ सािधान कतेक सूझबूझ देखबए पङतै जामह सॅ जन पमतमनमध असंतुष सेहोॅ नमह होॅबैथ आ' एकटा सबल मित पमरषदक गठन सेहोॅ भ' जाए ।' उपमस्थत जन अमह पस्ताव के बङ परंसा करैत एगारहि बेर रसगुल्ला प' झपटल रहैथ ।

मबवामदत मरका के एक मदस टरका क' दोॅसर मबषय प' मबचार मबरिशपारंभ भेल ।दोॅसर सबसॅ जमटल पश छल स्वास्थ ।इहोॅ मरके जकॉ मबवादक मरकार होॅिए लगलै करीब करीब आठ टा डाक्टर एक टा नैचरोॅपैथ चुमन क' आयल छलाह आ' सब के सब स्वास्थ मबभागक लेल कच्छा पमहर लिल जुद ि मनरल ।

आ' राम्त भमरयामत देमख सभा' दोॅसर मदनक बैसारी के आसरा ि अमनमणश्च सिप्त कमर देल गेल छल ।

सब गोटे के स्वस्थान पस्थानक पित हि ककाजी सॅ मनवेदन करैत कहलमथन्ह 'इ छोॅट राज्य बना क' भारत सरकार अपन मफरीरानी सुरसा के िहे जकॉ बढा रहल अमछ ।मक अमह सॅ

राज्यक विकास संभव छैक ।आ' भष्टाचार जड़ि सॅ नष्ट भ' जेतैक ।'

ककाजी टेबुल प'राखल सॉनक पनबटा उठा ओहि सॅ गिही पान क' डबल खिल्ली मुॅहमे कल्ला तर राखैत कखन लटपटाइत स्वर मे बजला 'आजुक समय छोॅट राज्यक मॉग करै छैक ।' ' स्वतंत्रता सॅ पूर्व त' भारत मे छोॅटे राज्यक चलन छलै पॉच सौ पैंसठ राज्य तखन मे कएक सरदार पटेल के सुदृढ केन्द्र बनब' लेल एकीकरणक निमित्त तैयार करए पडलै ।' हरि अम्हि पश पर कुरसी के कात मे राखल पीकदानी मे पीक फेकैत बजला 'सेऽऽऽॅऽऽॅत ओॅकरा पाछॉ दोॅसर कएक तरहक तकशछलै आ' ओॅही समय वएह परि आवश्यकता रहल हेतैक ।'

ककाजी के' राजनीति के बड़ गहीड़ अनुभव सत कही त' ओॅ चाणक्य छथि ।दिा सयिक सादर हाथे थकुचायल कम्हियौन्हि सयि आ' पम्मस्थम्ति कम्हियोॅ संग नम्हं देलकैन्हि त' अपन पकाड मादता आ' सजशात्कि कतिा सािजक सकि रखबा मे बड़ देर लाभा गेलैन्हि दिा पजातंत मे देर अबेर त' होॅइते रहै छै ।कतेकोॅ चुनाव मादशाए भ' लड्ल ।पाटी मे आम्ब इ पम्हल विजय छलैन्हि ।

तखन रनैः रनैः उमरि सेहोॅ बढैत रहलैन्हि आ' अजोॅध नेता सबहक पॉति मे ओॅ अगगण्य गह नक्त सबटा अनुकूल अम्हि चुनावक' जीत हुनके नेतृत्वक नाम प' भेल छलैन्हि आने की पम्हने सॅ ख्यि ति के कुरसी पर जवश।

गप्पे गप मे राज्यक राजधानी के विषय मे चचशभेलै त' कहलैन्हि जे दम्हभंगा के छोॅम्हि आर कोॅन रहम्र के डाढ मे एतेक दम छै जे राजधानी कहाम्त ।' 'दिा रहर त' बड़ गंदा छै चारकात उभचुभ करैत नाला के गंधाम्त पाम्त प' जखन सूरजक

कीरन पड़ै छै त' लगै छै फराक सँ जेना ग्रेनाइट वा बिस्सक' टाइल्स लागल होंए टावरक चार कात गंदगी अनकंट्रोल्ड ट्रैफिक जतए ततए थूकैत नरगौना पैलेस के देवार धरि नहि छोंड़ने पानक पेंसिब ।आ' टीसन देखलयै दरभंगा के रतुका गाड़ी सँ जखन आबै छी पटोंपट नीचा सँ ऊपर बेच धरि गुदड़ी चेथरी चक्कट ओंढने पड़ल निक्ख ।इ सूतहार सब के । जेकरा गाड़ी पकड़बा के रहतै से एना कर भ' क' सूततै एकर सधिान त' हेबाक चाही नै कछु ।' ककाजी अकार चकैत पूणशचान स तकैत कम्ह मंत स्र बजला 'हौंऽऽऽ सबटा सस्थिा के सधिान हेतैक़ र हरक सबटा राह बाटक सौंदयीकरण कएल जेतै ।नाला नाली झॉप झूप क'ओंकर काते कात फूल पौंध लगाएल जेतै ।हिाराजक सबटा हिल के सेहों काया कल्प कएल जेतै ।टीसन के कात 'गरीब नजि सबके लेल फराक सँ सिाकर खाना बनाओंल जेतै अनाथालय वृदाशि सबटा बनतै ।'

'हँ ककाजी अम्ह संग ओंठा लंगरक सेहों व्यवस्था करबा देबै ।दिा मायि बना देबै चारि न लगातार खेहार के जौं ओं अत्यंत वृद बीरि वा एकदि अपंग नहिं छथ त' पतन दू घंटा शदािन अवस करए पड़तैन्ह ।आ' अम्ह शदािनक तहत स्टेर नक आगू पाछू दूर दूर धरि सफाइर् कराओंल जेतै ओंना अस्पताल सब भोंजनक व्यवस्था कर चार कात सफाइर् राखल जा सकैत अछ ।इ खेनाय के योंजना एकटा सक्ति आ' ठोंस कदि हेतै जे कोंनों राज्य अपन गरीब जनता लेल मार्ज्ँ पारंभ कएने होंयत ।'

ककाजी कम्ह हि टेढ कर क' हरि खिशा प' सिकैत बजला

‘हौँ तोँहर इ यूटोॅमपयन स्कीम िलागू करबा ि बड दीक्कत हेतै दमरद राज्य छै जहाॅ सुनतै लोॅक मक फोॅकट ि खेनाए भेटैत छै हजारक स्थान प’ पाॅच हजार पहुॅच जेतै ुदा काज करबा काल त’ एकोॅ सौँ भेट जाए त बडका भाग्य कहबाक चाही ।पाछाॅ सॅ मबरोॅधी पाटी टीक पकडने ‘ वेलफेयर गवनशिट के ितलब की फंड अहाॅ जन लुभावन काज ि खरीच देबै ।उपर सॅ बेगार खटनाए के मबरोॅध करबा लेल हजार टा नेता पेट भमरते ितर जनिए लगतै’ ।’

‘ुदा अम्ह मदरा ि पयास त’ कएले जा सकैत अम्छ ।’

‘‘आब देखहक पम्हने िमन पमरषदक गठन त’ िॅ जगदंबा के कृपा सॅ रुभ रुभ संपन भ’ जाए ।’

‘से त’ भइये जेतै ुदा चोॅर बनोॅर के िती नै बनेबै चाहे जे मकछु भ’ जाए ।अपन राज्य बमन रहल छै राजा मबदेहक मकछु आदर शत’ अवस्से स्थामपत करबा के हेतै ।’

‘रिइइ्ड्ड् जीत क’ एलै है चोॅर बनोॅर आ’ िती लेल घरे घरे जाकए ताकू इ िनदार सत्यवादी राजा हमर िन्द ।जखन लोॅक पंच बनै छै परिशरक गुण आपर पी आमब जाए छै ।’

‘बेस तखन पडोॅमसया कोॅडा ि मकएक नम्हं परिशरत्व एलै िूह ि बकार नै लोॅक त’ कहै छै एतेक रुद जेना गाय मद ािग ि सेहोॅ टनक टन भूससे भरल ।ुदा चामर हजार करोॅडक गबन कमर केहेन धमजा फहरा देलकै ।’

‘ओॅ अमबकमसत अमर मकत ममाछडल राज्य छै ुदा एतय लोॅक बड रामिर छोॅटका िॅटका गबन भले क’ लौँथ बडका डकारब बड िॅसमकल ।’

‘िॅसकील कोॅना ।’ मबनु राज्य बनने स्था नीय स्मर ासनक

नापि' जेकरा जे फुरेलै कइये रहल अछि ।केन्द्र सरकारक योजना सब देख रहल छियौ हिनि ओहि गामे सबहक नाम निर्माण लेब ।फेर दोसर आंगनबाडी कार्यक्रमक कतेक खिधौल उडैल जा रहल अछि सएह हाल नरेगा के छै ।'

'र हमर मन सखाबे कोतवाली। हौं जखन अंगरेज भारत सँ विदा होंयि लगलै तखन ओकरों एहनेसन अंदेरा होइत छलै गाँरि हिन्दुस्तानी बतै कतो राजकाज होंय ।फेर दिन भेलै की निर्माण आब इहों देखि रहल जे मिथिला के लोक कतेक नीक सँ विदेह राज्यक स्थापना करैत अछि ।'

अहि बेर गहीड साँस लेबाके बारी हरि छल 'एक टा आदर्श राज्य बनेबा लेल अहाँके सकि की ठोसगर प्लान अछि ।'

''ढेर रास प्लेन अछि प्लेनक' कोन कमी पहिल त' राजधानीए के विश्व स्तरक हेरिटेज सिटी जकाँ बनौल जेते ।सभ गामक पोखरिक उत्थान के संग भसयायल पोखरिक माणि हिाड सब पक्का कैल जेते लग पासे इस्कूल जत'सँ लोक वेद पोखरि प' नजरि रखता अंत्योदय कार्यक्रमक तहत बी पी एल बला सबके घरे घर शौचालय बनौल जायत जाहि सँ ओ सब चार कात गंदा नै करै सस्ती रोंटी के दोकान फेर सँ खोलल जेतै ।माय या पुता के अनिवार्यशिक्षा अनिवार्यहेतै भोंट देनाय संतति उत्पादन प' कंट्रोल खेल कूद सेहों अनिवार्य मोबाइल कोर्टश दरवज्जा प' अदालत ।

गाछि के राजकीय चेन्ह त' निर्माण बना सकैत छी फेर गाछि आ खिान के उत्पादन सँ त' पुरकस जोंर लगैल जा सकैत अछि पहिने पुरखक उत्थान ओ आलस तजि कठि बनौंथ संगही संग स्त्री शिक्षा के कारगर बनैाल जेतै बेरोंजगारी हटेबा लेल उदोंग

धंधा के बढ़ैल जेतै ।'

ककाजी अहाँक प्लेन त' सवथा साथक वाह नि गदगद्द कम देलहूँ 'आन्हर की चाही बस दू टा आँख ।हरि त' इर् बूझना पड़ रहल अछ समपहुँ राजा जनकक राज्य कायि हाँिए जा रहल अछ ।फिलाँसाँफर किंग के चचश सेहाँ वाश इतिहास ि भेल अछ अहाँ के इर् पाकल उरि पाँपल िहि आ' जजश ररीर त' अवसे सदाचरणक पाठ पढबैत सत्यि वद धर्शि चर वा तेन त्यक्तेन भून्जीथा के मर का दैत परिति आ' पराँपकार ि नि वचन सँ लागल रहए बला साबत हेतै ।'

अहू प' नै जाम की साँच क' कम रसक भाव सँ िसकैत बजला 'से नै कह' आब जौंबन के लाँक ययाति जकाँ येन केन पकारेण जीत क' ऋण पैच लक' जीवनक आनंद अंमा िकण धम भाँगय लेल बेकल रहैत छै जुग वैराग्य रतक के नहूं शृंगार रतकक आब गेल छै अखन आँहू स्नाि धन्य उपराज्यपाल िहाँदयक नािकी लेल जाए जे गुलगुल सड़ल पाचकल आि बनल छयासी बरीखक उरि ि राजभवन ि निका रंभा ऊवशी सब संगे परि आध्यात्मिक सुख भाँगैत रंगल हाथे पकड़ल गेला ताहू सँ उरि प' नहूं जा कदाचरणक काँनाँ बयस नहूं हाँय छै ।'

हि चुप्प हाथ सँ जेना ताँता उड़ गेल ।कका अपन शीिख सँ जखन अहू संभाबत पक के उघाम क' हरि साँझाँ राख देला तखन फेर बाँचल की आब ।

आँना एखन हुनक उरि त' सतमए बरख छेन्ह ।हि अपन गप के एना बीचे ि बजामक पराजय स्वीकार कम ली से त'

सुभाव आ' संभव नम्हं ।अपन म्दर सॅ किख्न लगबैत हुनक चाम्रम्ताक गौरवक गुणगान करैत आगॉ बढलहुॅ । 'जे नन्हू से गभ्स्ां नन्हूॅ अंगरेजॉ सब कहै छै' मिांगशरॉज द' डे' अपनेक त' चम्रत के इमिनदारी के ध्वज एखन धम्र फहरा रहल अम्छ पाइर् पाइर् के लेल तरसैत मारहस्थी सॅ आखीर तंग आम्ब म्टिया तेल सॅ अपन ररीर म्सक्त करैत एक टा लुत्ती के बल प' काकी अहॉक' संग की दुम्नाए सॅ म्बदा भ' गेलम्थ त' आब अहॉ की पथ भष हॉयब ।'

'पम्हने इर् बताब जे तौं हरि परंसा करैत छ वा हीनताय ।'

''केहेन गप करैत छी इर् त' अहॉक चाम्रम्ताक बलक परंसा अम्छ ।संसार ि लॉक जतेक पकारक पाप छल पपंच दुष्कमिकरैत अम्छ ओं सब मारहम्स्थए के आड ि ।आ' ताहू काल अहॉ नै म्डगम्लयै भीषि म्पतामिह जकॉ अम्डग रहम्लयै एकरे कहल जाए छै न' चाम्रम्ताक बल ।'

''ताम्ह सयि हि छम्लयै की भाखा के एक टा पॉफेसर ओंहॉ एम्फम्लएट कॉलेज ि दरमिहा छौं छौं मिस धम्र बन म्डगम्तयै त' आम्खर कम्थ प' म्क कऑलेजक संस्थापकक घेट काम्ट लेम्तयैक़ म्क म्बदाथी सबहक घर ि डाका पाम्डम्तयैक़ म्लखेत रहलहूॅ म्कस्सा म्पहानी जीबनक़ तपैत रौंद ि बम्स क' धिुर रसक' ।िदा तकरॉ पाय घरे सॅ लागै केम्तय भाखा के लेखक के वाहवाही आ लॉकक करतल ध्वम्न तॅ भेट जायछै िदा दवयक पश प' सब म्कयॉ ठम्प लैत छै केकर केकर नामि मानम्बय ओंम्ह दारण दुखक वणश करैत । आब भगवम्त के कीरपा सॅ पॉवर एलै है त' देखहक़ कहबी छै जे पॉवर करप्ट एवरी बडी ।'आ'

बङका टा के रहस्यमयि चुप्पी ।

हरि आब अपना आप प' बड ग्लानि हौंयि लागल छल ।राजनीति ि आन्ब बुढापे ि इहों अपन टिकूडी आमा प' सोंनहा क' रखने छन्थ ।आने आय धम्र जे लोंक म्हनका इ ानिदार बूझल सब परि भि ि जीम्ब रहल छल ।

रहल नै गेल आगॉ बम्द्ध क' अपन चुप्पी तोडैत बजलहूँ 'सतम्र बरखक अवस्था ि सुकरात अपन म्सदात लेल सता सॅ भीड गेलै म्बषपान कम्र लेलक ि दा अपन संगी म्हत म्चंतक सभक देर छोंडबा के जेहल सॅ पडेबा के आगह हाम्दक अनुनय म्बनय के ठोंकर िम्र देलकै ।ओंहों त 'एकटा एहेन उदाहरण पस्तुत क' देलक जे आए धम्र लोंकक हदय पदेर ि बम्स क' असीि शदा सॅ ओंकरा अरि रखने छै ।'

' हे सुम्न म्लए कान खोम्लक' हि नै सुकरात छी आ' नै बनब चाहै छी तौं बम्नह ।'ओं पीते आन्हर होंएि लगला ।

गप के आन म्द्स जाइत देम्ख हि अम्बलंब चार कात सॅ घेर घाम्र क' लक्ष्य म्द्स बढेलहुॅ "खैर ओं सब त' बादक गप छै ि दा ' "अपन राज्यक" र परेखा लेल अहॉक' आलेख त' बड दि दार बड तथ्य पूणशछल आ' सुनबा ि आयल जे पधान िती सेहों अम्ह सकारात्ि कि पस्ताव' के बड सराहलम्न्ह । '

आब ओं कम्न तनाव रम्हत नजम्र औंलाह 'हौं जखन राि राज्यक पम्रकल्पने करबा के छै त' म्लखनि की दम्रदता आ' कम्ब आ' लेखक सॅ बेसी कल्पना रील पाणी आर के होंइत अम्छ ।'

*   *   *   *

शीिन भोरका एक’बार हाथ ि नेने भभा क’ हॅमस उठला । हुनका हॅसैत देखब हिरॉ हॅमस मकमल गेल छल ।कनी चौंकैत एक’बार सॅ िहि मकामलक’ पसनवाचक दृषि सॅ हिरा हेरैत बजला ‘तौं मकएक हॅसलऽ’।हि बङ मनम भ’ कहमलयैन्ह ‘अपने के हॅसैत देखब हिरॉ हॅसी बहरा गेल ।’

‘िदा हि त’ अपन रतुका सपन प’ हॅसी रहल छी ।’ हुनक ऑखिक पश आब रंका ि बदैल गेल छल ।

‘हिहूॅ वएह सॉमि क’ हॅमस रहल छी ।’हिति’ अपने िगर िच्छी खाल के ।

‘हॅ तहुॅ ऑम्ह सपन ि उपमस्थत छलऽ िदा तॉरॉ कॉना ऑ सपना अयलह ।’

“ नम्ह नम्ह हिरा त’ अहॉक संग चलल मवसतार पूणशरतुका वातालाप िनि पम्ड गेल अपन राज्यक गठन करबा के त’ भेल जे ऑहने सॉहनगर सपन देखने हैब ।’

अम्ह प’ ऑ’ खूब जॉर सॅ ठहाक्का लगौंलम्थ आ’ हिहूॅ संग दैत सॉझा टेबुल प’ राखल भफैत चाह पीबऽ लगलहुॅ ।

“जौं आबए बला चुनाव ि हि जीत गेलहूॅ त’ तौंरा अवस्स अपन सॅ्ोकेटरी बनैब। ‘ऑ मनॉदक िड ि आम्ब गेल छलाह। ‘एहेन काज जूम्त करब मवगत ि एकटा चचा अपन सॅ्ोकेटरी बनल भातीजके’ लंका ि ममभषन कम्ह पद पहार करैत अपन घर सॅ मषकाम्सत क’ चुकल अम्छ ।’

आ’ अम्ह हॅसी ठठा ि अपन राज्यक गप बुम्ढया के फुइस जकॉ हवा बसात ि उम्ड मवलुप्त भ’ गेल छल ।

<u>कुिर िनोज कश्यप</u> जन्ि : १९६९ ई ि िधुबनी म्जलातगतत सलेिपुर गाि ि। स्कूली मशक्षा गाि ि आ उच्च मशक्षा िधुबनी ि। बाल्य काले सँ लेखनि आभरूमच। कैक गोट रचना आकाशवाणी सँ पसामरत आ मवमभन्न पत-पमतका ि पकामशत। सम्पमत केन्द्रीय समचवालयि अनुभाग अमधकारी पद पर पदस्थामपत।

<u>मववसता</u>

अपन जनिभूमि के प्रॅमत िोह ककरा नमह होईत छैक? जामह धरा पर पमहल बेर पायर राखल, जकर धूरा-िाटि ि खेल-खेल कऽ सथिश भेलंहु, तकरा प्रॅमत लगाव तऽ स्वाभामवके आछ। अपन राज्यक सीिा ि प्रॅावेर कईयो कऽ गाि नमह जाई से ने हरि िन िनत आ ने गाि-पमरवारक लोक। अहु बेर सरकारी याता सँ मुमश्कल सँ पलखमत पामब रामतयो भमर लेल गाि जेबाक मवचार कय मवदा भऽ गेलंहु बस धरबाक लेल। भोरे आपसे एबाक छल, तै कोनो सिान लऽ जेबाक दरकारे नमह।

सभ गाकि चौक पर अहा के ओहन मरकसावला भेट जायत जे चौक सँ बस लग-पासक गाकि सवारी उठबैत आछ - आर कतहुँ नमह जायत ओ - कतबो बेगरता होऊक लोक के। चौक पर बस रूकते ओ सभ मरकसा लऽ कऽ तेना दौड़ैत आछ सवारी लेवाक हेतु जेना

कोनो म्तथश्स्थानक पण्डा। जकरा सवरी भेम्ट गेलैक से म्बजयी आ आन सभ हारल - िदा पेप्र सँ आगला प्ॅराम्तयोमाता लेल डाड़ बन्हने।

कैकटा म्रक्सावला हरिो पाछु दौड़ल, िदा आई हरिा पायरे जेबाक िनि भऽ रहल छल, तै िना कऽ देम्लयई। सनि कोनो छलैहे नम्हं आ साझक सोहाओन ि‍सि, म्कयैक नम्हं आनंद लेल जाय एकर। सभ सँ पैघ बात जे गािक एम्ह म्घर-पम्रम्चत धुम्रयायल रस्ता पर चम्ल कऽ एक बेर पेप्र हि अपन म्बतल म्दन िनि पाड़ऽ चाम्ह रहल छलंहु। आततक सिरण बड़ िनभावन भेल करैत छैक।

सड़क पार कय हि चलऽ लगलंहु गािक ओम्ह रस्ता पर जे कम्हयो बड़ आितीय छल हरि। म्कछु आभास भेला पर पाछा तकलंहु - एकटा म्रक्सवला म्रीह भावे म्रक्सा लऽ कऽ चल अबैत हरिा पाछा। लऽग आम्ब बाजल -" हाकीि! तऽ नम्हंये करबै म्रक्सा? जे िनि हुअय से दऽ देब खुरी सँ, िदा बैस जाऊ हरि म्रक्सा पर।" हि कहम्लयै - "बेकार ि हरिा पाछा नम्हं पड़, आई हरिा पायरे जेबाक ईच्छा भऽ रहल आछ । घुम्र जो तो।" म्रक्सावला के आँम्ख िरल िछ जेना म्थर भऽ गेलै हरिा उपर। कलपैत स्मर ि बाजल- "ऐं यौ हाम्कि! अंहु सन हाम्कि-हुकाि जँ पयरे चलऽ लगतै, तऽ हरिा सभ गरीब-गुरबा अपन पम्रवारक पेट कोना पोसतै?"

हरि पैर एकाएक थम्कि गेल। म्बना म्कछु बजने हि बैम्स गेलंहु ओकर म्रक्सा पर।

<u>रिीचका</u>

'हे हर, हरिहु करहु पमतपाल ' - भवनीबाबूक िुहि सँ मनकलल एमह गीतक भावाथशसभ के बुझल छलैक। एते तक मक बच्चो सभ बुम्झ जाईत छल जे भावनीबाबू आब भोजनक पतीक्ष कय रहलाह अमछ ।

भवानीबाबू -- मजला पमरषदक सेवा-ममवृत बड़ा बाबू । सस्ती जिाना ि भवानीबाबू एक-एक टा रपैया जिा कऽ कऽ रहर ि जिीन खरीद लेलमन । िुदा घर टा बमन सकलमन सेवा-ममवृमत के बादे । सेवा-ममवृमत पर भेटल सभ पाई के लगा कऽ बनलमन चामर कोठली के पका-पुख्ता िकान । िुदा चार कोठली दुनू बेटा आपस ि बामट लेलक । भवानीबाबू के आशय भेटलमन बालकनी ि । कमनाया तऽ पमहने स्वगशवासी भऽ चुकल रहमथन । भवानीबाबू अपने बनाओल घर ि आन बमन बालकनी के एक कोन ि टुटलहवा चौकी पर सयि काटऽ लगलाह । हद तऽ तखन भऽ गेल जखन एक मदन भवानीबाबू के पेट सेहो बँमट गेलमन ---पार लगा कऽ दुनू भाई के घर सँ भोजन आबऽ लगलमन।

आई भवानीबाबू बड़ी काल धमर गीत गबैत रहलाह ---बीच-बीच ि नजमर याचक-भाव सँ दुनू भाईक भनसा घर मदस बेरा-बारी सँ जाईत रहल । गीत अंतरा धमर पहुंमच गेल । फेर स्वर िमद ि पड़ऽ लागल----उदास---- थाकल---हारल---हे हर, हरिहु करहु पमतपाल।

परजा

बड़का भैयाक दलान; दलान नम्हं गाकि चौक बुझूँदेर-दुम्नया, खेत-पथार, नीम्त-राजनीम्त सभ पर गािगरि बहस एतऽ सुनबा लेल भेटत । चुनावक सयि ि कोनो आन टॉम्पक पर बहस हुअय ; से कने अनसोहात होयत । सभ जुटल लोक चुनावक एक-एक ि दा पर तेना म्बका-म्बक कऽ खोईछा छोरा रहल छलाह जे कोनो सेफोलोम्जस्ट टी०वी० पर की करताह । बौवूᴧबाबूक कहब रहम्न जे एम्ह बेर सता पम्रवतश हेबे टा करतसभ सतार ढ सरकार सँ नाखुर आछ ; तकर औल ओ सभ एम्ह बेर चुकेबे करतम्न । एम्ह पर नन्हवूᴧ बकैत बाजल जे 'कका आहा कतऽ छीलोकक आँम्ख नम्ह बटि म्छयै जे चहुँकात होईत म्बकास के नम्ह देखतैंअपने गाि ि देम्खयौ ने जे कतेक के सरकार पका किान बना देलकैंक़तेक कऽल गड़ा गेलैंग़ाकि लेल रोडो तऽ सैकर न भईये गेल आछ । बौवूᴧबाबू प्ॅराम्तवाद केलम्न--'कोन घर आ कऽलक बात करैत छह? जा कऽ ओकरा सभ सँ पुछहक गऽ ने जे कतेक जोड़ी पनही घसा कऽ आ कतेक घूस दऽ कऽ घर आ कऽल भेलैयै?'पेᴧर बजलाह--' हौ ई सरकार पाच साल तक जनता के ि खिशबना कऽ अपन धोम्ध बढ़बैत रहल । भल होअय लोक तऽ ई चोरबा सभ के जानित जबत करा म्दअय। ' ई वाद-प्ॅराम्तवाद चम्लये रहल छल म्क खिना म्बचम्हं ि बाजल--'यौ ाम्लक! आहा आउर कम्थ लै बेकारे ि बतकटाझु करैत जाईत छी। हरि ि खिशा बुम्द तऽ एतबे बुझैत आछ जे केयो जीतऽ; केयो हारऽॅहि सभ तऽ परजा छी, परजे रहब। ' दलान पर कनी काल लै चुप्पी पसम्र गेल छलै।

ियादाक हनन

िख्य-आभयंता सन उच्च पद पर रम्हतो गंगाबाबूक सादगी, म्नशछलता आ सेवा भावना उल्लेखम्नय रहल आछ । हुनका लोक देवता बुझैत छम्न। कोनो लोक एम्ह परोपटा ि नम्हं भेटत जे कम्ह म्दअय जे कोनो काज पड़ल होईक आ गंगाबाबू िना कऽ देने होम्थ । एम्ह परोपटाक जतेक जे लोक म्संचाई म्बभाग ि नोकरी करैत आछ से सभ गंगेबाबूक रखायल । ककरो नोकरी चाम्हयै तऽ सीधा सम्पकश करय गंगाबाबू सँ । अपना ओम्ह ठाि रखबो करम्थन आ नोकम्रयो रखा देम्थन । गंगाबाबू पाई तऽ नम्ह किला िदा यरक कोनो किी नम्हं । परोपटाक लोक हुनकर गुणगान करय, िदा हुनकर अपने बेटा के छोम्ड़ कऽ।

कोन िय-बापक ई ईक्ा नम्ह रहैत छैक जे ओकर संतान सुसभ्य, सुम्रम्कत, सुसंस्कृत बनय; उच्च पद पर जा िय-बाप, गाि-घर, देर-जयवारक पाग ऊँच करय। गंगोबाबू यैह आकाक्ा लय अपन एकिात पुत पभास के सभ साधन उपलब्ध करबैत रहलम्खन जे कहुना िनुक्ख बम्न जाय । हिरा सँ आगू नम्हं बढ़य, तऽ कि-स-कि समिनिजनक स्तर धम्र तऽ जररे पहुँचय । िदा कुसंगम्त ि पम्ड़ बेटा नेन्हपने सँ पढ़ाईक जगह पान, सुसंसकारक जगह रराब-म्सगरेट आ भलिनुषक जगह भाग अपना लेलकैन । कोना-कोना कऽ म्घचैत-म्घचैत ओकरा बी०ए० के म्डगी देयाओल गेलैक । एहना ि कोनो नीक नोकरीक तऽ आरा केनाई व्यथे छलैक । आ एतेक पैघ आधकारीक संतान कोनो छोट नोकरी करय तऽ पम्तषा कतऽ रहतै ! अंततोगत्वा बड़ सोम्च-म्बचाम्र कऽ पभास के गंगाबाबू व्यवसाये

ि लगायब उम्चत बुझलम्न । ि्दा भाग्य ओतहु पाछा काहा छोड़लकम्न ओहो डुम्ब गेलम्न ।

पभास के एक म्दन ओम्हना बौआईत देम्ख हि पुम्छ देम्लयै, 'आहा ि पम्तभा के तऽ कोनो किी नम्ह; एकर सदुपयोग कऽ आहा म्र खर तक पहुँम्च सकैत छी। ि निल जे आब सरकारी नोकरीक उम नम्हं बाचल आछ ; ि्दा आजुक युग ि तऽ पाईवेटे सेक्टर सरकारी सँ आगू जा रहल आछ । आहा ओतऽ राई कऽ सकैत छी । ' पभास ि्हि भरल गुटकाक पीक के पीच्च सँ फेकैत बाजल, 'कका ! आहा कोन दुम्नाया ि छी? पाईवेट सेक्टर के चाम्हयैक यंग, इनरजेम्टक, क्वाम्लफाईड, पोिम्संग हिरा सन भकलोल नम्हं । ' गुटका के िहीन कऽ म्चबबैत ओ फेर बाजल, 'सत्य पुछू तऽ हिर नाकाििक म्जम्िवार हिर बापे छम्थ । जखन ओ जनैत छलाह जे हि भुसकौल छी, तखन सालक साल फाशिभरबाक पास करेबाक बदला ि जौ कतहु नोकरी रखा देने रम्हतैथ तऽ हिर आई ई दरा नम्हं रहैत। ि्दा एम्ह ि तऽ हुनकर झूठ ि यादा आगू आम्ब गेलैन । आब आहं कहू जे ि यादाक हनन कतऽ छै--पुत के छोट नोकरी करेबा ि वा दर-दर के ठोकर खाई लेल छोम्ड़ देबा ि?' हि म्नार तर बगल म्दस ताकऽ लगलहुँ। सोझाक म्खड़की सँ ताम्क रहल गंगाबाबू अढ़ भऽ जेबाक कोम्र र कऽ रहल छलाह।

पश्चातारोध

एकटा राक्स के एकटा नोकर रहैक स्वामिभक्त हिनमताया कोनो काज ि नम्हं नम्हं कहऽ बला । िदा राक्स तेहने खुराट दंभी अपने अपन सोचय बला । बेचारा नोकर म्दन भम्र खटय िम्लकक सेवा ि हाम्जर रहय। िदा जस नम्हं भेटई। राक्स नोकर पर हावी होई दुआरे हरदि धकिी दई -" काचे म्चबा कऽ खा जेबहु रोम्गात पीम्बा जेबहु "। बेचरा नोकर भय के साया ि म्ताल-म्ताल जरैत कहुना-कहुना म्दन खेपैत गेल। डराईते-डराईत एक म्दन ओकरा हृदय ि आर्त-चेतना जगलई -"म्तत्य म्ताल-म्ताल कऽ रिबा सँ नीक जे एके म्दन म्र जाई िम्कत पाम्बा ली एम्ह जीवन आ राक्स दुहू सँ।"

ओम्ह म्दन जखने राक्स काचे म्चबा जेबाक धकिी देलकै म्क नोकर अम्ड गेलै। िड़ी आगू कऽ कऽ कहलकै - "म्लय म्र म्दय हरि काचे म्चबा जाऊ पीम्बा जाऊ रोम्गात हरि हि तैयार छी म्र जेबाक लेल। म्र-म्र कऽ म्जबा सँ एके म्दन म्र गेनाई नीक। " नोकरक सहसा अप्Ůत्याम्रत रप आ प्Ůत्युतर पर तिति गेल राक्स खून खौलऽ लगलै ओकर। िदा दोसरे पल रात पम्ड गेल -'एकरो म्र देबै तऽ के कहल िनत हरि? के करत सेवा-सुशूषा हरि?' क्णम्हं ि राक्सक आंगुर नोकरक िथक केर संगे खेलऽ लागल छलै। दुहू म्मारब्द छल। दुहूक आंम्ख सँ सहस्त्तधार बहल जा रहल छलैक िदा दुहूक अथशफराक छलैक।

दृष्टि कोण

राजपत्रित पदाधिकारी के पद पर चयनक जे खुशी रजत के भेल छलैक से करिहे एकटा अनजान भय िपरिणत होईत चल गेलैक । िनि धुकधुकी पैसऽ लगलैक, कारण --- सरकारी कायालयक कार्यप्रणाली आ कार्यसंस्कृति दुहू सँ अनभिज्ञता । जखन सँ श्यामबाबू अपन आंखिक देखल घटना सुनेलखिन ओकरा जे कोना एकटा किरानी धोखा सँ आधकारी सँ फाईल पर दस्तखत करा लेलकै आ बेचारा निर्दोष आधकारी फंसि गेलैक ; तखन सँ रजत आर बेसी विचलित भऽ गेल आछ। दोसरो घटना ओहने सुनेने छलखिन ओ जे एकटा कर्मचारी घूस खा कऽ कोर्टकेसक फाईल दबा देलकै आ एकपक्षीय फैसला सरकार के खिलाफ भऽ गेलैक आ कोना बेचारा आधकारी के परिणामस्वरूप ससपेंड कऽ देल गेलैक। ई सभ सुनि रजत के लगलैक जे ओ काटक ताज पहिरऽ जा रहल आछ, अबूह लागऽ लगलै ओकरा। सोचैत-सोचैत डरे पसेना-पसेना भऽ गेल रजत, क़ंठ सुखाय लगलैक ओकर।

आईये योगदान करबाक छैक ओकरा। जँ-जँ समय लगीच आयल जा रहल छैक, तँ-तँ ओकर बेचैनी बढले जा रहल छैक। भीतर सँ सदः डेरायलो रहैत बाहर सँ कुबा देखेलक ओ। कँपैत डेगे तैयार भऽ ओ बाबूजीक पायर छुबि आशिर्वाद लेबऽ गेल। बाबूजीक पारखी आँखि सँ रजतक िनोदरा नुकायल नहि रहि सकलैक। मय-बाप आ संतान बीच सदिखन कोनो टेलीपैथी काज करैत छैक जे बिना िह खोलनहु सम्वेदनाक आदान-पदान करैत छैक। बगलक कुसी पर बैसबाक ईशारा करैत रजत के बुझाबऽ लगलाह - ”बाऊ! घबराईत

मकयैक छी? ई खुरी आ संगमह गवक्क बात आछ जे आहा भारत सरकारक एकटा उच्च पद पर आसीन होयि जा रहल छी। आहाक योग्यताक पूणशपरीक्ता कईयेकऽ आहा के ई मजमिदारीक पद सौपल गेल आछ ।'' फेर पानक मखल्ली पनबटी सँ माकाम्ल (हि ि लैत आगू बजलाह- ''के पम्हने सँ ऑमफसक काज सँ मजरहैत आछ? सयि सभ के सभ जान करा दैत छैक। अहा एतबा धमम करब जे आँमख आ कान दुहु खोलने रहब समदखन। जतऽ कोनो पकारक परेरानी बुझाय तऽ सलाह लेबा ि कोनो टा संकोच नमह करब - चाहे ओ अहाक ितहते मकयैक ने हो!''

बाबूजीक बात सँ रजत के जेना कोनो मदव्य दृम्ष भेट गेलैक। लगलैक जेना ृिग जका कस्तुरी ओकरा संगे ि छैक आ ओ नाहक लोकक बात सुम्न-सुम्न मचंता ि पड़ल छल। एकटा (स्की पसमर गेलै ओकर ठोर पर।

ऑमफस ि कायशभार सम्हाम्रते दरश भेलै फाईलक अम्बार सँ। उपर सँ एकटा फाईल उठा पम्ढकऽ बुझबाक पयास करऽ लागल; (दा मापफल। कतबो अपना भमर पयास केलक रजत (दा नमह बुझबा ि एलई ओकर मबषय-वस्तु आ ने आगूक पमकया । फेर खखम्सकऽ उच्च स्वरे बाजल-''मकनकर फाईल आछ ई? ई आँक़डा आहा कतऽ सँ लेलंहु?''

सुम्नतमह मकरानी अपन कुसी सँ उम्ठ कऽ दौड़ल आयल जेना ओकरा सँ कोनो गलती भऽ गेल हो। फेर मबस्तार सँ सभ बात बुझा देलकै। रजत ओकरा सभ के फाईल पर फमरछायल नोम्टंग करबाक महदायत

दैत ओकरा अपन सीट पर जेबाक ईशारा केलकफेर मनोजयी भावे आँखि उठा कऽ तकलक। मनोजयी एम्हर दुआरे जे आधनस्थ कर्मचारी पर धाख जमिकऽ ओकरा सभक नजिमे नवीनताक आभास नहि होयि देलकै संगहि कार्यक आरम्भ सेहो शुभ रहलै। शुरु भला तऽ अंतो भला। टेबुल पर राखल पानिक गिलास के एके छाकमे खाली क लेने छल रजत।

ओम्हर आधनस्थ कर्मचारी सभक बीचमे यैह चर्चा होमऽ लगलै जे साहेब बड़ क़डा मिजाज के छथि।

ओ तऽ बताह अछि

देवनारायण सत्ये बताह भऽ गेलई ....लोक के ख्खन-ख्खन के गारि पढ़ैत छै.... बेछोहे ि रै लै दौड़ैत छै .....अंट-संट कदन बड़-बड़ाईत रहैत छै। आँखि क़डजनी सन लालभयाओन चेहरा । सुकना बेटा के ओहि दिन तेहन कऽ ठोठ दबेलकै जे छौड़ा के पाण उपरे रहि गेलै.... ओ तऽ लोक सभ दौड़ कऽ छोड़ेलकै; नहि तऽ ओहि दिन ओकर रिबा ि कोन भागठ छलै !

ओना तऽ देवनारायण गुि-रुि रहै.... ककरो किछु नहि कहै ; िदा जखने िबाईल कंवा फोनक घंटी बजै कि ओ आकाि भऽ उठै... ग़ारि बाजय लगै.... ि रै लै छुटै। किछु दिन तक तऽ चललै ; िदा जखन एकर आकाि कता दिन पर दिन बढ़ते गेलै;तऽ एक दिन नोकरियो सँ नाकाल देल गेलै। सुनै छियै जे एक दिन ओ अपन अफसरे पर पािक मालास उठा कऽ फेक देने छलै । केयो कतेक दिन बदाश्त करितै ! बदाश्त तऽ ओकर घरो के लोक नहि कऽ सकलै....क़तऽ घरक लोक सुख सँ दिन बितबैत छल; से नोकरी सँ नाकालल जेबा सँ नूनो-रोटी पर आफत आबि गेलै ।...से देवनारायण के हाथ-पैर ि लोहा के क़डी पहिरा कऽ जंजीर सँ बान्हि देल गेलै कतका घर ि...घुप्प अन्हार । ककरो िनि पड़ै तऽ खेनाई ओकरा लेल राखि अबैक ; सेहो दूरे सँ....आन खन केयो घुरियो कऽ देखय नहि जाई ....कनिाया तक नहि।

देवनारायण जला कोटर्श बड़ा बाबू छल....बड़ चलती छलैक ओकर। ऑफीसक नायि सभ जेना ओकर जीहे पर छलैक़ाज ि तऽ भूत।

कतबो काज होऊ, ओ मिानु मापटेने घर नम्हि जाईत छलॅक़तबो अबेर मिकयैक ने भऽ जाऊ।

लोक कहैत छै जे देवनारायण के ऑफीसक कोनो मिकरानी वा चपरासी सँ कोनो बात के लऽ कऽ िँहा - ठुटी भऽ गेल छलै । ओ आदिी तकर बदला लई लै एकरा खौझबई हेतु जखन-तखन फोन करई - 'नोचनी के दवाई भेटत आहा लग ? ' फोन कोनो बुथ सँ कैल करई जाम्हि सँ भंडा ने फुम्टि जाई । रुर ि तऽ ओ 'रौग नम्बिर' कम्हि कऽ फोन पटम्कि देल करई । िदा जखन ई बम्ढ़ते गेलै आ सुतली राम्तयो ि फोन कऽ कऽ तंग करय लगलै ; तखन खौझी सँ ओकरा िँह सँ छोट-िाट गाम्र सेहो बहराय लगलई ....ओ मिचड़मिचड़ाह भऽ गेलै । लोक एकर एम्हि आकम्मिक स्िभाव पम्रवतशिक कारण नम्हि बुम्झ सकलै आ पागल कहऽ लगलै---देवनारायण िजाकक वस्तु बम्न गेल । लोक ओकरा म्दक करई आ जखन ओ खौझी ि अनाप-र नाप बाजय तऽ लोक ठहका िम्र कऽ हँसय । एम्हि काज ि ओकर घरो के लोक कहा पाछु छलै....ओहो सभ ओकरा चौल करऽ लगलै। एक म्दन राम्त ि भगजोगनी के उड़ैत देखा कऽ ओकर बेटा कहने रहै - 'देम्खयौ, मिचड़ै आमा लऽ कऽ उम्ड़ गेलै।' ताम्हि पर जे ओ मिचक़डय लागल रहय - 'दौड़ै जा हऊ, मिचड़ै आमा लऽ कऽ उड़ल जा रहल छै । ककरो घर ने जरा दई ।' ओकर पुरा पम्रवार सिेत देखनाहर लोक ओकर एम्हि िम्त पर हँसैत-हँसैत लोट-पोट भऽ गेल छल।

जखन ओकर मिाम्कम्सतता बम्ढ़ते गेलै तऽ पम्रवारोक लोक आम्जर भऽ कऽ सवशिमम्त मिाणथि लेलकै ...अनेरे परेरान भेला सँ नीक जे

एकरा काके पठा कऽ एम्हि गाड़ाक घेघ सँ मुक्ति पाओल जाय । सैह भेलै । आई देवनारायण के काके निम्मसक आरोग्यशाला मे भर्ती करेबाक हेतु पठाओल जा रहल छै...कंकाल सन शरीर....बेतरतीब बढ़ल केश-दाढ़ी, फाटल-मैल-कुचैल कुर्ता-पायजामा....कड़ीक दाग सँ स्याह भेल पैर-हाथ..। कतेक महिना बाद कोठली सँ निकलल कऽ ईजोत मे आयल छल ! ओकर आँखि चोन्हरा गेलैक....आई ओ पत्नी-बेटा-बेटी..ककरो नहि चिन्हि पेने हेतै...चिन्हबो कियैक करतै....ओ तऽ बताह अछि।

धाित ि

ओकरा धरि-करि ि बड़ म्नाष ा छैक---भोरे-भोर अन्हर-गरे उम्ठ , नहा -धो, उघारे देहे भीजल तौनी पम्हम्र कऽ िम्दर के नीक जकँ कैक बेर धोईत आछ तखन भम्र िान पूजा कऽ कऽ ओ दस बजे धम्र घर आपस अबैत आछ -- तकरा बादे ओ अन-जल ुिह ि दैत आछ ---चाहे म्कछु म्बम्त जाउक । केहनो म्बकराल सिय होऊक --- घनघोर झटक; म्क कपरफोड़ा पाथर; म्क हाड़ कँपबैत कनकनी -- ओकर एम्ह म्दनचया ि कोनो टा फकशनम्हं पड़लैक --- सालक-साल बादो। लोक कतबो कहैत रहलैक जे खाली देह ि ठण्ढ़ा िाम्र देतैक ---पम्हने जान; तखन जहान --- ुदा एम्ह सभ बातक कोनो टा असम्र नम्हं पड़लैक ओकरा पर ।

दानी-दयालु सेहो ओ तेहने---दुआम्र पर आयल कोनो भीखिगा के ओ म्बानु खुअओने म्कनहुँ आपस नम्ह जाय देने हेतैक--बर अपने म्कयैक ने भुखल रम्ह जाय पड़ल हो। नर आ नारायण दुनू पर अटुट शदा छैक ओकरा । सगरो बड़ गुणगान होईत छैक ओकर भम्ताʍक -- ओकर सहृदयताक ।

भने तऽ केयो बजैत छल जे ओकर बाप म्बानु सेवा -सुशूषा, अन-दवाई के काम्ह काम्ट कऽ िरिल छलैक

निस्ताप

आफिसर भऽ गेल छल निन फाईल निबटबैत-निबटबैत। निन के कने हल्लुक करबा लेल कुसी सँ उिठ अपन चैम्बर सँ बाहर निकलले रहि कि ऑफिसक पाछु ओहि कोन िकिछु देिख कऽ ठिमक गेलंहु। देखैत छी हरि अदली रािनवास ककरो सँ िद सार कनफुसकी करैत िकछु बुझबैत ओ व्यक्त अपन जेब सँ एकटा नोट िनकाललक़ रािनवास ओ नोट ओहिना पैटक जेब ि राख लेलक़ फेर ओहि व्यक्त के आशस्त कऽ रािनवास पाछु िड़ल। अपत्यािशत रप सँ हरिा सािने देिख रािनवास सकपका गेल हवास उड़ऽ लगलै चेहरा पीयर पड़ऽ लगलै पैर कापऽ लगलै। चोटिह हरिा पैर पर खिस कऽ कानऽ लागल''हािकि! बड़ पैघ गलती भऽ गेल हरिा सँ हरिा एिह बेर ािफ कऽ िदयऽ हि कान पकरैत छी ।'' हरि तािस टीक तक चढ़ल जा रहल छल हरि अदली आ घूस ओकर की छैक?बदनािी तऽ हरि हैत। केयो कहैत तऽ बाद ि पिसतयिबतौ आइ तऽ चोर सेन्हे पर धड़ा गेल।

लोकक भीड़ बढ़ले जा रहल छलै ज़ते िुँह, तते तरहक बात। किनये कालक बाद डी०एस०पी० अपने आिब रािनवास के पकिड़ कऽ लऽ गेलाह। रािनवास कनैत पुिलसक संग जा रहल छल हरिा िन के उसास भेटल ठोर सँ कठोर सजा भेटक चािह एहन भषाचारी के।

िदन बीतल सिय बीतल हिहुँ तबदला पर दोसर रहर ि आिब गेलंहु। एक िदन िवभागीय िती के औिफस सँ फोन आयल - ितीजी

भेट करऽ चाहि रहल छथि। हुनकहि तीजीक आदेर भेलनि जे पुरनका ऑफिसक ठेकेदार धरिवाल एण्ड संस के सभ बकाया बील बैक डेट हि पास कऽ दियौ। डेड लाईन तीन दिन के भीतर भुगतान भऽ जेबाक चाही।

अनविनिस्ककि हुनि सँ हि पुरना बील सभ मँगा होटलक कक हि बैसल पास कऽ रहल छी आन ऊपाईये की ऩोकरक लेल तऽ मालिकक आदेर सिरोधायश्री नोकरी करक अछि तऽ उचित-अनुचित सभटा करहि परत हंसि कऽ की कानि कऽ । बील की छलैक सभटा झूठ बना काज करबायल आब परहिशिरे टा रक्क सैह सुहिर दस्तखत केने जा रहल छी झूठक पुलिंदा पर।

जखन एतऽ आयले छी तऽ पुरनका मित सभ सँ भेट-घाट नहि केनाई सेहो कोनादन होयत । दोसर, हुनिक भड़ास निकलल जाय तऽ हुनिो हल्लुक होईत छैक । सैह सोचि पैर अकसहित जिला जज के आवास दिस बढ़ि गेल। जिला जज कणश्री हरि नीक मित हि सँ छलाह। बेचारे बड़ सहृदय लोक। जखन एहि ठाहि पोस्टिंग रहय तखन एको दिन भेट नहि भेला पर तुरत फोन आबि जाय जे मिकेछी किक नहि।

चाय-स्नैक्स के बीच हि चचाक ध्यिय हरिा हुनि पर्ड़ गेल राषिनिवास हुनि किक पड़ल कणश्री के कमाया हुनि पाड़लनि । छगुंता भेल जे राषिनिवास एखनो धमि जेले हि आछ। कणश्री हरिा तजबीज करैत बजलाह- ’’सजा तऽ अपराध सँ बेसी भईये गेलैक [ुदा हि जानिम एहि दारे नहि देमलयै जे ओकरा आहा स्वयं पक़डने रहि।’’ हि हुनका

सँ जानिमताक आगह कऽ लौमट फेर पुरना बील ि ओझरा गेलंहु।

दोसर मदन बील सँ गिजारिी के बीच बाहर मकछु आहट बुझना गेल िड़ी उठौलंहु आगा ि रामिनवास दुनू पाणी कऽल जोड़ने ठाढ़ छल। केयो मकछु नमह बाजल दुनूक आँमख सँ आवरल नोर बहल जा रहल छलैक। हरिो िन दमबत भऽ गेल अंतराति कान उिठलक़ ''बीस रपया लेल सेहो काज जल्दी करा देबाक लेल ज़ँ सजा पाच िसक जेल छैक; तऽ मबनु काज करेनमह ठेकेदार के गरीबक लाखो रपया पेयिट कऽ देबाक घोर अपराधक सजा मक हेबाक चामह? उम कैद वा फासी वा ओहु सँ मकछु बेसी?''

रामिनवास दुनू पामणाक आँमख सँ दहो-बहो बहैत नोर साईत हरिा सँ यैह िकि पश कऽ रहल छल। आई हि अपराधी रप ि ठाढ़ छी ओकरा दुनूक सकि बौक बनल।

मारैत देवाल

भालसरिक गाछक कात मे जे एकटा कोठली छै ओहिमे रहैत अछि बैठा- सपरिवार। ओ एकटा कोठली बैठा के दोकान आ घर दुनू छैक - दिनमे दोकान आ रातिमे घर। अहल भोरे उठि कमला घाट पर कपड़ा खिचनाई, ओतहि कपड़ा सुखा कऽ दुपहर तक घर लौटनाई, पेफर खिचल-सुखायल कपड़ा पर आयरन केनाई - यैह दिनचर्या छै बैठा के। नेना मे हरिा सभ के परिहास सुझय -'नाि बैठा, ि‍दा हरदि ठाढ़े'। सत्ये बैठा बेसी काल ठाढे रहैत अछि । बैठा बैसैत छल तऽ ि‍दा सभटा काज खतम कईये कऽ - चाहे जखन हो।

बैठाक ओ दिनक कायस्थल, रातिमे विशािस्थल मे परिणत भऽ जायल करैक। एक कात खिचबाक लेल िटरी बान्हल कपड़ाक ढेरी आ दोसर कात बैठा सपरिवार पति-पती आ चारि गोट संतान - तीन टा बेटी आ एक टा बेटा क़ोरपछुआ। कनिया रस्ता कात मे चुि पजारि भानस करैक आ बैठा पटिया पर सुतल बीड़ी धुकैत, कोनो गीतऱाजा सि`र िकंवा लोरिक़ गुनगुनैत; धिया-पुता सभ आपस मे झगड़ा करैत िकंवा खेलाईत। यैह टा क्षण होईत छलैक बैठाक आराकि, पलखति पेबाक़ एक क्षण के लेल सभटा दिन-दुनिया बिसरि जेबाक ।

बैठा डाड़ तोरि िहनति करैत छल जे दू पाई संजोमा बेटी के बियाह करा सकत । उपरा-उपरी तऽ छैहे तीनू बेटी। ि‍दा एहि हाड़-तोड़ िहंगी मे कतऽ सँ कऽ सकत बचत आ ताहि पर घरिड़यालक ि‍ह

सन लड़का बला के िहई चाही तऽ ओ चाही। बैठा लड़का बला ओम्ह ठाि सँ म्मारार घर घुमि आबय। लागई कोन जनि के पाप केलक जे बेटी के बाप बनल। गाि ि लोक सभ वुम्म्टचाल करैक़क़म्मायाक िहि हरदि तुमिी लटकलबेटी, म्मारीह िनिस्तााप ि डुबलक़ी करतैक बैठा ? अपराध-बोध सँ भड़लिदा एम्ह सँ की भऽ सकैछ? सिस्याक म्मादान तऽ म्कनहु नम्ह हेतैक ।

एक म्दन भोरे-भोर सौसे गाि गनगना गेलै जे बैठाक बड़की बेटी ककरो संग पड़ा गेलै। बैठाक कम्माया-बच्चा सभ ओंघम्रया िरै। गाकि सभ लोक बेरा-बारी जुटऽ लगलै। कोई कहई - ’गाि-गाि छान िड़ - पड़ा कऽ आम्खर जेतै कतऽ’ ; तऽ ककरो कहब रहै जे पुम्लस ि नाम्लस करा। बैठा म्स्थतप्ॅराग्य बनल रहल -- म्कंकतष्म म्बिूढ। िनि कहलकै - ’ तोरा साि्थ्यशनम्ह छलहु तऽ अपने अपन रस्ता चुम्न लेलकै छौड़ी। जतऽ रहै, सुख सँ रहै। लोक के की नीको ि दुसतहु आ अधलाहो ि।’

आँम्ख ि चकि आम्ब गेल छलै बैठा के । बच्चा सभ कना-रोहट पसारने छलैक़ओम्हर कम्माया के चट्-चट दाती लगैत छलै । लोकक भीड़ बढले जा रहल छलै ।

कलाकार

ओकर उम्रि सात-आठ साल सँ बेसी तऽ नहिये हेबाक चाही। दिा एक बात िनऽ पड़त जे कि ल के करतब करई छई छौड़ा ..आमाक गोलाक बीच सँ चीता जका छलाग लगा कऽ मिकल गेनाई, दुनू पैर के िमड़ कान्ह पर राखि हाथ सँ चलनाई,छोट छल्ला के बीच सँ रीर मिकािल लेनाई..आर की की ने..! सभ कहैक जे कि ल के चुस्ती-फुती छै छौड़ा ि। एकर रीर जेना रबड़ के बनल हो। सते एहन सहजता आ चुकि सँ ई सभ करतब करब सकैक कोनो िजल कलकारो लेल कठिन हेतई। िता तीन टा बच्चा िमल कऽ कय रहल छल करतब - जनपथक तीिाहानी बला लाल बती पर एक टा बच्चा ढोल पीटैत, दोसर कलाकार आ तेसर सहायक। लाल बती पर रकल सभ लोक अपलक देखि रहल छल करतब िध..चमकत।

दृश्य परिवतश भेलैक। खेल रक गेलैक। सहसा िहान कलाकारक हाथ झड़कल बाटी लऽ कऽ याचना ि सभक आगू घुिऽ लगलैक .. एक रपया..दू रपयाक हेतु .. पेटक खाितर, वस्तक खाितर..। ओकर याचक नजिर एक दीस जतऽ लोक सँ सहायताक उमीद बन्हने छलैक ततहि एक हाथ पेट-िह पर जा कऽ भूख के संकेत कऽ रहल छलै .. संकेत कऽ रहल छलै जे पेटे खाितर जान जोखि ि दऽ कऽ रहल छी ई खतरनाक खेल । बती ताबते ि हरियर भऽ गेलैक। लोक तरकर सँ छुटल तीर जका अपन-अपन वाहन सँ भागऽ लागल। लोक मुसाि देने छल छौड़ाक अजगुत करतब के लोक अनसुना कऽ देने छल छौड़ाक याचना के। छौड़ा

सड़कक कात ि ठाढ भेल अपन खाम्लये रम्ह गेल झड़कल बाटी म्हस तकलकै फेर देखैत रहल सर्र -सरशभागल पड़ायल जाईत गाड़ी के हुजुि के ।

एक बेर फेर सँ छौड़ा पम्सक कऽ रहल छलै बती के लाल हेबाक़..म्कश तिक कोन भरोस?

<u>नोर अंगोर</u>

'जननी जन्म-भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि' -- मायक ई आदर्शटा चिन छलन्हि आ एकरा ओ अक्षरशः पालन करैत छथि । सभ बुझा कऽ थाकि गेल, मुदा ओ गाम छोड़ि अन्यत रहब स्वीकार नहिये केलन्हि । अंगदक पैर जका जमल रहि गेलि ओ गाम मे । एके ठाम कहलन्हि, " जाहि घर मे डोली पर एलहुँ, ओहि घर सँ अथीये पर जायब ।" की करितहुँ हम? अंत मे भारती के भरोसे ओकरा गाम मे छोड़ि शहर आपस आबि गेलहुँ । भारती बड़ सेवा-सुशूरा करैत छैक मायक---अपन जका। माय सेहो बड़ खुश छलि भारती सँ। हमहुँ निश्चिंत भऽ गेल छलहुँ।

आई जखन सँ माय फोन सँ बतेलन्हि जे--- 'भारती के वियाह ठीक भऽ गेलैक आछ---आगले फागुन मे वियाह छैक----किछु मदति तऽ करहि पड़त----आहां पर ओकर माय आश लगेने आछ' --- तखन सँ हमर बेचैनी बढ़ि गेल आछ । बात मदति के नहि छैक---ओ तऽ हम कऽ देबैक। मुदा वियाह के बाद भारती अपन सासुर चलि जायत तखन गाम मे माय के सेवा-सुशूरा के करतन्हि? गामो मे लोक कहा भेटैत छैक? बृद्धावस्था के कारण माय एसकरे गाम मे कोना रहतीह? कन्नया के गाम मे छोड़ि दी तऽ बच्चा सभक भविष्य की हेतैक?-----प्रश्नसभक मक़डजाल मे हम ओझरायले चलि जा

रहल छी । खीझ उठ्ठ रहल आछ मायक पुरान-पंथी पर----कहु तऽ आजुक रौकेट-युग मे एहन विचार पालने रहब कतेक युक्तिसंगत आछ? मुदा के बुझाबय हुनका ।

राक्ति भक्र कछ-मछ करैत रह्व गेलहुँ। कक्तया क्तश्चिंत सुतल छक्थ आ दुनु बच्चो। पहरेदारक सीटीक आबाज आ हमर मोनक बेचैनी--- आपस मे तादातम्य स्थापित करबाक अनरित प्रायास कऽ रहल आछ। विरे सँ उठ्ठ कऽ घट-घटा कऽ पाक्तक वालास खाली कऽ कऽ घर सँ बाहर क्तकक्ल टहलऽ लगैत छ्छ हम । एकाएक विचार क्दमाग मे चमकल--- राईटीग --पैड पर कलम दौड़ऽ लागल। क्चटी क्लफाफ मे बंद कऽ कऽ बेडरम मे एलहुँ। कक्तया काचे क्तन मे करोट पेक्तरैत पुछलक्त, ''क्तन नक्ह भेल की?'' क्तनु उतरक प्राक्तक्ता केनक्हं ओ पेक्तर गहीर क्तन मे सुक्त गेलीह।

लेटर-बॉक्स मे क्चटी खसा कऽ हम ओहने आनंदक अनुभि केलहुँ जेहन कदाक्चत सफल ऑपरेशन के बाद रोगी करैत आछ।

क्कछु क्दनक बाद गाम गेल रह्व। भारती के माय हमर पैर पर खक्स छाती पीट-पीट कऽ कानऽ लागल, ''आब हमर दुनू माय-बेटी के की हेतै मालीक? कतेक मोक्श्कल सँ छौक्रक वियाह ठीक केने छक्लयैक; सेहो मुदैया सब मोक्ड़ देलकैक रे बाप! समाज सँ लक्ड़

कऽ छौंवा के आहा ओकरहठाम काज करऽ देलकयै, तकर बदला दुश्मनमा सभ कनकाकल लेलकै रौ बाप ।'' भोकावा पाबड़ कनैत रहलै ओ; मोन भवा गवायबैत रहलै। बड़ मुश्किल सँ ओ चुप भऽ सकल छल ।

खेबा काल माय ओकर सिरि मे सिरि कनलबैत कहऽ लगलीह, ''कहु तऽ मसोम्माती भऽ कऽ कोना कोना कऽ बेटीक वियाह ठीक केने छलै बेचारी ---सेहो लोक के आँखि मे गड़ऽ लगलै। अपन कोढ़ि कऽ बेचारी गुजर करैत छैक----एहि मे कोन लाज? बेटी समाजक होईत छैक-----िर् जो एहि गामक लोक के। हे भगाता ! कथा मोड़कहार के कहियो नीक नहि करबै। भारती मायक नोर अंगोर भऽ कऽ पड़तै एहन दुश्मन पर ।''

हमर हाथक कौर हाथे मे आ मुँह खुजले रहि गेल छल ।

फ्यूज बल्ब

से सत्ये विा साहेबक डरे खऽड़ जरैत छलैक । से रतबा आ धाख छलम्न विा साहेब के जे ककर िजाल जे कल्ला अलगम्नतै । विा साहेब सयि के तेहन ने पावंद जे कहैथ जे नौ बजे सँ ऑफीस रुर हेबाक ितलब जे नौ बजे सभ काज करय लागय , नौ बजे ऑफीस आबय नम्हं । ऑम्फसक सभ आधकारी आ कम्शारी छीह कटैत विा साहेबक डरे जे कही कॉरीडोर ि घुित वा कैटीन ि गप्प लड़बैत पक़डा ने जाई । जे केयो बाहर ि देखा गेला तम्नकर तऽ अभगदरा बुझू दस लोकक बीच ि झाड़ सँ लऽ कऽ म्लम्खत वाम्नंश तक म्कछु भऽ सकैत छल । एतबे नम्हं , आधकारी -कम्शारी अपन सीट पर सँ भागल नम्हं रहय तै हुनकर सयि-सयि पर सरपाईज म्नजीट सेहो भेल करय । जे केयो सीट पर नम्हं भेटलाह तम्नकर नाि आ म्नजीट सयि नोट कऽ कऽ राम्ख लेम्थ आ िसेज छोम्ड़ देम्थ जे जखन आबम्थ तऽ हिरा लग पठायब ।

विा साहेब के चैम्बर ि घुसबा सँ पम्हने कतेक-कतेक के आधा जान अपने म्नकम्ल जाईत छलैक़ रपे तेहने छलैनपाच हाथक चाकर-चौरठ ररीर एहन टा कल्ला भयाओन दृम्ष्ट । आवाज की भारीम्नाना ले ईस के'हू आर यू एंड व्हाई कि टु िी ?' लोक के पम्हने सँ सोचल सभ बात म्बसरा देबा लेल पयाप्त छल । जीनका लग सुम्नचत कारण नम्हं भेलम्न ; तम्नका तऽ बुझु सस्पेड हेबा सँ बम्हो नम्हं बचा सकम्थन । विा साहेब के लेल तऽ ककरो सस्पेड करब नेना-भुटका के खेल । म्बभागीय सम्चव रहम्थ तै ककरो सँ कोनो आदेर लेबाक जररतो नम्हं । पैघ-पैघ ऑफीसर तक के डाट-डपट करबा

ि वाि साहेब के कोनो टा असोकजशवा िलाल नम्हं । डाट-डपट की कैक बेर तऽ भरल लोकक बीच ि बेईज्जत तक कऽ देम्थन । भम्र ऑफीस ि कहबी पसरल छलैक जे जाबत तक लोक वाि साहेबक डाट नम्हं सुम्न लैत आछ ताबत तक िनि हौड़ैत रहैत छै। जहा ने डाट पड़ल की िनि के राम्त भेटैत छै ।

से वाि साहेब सरकारी सेवा सँ सेवाम्नवृत भऽ गेलाह । भम्र ऑफीसक लोक जी-जी कऽ उठल। चचा ईहो छलैक जे वाि साहेब पेµर सँ सलाहकर बम्न कऽ ितालय ि ज्वाईन करताह । गोपीबाबू तऽ सभ के चेतेन्हो रहम्थन जे रैतान के जाबत तक शाद नम्हं भऽ जाय ताबत ओकरा िुईल नम्हं बुझल जेबाक चाही । तै लोक साकाक नम्हयो होईत तते तर खुरी तऽ िनेनहे छल भम्र ऑम्फस ि चोराईये नुका कऽ सहा ; मिठाईयो बाटले गेल छलैक । लोक के भीतरे-भीतर डरो छलैके जे कही वाि साहेब पेµर सँ आम्ब गेलाह तऽ सभ खुरी िनेनहार सँ म्हसाब चुकता कऽ लेम्थन भेम्दया तऽ सभ ठाि रम्हते छै ने ।

ितालय के लोकक कपार एतबो खराब नम्हं छलैक़वाि साहेब दोबारा सँ नम्हं एलाह । सयि तऽ गम्ानि होईत छैक ; म्बतैत गेलैक । वाि साहेब लोक के एखनो िनि छम्थन म्खस्साक रप ि । वाि साहेव के अरदली बालम्करन सेहो सयि पर सेवा म्नवृत भेल कतेक लोक आअयल-गेल ऑफीस चलैत रहलैक ।

ओम्ह म्दन बालम्करन म्दल्ली रेलवे स्टेरन के प्लेटफाम्क बेच पर बैसल रेनक प्रोम्तका ि छल म्क तखने बगल ि बैसल कम्नाया

केहुमनाया कऽ ओकरा पुग्र्सपुग्र्सा कऽ कहलकै- 'ओम्हर देखहक तोहर पम्हलुका साहेब ठाढ़ छथुनभीड़ धमकयबैत हैनबजा कऽ बलु हिरा सीट पर बैसा दहक़हि ओम्हर चल जाईत छीहिरा आऊर तऽ ठाढ़ो रहब तऽ कोनो बात नम्हंओ तऽ हाकीि-हुकाि छम्थ ।' ईराारा सँ देखेलकई बालम्करन वाि साहेब केलोकक रेला ििरेनक पॅ्राम्तका ि ठाढ़पसीना सँ तरबतर भेलएक हाथ सँ एटैची थम्हने आ दोसर हाथ सँ िुँहि पर बेर-बेर ािथ सँ टघम्र कऽ अबैत पसेना के रािल सँ पोछबाक अनवरत पॅ्रायास करैत । कखनो काल रेला बढ़ै तऽ लोकक धका सँ अपन संतुलन सेहो बनबैत । बालम्करन म्कछु सोचलक आ कम्नाया के बाम्ह पकम्ड़ कऽ बैसल रहबाक ईराारा केलकै- 'रहऽ दही बैसल रह तो । आब हि आ वाि साहेब दुनू गोटे पत्यूज बल्ब जका छीपत्यूज बल्ब ि कोन फरक जे हजार वॉट के छलैक की साम्ठ वॉट के। '

वाि साहेब भीड़क दोगे खनहुँ-खनहुँ कनम्खया कऽ बालम्करन के देम्ख लैत छलाह । बालम्करन आओर पैर पसाम्र कऽ बैम्स रहल छलरेनक एखनहुँ कोनो पता नम्हं छलैक।

पम्हल म्चट्ठी

परादिरणीय बाबूजी,

ओना तऽ बहुत म्दन सँ बात ानि ि घुमरयाईत छल ; ादा म्हमति नम्हं जुटा पाम्ब रहल छलहुँ जे कोना आहाक सोझा ाँहा-ाँही कम्ह सकी । आई नम्हं जाम्न एतेक म्हमति हरिा ि कतऽ सँ आम्ब गेल जे अपन भावना व्यतए करबा लेल कागज-कलि लऽ कऽ बैसी गेलहुँ ।

सोझा-सोझी अपन भावना व्यतए कऽ सकी ई म्हमति तऽ हरिा ि एखनो नम्हं आछ । तै गाि-घर ि सभ हरिा ाँहदुबम्र बुझैत छल । हरि ई कायरता हरिा आहा सभ सँ भेटल संस्काँरक म्थक वा हरि अपने भीतरक कजोरी से तऽ नम्हं कम्ह ; ादा हि एतबा धम्र जनैत छी नारी जाम्तये के लोक सवशहा, अवला, भोग्या ऩम्हं जाम्न की की सवशाि आ म्बरेषण दऽ कऽ ाँहदुबम्र बनल रहबा लेल म्बवर कऽ दैत छैक । हि ानैत छी जे म्डम्बया लऽ कऽ तकला पर बहुत एहन ाँम्थलाम्नये भेम्ट जेतीह जे अपन आधकार म्छम्न कऽ पाम्ब लैत छम्थ ादा एहन तऽ म्कंछु ाट्ठीये भम्र छम्थ ने । हि तऽ अनुभव केलहुँ आछ जे नारी के सवशहा भऽ कऽ जीबाक लेल म्जमदार तऽ नाम्रये म्थकदादी, म्पासी, नानी,ाय, काकी रप ि ।

हरिा एखनो बड़ नीक जका ानि आछ जे जखन ाय के चाम्रि बेम्टये भेलैक तऽ आँगन ि जम्न-जाम्त कोना कना-रोहट पसाम्र देने

रहय ; जेना कोनो बजपात वा अपरवुाम भऽ गेल हो। एहन सुनमरसाकात भगवती सन बच्चा के नाि राखल गेलैक - 'िनतोमड़या' । बाबूजी साईत आहा एम्ह पर मबचार नम्हं केने होयबैक जे पैघ भेला पर बेचारी के अपन नाि लऽ कऽ कतेक गलाम्न के सािना करऽ पड़लैकसंकोचे ओ अपन नाि ककरो नम्हं कहैक । िनतोमड़या नाि जे सुनैक से कोनादन िह बना लैक । संकोचे ओ संक्षेप ि अपन नाि बतबैत छैक मस एि0 चौधरी । आहा अंदाज लगा सकैत छी कतेक मसदम्न भोगऽ पड़ल हेतैक बेचारी के ! आहा तऽ पढ़ल-मलखल बाप छम्लयैकआहा तऽ कोनो सुनर, आधुमनक नाि राम्ख मदम्तयैक।

मबक्कूम के जनि के बाद पूरा पमरवार के ध्यान कोना ओकरे मदस चम्ल गेलैक से तऽ अहुँ जमनते छीओकर एक-एक जररत के सभ ख्याल राखय िदा हिरा सभ बहीन जेना टुअर सन भऽ गेलहुँअपडेरल । िनिलहुँ जे मबक्कूम नेना छल आ नेना के सभ प्यार-दुलाड़ करैत छैक ; िदा हिहुँ चार बहीन तऽ कोनो सयान नम्हये भऽ गेल छलहुं। हिरो सभ के वात्सल्य आ स्नेह के भुख छलसे तऽ केयो नम्हं बुझलक ।

ई देम्ख कऽ हिर सभक िनि मकं नम्हं कचोटैत छल जे िय संदूक ि गुड़, चीनी, िवा आ आनो नीक-मनवुमत वस्तु सभ बंद कऽ कऽ रखैत छलीह आ चोरा कऽ मबक्कूम के खुअबैत छलीह । बाल िने हि सभ बहीन िमाये तऽ झझकाम्र मलअयकंखनो- कखनो बेसी लटारहि केला पर धेले चटकन सेहो पड़य। मबक्कूम कतबो बदिरी

करय तऽ कोनो बात नर्ह्इं; हरि रा सभ म्बानु गलम्तायो के ि म्र खाईि यिक चटकन तेहन सकंत जे ओनाहो केयो म्कंछु करबाक सोम्चतो नर्ह्इं छल । आहा के तऽ बाबूजी साईत िन होयत जे जखन म्बाकबूΛ खेल-खेल ि हथौड़ी उठा कऽ हरि कपाड़ फोम्ड़ देने रहय तऽ ियि उनटे हरि रे ठुनम्कंयबैत कहने रहय--'ईह ! लोथबी नर्ह्इंतन ! देखलही जे हथौड़ी उठेने िरऽ अबैत छौ तऽ पड़ायलो नर्ह्इं भेलौ '। ओ तऽ आहा ओम्ह काल ि रम्ह जे हरि रा कोरा ि उठा कऽ रोम्णात पोछने रही आ ियि पर तिसायल रही -' एक तऽ म्बाकबूΛ बेचारी के कपाड़ फोम्ड़ देलकै आ उनटे आहा एकरे डँटैत म्छयै? '

बाबूजी हरि रा सभ बहीनक एकेटा सम्बाल अही टा रम्ह। ि दा म्धरे-म्धरे हरि रा बुझाय लागल जे अहुँ के झुकाव म्बाकबूΛये म्दस बेसी आछ । नर्ह्इं तऽ म्बाकबूΛ के म्सनेि-सकश्म, दोस्त-िहीि पर उड़बै लेल एके बेर ि पाई म्नकाम्ल कऽ दऽ म्दयै आ हरि रा सभ के म्कंताबो-कॉपी लेल खेखनय पड़य । हि िित दू टा सलवार-सूट सँ काज चलाबी आ म्बाकबूΛ लग नव-नव पैΛरन के कपड़ाक अम्बार । सत्य पुछु तऽ बाबूजी एम्ह सभ कारणे हि अपन सहोदर छोट भाय के अपन पॅराम्तदंदी बुझऽ लगलहुँ हरि रा एक-एक टा छोट-छीन गप्प तक कचोटऽ लागल िन ि म्बादोहक भावना आबय लागल । िनक पीड़ा िने ि घुरि ैत रहल व्यतΛ करबाक तऽ म्हम ति नर्ह्इं छल ।

आहा कतेक पॅरासन होईत छलहुँ बाबूजी आ कतेक गवश होईत छल जखन हि स्कूΛल ि गम्णात आ भौम्तकी ि क्लासक हाईयेस्ट

स्कॉरर होईत छलहुँ जे भेटैत छल सभ के आहा ई खुर खबरी सुना अबैत छलहुँ । हरि कोरा ि उठा कS चुमि लैत कहैत छलहुँ जे हरि बेटी एक म्दिन हरि नाि करत । हिहुँ आगू जा कS ईम्जिम्नायर बनबाक सपना बुम्ना लेने रहीउठैत-बैसैत अपना के ईम्जिम्नयर के र प ि देम्खि । एम्हि लेल जी-जान सँ परीक्षा के तैयारी ि जुम्ट गेल रही। ि दा बाबूजी नम्हिं जाम्न कोना अहा के म्नि फीम्र गेल जे आहा हरि इंरेसक फाि शभरबा ि ई कम्हि कS िना कS देने रही --- 'लड़की सभ लेल ई सभ ठीक नम्हिं होईत छैक । बी0एससी0 कS ले ओतबे बहुत छौ । ' पेपर आहा बड़की काकी म्दिस देम्खि कS बजने रही--' जतेक आगू जायत ओतेक पैघ ओहदावला लड़को तS भेटक चाही ! आ पेपर ओहन वर-घर लेल डाड़ो तS सकंत रहक चाही ! ' बड़की काकीक संगे ओसारा पर बैसल सभ केयो स्वीकृम्ति सूचक ि ड़ी डोलओने छल । हरि तS लागल छल जेना केयो हरि गाछ पर चढ़ा कS छौ ि म्र देने हो केयो हरि कल्पना-वुपसुि के पैर सँ ि म्ड़ कS नेस्त-नाबूत कS देने हो। बाबूजी साईत आहा के ई नम्हिं बुझल होयत जे आहाक ओम्हि म्नणश्च सँ हरि करेजा पर तखन की बीतल होयत ? आहा के िने होयत जे एक बेर जखन अपन लहलहाईत गहुँि कि सभ टा खेत साढ़ भम्रये राम्ति ि म्नट्ठाह कS चम्र गेल छल तS आहा कतेक म्दिन तक र ोके व्यावुपल रहलहुँ । ि दा हरि ई र ोक साढ़ चरल जजाम्ति सँ बेसी पैघ छल बाबूजी । फसील तS आगला बेर पेपर भS जेतैक ि दा हरि एतेक म्दिन सँ देखल सपना के िहल जे एके झोक ि बालूक देवाल जका ढ़म्हि गेलैक तकर कम्तिपूम्तिशकी कम्हियो सम्भव छलैक? हि एसगर ि भम्र-भम्र राम्ति कनैत रहैत

छलहुँ । बाद ि कहुना-कहुना ि‍िन के म्‍दलासा म्‍दयेलहुँ -- ईम्‍जम्‍नयम्‍रंग के पढ़ाई ि बड़ खचा अबैत छै । भऽ सकय जे आहा एम्‍ह डरे पाछु हम्‍ट गेल होई ।

आहा खेत बेम्‍च कऽ डोनेरन दऽ कऽ म्‍बाक्‍बूU के पॅ्राईवेट डेटल कॉलेज ि एडिम‍िरन करेलहुँ । साईत एम्‍ह दारे जे म्‍बाक्‍बूU बेटा आछिाय -बाप के बुढ़ारी ि परवम्‍रर करत । बेटी तऽ आनक घर चम्‍ल जायत यैह ने ? आहाक हाथे एहन दुराव सत्‍य पुछी तऽ बाबूजी हिरा भीतर सँ तोम्‍ड़ कऽ राम्‍ख देलकहिरा सोचय लेल म्‍बावर कऽ देलक जे एके िाय-बापक संतान बेटी-बेटा के लेल म्‍भन दृम्‍ष्ट कोण म्‍कंयैक? म्‍कंयैक िाय-बाप एखनहुँ सोचैत छम्‍थ जे बेटी लेल हुनकर दाम्‍यत्‍व ओकर म्‍बवाह करा देब बंद तक सीमित छम्‍न ; ि‍दा बेटा के पढ़ा-म्‍लखा कऽ योग्‍य बनायब । की बेटी बेटा जका िाय-बापक देखभाल नम्‍हं कऽ सकैछ वा करैछ ? तखन बेटा आ बेटी ि भावनाक एतेक पैघ अंतर म्‍कंयैक? खास कऽ आहाक हाथे तऽ बाबूजी हि कम्‍हयो कल्‍पनो ने केने रही । हि आहा के पॅ्रागम्‍तवादी बुझैत रही से म्‍कं सत्‍ये पुUम्‍स छल ? एतेक पम्‍ढ़यो-म्‍लख कऽ बाबूजी साईत आहा सोचबाक पॅ्रायास नम्‍हं केम्‍लयै जे आजुक एहन पड़ाईत म्‍जनगी ि एकटा गृहणी िित बम्‍न कऽ जीवन काटब कतेक दुष्‍कंर छैकपम्‍त भोरे ऑफीस जेता तऽ ि‍न्‍हाम्‍र साझ सँ पम्‍हने नम्‍हं घुिताहम्‍धया-पुता स्‍कूUल, कॉलेज,संगी-साथी ि बाझल रहत । एसकर घर के भीतर बंद एक एक पल कोना म्‍बतैत छै से हि कोना वणम्‍श कर ?

हिरा की करब बाबूजी यम्‍द भावनावर हिरा सँ म्‍कंछु अनगाम्‍ल म्‍लखा

गेल हो । आई जखन भावनाक बान्ह टूटल तऽ अपना संगे सभ दमित भड़ास के बहओने चल गेल । हरि ई आरय कथमपि नहिं जे हरि अपना उपर बीतल के उकेरि । ि भगवती सँ हरि एतबे िँगैत छथिन जे हरि सािज के सद्बुद्धि देथुन जे सभ संतान के एके नजरि सँ ताकय । एहि चिट्ठी के लिखबाक हिम्मित तऽ हरि आई कऽ लेलहुँ ; ि दा नहिं जानि एकरा डाक सँ पठेबाक हिम्मित कऽ सकब कि नहिं ?

आहंक।

म्द्दन धराबय तीन नाि

श्याि बाबूयाम्म श्याि निंद दास । भम्र ऑम्फस ि श्याि बाबूक नाि म्वख्यात। गूढ-सँ-गूढ सि स्याक चुटकी ि सि धिन बतबैत छलाह श्याि बाबू। तै तऽ उच्चाम्धकारी सभ सेहो हुनकर सलाह लेब नम्ह म्बसरैत छलाह। श्याि बाबू हि रा अपन छोट भाय जका िनैत छलाह। जखन हि नया ज्याईन केने रम्ह तऽ अंजान र हर ि अबुह बुझाईत रह ;ि दा श्याि बाबू सँ भेट होईते लागल जेना अपन लोकक बीच ि छीयुग-युग सँ पम्रम्चत। डेरा तकबा सँ लऽ कऽ म्हंग-हरम्द्द सभ टा जोगार केने रहम्थ ओ। एतबे नम्ह, रोज पुछम्थ जे कोनो तकलीफ तऽ नम्ह बुझाईतअम्छ ?

सेवा-म्नवृत भऽ श्याि बाबू अपन बनाओल ि कान ि रहऽ भागलपुर चम्ल गेलाह।एम्ह बेर भागलपुर जेबाक हि रा जखने िका भेटल हि म्ना ि य केलहुँ सवश्थि श्याि बाबू सँ भेट कैल जाय कतेक म्द्दन भऽ गेल भेटो भेलासेवाम्नवृम्त्त के बाद तऽ नम्हये। भागलपुर स्टेर न पर उतम्र म्रकर ा भंम्जयबैत रम्ह म्कं ता हुनकर एकि ात पुत पर नजम्र पड़ल। हि म्चकम्र कऽ ओकरा बजौम्लयैक। लग ि एला पर सभ सँ पम्हने श्याि बाबूक हाल-चाल बुझबाक पयास केलहुँ। ओ गम्भीर होईत उतर देलक --"ओना तऽ म्ाके छम्थ, ि दा म्द्दि ाग कने सनम्कं सन गेल छैन।" हि रा अचम्माभत होईत देम्ख ओ बाजल---"घर पर चलु; छोट सन बजारक काज कऽ कऽ हि यैह एलहुँ।" कहैत ओ स्कूटर स्टाटशकऽ कऽ आगू बम्ढ़ गेल। ई दुखद सि ाचार सुम्न िन भारी भऽ गेल ।

घर पर पहुँच कऽ श्याबिाबूक नोकर गेटे पर ठाढ़ भेट गेल। ई बड़ स्वाभिमतध्र आ नेने सँ हुनका ओम्हठााि काज करैत आम्बा रहल अम्छ। हि ओकरा सँ पुछम्लयै---"रा्! ाम्लक कोना छथुन?" ओ चोट्टम्हं अत्यंत गम्भीर होईत बाजल--"ालीक आब कहा रहलाह ।" पेाूर हरिा बैठकी ि एबाक ईराारा कऽ स्वयि भीतर चम्ल गेल। हरि ाथि घुिऽ लागल। लागल नम्ह जाम्न कतऽ आम्बा गेलहुँ अम्छ । ाडे-ाडे म्नाम्मशा। ताबत श्याबिाबूक कम्नया घर सँ बहरेलीह। हि हुनका कऽल जोम्र आभवादन कऽ हुनके सँ स्पष्ीकरण चाहलहुँ। ािदा, हाय रे हरि दुभाग्य ! ओ आओर जरल पर नून म्छटलम्ह--"ओना तऽ स्वस्थ छम्थ,ाादा अकान भऽ गेलाह अम्छ । " हरि ाथि आर बेसी चकराय लागल । लागल जेना हि गलत जगह आम्बा गेलहुँ अम्छ । या तऽ घरक सभ लोक हरिा सँ ासिखरी कऽ रहल अम्छ या सभ सनम्कं गेल अम्छ । तखने श्याबिाबू घर सँ बहरेलाह-- स्वस्थ, तंदुरस्त, ओहने ास्िकी, वैह स्वभाव। हरिा देम्खते भम्र पाज कऽ गम्सया लेलम्न। हरिो आँम्ख सँ नोर बहऽ लागल। पेाूर अपना के संयत करैत सभ टा बात बता देम्लयम्न आ हुनके सँ एकर कारण जानऽ चाहलहुँ। हुनकर ठोर पर म्चर-पम्रम्चत ास्िकी पसम्र गेलम्न। पेाूर छम्लया सुपारीक सरौता सँ ाहीन कतरा कटैत बजला--"ओ सभ केयो सत्ये बजैत अम्छ ।"

"सत्य कोना श्याबिाबू?!!" हि म्बाचम्ह ि टोकम्लयम्न।

एक चुटकी कतरा हरिा आगू बढ़ा ओ हरिा संयत करबाक पयास केलम्न। पेाूर हरि पशवाची नजम्र के अकानैत बजलाह--" ओ म्खस्सा तऽ सुननम्हं हेबैक जे आन्हर सभ एक टा हाथी के देम्ख कऽ ओकर स्वरपक कोना म्नन-म्नन व्याख्या केने छलैक। सैह अहु

ठाि छैक । ''पेÄर खखम्स कऽ भहरल स्वर ि आगू बजलाह---''हरि पुत आहा के कहलम्न जे हि सनम्कं गेल छी ; से अपना जगह पर ओहो सत्थे छम्थ। हि हुनकर नीक-अधलाह पर टोका-चाली करैत म्छयैन ; से हुनका पम्सन नम्हं। आब आहं कहु जे अधलाह पर हि म्नजबैत जी चुप्पो कोना रम्ह जाऊ ?बजा तऽ जाईते अम्छ । तै ओ हरि सनकाह बुझैत छम्थ। ''पुनः आगू बजलह--'' जहा तक राि्क पश छैक तऽ नोकरी करैत काल ि हिही ओकर वेतन आ सभ आवश्यकता के पुरा करैत छम्लयैक; से आब म्रटायर भेला पर नम्ह भऽ पबैत छै । तखन आहं कहु जे हि ओकरा लेल िरले सन म्छयैक ने?'' हि अवाक भेल एक टक सँ श्याि बाबू के देखैत आ हुनकर व्याख्या सुनैत रहलहुँ। ओ आगू बाजब रु्र केलम्न---''हरि पम्त तऽ पोता-पोतीक संग नव आशय ताम्कं लेलम्न आ बेटा-पुतोहु के हँ-ि-हँ मिलिबैत रहैत छम्थ। आब हरि संस्कॉर कहू वा आदम्त जे हि ई सभ नम्ह कऽ पबैत म्छ । तै ओ हरि अकान बुझैत छम्थ । '' कम्ह कऽ श्याि बाबू म्खड़की सँ बाहर रु्न्याकार म्दस देखऽ लगलाह। पेÄर एक टा दीघश्मशास छोड़ैत बजलाह--''म्दन धराबय, तीन नाि।'' सुन पम्ड़ गेल चेहरा पर एकटा ुिस्कॉ अनबाक पयास करऽ लगलाह श्याि बाबूआमा के छाऊर सँ झंपबाक एकटा थाकल पयासम्कंवा जीवनक दंर सहबाक जीम्नजम्बषा।

।

घुमि आऊ मिता

आओर मिता अहा घुमि कंऽ नहि एलहुँ । व्याकुल, भावदग्ध िन संगे पथड़ायल आँखि पथ हेरैत रहि गेल । िदा अहा के नहि एबाकं छल;से अहा नहि एलहुँ । मदागि कौंन िरोड़ैत आछ---'बुमड़बकं कंहा के! ओ भला मकंयैकं एतहु! मकंयैकं पागल बमा रहल छै ओकंरा पाछा ? तोहरा सँ ओकंरा कौंन मरस्ता; कौंन संबंध? दु पल के लेल भेट मकं भेलहु; अपन आधकाँर जािबऽ लगलै ओकंरा पर?' िन कंहैत आछ---'कौंन मरस्ता से तऽ नहि जामा; िदा ओ घुमि कंऽ एकं मदन आओत अवश्ये।' मिता अहा अपना िहि सँ भने कौंनो आशासन नहि देलहुँ; िदा अही कंहु मिता हिर आँखि अहाकं आँखि के िकं मातिण नहि देने छल? मकं अहा झुकंल पलकं सँ िन स्वीकृमा नहि देने छल हुँ? तखन पेपर अहा घुमि कंऽ मकंयैकं नहि एलहुँ मिता? हिर आँखि समदखन स्टेरन, बस-स्टैडकं भीड़ ि आहं के तकैत रहैत आछ जे कंखनो,कंतहु-ने-कंतहु भेटाईये जैब आ मबहुँसैत कंहब, 'हि आमा गेलहु रजत!'जखन-जखन हि शिजीमा रेन पक़ंडबाकं लेल घर सँ माकंलैत मछ तऽ लगैत आछ अहा स्टेरन पर पेपर भेटायब आ हँमस कंऽ बाजब--''हाय रजत! कौंना मछ अहा? केहन संयोग जे हि सभ दोबारा स्टेरने पर सेहो गाि जाईत कौंल भेटलहुँ ।'' हि कंमहतहुँ- '' हि तऽ माके छी। आहा अपन वुपरल बताऊ? एतेकं मदन बाद भेट भेल। हि तऽ कंमहया सँ आहाकं बाट जोमह रहल मछ।'' आहा चट्ट दऽ उतर मदतहुँ --''अरे वाह! ने अपन पता बतेलहुँ; ने हिर पता लेलहुँ, पेपर भेट हेबो कंरैत तऽ कौंना?'' पेपर हि सभ रेन ि चमढ़

जयतहुँ। ािदा म्नारा अहा नम्हये एलहुँ।

हिरा सभकं मिलन केहन संयोग छल! आहा आ आहाकं म्पाताजी म्नाचुलकाँ बथशपर बैसल रही। ओ बथशहिर छल। तै हि अपन बथशलग आम्बा पुछने रम्हि तऽ आहाकं म्पाताजी बाजल रहम्थ, 'ई बथशआह के होयत। हिर दुनू उपरकाँ बथशआछ। आहा के कंष नम्हि हुअय तऽ हि दुनू एम्हि पर बैसल रम्हि।' उतर ि स्पीकृम्त सूचकं ाड़ी डोलेबाकं आतम्रताा हि म्कंछु नम्हि बाम्ज सकंल रम्हि। आहा कं अलौम्ककंकं सुंदरता हिरा ाग्ध केलकं रप-ाधुरीज़ेना आहा काँनो दोसर लोकं सँ पृथ्वी पर उतरल होई ! काँर! म्कं हि रृंगार रसकं कंम्बा रम्हतहुँ तऽ काँव्य-घट के अहाकं सौदयशाधुरी सँ बूंद-बूंद भम्र म्दतहुँ। काँर! म्कं हि काँनो म्चतेरा होईतहुँ तऽ एम्हि पॅरोरणा-पॅराम्ताूिती के फलकं पर साकाँर उकेम्र म्दतहुँ। हि कंम्बा-म्चतकाँर भने नम्हि; भावुकं-हृदयकं स्पााी तऽ अवश्ये छी।हिर म्नारीह आँम्ख जे कंम्बाता हृदय पर कंम्बाता अंम्कंत केलकं; म्भम्स्तष्कं ि जे म्चत उकेरलकं ओकंर बरोबम्र काँनो कंम्बा-म्चतकाँर म्कं कंम्हयो कंऽ सकैत आछ?

आहा के राईत ािन हेबे कंरत म्नारा, जे जखन बातकं म्सलम्सला चम्ल परलै तऽ हि अहाकं नाि पुछने रम्हि। अहाके म्कंछु बजबा सँ पम्हने अहाकं म्पाताजी उतर देलम्न--"शेत म्नारा" । "सुंदर! अतीब सुंदर! शेत म्नारा याम्न पुम्णाशीकं धवल ईजोम्रया"-- हिरा ािहि सँ बहरायल रहय । ओम्हि पर आहा बाजल रम्हि-- "ईजोम्रयाकं संगम्हि अन्हम्रयाकं ारुआत सेहो ।" एम्हि सँ पम्हने म्कं हि एकंर दारशााकं व्याख्या सुम्न पम्बतहुँ, आहाकं म्पाताजी टोकंने

रहथि, -''मारा! चायकं थरिरि मकॉल। एकं-एकं कंप घरकं गािगशि चाय भऽ जाय''। आहा एकं कंप चाय हरिो मदस बढ़ेने रहि। जखन हि िड़ी डोला कंऽ लेबा सँ िना केलहुँ तऽ आहा कंटाक कंयने रहि --''मकंयैकं, हरिा हाथकं चाय नहि मायब कोँ?'' िदा, मारा आहा चाय अपना हाथ सँ कंहा देने रहि हरिा। चाय के कंप हरिा मदस आहाकं माताजी बढ़ेने रहथि। हि चायकं कंप मना कोँनो पॅरामवाद के लऽ कंऽ मबऽ लागल रहि; िदा बेजिा ।आहाकं आँख जेना हरिा आँख सँ कंहने रहै--'हि अपन हाथ सँ नहि दऽ सकंलहुँ एहि ि हरि कोँन दोष? बीच ि बाधा तऽ हरि माताजी बना रहलाह आछ।'

सत्ये हि अपन सुध-बुध मसमर गेल रहि मारा। हरि कोँन आहाकं पूजाकं घंटी सन टुन-टुन आवाज सुनबाकं लेल व्यग छल। िन होईत छल आहा संगे असीि कोँल धमर बात कंरैत रहि। िदा आहाकं माताजी मच ि आम जाथि। हुनके सँ पता चलल जे आहा मदली मशबदालय ि साहत्य के छाता छी; साहत्यकं लेखन ि सेहो आभरच आछ। आहाकं माताजी बैकं आधकोँरी छथि आ गाि छुट्टी ि गाि जा रहल छी। हरिा सेहो पटना तकं जयबाकं आछ से जान आहाकं माताजी कंहने रहथि, 'चलू बढ़िआ भेल ।गप-रप कंरैत हरिा सभकं सफर आसानी सँ कंट जायत।'' तकंरा बाद मकंछुये कोँल ि आहाकं माताजी ऊंघाय लागल रहथि । आहा सँ बात कंरबाकं यैह उपयुतक सिय भऽ सकैछ, से बुझ हि पुछने रहि-''आहा के बोतल ि पान आछ मकं?''तखने आहाकं माताजी हड़-बड़ाकंऽ बाजल रहथि- ''हँ!हँ!यैह मलयऽ।'' जाबत आहा मकंछु बजतहुँ; बोतल हरिा हाथ ि धरा देलन। हरि ईहो पॅरायत बेकोँरे चल गेल

छल। हि िने-िन गुम्हम्र कंऽ रम्ह गेल रम्ह अपन हत-भाग्य पर आ आहाकं म्पाताजीकं दखलंदाजी पर। ुदा कंईये म्कं सकैत छलहुँ?

राम्त ि हरि िन बेचैने रहल। आहा तऽ उपरकॉं बथशपर म्नार् म्चंत सुतल छलहुँ; ुदा हरि िन आहाकं सौदयश्पान लेल जागले रम्ह गेल। हि टॉयलेट जेबाकं बहाना सँ ठाढ़ भऽ कंऽ आहाकं आनंद-सौदयशके अपलकं म्नहारैत रहलहुँक्ॉंनो ूम्नाश्म ल्पी जेना बड़ िनोयोग सँ स्प्रेत संगिरि के ताराम्स-तराम्स कंऽ ई आकॉंर देने हो यथा नाि, तथा र पओहने पूम्णशीकं धवल चाद सन ुख़डागुलाबकं पंखुरी सन ठोरक़ॉं-कंिन सन भौह अंग-प्रॅात्यंग सुघड़ज़ेना एकं-एकं टा कंम्बता । चेहरा पर लटम्कं रहल अिड़ लट जेना कंम्ह रहल हो-'हि एम्ह ठाि नम्ह रहबई तऽ आहाकं नजम्र नम्ह लामा जयतै?'' तखने म्नारा आहा कंरोट पेᐟरने रम्ह। अपन चोम्र पक़ंडल जेबाकं डऽरे हि टॉयलेट म्दस चम्ल गेल रम्ह।

भोर ि रेन कंखन पटना पहुँम्च गेल से बुम्झयो ने पौलहुँ ; नम्ह जम्न पौलहुँ जे हिरा सभकं मिलन एतेकं कम्णकं होयत। रेन सँ उतम्र कंऽ जयबा कॉंल आहा घुमि-घुमि कंऽ कंतेकं हिरा म्दस तकैत रहलहुँपेᐟर भीड़ ि कंतहु गुमि गेलहुँ। म्नारा हि एकंनो ओम्ह भीड़ सभ ि आहा के ताम्कं रहल म्छःनम्ह जाम्न कंम्हया भेटा जायब आहा।

अह्हेर

बड़ एकांत्मता बुझा रहल आछ हमरा सयिं आ एक्ह िनि मे---दुनू पड़ायल जाईत -- कौनो-कौनो स्टेशन पर क्बालमैत -- नि-नि लोकं सँ पक्रचय आ पुरान सँ संग छुटब --तथाक्प ने क्मलनकं खुशी ; ने वियोगकं दुःख----चरैि.क्त चरैिक्त ।

टुगर हम क़ंकां -कांकीकं कृपा पर जीबैत भैस-बकंरी चरबैत । मोने आछ हमरा जे हम, जीबछा, मलहा सभ केयो टाईल-पुल्ली खेलबा मे एतेकं ने मस्त रही जे महीस के हाकंबो क्बासक्र गेलहुँ । सभटा महीस भोकंनी साहुकं खेसारी खेत मे हुक्ल गेलै । एके-दू बेर तऽ मुँह मारने हेतै महीस सभ क्कं कंतऽ ने कंतऽ सँ दनदनाईत भोकंनी साहु जुक्म गेलै़तामसे-क्पते माहुर भेलक्बाक्खन-क्बाक्खन के गाक्र पढ़ैत । सभकं महीस तऽ हाक्कं कंऽ लईये गेलै ओ ; भोलबा सेहो पक़ंडा गेल । सभ छौड़ा सभ जेम्हरे पओलकं तेम्हरे जान बचा कंऽ पड़ायल । डरे हमहुँ बेछोहे प़ड़ेलहुँ । डर भोकंनी बाबू सँ बेसी तऽ कंकां आ कांकीकं छल़दुनू बात-बात पर कौना अिमौगक्त कंऽ मारैत आछ लाते-मुके, जे पओलकं ताक्ह लऽ कंऽमरबा-जीबाकं कौनो ठेकांन ने ।

हम रेलि कांते-कांत पड़ायल जाईत रही क्कं लागल केयो पाछु सँ हमर आँगी पकंक्ड़ लेलकं डरे हमर होश गुम्म भऽ गेल अिमर सन भऽ गेलहुँ । बफाक्ड़ कंटैत हम कंहुना एक्ह चागुर सँ अपना के छो़ड़ेबाकं अंक्तम प्रायास कंरैत आगु क्दस जोर लगबैत रहलहुँ । पे ꯀर िम्म् दऽ मुँहे भरे खसलहुँ । देह सँ माक्ट झाड़ैत हम पाछा

तकंलहुँक़ेयो नक्हं छल । जान मे जान आयल । हमर आँगी क्सगनलकं तार मे ओझड़ा गेल छल । दूर तकं देखलहुँक़ेयो एम्हर नक्हं आबा रहल छल । डर कंछु कंम भेल । ताबते कौनो नि क्सगनल पर आबा कंऽ ठाढ़ भेल । नुकां कंऽ हम ओक्ह मे चक्ढ़ गेलहुँ डरे एकं कौन मे दुबकंल ठाढ़ रही । एकंटा आदमी कंने कांत सहक्ट कंऽ हमरा बैस जेबाकं ईसारा केलकं । असोथक्कंत तऽ भईये गेल रही ; बैक्सते आँक्ख लावा गेल । आँक्ख खुजल तऽ सौसे क्डब्बा खाली छलैकं । ड़िफ़डा कंऽ नि सँ नीचा उतरलहुँ । लोकंकं एक्ह अजश भीड़ मे एकंहुटा चेहरा क्चह्हार नक्हंज़गह अनक्चह्हार; लोकं अनक्चह्हार अनभुआर हम आब कंतऽ जायब ?क़ी कंरब ?? बुकौर लागऽ लागल हमरा डरे जाघ थरथराय लागल - 'नक्हं जाक्न कौन दुरमक्नाया घेरने छल जे गाम सँ पड़ा गेलहुँग़ाम पर माक्रये खैतौ ने ! पक्हनहुँ कं कौनो कंम्म माक्र खेने छी ।क़ी क्नागक्डतै माक्र खा कंऽ ? देह मे भूर तऽ नक्हं ने भऽ जैतै ? मक्र तऽ ने जैतौ ? एक्ह परदेश मे तऽ आब क्नालक्ट कंऽ मुईनाईये क्नखल आछ । बौड़ल लोकं अपन देश कंहा आपस जा पबैत आछ़ओकंरा सभ के सुख-सराि लोकं ओक्हना कंऽ दैत छै । ' डरे हदास उड़ऽ लागल जोर-जोर सँ क्हचुकंऽ लागल रही ।

बुझायल जे केयो हमरा कांह्ह पर हाथ रखलकं चौक्कं कंऽ तकंलहुँ । एकंटा अियिसु पुरर हमर कंनबाकं कांरण जानऽ चाक्ह रहल छल । ओकंर स्नेह सँ हमर कंरेजा फाक्ट गेल मोन भेल भक्र ईच्छा कांनी । हम कंछु ने बाक्ज सकंल रही । ओ हमरा स्टेशनकं खाली बेच पर बैसा कंऽ मारते रास कंचड़ी-मुड़ही-घुघनी कींक्न कंऽ खेबा हेतु देलकं । भुख सँ तऽ अँतरी बैसल जाईत रहैहम खाय लगलहुँ

। कंने सुभ्यस्त भेलहुँ तऽ ओ पोला कंऽ सभ बात पुछय लागल । पक्हने तऽ हमरा कंछु नक्हं बाजल भेल खाली क्हचुकैत रहलहुँ । परदेश मे एकंटा अनक्वहार िरा एहन स्नेह पओला सँ हम ओकंर कृतग्य भऽ गेल रही । हम ओकंरा सभ बात बता देक्लयै आ कंहक्लयै जे ओ हमरा गाम बला िन पर बैसा क्दअय । ओ हमरा बड़ बोल-भरोस देलकं आ कंहलकं जे आब आई तऽ कौनो िन नक्हं छैकं ; कांक्ल िन ि़डा देत । ता राक्त भक्र लै अपना बासा पर लऽ गेल । मुदा ओ हमरा गामकं िन नक्हं ि़डओलकं क्नत न ि-न ि बहाना । हमरे तुक्रया ओकंरो बेटा रहै । खेलाईत-खाईत हमरो क्दन बीतऽ लागलग़ामकं सुरता वि रे-वि रे कंम होईत गेल ।

ओकंरा सभकं हमरा प्राक्त स्नेह ि्रमशहे कंम्म होईत गेलैकंआब हमरा उपर घरकं कांजकं संगक्हं माल-जाल , खेत-पथार, बाड़ी-झाड़ी सभ टा क्जम्मेदारी छल़कांन ि्रक्रयेबाकं तकं के पलखक्त नक्हंताक्ह पर गाक्र-गंजन सेहो हुअय लागल । आक्जर भऽ कंऽ एकं क्दन क्सह्हा साहेब सँगे ओक्ह ठाम सँ पड़ा गेलहुँ ।

क्सह्हा साहेब हमरा भोरे-भोर सभ क्दन भेट भऽ जाक्थ ओ टहलय क्नकंलैत छलाह आ हम मक्लकांईनकं पूजा लेल पू्रल तोड़य क्नकंलैत छलहुँ । आपस मे देक्ख कंऽ मुक्स्कंयेनाई , पे्रर प्राणाम आ तकंरा बाद बढ़ैत गेल अपनत्व ि । क्सह्हा साहेब कौनो पैघ ऑफीसर रहक्थ । हमरा अपन माय-बाप के मुँह तकं मोन नक्हं लोकं कंहई अलच्छा जनक्मते माय-बाप के खा गेलई । मुदा क्सह्हा साहेब मे हम अपन माय-बापकं छाह साफ देखैत छलहुँ । हम हुनकां अपन देिता समान बुझैत रहलहुँ आ ओ हमरा अपन संतान सँ बक्ढ कंऽ मानैत छलाह

। अपने जतऽ-जतऽ जाईत रहलाह हमरा संगे रखलक । एकं दिन अनचोके मे हुनकौ साहचयटहमरा सभ के छुव्ट गेल आब ओ एिह दुिनया मे नर्ह रहलाह ।

हम आब हुनकंर बेटाकं कांरखाना मे कांज कंरैत छी । कांरखाना के कांज सँ जयनगर जा रहल छी । िनकं खिड़की सँ पाछु पड़ायल जाईत खेत-पथार, कंलम-गाछी, बा़ि-बोन, ईनार-पोखिर अचानकं हमरा मोन मे हमर बाल्यकांल एकंटा छाह जकाँ पसिर गेल आछ । िन एके बेर िकां संग र ककं जाईत आछ । याती सभ एम्हर-ओम्हर तकैत एकं दोसरा सँ िन र कंबाकं कांरण पुछ रहल आछ । ककंछु गोटे तऽ कांरणकं खोज मे िन सँ नीचा उतिर गेल आछ । हमरो मोन उिबया गेल ि ई कंहु जे रेलकं पटरी कांतकं मनभािन दृश्य हमरो िन सँ नीचा उतरबा लेल वििश कंऽ देलकं। लोकं बजैत छै जे माओिदी सभ िन के पटरी उड़ा देने छैआब िन आगू नर्ह जा पाओत । हम चार कांत मुड़ी घुमा कं चर -िकत लैत छी - सामने पुल पर बोडटलागल छैकं -- कंमला पुल सं० ७ । हमर िदमाग पर जोर पड़ल हमरो गामकं पुल के तऽ लोकं साते नम्बर पुल कंहै । ओहु ठाम एकंटा एहने झमटगर पीपड़ के गाछ छलै । हम तजबीज कंरैत छी । यादकं आर कौनो िचह्न नर्ह बुझाईत आछ । मुदा ई कंमला नदी जकंरा लोकं मोईन कंहैत छलैकं आ एकंर भीड़ पड़हकं ई पीपड़कं गाछ !? हम िन सँ अपन बैग लऽ कंऽ नीचा उतिर जाईत छी ।

रस्ता कांत मे गुम-सुम ठाढ़ हम आखयास कंऽ रहल छी समय कंतेकं जल्दी बदिल जाईत छैकं मोईनकं कांत मे पीपड़कं गाछ तर बदिरया

के चाहकं दोकांऩओकंर दस पैसी नागीन कासिमट की सुअदगर ! साझ-कानसर भक गामकं लोकं जुटै एक्ह दोकांन पऱगाम-घर, देश-दुकया, खेती-पथारी सभ टा गपप होई एक्ह ठाम । हमरो कंकां घर मे कंतबो चाह पीने होऊ जाबत भोर-साझ एतुकां चाह नक्हं कांबैत छल ताबे चैने नक्हं क़ांकी भने कंतबो अपन कंपाड़ नोचौ । हमरा मोने आछ जे एकं बेर िनकं सीस लोक्ढ़ कंऽ ओक्ह पाई सँ चाह काबैत रही की कंतऽ ने कंतऽ सँ कंकां आका गेल रहै आ काना कांछु पुछने तेहन घरमेच्चा मारने रहै जे गाल पर कलला-मशा पक्ड़ गेल रहै । वालास तऽ दुर पेमकां कंऽ चूड़-चूड़ भऽ गेल रहै । लोकं सभ कंते दुर् छीः केने रहै कंकां के । ई मोईनो कंतेकं चौड़गर रहै ताक्ह कदन । की मजा अबै पीपड़कं पुमनगी पर चक्ढ़ कंऽ पाका मे िमदई मे । कंते-कंते कांल हम डुब्बी मारने रक्ह जाई पाका मे एके सुर कांया मे आि मोईन के पार कंऽ जाई । देखनाहर अचकाभत रक्ह जाई । मोईनकं ओक्ह कंछाड़ पर कंतेकं रास जामुनकं गाछ रहैख़ाईत-खाईत अघा जाई केयो रोकं-टोकं केनहार नक्हं । खायल भऽ जाय तऽ जामुनकं डाक तोक्ड़ दातमका कंरब़ सभ चेह्ह मेटल । कंतेकं मजा अबैत छलै ! एखनो मोने आछ मोकंना जे महेशकं बाक्ड़ सँ केरा घौड़ चोरा कंऽ कांव्ट अनने रहै आ सभ काक्ल कंऽ नहकरकं कंछेड़ मे खावि खुका कंऽ ओकंरा गाड़ने रही । झलफल अह्हार होईते सभ ओक्ह ठाम जमा होई आ भक ईच्छा केरा खाई ।

हम बाह्ह कास नजक दौड़बैत छी । साझकं मैलछौह अऩहार पसरल जा रहल आछ । चरबाहा, घासबाली, गोबर-गोईठा काछयबाली सभ अपन-अपन घर आपस भऽ रहल आछ । रस्ता कांत मे ठाढ़ हम कातल समय के अपन मुट्ठी मे बंद कंरबाकं अंतहीन प्रायास कंऽ

रहल छी । बगल सँ एनहार - गेनहार कंछु अचकभत सन हमर मुँह देख आगू बढ़ जाईत आछ ।

- 'बड़ी कांल सँ आहा के एतऽ ठाढ़ देख रहल छी। कंतऽ जेबई अपने? '

- ' एक गाम मे कंतऽ जेबई से तऽ हमरा अपनो नकं बुझल आछ । बस एतबे टा मोन आछ जे साईत हम कंकयो एक गामकं िसी रही । बाबूकं नाम तऽ नकं मोन आछ कांरण हम हुनकंर मुँहो नकं देखने छलहुँ । हँ हमर कंकां के नाम बुिन छल । '

- 'कौन बुिन? '

- 'बुिन मंडल । '

- 'तोहर नाम मदना तऽ ने छह ? '
- 'हँ हमर नाम मदन आछ । '

सुकते ओ आदमी हमरा भक पाज कंऽ पकंव्ड़ लेलकं - ' मदना रौ ! कंतऽ छलैहै एतेकं बरख िक ? हमरा सभ के तऽ भेल जे कंतौ मक-खका गेलै । हमरा नकं कहलै?हम जीबछा !तोहर लंगोटया यार !! ' पे।ऽर हमरा माथ सँ पैर तकं कघारैत बाजल- 'तो तऽ साहेब भऽ गेलै हमरा आऊर तऽ गाम मे ओकना के ओकना---दुकया-जहानकं कफरेसानी !!! खैर छोड़ ई बात सभ । ई कंह जे एतेकं कदन कंहा पतनुकांन लेने छलैहै ? बुकडबकं कंहा के ! अहुना केयो

गाम बिसरैत आछ ? ' पेIY र ओहि ठाम एकंत लोकं सभ के हमर परिचय दैत कंहलकै - ' कंकां एकंरा नहिं चिन्हलियै ! ई अपन मदना छी ! अरे ! दक्छिनबाड़ टोल मे जे बुनि मंडल छल ओकंरे भातिज हम सभ तऽ संगे उठी -बैसी , खाई-खेलाई । ' लोकंकं आह्भग्यता देखैत बाजल - 'अरे ! तो सभ की जानऽ गेलही एकंरा बुनि मंडल के मरलो तऽ जमना बीति गेलैआ ईहो मदना तऽ गोड़ चालीस बरखकं बाद गाम आयल हैत । ' ओ हमरा जनाबऽ लागल- 'तोहर कंकां-कांकी दुनू आह्हर भऽ कंऽ मुईलउ अंतकांल मे केयो एकं घोट पानि तकं ने देबऽ बला। संतान तऽ भगानि देबे नहिं केलखिन । डीह पर ओहिना जंगल-झाड़ जनमलैपुतकं डीह पर केयो कियैकं जायत ?'

लाठी टेकंने एकंटा वृद्ध भीड़ के चीड़ कंऽ बीच मे आयल । 'कंकां एकंरा नहिं चिन्हलियै ?ई बुनि मंडलकं भातीज मदना थीकं जे अहीकं मारिकं डरे महीस छोड़ कंऽ जे पड़ायल से आई एते बरिख के बाद उपर भेलै । ' जीबछा कंहने रहै ।

'अच्छा ई मदना छी ! एकंदमे बदलि गेल ! कंतऽ छलह हौ एतेकं दिन? कोना मोन पड़लह गाम -घर एतेकं युगकं बाद? '
हम गुम्मे रहलहुँ ।

'कंकां ई मदना नान्हिटा गलती केलकं जे एकंर महीस आहाकं खेत चरि गेल ताहि लेल एकंरा चालीस बरखकं निबास भोगय पड़लैकं आ ई नक्सलबादी अताई सभ जे एहन - एहन पैघ जुलुम कंरैत आछ तकंरा देखऽ बला केयो नहिं ! सत्ये अन्हेर भऽ रहल आछ एहि

कंलयुग मे । ' कंव्ह कंऽ ओ आकांश व्दस तकंलकं । पेध्र हमर बाव्ह पकंव्ड़ कंऽ कंहलकं - 'चल यार घर पर बैक्स कंऽ दुनू दोस्त भव्र मन बव्तायायब । ' लोकंकं हुजूम हमरा पाछा-पाछा चव्ल रहल छल ।

सीिन

भीड़ सेहो अपना सभ मदसक पैसेजर रेन िनम्हं हुअय से अन्सोहात सन लागत. आईयो रेन ि कसि-कस्सा भीड़ छलई....िटरा िटरी से अलगे. जे कहुना भीतर रेनक मडब्बा ि पैसबा ि सफल भ' गेल छल ओ एम्ह िनसा ि जेना पूरा रेन ओकरे सामाज्य हुअय आ आन केयो भीतर नम्हं पैस' पाबय. आ जे बाहर से भीतर कहुना पैसबा लेल रडधुमिस केने. िदा रेन के एम्ह सभ सौ कोन दरकार.....ओ त' मायत स्टेरन सभ पर रकैत सीटी बजबैत सरपट भागल जा रहल छल.

भीतर मखड़की लग बैसल एकटा तीस- पैतीस सालक युवक बाहरक एक एक टा दृश्य देमख-देमख क' माभोर भ' रहल छल. एक एक टा दृश्य जेना ओकर आहाद के पामख लगा देने हो. बाबू ओम्हर देमखयौ ओ गाछ-बृक कोना सरपट पडायल जा रहल छै......हे ओम्हर देमखयौ भैस पर ओ छौड़ा कोना मचैन सुतल छै आ भैस चमर रहल छै ... ...हे ओम्हर देमखयौ ओई कात ि आसिन टुम्ट क' कोना धरती पर खसल छै . हे ओम्हर देमखयौ .... घसबाम्हन सभ िथ पर मछटा लेने कोना एक पमतयानी सँ ठाढ़ छै.... ओम्हर देमखयौ खेत ि फमसल कोना ओंघरा रहल छई. ... .!!! ओकर कात ि बैसल ओकर मपता ओकर सभ बात पर िमस्कया क' देखमथ आ ओकर पीठ थप-थपा क' ओकर उत्साहवधश करमथ. रेन ि बैसल मकवा ठाढ़ो लोक ओकरा देमख-देमख िमस्कया रहल छल. भीडक धका-िकी कि भ' गेल छलै .

िदा सािने के सीट पर बैसल मसिरजी के असहाज भेल जा रहल छलम्. बड़ी काल धरी ओ अपन पोथी ि अपन खीझ नुकबैत

रहलाह. जखन ओही युवक के कुतूहल आर बढ़ले जा रहल छलई त' हुनका अपन िनक भड़ास रोकब कम्छन भ' गेलम्न - 'आहा म्हनकर ईलाज कोनो नीक डाक्टर स' म्कयैक ने करबैत म्छयम्न ? सुम्चत ईलाज भेला स' ई अवश्ये म्नके भ' जेता.'

' हि म्हनकर ईलाजे करा क' म्दल्ली स' घर घुिल छी.'

'तईयो......!!?'

'दरअसल म्हनका नव आंम्ख जे भेटलम्न है तै देम्ख-देम्ख क' म्वभोर भ' रहल छम्थ.'

मिसरजी के हलक सुख' लगलम्न. जल्दी-जल्दी सेप घोट' लगला. ऎह स' एको रब्द नम्हं बहरेलम्न. अपराध-बोध स' ऎह नुकबैत फेर स' पोथी के पना पलट' लगला.

उज़डल खोता

गोनि कोना भ्मासरत ओ भ्मदन कोना भ्मासरत असक, अवाह बापक बेवस , िलायल चेहरा ; ियक भभ्मर भ्मदनक कुटाऊन-भ्मासाऊन कऽ कऽ आनल भ्मकछु िट्ठी चाऊर भ्मकवा आटा जाभ्मह सँ पूरा पभ्मरवारक पेट भरवाक असफल पयास ; छोट गदेल भाय-बहीनक भूखल, कृर काय, अधभ्मशग्ग ररीर। कोना भ्मासरत ओ भ्मदलली एबा काल ियक कनैत-कनैत क़ंडजोनी सन भेल आँभ्मख सँ बहैत नोर के नुआँक खूंट सँ बेर-बेर पोछब, बापक बेचारगी भरल सुन चेहरा, भाय-बभ्महनक वुम्तूहल।

ओकरा सभ पर भ्मापतीक पहाड़ तऽ ओभ्मह भ्मदन टुभ्मट पड़लै जभ्महया नवका जोड़ल देवाल लऽ दऽ कऽ ओकर बापक देह पर खभ्मस पड़लै । जान तऽ कहुना बाभ्मच गेलैक ; िदा दुनू पैर बेकाि भऽ गेलैक । आब ओ भभ्मर भ्मदन ओसारा पर पड़ल टुकुर-टुकुर तकैत रहैत छैक़ कैयो भ्मक सकैत छै । िईयो भ्मक करतै ? भभ्मर भ्मदन लोकक अंगने-अंगने कुटाऊन- भ्मासाऊन करैत छै ; तखन जा कऽ केयो आध सेर - एक सेर अनाज दैत छैक । ओकरे कुड़ी जका बाभ्मट दैत छैक सभ पाणीक बीच िक़ंहुना पाण रक्ा तऽ करभ्मह पड़तै ।

कहल जाईत छैक जेठ संतान सिय आ पभ्मरभ्मस्थभ्मत के कारण सिय सँ पभ्महनभ्मह वयस्कं भऽ जायल करैत छैक । से गोनि पर चभ्मरताथश भेलै । एक भ्मदन ओ िय लग सहभ्मट कऽ बैभ्मस कऽ डराईत-डराईत कहलकै - ' िय गे, एगो बात कभ्महयौ?'

'की ?' ोिय हाथ पर िडुआक रोटी ठोकैत पुछलकै ।

' अपना गािक भोलवा, बदमरया, मबलसा सभ मदलली जाई हईक़ंिाई लै । हरिो िािन होईहै हिहुँ जयतौ । ओ सभ कहलक जे काज तुरते भेट जेतै। दू पाई कर्ििईतौ तऽ घरक हालतो सुधमरतै ।' -कम्हि कऽ गोनिा उतरक पमतका िि ोियक िुँहि ममहारऽ लगलै। ोियक हाथक रोटी हाथे ि रम्हि गेलै । अकचकाईत ओ कहलकै -'तो एखन कोन जोकरक भेलै जे कििाई लेल जेबै ? तोरा के नोकरी रखतौ एखन ?'

'हि ओकरा सभ सँ पम्हिने पुमछ लेमलयै । सभ कहलक जे नोकरी भेटई ि कोनो भागठ नम्हि छै । रुर ि काज मसखबाक सयि ि कि पाई दैत छैक । बाद ि काज मसख जाऊ तऽ िाट दरिाहा भेटैत छैक । तो बस कतहु सँ हिरिा मकराया लेल चामर सय र पैया जोगाड़ कऽ दे।'

कोन ोियि चाहतै जे ओकर संतान ओकरा सँ दूर जाय ; ताहु ि खेलै-खाई के उम ि। िदा पमरमस्थमतक आगु ि गोनिा ोियि के झुकम्हि पड़लै। मिलकामि कतेक दँत-मखषि केलाक बाद आना-दर सूम्दि पर साढ़े चामर सय र पैया देने छलमखन ओकरा । चामर सय र पैया तऽ मकराये के भेलै । परदेर जाई छै; तऽ मकछु र पैया तऽ संगो ि रहक चाही बेर-िासीबत लेल ।

मदलली ि गोनिा के एकटा ज़डी-युमाट ि काज भेटलै। पम्हिने तऽ ओकरा ज़डीक काज सीखऽ पड़तै । खेनाई-पीनाई आ उपर सँ डेढ़

सय रपैया सप्ताह िभेटतै । डेढ़ो सय सप्ताम्हक मका कि छैक !छः सय रपैया म्हिना के भेलै । आँगुर पर म्हसाब लगेलक गोनिा । एके म्हिना िम्लकाम्न के सून्द समहत पाई आपस कऽ देतै । तकरा बाद िय के अँगने-अँगने काज केनाई ओ छोड़ा देत । जखन म्हिने -म्हिने िय के मिाआडश भेटतै ; तऽ कतेक खुर हेतै िय-बाबू ! जखन काज सीख जेतै आ बेसी पाई भेटऽ लगतै तऽ ओ अपना लेल एकटा मजंस-पैट आ जूता कीनत । बड़ सौख छई एकर । िय के लेल साड़ी-साया-बलाउज, बाबू लेल धोआ धोती आ वुग्र ता आओर सभ भाय-बम्हन के लेल रंग-मबरंगक कपड़ा। भाय-बम्हन सभ के ओ स्कूल्ल िनाि मलखबा देत । अपने नम्ह पढ़लक ताम्ह सँ कीभाय-बम्हन पम्ढ़-म्लम्ख कऽ बड़का बनै से सपना छै ओकर ।

भम्वष्यक रंगीन सपना बुनैत गोनिा खूब िन सँ काज म्सखऽ लागल । ओस्ताद सेहो बड़ िनैत छै छौड़ा वे ग्र। की मचकंन कसीदा काढ़ैत छैज़ेना पम्हनम्ह सँ म्सखने हो । ओम्ह म्दन ओस्ताद खुर भऽ कऽ चाय िंगेलाक बाद बाँचल खुदरा पाई ओकरे लग छोम्ड़ देने छलै। पेग्रर ओकर िथ हँसोम्थ कऽ कहने छलई ओ- 'ई एक म्दन हिरो ओस्ताद मनकलत । ' िम्लको बड़ िनैत छई छौड़ा के ।

ओम्ह म्दन गोनिा मकछु बुम्झ पम्बतै ओम्ह सँ पम्हनम्ह ओकर खोता उजम्ड़ गेलै। अवाक भऽ ओ देखैत रम्ह गेल छल ओकर देवता सिनि िम्लक के पुम्लस हथक़ंडी लगौने नेने जा रहल छलै। पेग्रर गोनिा समहत सभ काज म्सखनाहर सभ बच्चा के दोसर जीप ि बैसा देल गेलै। लोकक गप्प सँ गोनिा के बुझना गेलै जे बाल-

ि जिदूरी करेबा के जुशि ि म्लिक के पुम्लिस पकम्ड़ लेलकै । आब गोनि ि सम्हित सभ बच्चा के आपस अपन-अपन गाि पठा देल जेतै जतऽ ओकरा सभ के स्कूल ि नाि म्लिखा कऽ पढ़ाई के व्यवस्था कैल जेतै ।

बदहवार भऽ गेल छल गोनि ि । ओकर सपनाक म्हर रा चूर-चूर भऽ कऽ ओकरा आगू ि पसम्रि गेल छलै। ओम्हि फुटल म्हर रा ि ओकरा नजम्रि आम्बि रहल छलैि यिक म्चपपी लागल म्धंगी-म्धंगी भेल नुआँ सँ लाज झँपबाक असफल कोम्रि र बाबूक म्नारीह, बेवस, ि लायल चेहराभूख सँ म्बलम्बलाईत छोट भाई-बम्हिनसुम्दि पर उठाओल र पैया।

कोन ि्म्थति भेटलै ओकरा से नम्हि बुम्झि पौलक गोनि ि ।

भिम्मचका

'हे हर, हरिहु करहु पम्मपाल ' - भवानीबाबूक िहि सँ मनकलल एम्ह गीतक भावाथश िहिल्ला के अबाल-वृद पायः सभ के बुझल छलैक । एते तक म्कं नेनो-भुटको सभ बुम्झ जाईत छल जे भवानीबाबू आब भोजनक पम्तका कय रहलाह आछ ।

भवानीबाबू -- म्जला पम्रषदक सेवा-म्नवृत बड़ा बाबू । सस्ती जिना ि भवानीबाबू एक-एक टा रपैया जि कऽ कऽ रहर ि जिन खरीद लेलम्न। िदा घर टा बम्न सकलम्न सेवा-म्नवृम्न के बादे । सेवा-म्नवृम्न पर भेटल सभ पाई के लगा कऽ बनलम्न चाम्र कोठली के पकाँ-पुख्ता किान । जम्हया किान बम्न कऽ पूरा तैयार भऽ गेलम्न तम्हया भवानीबाबू बाहर ठाढ़ भऽ कऽ बड़ी काल तक जोहैत रहलाह ओम्ह किान के । जतबा खुरी राहजहा के ताजहिल बनबा कऽ नम्ह भेल हेतैक; ओम्ह सँ कैक गुण आम्त कि खुरी भवानीबाबू के भेट रहल छलम्न 'अपन' किान के देम्ख कऽ । हाथक सभ पाई खति भऽ जेबाक सेहो आई कोनो दुख नम्हं बुझा रहल छलम्न हुनका । दुख भेलम्न तऽ बस एतबे जे कम्नया एम्ह किान के देखबा लेल नम्हं रम्ह सकलम्खन ।

चार कोठली दुनू बेटा ि आपस ि बँटा गेल - दू टा कोठली दुनू बेटा-पुतोहू के आ दू टा पोता-पोती के लेल । पूजा , स्टोर, पाहुन-परख एम्ह सभ लेल घरक कि रम्हये गेल । आब भवानीबाबू कतऽ जाथु ? अंत ि दुनू बेटा-पुतोहू सवश्सम्मिम्त सँ म्नणश्य कऽ कऽ हुनका आशय देलकम्न बालकनीक एकटा कोन ि । कम्नया तऽ पम्हनम्हं

स्वगर्वासी भऽ चुकल रहथिन । भवानीबाबू अपने बनाओल घर मे आन बसल बालकनी के एक कोन मे टुटलहवा चौकी पर समय काटऽ लगलाह । हद तऽ तखन भऽ गेल जखन एक दिन भवानीबाबू के पेट सेहो बँटा गेलन्हि एक महिना जेठका बेटाक घर सँ तऽ दोसर महिना छोटका बेटा घर सँ ।

आई भवानीबाबू बड़ी काल धरि नहा-धो कऽ बैसल गीत गबैत रहि गेलाह ---बीच-बीच मे नजरि याचक-भाव सँ दुनू भाईक भनसा घर दिस सेहो बेरा-बारी सँ जाईत रहल । गीत अंतरा धरि पहुँचि गेल । स्वर मद्धिम पड़ऽ लागल----उदास----थाकल---हारल---हे हर, हरिहु करहु परिपाल।

परजा

बड़का भैयाक दलान ; दलान नहिं गाकि चौक बुझूदेर -दुनिया, खेत-पथार, नीति-राजनीति सभ पर गागिरि बहस एतऽ सुनबा लेल भेटत । चुनावक सयि ि कोनो आन टॉपिक पर बहस हुअय ; से कने अनसोहात होयत । सभ जुटल लोक चुनावक एक-एक ि दा पर तेना विचार-विचार कऽ खोईछा छोरा रहल छलाह जे कोनो सेफोलोजिस्ट टी०वी० पर की करताह । बौवूबाबूक कहब रहनि जे एहि बेर सता पक्षवतश हेबे टा करतसभ सतारढ सरकार सँ नाखुर आछ । तकर औल ओ सभ एहि बेर चुकेबे करतनि । एहि पर नन्हवू बकिैत बाजल -- 'ककाँ आहा कतऽ छी !लोकक आँखि नहि बट्टि छयै जे चहुँकात होईत विकास के नहि देखतै ।अपने गाि ि देखयौ ने जे कतेक के सरकार पकाँ किान बना देलकैक़ंतेक कऽल गड़ा गेलैग़ाकि लेल रोडो तऽ सैकर न भईये गेल आछ । बौवूबाबू पनिवाद केलनि--'कोन घर आ कऽलक बात करैत छह? जा कऽ ओकरा सभ सँ पुछहक गऽ ने जे कतेक जोड़ी पनही खीया कऽ आ कतेक घूस दऽ कऽ घर आ कऽल भेलैयै ?' पेर बजलाह--' हौ ई सरकार पाच साल तक जनता के िखिशबना कऽ अपन धोधि बढ़बैत रहल । भल होअय लोक तऽ ई चोरबा सभ के जानित जबत करा देअय एहि बेर । ' ई वाद-पनिवाद चलिये रहल छल ककं ि खिना चाचमहं ि बाजल --'यौ मिलक ! आहा आउर कथि लै बेकारे ि बतकटाझु करैत जाईत छी । हरि ि खाहा बुझ तऽ एतबे बुझैत आछ जे केयो जीतऽ; केयो हारऽहि सभ तऽ परजा छी, परजे रहब । ' दलान पर कनी काल लै चुप्पी पसरि गेल छलै।

बदलैत सयि

आई सँ दस वषर्पूर्व जखन ऑफीस सँ घर घुरैत छलहुँ तऽ हरि नवका कुक्कुर भुकैत कऽ आ नवकी कनिया गऽर लागि कऽ हरि स्वागत करैत छलीह । आब काल करोट फेरि चुकल आछ हरि पोसुआ कुक्कुर आ कनिया दुनु अपन आदति अदला-बदली कऽ लेलन्हि । आब घर आबते हरि कनिया हरिा पर भुकैत कऽ आ हरि पोसुआ कुक्कुर हरि गऽर लागि कऽ हरि स्वागत करैत आछ । सयि एहिना बदलैत छै ।

<u>जरल पेट</u>

जेठक पचंड दुपहरियाक मे जखन छाहो छाह तकैत छैक घाम सँ लथपथ मचपी लागल मैल पम्ढ़या नुआँ, जे ओकर लाज के झँपबा मे असफल सँ सथिशभऽ रहल छलैक, पमहरने एकटा स्त्री कोर मे एकटा दू-तीन बरखक नेना के लऽ कऽ हरिा सोझा ठाढ़ भऽ जाईत आछ । मकंताब पर सँ हरि नजमर ओकरा मदस जाईत आछ । ओ स्त्री हरिा सँ याचना करैत आछ मकंछु खेबा लेल देबाक। कहैत आछ जे कामि राम्ताये सँ ओकरा दुनू मयि-बेटा के मँह मे अनक एकोटा दाना नम्हं गेलैक आछ । हरिा दया आम्ब जाईत आछ ओकरा पर । आँगन जा कऽ मयि के कहैत मछयैक । मयि भनसा घर मे जा कऽ देखैत आछ - 'पोम्छ-पाम्छ कऽ दू मुट्ठी भात भेलै कनेके दाम्ल बाचल छई तरकारी तऽ बचबे ने केलै । कतऽ छई ओ ? कही बारी सँ केराक दू टुक पात काम्ट अनतै । अपना बासन मे तऽ नम्हं देबई खाय लेल । '

ओ स्त्री केराक पात लऽ कऽ दुर कखा मे छाह मे बैस गेल । मयि भात आ दाम्ल ओकरा आगू मे परम्स देलकै । हरि आगह पर कनेक आकि वुच्चो दऽ देने छलै । ओ स्त्री अपन नेना के अपना हाथ सँ खुआईये रहल छलै तैयो ओ अनभरोस नेना अपने दुनू हाथ लगा कऽ भकोसऽ लागल रहै । तखने ओ स्त्री अपन बामि हाथ सँ नेना के दुनू हाथ पकम्ड़ कऽ कात कऽ देलकै आ अपने पैघ-पैघ कौर गीड़य लगलै । नेना भुईया मे ओंघमरया मरैत रहलै ।

जीतक आगू

छहमरि कनेक तऽ कटामर भेलै मकं देमखते - देमखते सौसे गाि दहा गेलै छती सँ उपर पामन ठेमकं गेलै आर बमढ़ते जा रहल छलै। लोक वस्तु-जात जे समिट सकल से सिटलक नमहं तऽ जान बचा कऽ पड़ायल । दस-पाच टा लोक जकरा कोठा छलै से तऽ छत पर जा कऽ पाण बचेलक । भुखना के पड़ेबाक कोनो रस्ता नमहं सुझलै तऽ अपन भीत घरक चार पर चमढ़ गेल । पामनक ओमह िरक लहमरि भीतक घर कतेक काल ठमढतै अड़ड़ा कऽ खमस पड़लै । चार पर बैसल भुखना आब पामनक महलकोर ि ऊब-डुब करैत भमसयायल जा रहल छल । हाकरोस कऽ कऽ लोक सभ सँ नेहोरा कंरैत रहलै बचेबा लेल । सब के तऽ अपन जान के पड़ल छलै ओकरा के बचाबओ ।

जीवन-िरन के बीच झुलैत भुखना चार के कमसया कऽ पकंडने भासल जा रहल छल । ओ जीवन हामरये देने छल मकं चार एकटा पैघ नीिक गाछ सँ टकरा कऽ कनेक काल लेल मबलिलैओ पूमशसँ भमर पाज गाछ कमसया कऽ गाछ के पकमड़ लेलक । चार पेर सँ ओमहना भमसयाईत चमल जाईत रहलई । ओ अपना ररीर ि बल अनलक आ पीछड़ैत-चढ़ैत गाछ पर चमढ़ये गेल । गाछक एक पेड़ पर पैर रामख कऽ दोसर सँ अड़मकं कऽ उसास छोड़लक लगलै जेना पुनजशम भेल होई ओकर । गाछ पर ठाढ़ ओ बामढ़क लीला देखैत रहल । ओमहना ठाढ़े-ठाढ़ कखन ओकर आँमख लामग गेलै से अपनो नमहं बुझलक ओ ।

भोर ि जखन सुरजक लाली छीटकलै आ फरीछ भेलै तऽ ओकर आँिख खुजलै । चार कात तकलक ओ सगरो पािनये-पािनक़ंतहु-कतहु दूर -दूर ि कोनो टा गाछ िक़ंवा कोनो कोठाक घरक आधा भाग टा ित देखवा ि एलै । अँगैठी-ि र करैत ओ अपन िथक उपर तकलक । तिक़ंते ि◌घाय लागला साक्षात यिराज के अपना िथक उपर देखलक ओ एकटा कारी-भुजुंग सुच्चा गहुिन साँप उपरका डािर ि लपटायल । एक बेर ृत्यु के ुँह ि जेबा सँ बाचल तऽ दोसर ृत्यु लग ि ठाढ़ । गहुिन के डँसल तऽ पािनयो नहिं िँगैत छैओकरा आँिखक आगू अन्हार होिय लगलैआब ओकर पाण जेबा ि कोनो टा भागठ नहिं । आँिख ुिन लेलक ओ आ आसन ृत्यु के पितक्षा करय लागल ।

िक़ं एक बेर पेर कतहु सँ िहम्मति जगलै ओकरा ि़नहुँये-नहुँये ओ दोसर डिर पर आिब गेल गाछक एकटा डािर तोरलक आ सिधािन कऽ गहुिन के िथ पर दऽ िरलक । िनराान सटीक रहलैसाँप अचेत भऽ कऽ पािन ि खिस पड़लै आ धारक सँग बिह गेलै । भुखना िवजयी भाव से चार कात तकलक । ओकर वीरता देखय वला ओतय के छलै ?

पिता कुपिता न भवन्ति

ककाक तऽ एको मसियो चिन्ता नहिं रहनि जे स्वयं पटना जा कऽ बेटाक हाल-चाल पता करी । 'ई तऽ संताने के चाही जे वृद्ध पिता-माताक खोज-खबरि लेथि । जखन बेटा लेल हुनि सभक रिब-सजयब धन सन तखन हिनि कोन पड़ल जे बउआई लै जाऊ ।' मुदा ककाक एको टा तकशकाकीक जिद के नहिं झुका सकलनि। ओ काकी के कतबो बुझेबाक चेष्टा केलनि ; ओ घटनो छिन पासे देलन्हि। जखन जखन काकी बड़जोर दुखित रहथि आ बँचबाक उम्मीद कम्मि रहनि । तखन एके टा हकबाक लागल रहनि जे बेटा के हुनि देखा सकय । तखनो बेटा नहिं आयल रहनि, छुट्टी नहिं भेटबाक लाथ कऽ कऽ । केयो पुछलकै तऽ खौझा कऽ कहने रहय - ' हमि कोनो डॉक्टर तऽ छी नहि जे देखि कऽ ईलाज करबैक । रुपैया पठाईये देलियै ईलाजक हेतु। आब हमि कि करियौक?' कका के तऽ लागल रहनि जे आर अपनो दिस सँ रुपैया मिला कऽ बेटा के पठा देथि । मुदा फेर काकीक आँखिक भरल नोर हुनका भावर कऽ देने रहनि पिहुर पीबा कऽ रहि जेबाक लेल ।

काकीक नेहोरा -पर-नेहोरा आ फेर सँ वैह नोर हुनका भावर कऽ देलकनि बेटाक हाल-चाल जानऽ पटना जेबाक लेल । कका जखन बेटाक सरकारी कोठी पर पहुँचल छलाह ओहि क्षण बेटा शहर सँ बाहर रहथि नकोनो सरकारी काज सँ । नहियो चाहैत कका के रुकऽ पड़ि गेलनि ओतऽ भाना बेटा के भेट केने, हाल-चाल पुछने कोना फीरि आबतथि ? नोकर जलखई-खेनाई पहुँचा जाईन । आर ककरो कोनो मतलब नहि पुतोहू, पोता, पोतीक लेल जेना कोनो अनचिन्हार

व्यस्त होइत अवाक् छलाह। आर-त-आर छोटका पोता आबि कऽ जखन पुछलकनि, 'आप पापा से कभी मिले नही है क्या जो उनके लिये रुके है?' तऽ कका चुप्पी साधि कऽ रहि गेल छलाह । जाबत किछु कहितथिन ओकरा , ताबत छौड़ा दौड़ैत-दौड़ैत पड़ा गेल छल।

जखन बेटा लौटलनि तखन कका बाहरे लॉन मे बैसल रहथि । कार सँ उतरिते लॉनक कोन मे कुसी पर बैसल कका पर नजरि पड़लै । अकचकायल ओ । पेयर कका दिस डेग बढ़बैत पुछलकनि, 'कखन एलहुँ ?' सहसा किछु सोचि कऽ थम्हि गेल । कण भरि ओहिना ठाढ़ रहल । पेयर संगे आयल व्यक्ति दिस देखि कऽ बाजल, 'सरवेट फॉर माई नेक्स्ट व प्लेस '। ककाक मनक सुप्त ज्वालामुखी के जेना केयो उकाठी नेना आमा लेस देने होई तहिना एकाएक फाटि गेलनि । एके डेग मे फानि कऽ दुनू के बीच मे पहुँचि गेलाह आ ओहि व्यक्ति सँ मुखातिब होईत बजलाह, ' मै इसका नौकर तो नही, पर इसके बाप का नौकर जरुर हूं ? ' बजिते कका धपड़ैत घरक बाट धऽ लेने छलाह । आई ओ अंतिम फैसला कऽ लेलनि । ओर आ आत्म-सम्मान मे ओ ककरा चुनताह ।

ईमानदार

ओ मंत्रालय मे संयुक्त सचिव छथि। जतबे ओ कर्तव्यनिष्ठ, इमानदार, अनुशासनप्रिय आ सहयोगी मिलल जाइछ ओहिना सँ एकटा मात्र समस्या कें ईमानदार नहि। समाज सोसाईटी मे ओकर गुणक दोहाई देल जाईत छैक ओ पोलिटीकल समझ मे ओकर कार्यक्षमताक चर्चा भेल करैछ। अपन मंत्री के तऽ ओ दहिलगुआ बनि गेल अछि। कोनो काज सँ कोनो काज हो ओकरा लेल सामान्य केहनो जटिल समस्या हो; ओ ओकरा लग ओकर समाधान चुटकी मे तैयार। कोनो बातक नकारात्मक जवाब तऽ ओकरा लग छलहिये नहि। काज मे तऽ आगया-बेताल अछि ओ ऑफीस मे काज घर पर रहैत काजे-काज।

मंत्री लग बात उठलै जे विभाग द्वारा प्रायोजित केन्द्रीय योजना अपेक्षित परिणाम देबा मे सक्षम किएक नहि भऽ रहल छै? समस्या समाधान हेतु स्वभाविक सचिव आ मंत्री के ध्यान ओकरे पर गेलैक। ओकरा भार देल गेलैक - 'समस्या के अध्ययन कऽ कऽ एक महिना मे योजना के दुरुस्त करबाक उपाय सुझाऊ।' ओ अपन मेहनत पर लामा गेल आ रिपोटशबनेलक, प्रोजेक्टर पर केलक। सार तत्व ई जे योजना के ठीक सँ लागू नहि हेबाक कारण छैक ब्लॉक आ जिला स्तरक अधिकारी-कर्मचारी के योजना के बारे मे अल्पज्ञता वा अज्ञानता। ओकर सुझाव छलैक जे जौं जमीनी-स्तरक कार्मिक सभक प्रशिक्षण कयल जाय तऽ एहि योजनाक की; सभ केन्द्रीय आ राज्य योजना के सफलता सुनिश्चित बुझु। सुझाव नीक छलैक मंत्रीजी तऽ एतेक भावविह्वल भऽ गेलाह जे ओकर पीठ ठोकि कऽ शाबासी देलखिन। तत्काल आदेश भेलैक जे ओ अपन कार्ययोजना पर

आगू बढ़य । एम्हि हेतु साधनकं कौँनो कंमी नम्हिं होयि देबाकं आशासन मितीजी देलम्खन ।

ओ आगू बढ़ल । सभ सँ पम्हिने अपन पॅ्रमराय आधकौंरी आ कंमिश्चारीकं एकंटा टीम बनेलकं । तकंरा बाद एकंटा गाईड-लाईन मितीजी सँ अनुमिम्दत कंरेलकं जाम्हि मि पाच लाख तकं के राम्श स्वीकृत कंरबाकं आधकंर संयुत्तΛ-सम्चव स्तर के आधकौंरी के छलैकं । पेΛर ओ देरकं चार केत्त मि चाम्र टा संसाधन-केन्द्र बनेलकं जाम्हि मि ओकंर पम्रम्चत यूम्नवम्सटी-पॅ्रोपेΛसर, म्रसचश आम्द सभ रामिल कंयल गेलैकं । संसाधन-केन्द्र सरकौंर सँ पॅ्राप्त अनुदानकं दस पॅ्राम्तरत अपन स्थापना पर खचशकंऽ सकैत छल जाम्हि मि वेतन, यातायात, कंम्प्यूटर सम्हित अन्य खचशरामिल छलैकं । पॅ्राम्त केम्तय सेमिनार तीन लाख रपया आ राष्रीय हेतु सामिन्य खचशसीमि पाच लाख छलैकं जे पम्रम्स्थम्तवर बढ़ाओल सेहो जा सकैत छलैकं । एम्हि सभ लेल संसाधन-केन्द्र सभ के सालकं रुरहे मि दू-दू कंरोड़ रपया बाम्ट देल गेलैकं । ई रपया खचशभेला पर ओ सभ उपयोमाता-पॅ्रामाणिपत दऽ कंऽ आओर रपया मिमा सकैत छल । ओकंर सर-वुΛटुम्बकं आनो आन लोकं सभ जोगाड़ लगा कंऽ संसाधन-केन्द्र मि अपन नोकंरी पकौँ केलकं । अपन लोकं के कृतग्य कंरबाकं यैह तऽ मिकौँ छलैकं ओकंरा ।

संसाधन-केन्द्र सभ के कौँयशाला, सेमिनार, सम्मिलन आम्द आयोम्जत कंऽ कंऽ ब्लॉकं, म्जला, राज्य स्तर के कौँमिश्चकं सभ के पॅ्राम्र कण आ जागरकं कंरकं छलैकं । केन्द्र सभ के एम्हि तरहे अपन कौँयश

वर्ग कंरकं छलैकं जे सभ रम्म आ रम्ब कंऽ कंतहु ने कंतहु कॉंयशाला वा सेमिनार वा सम्मेलन होईतैकं । एम्ह हेतु ओकंरा सभ के अपन वाम्पक्ष-कॉंयवार्ग पम्हनम्हं अनुमिद्दत कंरेबाकं व्यवस्था छलैकं । संसाधन-केन्द्र सभकं बीच मि नीकं ताल-मेल बनेबाकं लेल व्यवस्था छलैकं जे ओ व्याख्यान, प्ॅरास्तुम्तकंरण आम्द हेतु दोसर संसाधन-केन्द्र सँ साधन-सेवी सभ के आमिन्त्रत कंरय । ओ (संयुत ।ﾑ सम्भव) तऽ अपने बड़ पैघ साधन-सेवी छल ॅ ओकंरा अतेकं योजना के बारे मि कंकंरा बुझल छलैकं । तै ओ सभ कॉंयशाला, सेमिनार आम्द मि आमिन्त्रत होईत आछ । म्नयमिनुसार प्ॅराम्त व्याख्यान ओकंरा दस हजार रुपया सेहो भेटैत छैकं । ओहदा अनुसार एबा-जेबा एवं रहबाकं व्यवस्था अलग सँ ।

गरीबी दूर कंरबाकं योजना पर म्बचार-म्बमिरिशपाच-म्सतारा होटल सभ मि होईत छैकं - एम्ह पर म्कंछु मिडीया मि चचो होईत रहलैकं । ओ संसाधन-केन्द्र के प्ॅराधान सभ के एकंटा मिटीग बजेलकं आ सुझाव देलकै जे कॉंयशाला सभ मि स्थानीय पतकॉंर सभ के सेहो बजाओल जाय । आम्खर एम्ह मि कौंन म्दकंत- ओ सभ लंच कंरत आ एकं-एकं टा बैग लेत - सैह ने ? मिदा फायदा तऽ देखू - ओ सभ हमिर कॉंयवार्ग के प्ॅरारंसा कंरत आ नीकं मिडीया कंवरेज भेटत ।

आब सभ खुर आछ ।

मास्टर साहेब

परोपट्टा भरि मे मास्टर साहेब के नाम सँ प्रचलित जायवला भगवानबाबू आब एहि दुनियामे नहि रहलाह --ई समाचार सुनिते भरि गामक लोकक बीच मे हुनकर व्यक्तित्व आ कृतित्वक मादे चर्चा-परिचर्चा होमय लागल । हुनकर अंतिम दर्शनक हेतु लोक सभ जुटऽ लागल ।

मास्टर साहेब नेनपन मे पढ़ैने तऽ हमरो छलाहओ गामक स्कूल मे मास्टर आ हम गामक बच्चाहुनका सँ नहि पढ़ितौ तऽ जयतौ कतऽ ? हमरो मन कहलक जे गुरदेवक अंतिम-दर्शन कऽ अपन श्रद्धांजलि दऽ आबी । अपन बाल सखा आलोक सँ पुछलियै- ' चलबै ?' ओ छुटितहिं ढ़हि बीचकबैत बाजल- 'धुर् ! की जाऊ देखय हुनका । तेना पढ़ेलथि जे कतहु गोड़ा नहि बैसल । ' ओकर स्वर मे अवसाद तऽ स्पष्ट छलैक मुदा मुईनाहर के बारे मे एहन वतव्य तऽ साईत नहिये हेबाक चाही ।

पढ़ाई तऽ मास्टर साहेब के मूडके रूचिये छलनि। क्लास मे आबिते ककरो ठाढ़ करा कऽ कहैत छलखिन कोनो पाठ जोर सँ पढ़ऽ आ अपने टेबुल पर पैर पसारि लगैत छलाह फोफ काटऽ । जहा केयो कनेको बाजल कि एक मुक्कस सँ सभ के छौकिंया दैत छलखिन । बच्चा सभ मास्टर साहेब के 'दुख-हरणी '(पाकल बासक छौकी) नाम सँ थर-थर कँपैत छल।

आलोक पर तऽ मास्टर साहेब के खास ध्यान रहैत छलैन । हुनकर

घर आ स्कूल सटले छलै । जऽन-हरवाहक पनपीयाई स्कूले लऽ आबथ्थ आ आलोक जा कऽ ओकरा सभ के पनपीयाई कराबय । एकम्दिन बहाना बनबैत कहबो केने रहम्मा जे हरि पढ़ाई छुम्ट जायत । सिस्टर साहेब ओहो बहाना के म्वाफल करैत कहने रहम्थन - 'तो जो, ताबत हि पढ़ाई रोकने छी । ' ओकरा गेलाक बाद बाजल रहम्थ - 'कहुना कऽ बईलेलौ ओकरा । ओ क्लास ि रहैत तऽ ककरो पढ़ऽ नम्ह दैत ।' पनपीयाई पहुँचेबाक बाद वम्रिहे आलोक सिस्टर साहेबक कपड़ा म्खचब सँ लऽ कऽ घरक अनयान्यो काज करऽ लागल ।

एक म्दन सिस्टर साहेब क्लास ि आबते आलोक के ठाढ़ होयि कम्ह कऽ ओकरा कहलम्खन- 'अलोक ! कामि तोहर बाबू भेटल छलाह। कहैत छलाह जे आलोक म्हन्दी ि बड़ कजिोर आछ से कने आहा ओकरा पर ध्यान म्दयौसाझ ि एक घंटा पढ़ा देल कम्रयौ । ' पे॥र आदेरक स्वर ि बजलाह -'तो कामि सँ पाच बजे साझ ि हरिा ओतऽ आम्ब जायल कर पढ़बा लेल ।' सभ म्वदाथी आलोकक िुहि म्दस ताकऽ लागल छल । जे सिस्टर साहेब क्लास ि नम्ह पढ़बैत छम्थन से आलोक के टयूरन पढेम्थन ककरो म्वशासे नम्ह होई ।

स्कूलक छुट्टी होईते तितियिल आलोक सीधा अपन बाबू सँ जा कऽ पुछलकै जे सिस्टर साहेब के की कम्ह देम्लयैन । ओ तऽ पम्हने चवु॥एलाह पे॥र याददाश्त पर जोर दैत बजलाह--' अच्छा, अच्छा । अरे हि म्कंयैक कहबम्म टयूरन पढ़ेबाक हेतु। कामि चौक पर अपने कहऽ लगलाह जे आहाक बेटा हरि म्वषय ि बड़ कजिोर आछ । ओकरा म्कंयैक नम्ह पठा दैत म्छयै हरिा ओतऽ पढ़ऽ लेलहि

मकं कोनो पाई लेबै। '

से िसस्टर साहेब आब नहि रहलाह। हुनकर अंगना ि लोकक भीड़ बढ़ले जा रहल छल । जन्म-जाम्त ओघमढ़िया दऽ रहल छलपुरष-पात अंत्ि-याताक तैयारी ि जुटल छल । िसस्टर साहेबक नशर ररीर भने पंच-तत्व ि मसम्लन भऽ जाउन ; ुिदा हुनकर व्यक्तत्व के लोक कोना मबसर सकत ।

कचोट

'म्डवोसशइज गाटेड। नाऊ यू बोथ आर लीगली सेपरेटेड ऑफ इच अदर' - कंम्ह कंऽ जज अदालतकं कॉयवाही सिाप्त कंऽ कंऽ उम्ठ गेल छलाह। ओकंरा चेहरा पर पैघ सन ुस्कॉन पसम्र गेल छलैिथकं बोझ हल्लुकं होईत सन बुझेलै। ओ म्वजयी भाव सँ तकंलकं िरा म्दस । िराकं कॉतर नजम्र सेहो एकं पल लेल ओकंरा म्दस उठलै ; पेωर जल्दी सँ अदालत सँ बहरा गेम्ल िरा ।

ओ ठाढ़े रम्ह गेल अदालत ि । सोचैतआई म्स्थम्त कौना एकॉएकं बदम्ल गेलैकंअपात्थाम्र त। िराकं वकील बहस ि कंतेकं जोर दऽ कंऽ कंहैत छलै जे म्ववाह भारतीय सिाजकं एकं टा पम्वत बंधन छई आ एम्ह बंधन के कौनो उदेग ि तोड़ल नम्ह जा सकैछ । ओकंरा िन पड़लै जखन िराकं वकील ओकंरा पर आरोप लगबैत कंहने छलैकं - 'योर ऑनर ! वास्तम्वकंता तऽ ई आछ जे शीिन म्वकॉस हरि ुिवम्कंल िरा सँ तलाकं लऽ कंऽ दोसर म्ववाह अपन पोमिकॉ सँग कंरय चाहैत छम्थ, जे पम्हने पम्रवार आ सिाजकं दवाबकं कॉरणे नम्ह कंऽ सकंल छलाह । हरि ुिवम्कंल के पम्हने रस्ता सँ हटेबा हेतु ओ तरह-तरह के पाताड़ना दैत रहलाहिम्र-पीट, गाम्र-गंजनक़ी की नम्ह । ' म्कं तखने िरा ठाढ़ भऽ कंऽ अपन वकील के रोकैत जज म्दस ईरारा कंरैत कंहने छलीह - ' हिरा क्ी कंरब , ई सभ सत्य नम्ह आछ जज साहेब । हरि पम्त देवता-तुल्य छम्थ । हिरा ओ कंम्हयो अधलाह वचन तकं नम्ह कंहलम्न ; हाथ उठेबाकं तऽ बाते नम्हं । ओ म्कंयैकं हिरा सँ अलग होिय चहैत छम्थ से तऽ वैह जानम्थ । ' िराकं एम्ह वतωव्य पर सािूचा अदालत स्तब्ध रम्ह

गेल छल। ीराकं भाय तासि िहुर भऽ रहल छलाह। हुनकंर आँख सँ वरीधकं ज्वाला पुटय लागल छलठोर पटपटा रहल छल ादि र बदद नहि बहरायल।

पारा तँ तखन पलट गेलै जखन एकंर वकील कंहने छलै--'ी लॉडश ! हरि ाविक्कंल के अदालत सँ तलाकं ींगबाकं ाखिय कॉरण आछ शीीत ीराकं व्यभिचार जे हिंदु ीरज एक्ट-१९५५ के धारा-१३ के अंतगश तलाकंकं एकंटा पैघ कॉरकं भऽ सकैछ । हरिा लग कैकंटा एहन दृष ात आछ जे हरि एहि आरोप के पुष्ट कंरत। ' एहि सँ पहने ीकं वकील अपन फाईल के पन्ना कंऽ ीकंछु आगु बजतथ, ीकं ीरा उठ कंऽ ठाढ़ भऽ जज सँ कंहने रहै--' जज साहेब ! हि अपन पत के तलाकं देबा लेल तैयार छी । हरिा बताओल जाय जे कौन कॉगज पर कंतऽ दस्तखत कंरऽ पड़तै । ' सािचा अदालत ि पेर सँ सनाटा पसर गेलै। सभ स्तब्ध भेल अड़ोस-पड़ोस ताकंय लगलै ; कॉना-पुसी राुर भऽ गेलै। केयो एहन उमीदो नहि केने छल ।

तलाकं भेटलाकं कणाकं खुरी के तुरते बाद ओकंरा भान भेलै जे ीराकं चरत पर एहन पैघ लाछन लगा कंऽ ओ नीकं नहि केलकं । एकंरा एकौटा ीकंछु एहन घटना नहि बुझल छै जाहि सँ ीराकं चरत पर कौनो टा संदेह होई । चरते तऽ नारीकं सभ सँ पैघ गहना होईत छैकं । पेर सोचलकं तलाकंकं हेतु आन कौनो कॉरणो तऽ नहि छलै ओकंरा लेलवकीले कंहने छलै जे एहि गाउँड पर सदः तलाकं भेट जयतै एकंरा ।

ई धम्र सत्य जे ओ अपन ईच्छा के म्बारद पम्रवार-सािजकं दवाब ि ािरा सँ म्बवाह केने छल । ुिदा ओ अपन पोमिकाँ के नम्ह म्बसम्र पओलकंम्बवाहकं बाद तऽ ओकंर पोि बम्ढ़ते गेलैकं। पम्त आ पोमिकाँकं वास्तम्बकं भेद के जम्नतो ओ पम्त ि पोमिकाँकं गुण ताकंऽ लागल । पम्रणािभेलै जे पम्त सँ म्बरम्त।ग्र बढ़ऽ लगलै । जखन पोमिकाँकं ईरािराकं हवा भेटलै तऽ पम्त सँ म्बरम्त।ग्र अदालत तकं तलाकंकं ुिकंदाि र प ि पहुँम्च गेलैघर-पम्रवार, गाि-सािज सभ सँ म्बदोह कंऽ कंऽसभ सँ सम्बंध म्बछोह कंऽ कंऽ ।

अपना के म्धकाँरऽ लागल ओचम्रत तऽ एकंर स्वयं कंलुम्षत छैकं जे व्याहता पम्त के छोम्ड़। ओकंरा सन पम्तत भम्र संसार ि केयो नम्हं हेतैकं । ािरा सन धवल चम्रत पर कंलंकंकं दाग तऽ कंि सँ कंि नम्हं लगावऽ बुझैत छलैकं ओकंरा । ािरा! ािरा तऽ वीरागना आछज़खन एकंर वकीँल ओकंर चम्रत के कंलंम्कंत कंहऽ लगलै तऽ ओ अपन चम्रत पर लाछना सुनबा सँ पम्हनम्ह ओ तलाकंकं काँगज पर दस्तखत कंऽ देब नीकं बुझलकं।

घर आम्ब कंऽ ओ पलंग पर धड़ाि सँ पम्ड़ रहल। सािनेकं देवाल पर एखनो एकंरा दुनूकं फोटो टागले छलैकं। ओकंर ध्यान ओम्ह फोटो पर टँमा गेलैक़ंतेकं ध्यान राखैत छलैकं ािरा एकंर एकं-एकं जररम्त के ध्यान राखैत छलैकं। एकंरा तऽ ािनो ने छैकं जे म्ववरागािनकं बाद सँ अपन जररम्त के काँनो सािन ई घर ि ािगने होईकं वा स्वयं उठा कंऽ लेने हुअयज़ररम्त सँ पम्हने ािरा सािन लऽ कंऽ हाम्जर । लुम्ड़-म्बतपनी, आवेर-वात सभ ि ािरा अक्वल ।

भमर गामि लोकं कंहै छै जे पुतोहू हुअय तऽ भोलबाबू सन। आस-पड़ोस, घर-पमरवार, जन-हरवाह सभकं म्याय बमन गेल छलैकं मिरा। एकों कण सासु-ससुर के नजमर नमहं पड़मन तऽ कंमनया-कंमनया के रोर। ननमद-देयोर भौजी-बौजीकं अनघोल केने। एकंरो तऽ कौंनो मरकाँयत नमहये छलैकं मिरा सँ। िदा मकंशति बीचमहं मि अपन चामल चललै आ पूवशपोमकिाँ सँ एकंर लगाव बढ़ऽ लगलै नमह चामहतो ओ पोमकिाँ के पोि-जाल मि पँ᳚सैत चमल गेल आ पे᳚र दुनू माि य केलकं मिरा सँ अलग भऽ मववाह कंरबाकं। एकंरा नीकं जकाँ बुझल छलैकं जे मिथलानी लेल पमतकं आतमरत᳚ ओकंर कंतहु सथान नमह आ सौतीन सेहो कंथमपि सवीकाँयशनमह; तै अंमति रसता अदलते सँ तलाकं लेब बुझेलैं।

गामि-सिाज मि जे सुनलकं से थू-थू कंरय लागल। बाप जे धड़ खसेलमन से खसेनमहं रमह गेलाहमिथकं पाग बेटा खसा देने छलमन। ओकंर मवदोहकं आगा सभ मवफल भऽ गेलओ घर छोमड़ कंऽ पड़ा गेल ऩमहं जामन कंतऽ।

आई ओकंरा पाचंड झंझावातकं बाद पसरल मवरानमा सन बुझा रहल छलै अपना भीतरमकंछु टा नमहं नीकं लामा रहल छलै ओकंरा। अपराध-बोध सँ दबले जा रहल छलमकं पओलकं ओउनटे पुरखाकं मियादा मिटयामिट भऽ गेलैबाबू लोकंलाजे दलानो पर तकं नमह माकंलैत छमथनमियकं आँमखकं नोर सँ आँचरकं खूट तीतले रहैत छैहँसैत-खेलैत पमरवार मि आई मिघटकं सनाटा सन पसमर गेल छै। एमह सभकं दोषी तऽ यैह आछ। ओ जतेकं सोचय; आति-गलामन सँ

ततबे दबल जाय । पोमिकाँकं बेर-बेर फोन अबैत छलैकं। िबाईल स्वीच-ऑफ कंऽ कंऽ ओ काँत ि पेंर्कं देलकं । उठलदू-चाम्र टा कंपड़ा-लता जल्दी-जल्दी बीफकेर ि ठुसलकं आ घर ि ताला लगा बाहरा गेल ।

दलान पर बाबू आ कंकाँ कौनो गूढ़ म्बचार-िथन ि लागल छलाह। ओ दुनूकं पायर छुलकंम्त कंकंरो म्दस सँ कौनो पाम्तम्बम्र्या नम्हं। ओ अपाम्तभ भऽ गेल। कंने काँल ओम्हना ज़डवत ठाढ़ रहल पेंर्र सिन उठा कंऽ आँगन म्दस म्बदा भेल । कौनटा लग िय ठाढ़ छलैन, दबले स्वरे पुछलकंम्त ' म्तके छी म्कंने?' ओ स्वीकृम्त-सूचकं िड़ी डोलबैत अपना कौठली ि चल गेल। िराकं कंपड़ा-लता, वस्तु-जात सभ म्कंछु ओम्हना राखल जेना एखने नीकंलल होम्थ ओम्ह कौठली सँ । िय चौखम्ट लग नुआँकं खूट सँ नोर पोछैत आम्ब कंऽ ठाढ़ भऽ गेलम्खन। पेंर्र नहुये-नहुये कंहय लगलम्खन-'बौआ आहा अपना पर ध्यान राखबअही पर सम्दखन म्चंता लागल रहैत आछ । सुनै म्छयै कंम्तयाकं भाय आहाकं जान लेबा लेल उदवीतश भऽ गेल आछ । गोनिकं िय बजैत छलैकं जे ओ तऽ बंदूकं म्तकाँम्ल कंऽ आहा के िरबाकं लेल म्तकंम्ल गेल छल। िदा कंम्तया ओकंर पैर गछेड़ कंऽ पम्ड़ रहलै जे भैया एहन पाप नम्हं कंर । एखन हि कंि सँ कंि सधवा तऽ कंहबैत छीसीथ ि म्सनूर पम्हरैत छीिछ-िसु खाईत छी। तलाकंकं काँगज पर दस्तखत ित कंऽ देने जनि-जनितरकं सम्बंध नम्हं टुम्ट जायल कंरैत छै । हुनकाँ कंरय म्दयनु ओ जे कंरैत छम्थ । अहुँ के जँ हि बोझ बुझाईत होई तऽ हिरा छोम्ड़ म्दयहि वुंर्टौन-चुरौन कंऽ कंऽ पेट पोम्स लेबसंसार बड़काँ टा छै । '

सुमन कंऽ ओ ठामहिं ठाढ़ भऽ गेल- ' ियह हि गंगापुर जा रहल छी ीरा सँ भेट कंरय । ' ियह अचम्भत भेल कौँनो आनष कं आरं कोँ सँ ओकंरा रोकंते रहि गेलखनओ िटरसाईकंल स्टाटशकंऽ कंऽ आँखि सोझा सँ दूर भऽ गेल। बाबू - कंकोँ बौकं बनल दलान पर ठाढ़े रहि गेलाह।

नव-वषश

रहरी संस्कृमा ि नव-वषक्ष बड़ िहत्तम भऽ गेलैक आछ। चार कात उल्लास, आनंद कोनो पाबम्न-त्योहार सँ बेम्सये। लोक पुरनका म्बतल साल सँ म्पाण्ड छोड़ा नवका साल के स्मागत करय ि बेहाल एम्ह ि केयो ककरो सँ पाछा नम्हं रहऽ चाहैछ। धूि-धड़का, नाच-गान आई जकरा जे िन ि आबय कऽ रहल आछ नया सालक स्मागत िन सँ कऽ रहल आछ। ि्दा सब केयो थोड़बे?

रहरक एम्ह उल्लास के नम्ह बुम्झ पाम्ब; सुकना के सात सालक बेटा पुम्छये देलकै ओकरा सँ -'' बाबू, आई म्क म्छयै जे लोक एना कऽ रहल आछ?''

''बाऊ, पैघ लोक सभक नया साल आई सँ रु्र भऽ रहल छै; तै सभ पाबम्न िना रहल आछ।''- बाल-िन के बुझेबाक पॅरायास केलक सुकना।

चोटम्ह पशसक झड़ी लामा गेलै- ''हि सभ नया साल म्कयैक नम्हं िनबैत म्छ? हिरा सभक नया साल कम्हया एतैक??''

सुकना एम्ह अबोध के कोना सझिबौक जे गरीबक कोनो साल नया नम्हं होईत छैक। बोम्नहारक सभ साझ नया साल आ सभ म्भनसर पुरान साल जँका होईत छैक।

बाप-बेटा दुनू चुप एक दोसराक ि्ह देम्ख रहल छल साईत आँम्ख आँम्खक भाषा बूम्झ गेल छलैक।

थाकल बाट

''सर, हरि िटरक फाईल कहा तक पहुचलई?''

''उपर सँ नम्हि लौटलै'' - म्बजली ऑम्फसक कश्मिरीक ई म्चरपम्रम्चत उतर फेर हरि कानि गेल। उतर जेना स्टीम्रयोटाईप, पी-म्रकोडेड, म्बना कोनो जाच-पड़ताल, नाि-पता पुछने, पेऽकल सन। १५ म्दन भऽ गेल म्बजली ऑम्फसक चकर लगबैत आऽ यैह उतर सुनैत ।

''अरे ई सभ बड घाघ होईत छई। म्बना 'सेवा' के म्कछु नम्हि हेतौक। परेरानी सँ बँचैक छहु तऽ सेवा करम्हि परतौ'' - अपन मित पभासक ई सलाह कचोटैतो िन सँ िनम्हं परल -म्बवसताि। आम्खर नोकरी छोम्ड़ कतेक म्दन दौरैत रहब - अनायास,अनथक्क,आनशचत।

म्बजली म्बभागक कश्मिारी 'सेवा' पम्बते झट् दऽ हरिा आदेर-पत थम्हा देलक। जेना ओकरा सँपौती अबैत होईक- हरि िनक आरय ओ पम्हने बुम्झ गेल हो आ आदेर पम्हने सँ तैयार रखने हो- हरिा देबाक हेतु। कायल भेलहुँ हि 'सेवा' िम्हि सँ। म्बजयी भाव सँ आदेर-पत के देखैत हि बाहर म्नकम्ल रहल छलहु म्क नजम्र परल काति लटकल बोडशपर जाम्हि पर िट आखरि म्लखल छलै - ''म्रशत लेना एवं देना जुिश्हि है।'' भने लोक पानक पीक फेम्क म्बकृत कऽ देने छलै ओकरा। उपयुक्त म्चज उपयुत जगह रहक चाही। रस्ताि फेकना भेटल बड़का लगा सँ म्बजलीक तारि टोका फंसबैत। हरिा देख कऽ िम्स्कयायल ओऽ। लागल जेना हरि िँह दुम्स रहल हो।

हारल िनुकख

बरी काल सँ पम्तका कऽ रहल छलहु बस के। गाकि कोनो बस आम्बाये नम्हं रहल छलै। एक तऽ पम्तका ओम्हना कष पद, तहु ि जेठक दुपहम्रया ि। रौद आ पम्बलक रासपोटक्क म्स्थम्त ---- म्खन भऽ गेल िन। सयि म्बतेबाक आर कोनो साधन नम्हं देम्ख, िन नम्हंयो रहैत ठंढा म्पाबाक लेल बम्ढ गेलहु सािने के रेस्टोरेट म्दस -- छाह तऽ भेटबे करत, सँगम्ह पॅराम्तका के घड़ी सेहो म्बतत। बस एबा ि एखन आधा घंटा सँ कि सयि नम्हंये लगतैक।

रेस्टोरेट के तजबीज करैत आगू बढल जाईत छलहु म्क केयो रस्ता रोकलक - म्जणश़िम्लन, बृद नम्हंयो रहैत बृद सन - लाठी लेने " भैया! दू रपैया हुअय तऽ दऽ म्दयऽ, रेकर पकम्ड़ गाि चल जायब। पायरे नम्हं गेल भऽ रहल आछ ।" आबाज ि एकटा संकोचक सँग दयम्नयता साफ झलकैत छलैक । तखने हिरा आगु ि नाम्च गेल भीख िगबाक नव-नव ढ़ब िन परऽ लागल पढ़ल आ सुनल म्खस्सा सभ जे कोना लोक ठका गेल ई सभ ढ़ब पर। ओकर याचना के अनसुना करैत हि बम्ढ़ गेलंहु रेस्टोरेट म्दस ।

बस अयला पर म्ख़डकी कात सीट पर बैम्स सुभ्यस्त भेलंहु। कने काल ि बस चम्ल पड़ल। रस्ता कात ि सहसा ककरो पर नजम्र पम्ड़ गेल चौकलंहु - 'ई वैह आदिी तऽ नम्हं जे हिरा सँ दू रपैया िँगैत छल?' म्दाग पर जोर देलहुँ हँ ई तऽ वैह आदिी आछ क़हुना-कहुना कऽ डेग बढबैत लगभग म्घम्सयैत जँका --चलल जा रहल आछ गंतव्य म्दस। ई दृश्य हिरा म्बचम्लत करऽ लागल हिर अंतराति

कचोमट उठल - 'दू रपैया! ीत दू रपैयाक लेल बीीर - असक के पायरे जाय पम्ड़ रहल छैक आ तो िन नम्हयो रहैत दस रपैया ठंढा पी कऽ बबाद कऽ देलह! म्पकार एहन िनुष्पता के!' अपराध बोध सँ हि आकार म्दस देखैत ओकर रून्यता ि म्मम्लन भेल जा रहल छी।

भावना

जेठ मिहना ि तऽ सूरज जेना भोरे सँ आमा उगलऽ लगैत छैक। दुपहरिया तक तऽ वातावरण ओहिना जेना लोहा गलाबऽ बला भटी। छुटी के दिन रहे भोर ि देरिये सँ उठलंहु; साईत तहु दारे कनिया भानस करबा ि अलसा रहल छलीह। अंततोगत्वा निणर्य भेल - भोजन बाहरे कैल जाय।

घर सँ बाहर निकललंहु। बाहर एकदि सुनसान - एका दुका लोक चलैत - सेहो साईत जिबूरीये ि। किएक निकलत केयो घर सँ एहन सियि ि? एहन रौद ि निकलनाई कोनो सजा सँ कि थोड़बे छैक। बड़ सिकम्त के बाद एक टा रिक्सावला तैयार भेल लऽ जेबाक हेतु। रिक्सावला कि - अधबेसु, कृरकाय, हँपैत।रेस्टोरेट पहुंचि भाड़ा पुछलियै। कहलक दस रपैया। कनिया लम्हि पड़ली ओकरा सँ -''पाच रपैया के दस रपैया गैत छैह! हरिा सभ के बाहरी बुझैत छै कि? ठक नहितन! एना जबदस्ती सँ बम्हया होयतौक जे पौकेट सँ पाई निकाम्ल ले। बजमायौ पुलिस के?'' बेचारा रिक्सावला घबड़ा गेल। पसेना सँ लि-मिचकट भेल गछिा सँ अपन िहि पोछैत, बाना किछु बजने पाचक सिका लऽ कऽ चलि गेल बिना किछु बजने नारीह।

रेस्टोरेट ि भोजनोपरात हरिा दस रपैया टीप के रप ि छोड़ैत देखि कनिया बजलिह - '' अपना स्टेटस के तऽ कि-सँ-कि ध्यान राखू। की दसे रपैया दैत छियई - पाछा सँ गरियाओत'' एतबा कहि झट सँ पचासक नोट बिल-फोलडर ि छोड़ैत हरिा चलबाक ईसारा

केलमन। आकस्मित हरि आंखक आगा मरक्सावलाक चेहरा दीनहीन भऽ उठल। तुलना करऽ लगलंहु - रेस्टोरेटक वेटर आ मरक्सावला कि - एकटा वातनुकूलित ककमे भोजन परसैत आ दोसर रौदमे कोढ तोरैत। भवनाक अंतर सँ मसहरर उठलंहु हम।

बी०डी०ओ०

ओकर असली नाि की छलैक से तऽ नम्हं कम्ह; ादा हि सभ ओकरा 'िनि' कम्ह कऽ बजबैत छम्लयैक। कारण, ओ बात-बात पर 'िनि' रब्दक पयोग करैत छलीह। से 'िनि' ओकर नाि पम्ड़ गेलई भम्र गाकि लोक लै। बाल-म्वधवा, संतानहीन 'िनि' हरि घरक सदस्या जका छलीह। हरिा बाद ि बुझवा ि आयल जे 'िनि' हरिा ओम्हठाि काज करैत छलीह। बृदावस्था के कारणे आब काज तऽ नम्हंये कऽ सकैत छलीह; हँ दोसर नोकर-चाकर पर ास्तैद भऽ काज धम्र अवश्य करबैत छलीह।
पधान िती ि धिुबनी आगनि के लऽ कऽ लोक ि बेसी उल्लास आ उत्साह छलैक, सभ सकात दरशक पुण्य उठाबऽ चाम्ह रहल छल। लोकक एम्ह ईच्छा के पुरा करबा ि सहयोग दऽ रहल छलाह पाटी कायकता लोकम्न जे बेसी-सँ-बेसी लोक के जुटा अपन रम्क्त पदरश करबा लेल ापित सवारी के व्यवस्था केने छलाह। हि िजाक ि 'िनि' सँ पुछम्लयै- '' पधान िती ि धिुबनी ि आम्ब रहल छम्थन। अपन गाकि सभ केयो जा रहल अम्छ देखऽ। अहा नम्ह जायब?''

''के अबैत छम्थन?''- िनि पुछलम्न।

''पधान िती।'' - हि उतर देम्लयै।

''धुर! ओ कोनो बी०डी०ओ० छम्थन जे 'म्बरधा-पेलसुि'(वृदावस्था पेसन) देताह। हि अनेरे की देखऽ जाऊ हुनका ?''

हि अवाक रम्ह गेलंहु िनि के उतर सँ।

पद खण्ड

डॉ. कामिनी कायिनी

अंकोरवट मिन्दर

कतेक महराल / उनत पकोष /

भीि काय /तना स/ गृह /आवृत ।

आब छाह द रहल /वृक /अतेक/

छी खंडहर /कतबो पुरान ।

दैदीप्यमान /खंभ्दत /तइयो

असेम्बात अम्छ /िमनाश/तइयो

ई ऊंच ऊंच पासाद वृंद /

रेर , पद अम्छ मांम्दपाल /

नयनाभिराम ओ अप्सरा नृत्य /

ओ रात ताल ि सुतल काल /

आह

मकमाज स झाम्क कनैत अम्छ

चार चन्द्र के रश्मि पुंज

देखू जन नायक के पताप /

की शीत /ग्रीष्म /बस सहैत ताप

नीचा वसुधा /ऊपर आकार /

अखनो गुंजित अछि ओ स्वर िहान /

ओ िहा यान /ओ िहा पाण /

भीजैत पाषाण/कजरी बेहाल /

बाम्ह रहल अछि स्वागत ठाढ़/

मन्दिर कतेक ई अंकोरवट ।

कण कण िइतिहास भरल

कतेक शासक के राज छुपल/

गौरव ,गरिमा स ओत पोत /

घड़ीघण्ट, शंख ,गीत मन्दिन बाजल

कतेक वैष्णव गान भेल /

कखनो शंकर आराध्य भेला

ताडव रप अपन धयला ।

कतो मयषगुमया ुिस्की िरैत।

मरव जटा उहिर फहराय रहल /

बड़का मबराल मरवमलंग कहलैथ/

छल हिरो कम्हयो राज एतय /

अम्ह आनन /कानन ि कम्हओ /

डरि के गुंमजत गान छल

ुदा काल के भय स िहाकाल /

गेला ओतयस नम्हं,कतो पड़ाय/

ओ हेरै छथी िनिव मनयम्त ।

अम्ह यरोधरा पुर के बासी/

ओम्ह सेयाि रेप के घर आँगमन /

ई कथा सुना बैत छै सून ि /

मक कलाकृत्य /मक मचत ममचत

कारीगर हेता कतेक सजान ।

अरि अजर ओ राम्त बनल /

देला इन्द्र आदेर जेकर /

ओ िहारून्य ि ठाढ़ एखन /

जोहैत अम्छ जानै बाट केकर ।

जक्हया ओ इक्तहास सुनौलक

जक्हया ओ इक्तहास सुनौलक
रोम रोम बरछी बक्त मारल /
केहेन आवा मे जक्र रहल छी /
कोन मूह स कथा कहु आब?
तपत बौल मे तड़ैप रहल छी
अपन परती खेत पड़ल छल
मुदा बाि अनकर लहरायल
अपन सपना बेच रहल ओ /
हम्मर कक्म्हरो मूह नुकायल/
भाक्त भाक्तक भइज लगाकऽ /
सब तर छल दाना कछक्ड़यौने /
मुसुक्क मुसुक्क कऽ नमक्र नमक्र कऽ
चान देखा कऽ क्जह ललचौने /
बाक्न्ह देल गरदक्त पर टाइ /
गरा कालल छल बक्तक भाइ /
पड़ा रहल छल तैयो मुक्ड़ कऽ /
भाखा के मोटका जौरसँ बाक्न्हल /
क्कक्चया कऽ /क्चक्सया कऽ कहलक /
अक्ह सँ केना आब तो बचमे /
अक्ह जौर के काक्ट ने सकबे /
परचम हमर सदा लहरायत
अपन आब बचल कतय कक्छु /
सबटा पक्च्छम हड़क्प रहल अक्छ

संग कदअ सक्दखन अक्हना

संग कदअ सक्दखन अक्हना ॥
आहा कहैत छी जी लेबै त /
कासक जायब ओही गड़ैत क्ण के ।
अवान ,पहाड़ ,खोह ,खवि या,/
बड़,पीपर ,ताड़ , आ कच्छड़ी/
चढ़ल जतय स ,कछव्ड़ गेलहू फेर /
कत कदिसिक अपमान भेटल बस /
भक पायल संसार स मन त /
पड़ा रहल छल सिसि अगाड़ी/
तड़फ़ैत खसल जल कान मच्छरी/
जरैत रौद /सुलगैत रिती /
खक्लाए पएर,होश से गुम छल/
करी ने सकल विशाम कक्कबो /
चलबा लेल उध्यत सक्दखन /
चलईत कजमहर नेने मोसाफ़ीर /
कठपुतरी छल ,जानै ककर/
मूक, बवि र सन ,बढ़ैत चलै छल /
तक्ज रहल छल ,संग जे तन के /
बाीि रहल ओकरा मन बलजोरी /
कल्हुतु एक क्ण एहेनो आयल /
लागल डेग बढ़त नक्ह एको /
चटान लग खसल पड़ल त /
दूर ठाढ़ दकया मुसकायल /

गरा सुक्ख अरि द पडल छल /
अयलहू अहा सनेस नेने कीछु/
कहलहू अमृत रस अक्छ पी लू /क्सासकर जाऊ पाछा के बाट सब /
आगा के कग हसी का जीबू/

संग देब हम कग कग अहा के /
तखन हमर क्हम्मत छल घूरल/
दे दूत संग सुख सब पाओल /
अक्हना चलै चलाबू नैया/
गाबी हम झुमकर जी भकर के ।।

वसंत

नाम्च रहल नब नब तरंग
नूतन बसंत नूतन बसंत ।
नब ताल वृन्द नब छाग फाग़
नब गेह देह नब पात साग ।
नब बाट हाट नब पीत गीत
नब लोॅभ कोॅभ नब हास्य रुदन
नवनीत रुप नब कलि नयन ।
नि हम्मश भ' मतराम्त कहल
आयल बसंत नबका वसंत ।
नब सखी सखा नब धुिर रास
नबका सूरज नबका पकास ।
नब तालि लि नब धूर खेल
नब जान ािल नब वृद बाल ।
सब तर दिातिल छै अनंग
नब नब बसंत नूतन बसंत ।
नब स्वप्न नयन ि उठल उठल
उल्लास म्हय ि भरल भरल ।
रज कण सॅ झॉकैत अम्छ पयश्म
नबका बसंत नबका बसंत ।
नब कुसुि कली सकुचाय उठल
दिस्ति भरि िडराय रहल
कुहुक कोॅयम्लया गाम्ब रहल
रस रंग सुधा बरसाय रहल ।

अिड बसात चलै सनन सनन
गाँिक उठल नंदन कानन ।
आयल गायल िनिॅह चलल
नूतन वसंत नब नब वसंत ।

बाजार ि स्त्री

ऑ र प कुॅ म्रि म्कयै ठाढ ऑतए ऋ
की छाम्न रहल अम्छ राह बाट ऋ
म्छटकल कारी घन केर पास
हम्ाशा ुिख िडिल िन उदार ।
ऑम्खक भाखा म्कछु कठॉर सन
दप दप चकिैत उनत ललाट ।
ताम्क रहल म्कछु गुिल चीज
बरखा बूम्न ि रहल भीज ।
बटुआ छै कॉन्ह सॅ लटम्क रहल ।
ऊचका सैम्डल छै अटैम्क रहल ।
चाम्ल चलै छै नाम्प नाम्प
रम्ह जाए छ ॅधरती कॉम्प कॉम्प ।
कतेक इर् उजावान बनल
जान भरल अम्भािन भरल ।
ककरा सॅ कि छै अम्ह जुग ि
इर् अजुश के अम्भािन तॉडल ।
वािन अवतार म्वराट बनल
इर् ताम्क रहल बम्हाड म्दस ।
करे छै सब म्कयॉ निस्कार
देम्खयॉ अम्ह जुग के चित्कार ।
इर् र प कुम्रि खूब बूम्झ रहल ।
सिरथ के नम्ह छै दॉख कॉनॉ
सहलक ऑहॉ बड बसात घाि

नम्ह लेलक कण भम्र के म्बरारि ।
आय बल बुम्द्ध के ताकत प्ऽ्ऽऽ
ऑ र प कुम्रि अम्छ ठाढ ऑतय ।

बंजारा िन

िन स्ित तिंग फकीर बनल ।
िन सोर करैत अम्छि बेर बेर
िन पड़ा रहल अम्छि फेर फेर
डोलैत जाइए िन इम्हर उम्हर
ई दंड भेदसँ बाहर अम्छि ।
िन झूठ फूइस गम्ढ़ रहल सदा
िन दौड़ भाग कम्र रहल सदा
िन के परतारय लै पाणी
केहेन केहेन इम्तहास गढल
िन ककरो बसि आयल नै
िन जोगी भऽ रमि रहल इम्हर
िन भोगी भऽ पम्ड़ रहल उम्हर
िन के लाज म्लहाज नै छै
िन हेहर छै िन थेथ्थर छै
ई चंचल पथ के राही छै ।
िन भामा रहल अम्छि चानक लेल
िन सूरज देम्ख उम्धया लागल
िन धरती पर म्छम्छयाय रहल
िन अनंति सम्हयाम्ल रहल
िन कखनो रात परात नम्ह ।
कखनो उकटा पैचीि
कखनो बाकसि अटैचीि
कखनो नरि नारीि

कखनो धोतीि साड़ीि
कखनो दादा परदादाि
कखनो िनि िजादाि
हुलकी दैत अछि बेर बेर ।
गहनाि कखनो गुमरयाि
कखनो भागक पुमरयाि
कखनो तीनि तरकारीि
कखनो कोठीि अटारीि
ियाि उनटै बेर बेर ।
मारहा पर िनि अछि डूमब रहल
िािर पर अमतरय फूलल रहल
िनि करै छै कखनो साि गान
कखनो कखनो फूसही बखान
कखनो कानैत अछि नोर झोर
कखनो हुलसमत अछि जोर जोर ।
िनि सज्जन छै िनि हरीफ छै
िनि तुलसी छै िनि कबीर छै
िनि के मकछुओ अलभ्य नमह
ई चार लोकक िमलक छै ।
िनि राह बाट के राहगीर
लिहर चौरस वा बानवीर
नृत्यरत अछि रामत मदवस
िनि के कखनो मारा िनमह
िनिक पाथेय छै बस मचन्तन ।
िनि भिणि करै छै जुग जुगसँ

ई सभ तर बूलै जुग जुगसँ
नि रास म्बलास करैत सदा
नि सन कोनो बंजारा नम्ह
नि जोगी छै नागा जोगी ।

दौपदी

सखा कहू रहस्य जिनगीक
हरि किछु नै सुझैए
आगा आगा दू डेग फराक
हतभाग्य हरि चलैए ।
संकट बाधा विध बहुल
धेने पछोर किए हमरि
सुख चैनसँ भरल जिनगी
लिखल किएक निष्ठुर मारधर
जहिना चलल जनकि खिस्सा
तहिना सकल यौवनक
कहै लेल रानी, छिल नसीब नै
देखल भटकि कऽ वनि
सूरज अहिना उगय पुरबि
पच्छिम अस्त होबैत छल ।
दारुण दुख विपदाक संग कहुना
दिवस हरि कटै छल ।
भोर साझ नित देव पितरक
हहूँ ध्यान करैत छी ।
निव तन एक बेर खसैत अछि
हि नित रोज रै छी ।
रुप गुणसँ सजल बहादुर
हरि पति कहाबथि
बाट बाट पर खतरा जिनका

हरदि घेरय आबै ।
कहू सखा हि कोना कऽ मजबतौ
जौ संग अहा नै दैतौ
निक तार तरंमात कमर कऽ
बुम्द बल नम्ह भमरतौ ।
िन पडै छै एखनो ओ म्दन
रोि रोि म्सहरैत अम्छ ।
कोना दुति दाव लगा कऽ
हिरो सभ हारैत अम्छ ।
आएल जखन भवनि हमिर
दूत सुनाबए म्खस्सा
कहने छलहुँ तम्कि कऽ हिहूँ
हारल के कोन म्हस्सा
हाम्र चुकल जे अपने पम्हनम्ह
हिरा की दाव लगाओत
पूछू जा कए गुर वृन्द सँ
ई अम्धकार के पाओत ।
न्यायक गप सुम्न दुयोधन
कड़म्कि गरम्ज कऽ बाजल
झोट पकम्ड़ दासी ला जल्दी
जौ नै होइ छै आएल
अन्तःपुर सँ दरबार धम्र
सौ जोजनक छल दूरी
िदा दूत राजा के आएल
देखबैत म्कछु िजबूरी

भरल सभामे जेठ शेष लग
कऽल जोड़ि कऽ कानैत
कातर दृष्टिसँ ताकि रहल अछि
गुरु जनसँ किछु मँगैत।
बहादुर धृतक वाक् बन छल
पाण्डव हिंकँ लटकौने ।
कहै बहुमर्या जे पजा गण
मानको किछु नै फुरैलन्हि।

कनक बजला भीष्म पिता त' दुयोधिन मिकेलैन्हि
राजनीति मे छल पपंच
अबहना होइत एलैहैं ।
कुटिल दुश्शासन विहँसि विहँसि क'
गज समान उन्मत छल ।
दूनू हाथ फड़कि रहल
नूआ घीचय लेल बेकल छल ।
पाबि इशारा जेठ भाय के
दौगल छल अजानी ।
अपने कुल के नंगा करय
दुर्बुद्धि कुबुद्धि ओ पाणी ।
पाँच पति कोन काज क' जखन
इज्जत लूईट रहल छल ।
मूँह नूकौने सभामध्य
कि जाने गुनि रहल छल ।
सारथिक पुत ओहो छल ओतै

दुर्योधन शकुनिक संग ।
मुस्कैत रहल छल कनखीसँ नैन सँ
देखि हमर क्रंदन गंजन ।
ओकरा ई संताप छलै
जे सभ चिंति मे पैठ नै भेटलै ।
बड़ अपमान सूलि सहि क'
ओ असफल आपस एलै ।
बैसि कुटिल जन के संगत मे
दुर्दिन बाट रहल छल ।
टोट करैत छल जोर जोर सँ
थपड़ी पाबि रहल छल ।
तखन सखा .हे नाथ कहु
लज्जा हम्मर के बचौलक।
मन मस्तिष्क मे आबि बसल के
नूआ हम्मर के बढ़ौलक ।
अहाँ नाथ हर कठिन संकट मे
साथ हमर चलल छी ।
जीनि संगी रहै कहियो
अहाँ जीनगी के रक्षक छी ।
तन त' छल संसार के संग
मन रमल रहल अही मे ।
कटल काल रात्रि जीनि के
विपत्ति भरल सदी मे ।
हृदय हमर जौ बसल अहाँ मे
कहु कि दोर हमर अछि

दुख सॅ भरल अथाह समुद मे
हम तखने पौडैत छी ।
बचतै नहि पाण संकट मे
जौ संग अहॉ नै दैतौ ।
दुःखपि ओ समय गुजरि गेल
लाक्षागृह मे रहि क ।
चमका बुझि माता कुंती
देली पॉच ठाम बाटि ।
नारि सॅ हम सिनु भ' गेलौ
सेहो एकदम खॉटि ।
ओ केहेन कठिन क्षण आयल
अबला नारि जीनि लेल ।
सुनैत चिन मन मरि चुकल
ठाढ हमर काया रहि गेल ।
कोना क' एतेक कुचमत विाता
रथ मे केहेन क' जोतला
पॉच अश सॅ खीचा रहल औ
टूटल जेकर पहिया ।
बरख बिन लेल अहिबाती हम
फेर बदलि दोसर नाम ।
पूजै छी मॉ गौरा दाय के
जीबैत पॉचो पति महान ।
बजैत काल रकमणी सॅ बहिस्सा
हमहू छलौ िखायल ।
अनुशासन मे राखि पति के

केहेन हम कायम बनायल ।
बरख समाप्त होमए काल
कात अवत्त परीका दै छी ।
कजनकर हाथ पकड़ लैत छी
हुनके सँ नेह करैत छी ।
मुदा कसनेह प’ हम्मर छल
पकायो सब के शंका ।
ईर्ष्या डाह सँ जरैत रहै छल
हुनको मन के लंका ।
अजुत्त कदस ककछु नजका घुमा क’
हमरा कदस हेरैत छल ।
हृदय चीर क’ देखय चाहैत
आकखर की सत्य कथा छल ।
योग्य पका के पती भ’ क’
तैयो रहल उदासी ।
तड़पैत देह पाण सब रकह गेल
रकह रकह पाड़ी भोकासी ।
लोकदि के देकख थमकक
उतान भ’ हम चललौ ।
बूझत ककयौ ककए कताणी के
मन मे िह उठल छै ।
ओकह ि िरा सँ भस्म होबए लै
राज सजल छल सुनका ।
आह्हर के पूत आह्हर
चाकल चलै छल बदतका ।

ह्रदय मे ओकरो छिल उठल छल
याजसैनी के पाबी ।
बूझ नै पाबै रहि रहि सोचै
कोन टा दाँि चलाबी ।
अभिमानी हम छलौ नाथ
बड़ जिदी आ' गौरविही
शपथ खा क' केस जे फोलल
सेहो केलक तबाही ।
बुद्धि बल .चातुयटसँ हमरो
गढने छलथि विधिता ।
ता पर रूप मनोहर देलन्हि
सकल जगत के जाता ।
लड़ैत रहल अछि जुग जुग सँ
नर पाबै लै नारी के ।
बिसरि क' अपमान सीमा रेखा
अतित्य शरीर ििरी के ।
एतेक आकरष्ण द' हमरा
नीयत सबहक बिगाड़ल
देखै जे बाहुबली हमरा
पाबै ि एिह चक्र आबै ।
के पूछै छल अबल सँ
कि अहाँ किनका चाहैत छी
अपन गप मनाबए ि िला
केकर गप मानैत अछि ।
बाहर के कोलाहल तजि क'

अन्तःपुर मे आयल ।
देखि मुदा ऑगन के दुर्गति
मन हम्मर खौझायल ।
छल. छदम :कुत्सित चालि सॅ
भरल भनि के झरोखा ।
जनिका बूझलौ सहृदए सयानी
ओ सब बङका ि िखा ।
वारवाट जेका चालि बदलि क'
भेद लेबै छल नारि ।
आबै . .लग ठहरि क' देखै
ई केहेन मत्त मारि ।
कुटनी . .चापसुनी. . चुगलखोर सब
दासी मीत कहाबै ।
अनकर खिस्सा मे किछु अपनो
लावा लपेट कहि आबै ।
बाहर के बङका तमाशा सॅ
गरम होईत छल आंगन ।
क्लेश .रि के लहकैत लाि
लहरै बनि दाि निल ।
कान रहै छै महल मे केि लि
ऑखिक' काज कतौ नै ।
फुसफुस करि क' सि रि गूॅजै छल
सभि सुनाय किछु नै ।
भाग्य कत कि पॉच गाम के
ओ शासक कहलेतथि

मुदा सूई के नोक बराबरि
दूयोनि कत दैतथि ।
कुश ओछा क' जंगल जंगल
राखि कताबैथ परिजन ।
कएल की पाप बुझि नहि सकलहुँ
बाट घाट मे भटकैत ।
दासी हमरो काल बनौलक
सैरन्ध्री कहि लोक हँसल छल ।
केस गुहैत हम विराट स्त्री के
कानल भरि क्षसकारी ।
देख सून मे कतेक बेर ओ
नर पिशाच हमलारि ।
ताङय लागल हाथ पकङि क'
दैत पेम के आखर ।
आखीर करय पङल भीम के
कीचक कि किछु बल सँ ।
आत्म रक्षा लेल भेलय ई हत्या
नहिं जाने कतेक छल सँ।
अहिना पति परोक देखि क'
चकित भेल छल जयदथ ।
कुटी के आगाँ ठाढ भ' गेल
रोकि क' अपन सुनर रथ ।
कामदेव के तीर लागल छल
हृदय मध्य बङ भारी ।
बहलाबैत फुसलाबेत बढि क'

पकड़ नेने छल साड़ी ।
तीर तीर घिसयाबए लागल
गाड़ी कि आनय लेल
छल तैयार तीर तरकश लै'
छटपट ओ भागए लेल ।
ताकि अयला पाँच प्राण
देखैत हम्मर दुरगकाया ।
घुस्सा लात सँ ढेर कयल
खूनम खून छल बकटया ।
युवकिार के कहला प'
पाण हरण नहिं भेलिह ।
भीम अनुज गरिज गरिज क'
केश हरन कए लेलिह।

तोड़ ताड़ क' सीमा सबटा
मन म्ो छोह उठैत अिछ ।
विपदा संग सब ठाम सिदखन
हम्मर नाम जुटैत अिछ ।
राजपुरख के संवानी भ'
पग पग ठोकर खयलहूँ ।
कोमल पैर जरैत रिती प'
राखि राखि चललेलहू।
निािसी सब सखी सहेली
ऑखि फाड़ क' हेरै ।
कालखिा हमरा घाम म्ो देखिक

ऑचर ल’ क’ घेरै ।
केहेन दुि ओ राज हेतै
जे निािस पठौलक ।
जनी जाक्त सब घेट कलाक’
हमरो बड़ समझौलक ।
कए करब अहाँ भानस बासन
हम सब जखन उपक्स्थत ।
अहाँ सनक सुबुवि सुनार
रहू सक्दखन क्यािक्स्थत ।
मुदा कहू ओक्ह सरल कात
पाणी के की कक्हतौ ।
कोना कटल उपािस मे जीनि
कोना क’ नोर बहैबतौ ।
तखन विहँक्स क’ हमहू कहै छलौ
क्खस्सा रंग कारंगा ।
कोना कोना बलजोरहा सब कली
मारै तुच्छ फक्तांगा ।
िक्त उपास मे नर नारी सब
हमरा ह्योत’ आबै ।
निर्देिि लछमी बुक्झ क’
दशत कर कर जािँ ।
मातु कुंक्त के अचरज होई छल
भीलनी संग देक्ख क’ हमरा ।
पंच बना क’ सब कयो रखने
काणद्य माक्त रहल छल ।

दाना दाना लेल तरक्स गेल रक्ह
एहनो क्दन हम कटने छी ।
पीबी पाक्त पात राक्ह्ह क’
कतेक राक्त हम कटने छी ।
भक्र भक्र राक्त तरेगण देखी
कहुना नीद लगीच आबै ।
चैन के पहर दू पहर काक्ट क
गृह कायटमे लावा जाई ।
भोर होय त’ गाछ क्वरीछ क्दस
टक टक नजक्र लगा आक्ब ।
देखी कतो फङ फूल त’
झट सॅ तोक्ङ क’ ल’ भागी ।
गीत म्ि र हमहूॅ गाबै छल
मुदा भास नै आब फूटै
कतो कोनो राग सुनी त’
िर सहस्तो नोर छुटै ।
िनर भालू .रीछ वक्वित सब
संहक्तया बक्त लग रहै ।
कूकूर .क्वलाक्ङ खरहा .मूरक
कुक्टया मे रच्छा आप करै ।
मुदा ध्यान सॅ छुक्ट नै पाबै
हमरो ओ संकल्प भयानक ।
कोना क’ हम्मर केस तीर क’
महल सॅ बाहक्र आनल ।
कोि सॅ थर थर कॉक्प कॉक्प

पीसैत दाँत हम अपमान।
तकैत रही ओ कण की ठंढी
पाबै कखनहुया हम्मर मन ।
नाथ ...क'ल' जोकर बॉक्स रहल छी
सबटा पीर जीनि के ।
आखीर कते पाप कयल
काटै नै ताप कतज मन के ।
अवगत के दुखता हम अवगत
कासी कदन ि किैत रहलौ।
कका नै कखनहुयो िाह कमती भेल ।
जल मे रहलौ तइयो ।
अवान के गुण लोक बुझैत अछ
मारक ि संहारक ।
मुदा कण कण शुि कवर क'
बनबैत सेहो अछ पानि ।
र प हमर पचंड कोि सँ
हरदम रहल अंगारक ।
अन्तःकरण मे इच्छा रखल गेल
होईतौ हम उिरक ।
दया िरम सँ भरल कहय मे
कखनहुयो लोभ नै आयल ।
अन िनि देखख नै कखनहुयो ककरो
हम्मर मन ललचायल ।
विधिना हमरो देल बहुत
तखन अपन कसमत छल खोट ।

भनि अटारी बखारी खूजल
ऑचवर हमर कतेक छल छोट ।
बादकर सॅ कत रोज लडैत हम
फूस के छप्पर छानी ।
समय कि के बढा जाईत छल
चूबैत टप टप पानी ।
पॉच ीिर के नीद नै भंगटै
रव्ह हम अलख जगौने ।
जीि जह्तु सॅ रका हेतु
बोरसी मे आवा जरौने ।
ओहो की व्दन छल नाथ जखन
परसौती गृह हम ताकी ।
कत कव्रतौ विशाम कव्म
छोव्डतौ केकरा प' बाकी।
अपने हम बल ..बुवि के
चाकर दास बनाबी ।
अपने बनी सखी सहेली अपने
राह बनाबी ।
के पव्तयेतै कोना क' नारी
जंगल मे राव्त गमौलक ।
पॉच पव्त के संग पाव्ब क'
तैयो चैन नै पयोलक ।
तैयो व्दन ओ सब भल छल
आस के दीप जरैत छल ।
गरदा माटी पएर सनल छल

पाखी कल्लोल करैत छल ।
पीबैत जल गजराज के देख
चकित भक्त हम हेरी ।
आब लगैत अछि काल के दिन
लगा रहल छल फेरी ।
राज सती हम क्षत्राणी
कोनि हमर बड़ भारी ।
सकल संपदा लुटि लोक
मारै शब्द कटारी ।
ई नारी घमंडक मारल
एयह अछि रिपु के शक्ति ।
मदमातल दिन राति रहैत अछि
करैत कृष्ण के भक्ति ।
कहैथ मुरलीधि की करता
हम एतेक बलशाली ।
हमरा लग बल चातुयटअतुल
अछि हुनक हाथ त' खाली ।
दुर्योधन के ललकार सुनि
कालो घबडाए रहल छल ।
सबटा गह नक्षत्र कुमंगल
ओहि ठाम आबि बसल छल ।
शकुनि मामा भ' क' जे
खेल अनथटके खेलल ।
अपने हाथे सहोदर के
सौभाग्य परम हरि लेलक ।

जूआ ..मदिरा कांदा .. कलह
सब के सहयोग ओतय छल।
राजा के सिंहासन सँ
यमराज के राज चलैत छल ।
दूर लग के राजा हॅसि क'
निष्कर राज कयल भरिपोख ।
जे बॉझल अछि गृह कलह मे
ओकरा सँ सब रहै नीक ।
घेरने काल हस्तिनापुर के
काल राति सन महाविकिट ।
दूर दृष्टि के गप कतए
लुप्त जखन दृष्टि निकटस्थ ।
महापुरुष कियो एहेन नहि
जे कौरवि के राह देखा सकितै ।
कियो नै कहल जे शक्ति बढा क'
अश्वमेधि ओ यज करितै ।
देवि. .दया. .दशत्व सब बुझि क'
हम चित शिथि मे करैत अयलहूँ ।
शेष जन के मान करैत
अपमान के घूॅट पीबैत रहलौ ।
जहि पैलाथि ल्‌ौ लोक करैत अछि
ति तीरथ पूजा अर्चन ।
नौत द' ओत काल बजौलक
नदि करय ले सुख जीनि ।
कए सुबुद्धि हमरो जन के

रहय एना नहि व्याकुल चित ।
उपजै हृदय मे जान कए बुझै
बंधु बांधि व्हत ि मीत ।
दंड भेद ि साम दाम सँ
चलैत रहल संसार अखिल ।
पेम पेम कतबो ऋषि भखलैन्हि
ईर्ष्या के बेल लतरैत गेल ।
कियो ककरो देखय नहि चाहै
गप करत चाहै कतबो विशेर ।
काज सिथिटमे लीन सदा
बात बात प' करय कल्ोस ।
अशत्थामा के नाम सुमरि
अंगोर उठैत अछि हमरा मन मे।
मुदा देखि पत्नीक हुनक र
माए आबैथ छथि नैनन मे ।
गुर स्त्री ओ कानैथ नै
जग मे नोर बहा हमरा सन ।
जीबैथ हुनक पूत बरख सौ
जुडैल रहैन्हि हुनकर तन मन ।
हुनक तेल भरल दीया मे
जरैत सहै सुख के बाती ।
दूनू कुलक` नाश कएल
ओ छल अपने गोतिया नाती ।
क्षमा करैत छी नाथ अहि के
ई सब चालि कियो आओर चलल ।

अवाम पुती दर्ग हृदय के
पक कएए रक्तै उजलि ।
कएक जनम के कमटभोगै लै
आयल छी नावर तन मे ।
तङवा तङवा क' राक्त कदसि
संकल्प लईत छी मने मन मे ।
जीबाक अक्छ विरह कुंड मे
रोग शोक कएए घर बनैत ।
मन राक्ख दी मनमोहन लग
क्लखलाहा सब तन के हैत ।
शरीर के मिटनि भेनाय
के एकरा एत रोकक सकल ।
मुदा पाण के आकुलता प'
गंगा जल के छीटा देल ।
दानिल मे झरकक रहल छी
तदवा आस नै तजलौ ।
कॉट कुस सँ भरल मागटप
माथ उठा क' हम चललौ ।
भेलौ जखन जखन पुरिसी
तीर चलल तर आवर चलल।
जतेक जेकर व्यंग णि छल
सब हमरा ललकावर चलल ।
कएएक हमरा सँ एतेक ईष्या
बजलौ नै कटु चिन कनको ।
आदर सँ हम नाम लईत छी

दास दासी चारण कानको ।
संकचत पाप कतेक हमर छल
कयो हमरा ई बूझेलक नक्ह ।
कशाका दीका भेटल नकं छल
मातु कपता लग रहलौ नक्ह ।
जकमते जुबती भ' गेलहूँ
इहो छल अपराि हमर
पुर खक तृष्णा पूणटदृवि
कयल सुबुवि नि हमर।
ताकक नजकर भकर बनै शतुओ
हाय रे वििना ..जो रे कपार ।
सुमीत कहाॅ कतौ छल हम्मर
जे छल से सब शतु हजार ।
भनि के रानी राजकुमकर सब
रक्ह रक्ह मारै ताना ।
नाकर के भेस मे लङ्य आयल
अक्छ ई कोन मदाना ।
अपन झरोखा मे बैसल हम
सबहक गप सुनै छी ।
मुदा खून के घूॅट पीकब क'
चुपे चुप्प रहैत छी ।
पक्हनहूॅ सॅ सब सखा जनानी
पीठ मे मुॅह छल चमकाबै।
आक्खर की ई पढल म्ांत
कयो और नै ककरो मन भाि ।

मुदा पत्यक मे होश गुम छल
किसनेह देखाबैत गरा लागै ।
तखन छलै बाह्लल मुटी
थाह नै किनको किछु लागै ।
जादू मे विशास कवि नै
नै मंतर नै टोना ।
कमटपथ प' चलैत रहल
जग हमरो कहलक कृष्णा ।
चार कात अनहार जखन छल
बाट नै किछुयो सूझै ।
ऑखि मुनने चलैत रहल छी
कण कण दृग के मीजैत ।
मेघ भरल अनहार राति मे
चमकै जेना बिजुरिया ।
नाम अहॉ के कौि मगज मे
दिशा देखौल सॉकिरया ।
डाह दियादि एहेन होय छै
बिसरि न्ौ सकतै ई जग ।
भाय भाय के रक्त पिपासु
उठेतै आर केहेन पग ।
कहबा के त' लोक कहै छल
दू के कारण ई जुि ठनल ।
एक दिस दुि दूयोिन
दोसर दिस ई नावि रहल ।
बिसरय के त' नहि बिसरलौ

दरबार सजल अपमान अपन ।
बरख बरख नि नि भटकल
तजलौ नै पक्तशोि चिन ।
क़..तेक बेर त' पाडि हाक्र
कतो पडा' क जाए बसैथ ।
मुदा कमटपथ के चेह्लाबैत
रखलौ हम ओ काठी जरैत ।
काक्ल होय से आय हुए
हम नॉक्घ चुकल छलौ सीमा ।
कमा करय नक्हं आयल तक्कया
लई छी संहार क' वजम्मा ।
जौ लछमी के अितार छलौ त'
भेल कक्ए संहार एतए।
सासुर जाक्ह मे पएर िरल
ओ चक्ल गेल पाताल कक्ए ।
एक हाथ सॅ थपडी पाक्ङ
दुयोिन की कक्र सकतक्थ ।
दोसर हाथ हम्मर नक्ह उक्ठतै
रणभेरी नक्ह बक्ज सक्कतै ।
भॉक्ज रहल तर आक्र हि मे
अपने कुलके घाती ।
क्ताया क्तलवक्ख क' काक्त रहल छल
रक्ह रक्ह पीटै छाती ।
आखीर ओकरा िर कक्एक छल
हमरा सॅ एतेक भारी ।

नजरि उठा क' हम त' देखल
हारल छल जखन जुआरी ।
खोदिआन मे लागल हरदम
गुप्तचर सब छोड़ै छल ।
सबहक कान लगा हमरा दिस
मुँह अपना दिस मोड़ै छल ।
मनुक्ख नै बुझलक अपन स्त्री के
अनका प' ध्यान गड़ौने छल ।
जासर क' सब औकात अपन
हमरे सँ नजरि लड़ौने छल ।
हमरा लेल ओ तृणति मानुर
बेईमान हत्यारा छल ।
नहि छल लच्छन कुलदीपक के
मूरख िर बंकाडा छल ।
छन छन गरजि गरजि क' बाजै
लाज कि नै एकोरती।
तामस जेना नाक प' बैसल
केहेन जाता केहेन जाती ।
नहिं ओकरा विकि सँ मतलब
नै बुविचार सँ काजे लै ।
नहिं ओ सखा सहोदर बूझै
नहि गुरजन के सम्माने दै ।
भय के ओ सामा्रज्य चला क'
मोड़क देलक जनता के सरि ।
चाटुकार सब सजा रहल छल

ओकरे पतन लेल गहबर ।
राजपद के सब दोर सॅ
गव्सत ओकर संपूणटशरीर ।
चलै जेना गजराज चलैत हो
िरती नै हो .हो जागीर ।
हॅसी छुव्ट गेल जौ हमरा त'
अव्ह मे हम्मर दोर कतए ।
देख व्कए नव्ह सकल दु
कतए पाव्त सुखैल कतए ।
चंचल चपल सुभा हमर
नव्हं सोची आगॉ पाछॉ ।
बूव्झ नै सकलहूॅ ममटशब्द के
सेहो बनल एक बा ।
कूव्द घूव्म चली मस्त भ'
हम त रहल जंगल िसी ।
महल के जीनि रास भेल नै
नव्ह बूझलक ई भनि िसी ।
कान मे फूस फूस बाव्ज नै पाबी
जे बाजी से जोर ही जोर ।
केकर के की अथटलगाबै
सुव्त त' हुए मन कठोर ।
दोरी अपना आप के बूव्झ क'
हमहूॅ नतमस्तक छी ।
बेसुि.. .. सनकल .मानुस सन
सब के घुव्र रहल छी ।

सप्पत बेर बेर क्ह खयतौ
आवा मे घी नक्ह ढक्रतै ।
क्षाया चक्रत के अङ मे पुरखजन
मन मानी नक्हं कक्र सक्कतै ।
कुरकेत्त सॅ आपस जखन
आबैत छल सिरी ।
सब गाडी प' सब चढल छल
बचल खुचल नर नारी ।
कयो विक्प्त. .कयो क्तकारै
कयो मूक्छत्त भक्र बाट छलै ।
उह्मत कतैक गाडी सॅ कूदै
राह बटोक्हया फूक्ट पडै ।
ि पीपर ठाढ ओतए
ओ अपने नोर बहाबै छल ।
बहसरोरि के जल रक्ह रक्ह
थर थर थरथर कॉपै छल ।
तात . ..हम कए गिह बनल छी
कुरकेत्त ि पीपर के ।
गीता अपने बॉक्य रहल छी
बढबैत जान िनुटिर के ।
सबटा मोन आक्ब क' फाडै
क्बन कोदाक्र गडासी के ।
कतए क' पटकी माथ
क्क बदलै भाग्य पभू दुरभागी के ।
काक्त काक्त क' भीज र ह ल अक्छ

हम्मर सबटा नूआ ।
ई भदविर मास मे क्सहरै
भूलकै रक्ह रक्ह ूिआ ।
दादूर .क्झंगुर . कीट . फतीगा
सब तकर बील बनाओल ।
क्तशा राक्त मे मेह के संगे
ईहो पीर बढाओल ।
राक्त राक्त भर नीन नै आबै
क्खडकी सॅ झॉक्क रहल छी ।
दूर दूर वक्र खड नै खडकै
सनाटा भॉक्म रहल छी ।
क्वग्घाडैत अश गज संगे
असहाय मनुक्ख क' हाकोश ।
कान मे गूॅजैत रहै सक्दखन
क्हय के डाक्ह रहल अक्छ।
ओ अठारह क्दन सॅ पक्हने
जीनि नै एहेन विकिट बनल ।
अगिह मे छल पाण मुदा
जीबय के क्कछु संबल छल ।
तखन छलै उमंग क्हय मे
तन मे छल उत्साह अजस्त्र ।
मुदा आब ओ गप कतए
आब बचल मात अस्त्र ि शस्त्र ।
नोर नै सूखै मिद्याज के
अजुनटके तीर नै फेर उठल ।

भीम गदा के तोड़ क' फेकल
नकुल सहदेव मुरझाय रहल ।
कहै लौ हम पटरानी बनलहूँ
कोन विलास क्षय मे बॉचल ।
कज बंधु बाधि तनुज
लग पास मे किछु नै रहल ।
मान केहेन अपमान केहेन
जब सखा मीत नै हो अप्पन ।
हेरै लौ सुहृदय नञ्ह अछ
सुन पड़ल अछ रंग भनि ।
आदर सत्कार शरीर के सीमी
आत्मा के नञ्ह फकटपड़ै ।
जे एञ्ह रहस्य सँ किपत रञ्ह गेल
वानका सब लेल नकटइयह ।
राग रंग रस सबटा सोहै
अपने राज नगर मे ।
अप्पन भारा .अप्पन माव्ट
अप्पन लोक के संगत मे ।
सोना .रपा हीरा जविहर
देल क़तेक दुख हमरा ।
नि के खावर कलह फूव्ट गेल
उठल भयानक धिरा ।
दग्ध हृदय फाटैत अछ रञ्ह रञ्ह
जवालामुखी बनि लेल ।
सहृय नै होईय असह पीर ई

समय पाबि घनघोर बनल ।
चक कोन ई चलल सीमी
सकल मनोरथ टूटि चुकल ।
पुरखक अहि अहं खेल मे
स्त्री जाति कए लूटि चुकल ।
नहि चाहैत छल पाडि कहियो
युकिरैथ सजिन जन सँ ।
अहिना बलगर राज्य हड्ढा क'
राज करै छै जुग जुग सँ ।
राज्य बला आन राज्य बला
सब माटि के अछि पुतला ।
खेल रचा क' समय काल मे
सब भ' जायत अछि नपता ।
माया के संसार मानि क'
जंग छिड्ल मि गजजर ।
फूस बनल मयादा जर क'
चार कात पसर गेल ।
मुदा नाथ अहि खेल मे तड्फल
सबसँ बेसी नरीह पजा ।
भले कयो सिंहासन बैसोथि
करत के हुनकर पर्चचा ।
झुका चुकल सब भाग्य के आगाँ
अपन अपन माथा ।
मूक बधिर अपंग बनल ओ
ठोकैत छथि छाती माथा ।

घर घर सून मसान बनल अछि
देहरि प' नै कतौ बड़काया ।
बस्ती मे अलच्छ कनैत अछि
कूकूर . . . गीदड़ .. .नछिया ।
आस त्यावा क' जीबि रहल अछि
नगर गाम के जनता ।
विवस्सा ककरा कहतै के
सब भग्न हृदय के सुनता ।
सनाटा पसरल महल म्
अछैत सेकि दास खसि के ।
बाजैत बाजैत कोढ फटै छै
जीनि बानु आहलादके ।
गेसू . .सुखना . . किया . . परमा
कोचानि सब आबि कहै ।
चुली सब कि बाझा चुकल छै
नै कतौ कनसार रहल ।
मालजाल सब बासुक्ख गेलय यै
बैसल नोर बहाबै छै।
चारा कतबो राखल सोझा
मुँह कक्यो नै घुमाबै छै ।
कतो कयो कल्लोल करय लेल
विया पुता नै आबै ।
बनल ृि सब रि प' बैसल
बांक्त बदसि गमाबै ।
नै कयो गाबै गीत क फागुन

सेहो सुने लागै ।
भावा गेल रंगरेज की ओकरा
रंगो नै आब सोहाबै ।
नाम प' हमर विकारैत अछि
कुलक` कन्या मन्या ।

पन्तशोषि के महाजालि मे
भस्म जेकर भेल दुनिया ।
हम त' आगाँ बढ़ि सुभद्राके
गरा लगाबए सयिं गेलौ।
किंतु देखि तनल भृकुटि
सहमल चुप्प आपस अयलहूँ।
पाबि पान पीढ़ा लै आब
नै पूछैत अछि पाडिपती ।
पथने छै अजान कान
सब तकर बूलै छै कुटनी ।
सौतिन सब नैहर सँ आबि
संबंधी संग चौल करै ।
दुषि चिन संग गाबि शाप सब
हमरा निदंस पेकसत कवि क' ।
देवि.. . आब अहाँ कहू कि हम
अछि संताप सँ तारण पाबि कोना ।
सकल विशि मुँह फेर चुकल
बानि आधिर क' पाण वटकत कोना ।
नाकि एसगवि ठाढ रहै छै

जखन विपत्ति आबै छै ।
अपन जीनि के दाि लगा
सबहक जीनि तारे छै।

कणटविदारक चीख सुनि क'
कुहकि कुहकि कंदन काटैत छी ।
देख पाडि के घोर व्यथा
हम मंडील मंडील भागै छी ।
युि समाप्त त' हेबा के छलै
इतिहास सियं भेल खून सॅ लाल।
मुदा विनाश के गरदा ..माटि
करतै सृवि ि कि आत्तनाद ।
ई चुनमुनिया सुग्गा सेहो
देखि ऑखि लैत अछि फेर ।
नहि बाजै छै कोयली बुलबुल
नहि नाचै दुरखा मे मोर ।
आकि ि रा प' गढि बहना
हमरा कियै किासयौलौ यौ ।
कतबो खून राजपूत कहियौ
हर कण हम घबङेलौ यौ ।
राजा के अविकार नै छै
ओ फाग खेलै शोणित सॅ।
किसिया. काजरि पाजेब झूमका
हेरै बाट विरहाकुल भ' ।
चेरी आकि चुप नोर बहाबै

आब नै करए कठोली ओ ।
कण कण ऑचर ऑख पोछल

कासर गेल अछ बोली ओ ।
विना कए काष्ुर भेलथ
अछ हस्तनापुर के खातर ।
एके संग कए जनम लेल
िर.. . ुिरंिर औ' शातर ।
आब लगैय जन साािरण
जीबैत सब क़तेक सुखारी छै।
ह'र' जोईत क' वायतम आबै
भनसा करै सुनारी छै ।
पीढा बैसल पत के सोझा
राखै ओ भरल छै थारी ।
पेम सँ दूनू मलजुल खाि
चाहे हो साग गेह्हारी ।
विया पुता के सोर सँ हरदम
कुटया ओकर मनोरम छै ।
लोकि सँ गप लड़ाबैत
मास नहाबै संगम छै ।
मुदा छो ट
सन सुख नै द' क'
बना देलहु पटरानी ।
शतु सँ भरल कनैत वकिल
राज्य के महा रानी ।

अहाँ हमर संगी बिन कण कण
हम्मर नोर हरै छी ।
सकल जगत के दुर्गति कष्ट कष्ट
मन मे आस भरै छी ।
पभू हमर संबल छी बल छी
अही आह्हर के लाठी छी ।
पैक्स हृदय मे नयन ि र सँ
मस्तिष्कक हि िनटाबैत छी ।
सोच्य सोच्य क' व्यतीतक व्खस्सा
पाण कटै अछि अहुरिया ।
बंद भ नि कियो देख नै पाबै
पटकुनिया देने बहुरिया ।
नाथ हमर सौभाग्य अटल अछि
तईयो हम विरहिणी बनल ।
कतबो सजाओल तन के चारण
मन बैरावान किछु नैसुनल ।
उकार कैद के सजा द'क'
हमरा किए छोड़ि देलहुँ एतय।
हे मुकुन्द ल' चकसुदर्शन
टुकड़ी हम्मर किए नै बनैलहू यौ ।
स्त्री मात एक भोग्या नारी
आर ओकर सम्मान केहेन।
माता हो भले ि र पुरख के
पीबए छै अपमान कतेक ।
जौ सुनतथि ओ मातृशक्ति के

युि के जीला थक्म जैतै ।
मातु कुंती गािरी के संग
जननी सब के क्हत रक्हतै ।
बाक्ज भूक्क क’ कतबो रक्ह जाए
नाक्र तर आक्र उठाबै नै।
सहने अक्छ ओ पसि िदना
जननी ओ कहलाबै छै ।
िस्र .. उपािस .. अपष्ट तपष्ट कक्र
सब के उमीर बढाबै ओ।
राज कक्र काकाल बूझै सब
अक्ह पाछाॅ नक्ह भागै छै ।

मुदा कात क’ स्त्री िणी के
ओ सब चाक्ल कुक्टल चलला ।
राक्त राक्त रङ्यंत रचै छल
चाक्ल चलब कोना अबाला ।
एक विनती हम करै छी नाथ
स्त्री नै दूक्रत हुए जग मे ।
नै रहतै पहचान पुरख के
िशि के थाह नै क्कयो पेतै ।
नाक्र प’ सब िमटक्टकल अक्छ
गोत. . .मूल .. .मातृत अखंड।
करणा दया और रस संग
सब संस्क्कार के बीजक मंत ।
मातृ पथम गुर होबैत अक्छ

कमटअपन नै बसिकर सकै ओ।
कखनाक सथिटदैक्हक जीनि के
भस्म नै ओकर मिटकरै ।
तखन कहल गीता मे अपने
हम ही जग मे सृवि विनाश ।
हम ही छी उक्दत भास्कर
हमही जीनि मृत्यु महान ।
सकल विश अच्छ गास हमर
सब पुरब जनमक खेल रचल ।
पारबि के पाप नै पाछॉ छोडै
चलैत आबै छै जन्म जन्मातर ।
नाथ अहॉ मन के सिमी
आब आर कहु की णिी सॅ ।
जीनि . .हास ..विलास .. विनाश
िलै नै ऑक्खि क पानी सॅ ।
मीत अहॉ बस बसू हृदय मे
हाथ सॅ हम छी कमटकरैत ।
क्मयत कमटहमरो कािक्रत
काक्ट लेबै जीनि अछैत ।
क्मयतम कृष्ण नाम नि अप्मन
हमरा सॅ नक्हं कखनो लेब छीन ।
भलै करै कतबो जग गंजन
सुनैत रहै मन अहॉ के बीन ।
अक्ह क्ण भंगुर माया नगरी मे
अमत्य केहेन ई अक्मलारा ।

जीनि सुख सौभाग्य भरल हो
जगमे बाजै जन पेम के भारा ।

यरोधरा

(2011 म्दसंबर िस ि हाति बुद के िहासंबोम्ध पाम्प्त के 2600 बरख भेलोपरात 'हि हुनक अदम्षामानी के िनि पाडैत ई काव्य कुसुि हुनक चरण कलिेषु ि सम्पित कय रहल छी । ..)

ि रि छा टूटै .. लोक कहै छल
धीरज धर पटरानी
सून ऑम्खि सॅ भवन म्नहारैत
फेर खसैथ िहारानी ।
म्टकुली भाल सॅ खसल म्मान भ'
लट सबटा म्छम्डयायल ।
अस्त व्यस्त सब असन वसन छल
गाल प नोर सुखायल ।
पडल पलंग प' म्चत बेसुद
संगी चेरी सब म्हचुकैत ठाढ।
ऑम्खि खुजैन्ह त' हेरैत चहुॅ म्दस
आखीर कोना खुजलै केवाड।
म्दप .म्दप . म्दप. म्दप दीप जरै छल
अम्हना आधी रम्तया ।
ज्वार उठाबैत िनि पडैत छल
रम्ह रम्ह बीतल बम्तया ।
रंग िहल के लाल सोनहरा
म्लखल सब दरवाजा ।
ि दा नै कतौ बाम्ज रहल छल

दुंदुभि वा बाजा ।
सोइरी गृह मे पड़ल मकरोरी
बनल हलाल के बकरी ।
बैरीन नीद आँखि मे पैसल
लुटा गेल सब गठरी ।
नाथ भाकसि क' दार फोलल त'
जोत मकएक नै मझिायल ।
कतौ कोनो खट खूट होयतै
आँखि हरि खूजि जैतै ।
हि कलंककनी पड़ल रहि गेलहु
सुख सँ सुतल ओछावन ।
भटकै लै ओ बादा भ' गेला
दुगरि जंगि वन कानन ।
कोना जीयब अहि सून भवन मे
हृय हमरि काँपैत अछि ।
िईला प सब के डाहै छै
जीबतै हि डहि जाय छी ।
हँसै छलथि उदान मे कहियो
कखनो एको पल लौँल ।
तृप्त होय छल नि मिदर
हमरियर भाव जगै छल ।
िखारबिन्द प' मछटकल हुनकर
कारी कारी कुंतल ।
हुलसि हवा सँ गप्प करै छल
झूमि झूमि क' चंचल ।

ई दुधमुँहाँ बालक लग ि
काल बम्म जनु आयल ।
क्ण ित ि भवन त्यामा क'
सब वैभव के म्बसरायल ।
नाकिरण ओ अपने कयला
म्बनु पंम्डत म्बन जानी ।
म्पाता के पेि कतय सौ पाओत
ई म्नारदोष परानी ।
कोना क' झूलत बॉम्ह जनक के
कोरा कॉख लै' तरसत ।
चान सन अम्ह नेना के देम्ख
ुिख िडल केकर हरषत ।
फेर कहम्थ अम्ह नेना के दोष की
भसि भेल ओ हिर कपार ।
देम्ख क' धधरा म्बरम्हणीके
थमि जायत छै बहैत बयार ।
रचलम्ह कोन म्बधाता हिरा
म्चकनी िम्ट गम्ढ गम्ढ ।
जानै म्कएक कहै छल सब म्कयो
लछिी हिरा बम्ढ बम्ढ ।
तम्ज गेला एकात भवन ि
तुम्ट हिरो म्कछु हेतै ।
म्नारािम्त ि म्संहदार सॅ
अकारण म्कए म्कयो जेतै ।
अपना ि एतेक डूबल छम्थ

सोम्य नै सकला हमरि ।
कोना मान मान हि म्दवस गायिब
िहि हेरब हि ककर ।
अजगूत रप धम्र देलम्ह म्वधाता
ओही ानुष के तन ि।
िन ि छल वैराग्य साओल
रम्हतम्थ कोना भवन ि ।
लहठी कंगन पाजेब म्बम्छया
हार नवलखा हीरा ।
कणम्फूल नकबेसर .. ड़ढकस
औंठी .. नथुनी .. सीम्थया. .।
तजली सब म्संगार की
काजम्र बास ने ऑम्ख लेलक।
अटोर पटोर सतरंगी चुनम्रया
अमान के संपम्त बम्न गेल ।
पीत वस्त्र एक धारण कयलम्ह
जोमान रप बनाओल ।
कठोर वस्र म्दन बन्हल छल
राग ाहि सब भागल ।
ओ संन्यासी ाहिल के बाहम्र
हि जोमाम्नया भीतर ।
एकसंझा जे अन उसीनल
उदरपूम्तशके लायक ।
देम्ख फूलकुम्र के दुगम्त
जनक भाय सब आयल ।

नम्हि गेली ाुदा छोम्ड़ि डीह
कतबो म्फकयो सझ्ाािओल ।
ओ सुनम्र सवाग एखम्न धम्र
र पक छलीह बखारी।
दूर लग के राजा कतेको
पठबए लागल पुछारी ।
रानी ाुदा सजानी एतेक
ानि सॅ कखनो नम्हिं हारल ।
कम्र बहाना जतन जतन सॅ
सब के लग सॅ टारल ।
आब हरि जीवन वसंत सब
हुनके संग रलि अम्छि ।
जाम्हि ागिशप' नाथ चलै छम्थि
ानि हरिो संग चलल अम्छि ।
वृद र्ूदोधन देम्खि दृश्यि सब
नोचम्थि अपान ाािथा ।
आर कतेक दुख देखय लेल
रखने जीम्बत म्बाधाता ।
तजला पाण हवेली के'
बाहम्र जाकए एकरा ।
ओ तजली सब वैभव अनधन
भ' घर ाि एकसरहा ।
रोज सुर ज के जल चढा' क'
ाािनती ानि ानि करलम्हि ।
वन वन ाि जे म्फम्र रहल छम्थि

हुनकर पीर सब हरबैन्हि ।
तेज घाि ि बूलैत टहलैत
हेता भुक्खल प्पायासल ।
गरा सँ नीचा पाम्नि नै उतरैन्हि
लागै सब म्किछु डाहल ।
सूॅन भवन चिगादम्ड़ बाजै
दीप मिझल दीपदानी ।
म्दिवस कतेको पट नम्हि खोलम्थि
म्विरह ि रलि दीवानी ।
आब सखी ई कारी बादम्र
ँिनि ि आमा पजारै ।
उम्िड़ घुम्िड़ चहुँठाि सँ बुम्नल क'
हिरि छत म्चित्कारै ।
बरम्सि बरम्सि सब म्दिस डूबा देल
दादूर म्झंगुर बाजै ।
राम्ति राम्ति भर जागल म्चलका
सेहो पीर बढाबै ।
पाम्नि बूनी ि भीज भीज क'
हेता कोना सौभाग्य हिरि ।
कोिल काया पान फूल सन
छल नौ् रौद बसात जोगर।
सूॅन भयौन जंगल ि हुनका
भानस के कम्र देतैन्हि।
जौ संग हिरा नेने रम्हितम्थि
ई दुख हि हम्रलैम्तयैन्हि ।

कहै लोक सब छह बरख धमर
पता नम्हि कोनो ठेकाना।
कत कत्त नै दूत पठाबैथ
हारल सन हिाराना ।
जतय कखनो चचशहो हुनकर
सखी सब दौंग पडै फुरती सॅ ।
कान सुनै म्किछु हुनक मखस्सा
दृग बहै स्ति ी सॅ ।
अम्हि जनि की नाथ फेर सॅ
दरश पायत ई दासी ।
सोम्चि सोम्चि ओही परि पुरष के
नीत म्दन रहैन्हि उदासी ।
हाथ के रेखा रम्हि रम्हि देखैथ
बजबैथ पंम्डत ध्यानी ।
म्कि गुनल अम्छ करि िहरि
कम्हियौ पोथी बखानी ।
पतरा पोथा ल' सब चुप छल
ई होनी त' होनी छल ।
कोना क' रोम्कि देता हिाराज
कतबो कम्रतम्थ छल वा' बल ।
बाट घाट सॅ आम्न पकम्ड
सेवक जन साधु लाबै ।
जंतर ितिर जादू टोना
सबहक म्नायि बताबै ।
ओझा गुनी म्दन गुनै छल

ऽदसा ऽदस उच्चारै ।
कतेक ऽदवस धमर खेल चलल ई
ऽकछु नै घाट उतारै ।
िईट आनै शिरान सँ
पाण ऽाय सब चेरी ।
ऽछटै ऽकयो बाट गंगा जल
रंख बजाबै ढेरी ।
ँिदा ऽलखल के िटा सकल ऽकयो
ओ पऽकया रंग ऽसयाही ।
ऽाऽकय रासक बैस रहल छल
देखैत अपन तबाही ।
कऽालवस्तु के धुमर कनै छल
फफऽक फफऽक क' हरदि ।
तीरथ बनै भलै भऽाष्य ि
एखऽा त' रोक सँ सकदि ।
िँह सँ वाक ऽाकसबा खाऽतर
तरसैत रऽह जाए गरै ि ।
हँसी राज्य सँ दूर पडा गेल
छोऽड व्यथा नगरे ि।
एला जखन ऽाय जानी भ' क'
छह बरखक' अन्तर प'।
िहिल अटऽरया उकिए लगलै
नैन ऽटकल सुनर जोगी पर ।
रुक़ . ऽाक़ . . रुभ बोली बाजल
उडल चलल लग आयल ।

ँािल जालसब दौमा दौमा क'
अप्पन नेह देखायल ।
सखी सति म्बािता आयल
छोम्ड़ क' अपन धूम्ना ।
बाधव जन के घेर ि बैसल
ुिस्कैत छल नव ुिम्न ।
ाित कण ि म्बाजुम्र चौंकि गेल
बंद ऑम्ख के आगॉ।
िहाभाग म्नाय कात आयल छम्थ
ाि बाजल भ' बाजा ।
बलजोम्र ाि रोम्क उठल छली
बेलगाि सब घोड़ा ।
एना म्कए उताहुल भेलौ
अपने औता ओ सोझॉ ।
सपन देखल भोर पहर
ओ देसदेस बूलै छम्थ ।
आगॉ पाछॉ टाढ जम्ना सब
उपदेर गुर के सुनै छम्थ ।
ऑम्ख सॅ देखता संन्याम्सन के
झूलसल झरकल काया ।
उठै म्कांस्यात ाि ि कम्नाको
अम्ह अधि लेल ाियिा ।
एला नाथ त' ध्यान ि बैसल
ुिस्कैत छली िहाजोमान ।
परि दृम्ष्ट सॅ राकम्य हेरलम्खन्ह

इहो रप केहेन कय लम्हे ।
नजम्र खूजल त' म्चत रात छल
नै कोनो अवसाद छूपल ।
नम्है छल कोनो राग देष
नम्हं ऑम्ख ि कोनो भाव बेकल ।
कतेक ओज ओम्है ि‍ख िडल पर
सहस्तो सूरज जेना एके ठाि ।
म्स्थर ऑम्ख .. चुप .. .िन बैसल
जीवन ाित म्बराि म्बराि ।
कम्ण ाित ि पजा उम्ड क'
ओम्है ािगशप' चलै लै बेकल।
भाय भतीजा . . ाितु .. भाया
सब नतम्स्तक भ' दीक्त लेलक'।
म्मकखुनी बनल चलल यरोधरा
ि‍म्स के पाछॉ पाछॉ ।
िन त' पम्हने त्यामा चुकल सब
तन के आब की बाधा ।
जीवन के चरि उदेश्य बूम्झ
बंधन ि म्कए रहै पाणी ।
छाया बम्स क' िनुकम्ख रहै छै
आगॉ चलै म्पाहानी।
ठाि ठाि बुम्ल बुम्ल क'
देखल दूखक जीवन ।
कोना नोर सॅ नोर बहै छै
सुम्स ि‍ख कष क वणश्न ।

बौद्ध विहार रण स्थली भेल
ध्यान .. चिंतन. . . उपवास निन के ।
तजि पोथी वेद उपनिषद .. . .
निव के सहज सरल जीवन के ।
कष्ट भरल अहि संसार सँ
पार उबारय के बेडा ।
साधन साथिहीन स्त्री के
नेती भेलीह यशोधरा ।
सबहक लहकैत दग्ध हृदय पर
शशित सत्य के लेप लगा ।
शत कयल जखन हिमखुम
ऑखि फाडि क' लोक हेरल ।
अलख जगौने जखन चलै छल
हिादेवी संग जनी जाति ।
दृश्य महाम क' भम जायत छल
जड चेतन के छाति ऑखि ।
मिट के कण कण सम्ट क'
हिासुनमि के तरबा सँ
कहै सखी हरिा नहि तजबै
हि गहने छी कम्हया सँ ।
हरिो ई अभिलाष छल की
बुद के रपमि रानी।
चलै राह पर जनि सुफल कमि
जन .जन के कल्याण करैथ।
आस पडोस के राज ि पहुँचल

म्बादुत तरंग सन यरुके गान
राजकुवॅम्र म्कछु पछोड धेलम्ह
राजागण लेल बुद के नाि ।
सही अथशि ई सहचम्र छल
बुद एहेन परतापी के
जौ ओ छल हेता बह त'
ई साकात बहानी छल
म्हल बेर इम्तहास ि नाम्र
राज तम्ज संन्यास चुनल ।
दीन दुखी रोम्पत पताम्डत
लेल अपन दृम्प फोलल ।

गाधारी

म्हय ि रूल.. .. .ृदा भाव म्मानूि
रम्ह रम्ह क’ उठैत ई आह
करैत अम्छ करेज के स्याह
कानू त’ कतेक आ’ फाटू त’ कतेक ।
सबटा नोर एके बेर सहस्त्र धार बम्न
चुम्ब गेल छल ऑम्ख सँ
जखन म्पताहिक ई उदघोष

कणशकुटीर के चीरैत
छाती ि पवेर करैत
िचा देने छल पलय
जे पराम्जत नरेर क’ सवाग सुनम्र
म्वम्जत क’ हाथ ि सौप देल जाए
तखन की ऋ
आकार ि उडैत पाखी
कण भम्र उडनाय तम्ज
म्चंम्तत आ’ व्याकुल छल
बाध बोन ि चरैत
उिकैत
बैसल
ठाढ
पसु उम्दग्न भ’ . . . िथ झुका
परती के म्हारै छल।

तप्पत तप्पत बयार
जोर जोर सॅ बहैत
तबाही के सनेस पसरैत।
अंतमरक ि बैसल इष देव सॅ
नि मावेदन करैत
मचहुॅमक क' बाम्ज उठल छल
ई कीत्रः
कारी कारी िघ
अपन लट मछतरेने
उदाि अश सन दौगैत
संपूणशनभ िडल प' पसमर त' गेल
ि दा स्मयं के आघात दैत
पीटैत मचकरैत
कंठ फाम्ड क' कानब सॅ पम्हनही
िथ प' हाथ धेने गुिसुि गुिसुि
चुपेचाप .. . . .नम्ह जाम्न कोन कोन ि
गेल मबला
तखन कीत्रः
ओहो अपन रतजम्डत पलंग प'
कतेक काल धमर
अपार केस राम्स फोलने
पेटकुम्नया देने .. . . रम्हतम्थ पडल
नहुॅ नहुॅ क' भवनक पट खोम्ल
दार प'लटकल पीजडा सॅ मनहारैत सुगाा
सॅ उदास भ' बजै ल' चाहल

आखर लाजै . . . .िह सँ नहि बहरायल
िदा अवजा कोना राजकुमारिक'
आबैत काल . . . देखल सब . . . कोना लङखडाइत
डगिगैत . . हकिेत. तोतराइत
आध मेछध आखर .. . जेठक' सूखैल घासक' ढेर जकाँ
दग्ध हृदय ि लुती लगा
सनासन . .जरय लेल उकसाबए लगलै
मांजड़ा ि बन सुगबा. . .आखरक ताप नहि सकल सहि
आ' क्ण ित ि ओकर पाण ।
कुमारि के हाथ ि रहि गेलैँ
िदा ओ कामनायो नहि सकलहि
सिस्त नोर .. . एके बेर. . .सहस्त्र धार बनि
ऑखि सँ चूबि चुकल छल।
करेज फाटय के स्थिति ि क़तए
ओ त' बज भेल
आ' बज कतौ फाटय
ओ त' फाड़ब टा जानैत अछि ।
सब टा पट िहषी .. .सखी सहेली सन
एहेन कोन पन
केहेन ई विधंसी . . . रचल चक चालि
नहि जानि विधाता .. . देलनहि ई केहेन आघात
सहस्त्रो वजपात
एक संग . . .क्ण भिर ि
उन्िक्त हवा के सहचरी
सुरील कोिलागी परी

केहेन मबाषाक्त
जेना बरख क' जचरोपरात उठल जुबती
िर झायल अङहूल सन . . . मास्तेज िख िडिल
ऑम्खि पसरल दूर दूर धमर सनाटा

कपोल दय प' नोर ि भीजल काजरक' चॉटा ।
ई अथाह दार ण .. केहेन कर णा
कतेक व्यथा ।
िदा काल रीघता सँ बुलैत
बॉचय जा रहल छल
कोनो आओर पलयंकारी कथा ।
दार ण दुख म्हसत्सा ि नम्ह तोरे टा
सब म्कछु त' संग अम्छ ....रहत नै नोरे टा
ठठा क' हँसल छल कतो कोनो राजा
सजाबए लै िहफा
बजाबए लै बाजा ।
आ' दौडैत रथ क' स्पणशजम्डत चका
ि ओझरायल अगम्मत कतेक रास म्खस्सा
आईयो कहैत अम्छ उम्ड उम्ड क' रज कण
कोना ओ कचनाम्र बेकल भ' म्हारल
हवेली आ जन जन के िन ि उतारल
ओ हम्रयर पीयर लाल कारी दुपटा
ओ लहंगा ओ चुनम्र चानी के पनबटा
उडैत तूर सन ओ संध्या कुिम्र
असरफी ओ िती ओ हीरा जवाहम्र'

मामछया हॅसुली बाजुबंद साडी
नथया ओ टीका खिलि ओ अटारी
महारल भमर ऑमख र प जीनगी के
पकृमत धरा के िता बमहन के
फफा क' कानल काल देमख अपन करनी
एकरे चुनल मकएक
अही परीका घडी लेल
िदा भागय अपान
कयल पूबशजनकि
तथामा
मारासक लुती मिझाबैत
ओ जानी सवयं
कारी पटी बनल छल
आ' सुनमर सुनामर के दृग प
चढल छल
पमत परशिर जखन छमथ नयन मान
त' देखब नजमर सॅ हि मकएक ई मदन
मछठुरैत . . .महुरैत . . दुलारैत . िनाबैत
चलल छल मवधाता अपने महसाबे
िदा हाथ ि आब ओकर डोर कतय ऋ
ओ अपने पमहया के दॉत सॅ झीकैत
बढल जा रहल छल देखय खेल मवकट ।

इन्दासनक परी. . .ऑमख प पटी केहेन. . .
ई गमवशी . .यमकणी. . . सुखदायी परि

नामान सन फुफकारैत . .कारी जुटी. . .
बेकल अम्छ छुबए लेल नगर के िम्ट
वाक म्बाम्हन. .सब . .झहरै छै नोर
कतो नै उत्साह नै कोनो सोर
क़तेक काल सॅ ठकुआयल ठाढ अम्छ भोर ..
म्बासरल अम्छ नाचय पम्रिया आ' िर
तखन राजपंम्डत िहार ंख बजाओल
आगॉ बम्ढ क' सोहामान िहफा सॅ उतारेत
सवित स्वर ि िगल गान गायल
म्बाधना म्लखल हिहू पात सब छी
ई रानी हरि भावी राज्य िता
नयन म्बानुसहचर के कथा छल सुनल सब
सबटा नीम्त के चाम्ल बुम्झ
रानी लै िन ि अथाह स्नेह उिडल
ताबैत रोक सॅ उबैर क' बहुम्रया
धो िम्ज अपन व्योहार के चिकायल
म्सनेहक िजगूत डोरी बाधवा ि
कलेसक' ताप ताग के' जरा दै
रम्ह रम्ह क' ओ करण वेदना
आबै म्हय के डॉवा डोल करै
िदा ओकर कोढ कम्हयो नम्ह फाटल
ओ त' कम्हया कत नै बज भ' गेल छल
आ' बज फटै नै फाडै छै सबके
एकसम्र जुबम्त .. .जौवन अपर प
पणय म्नवेदन .. .पम्त के पतीक्ष

पसूम्त गृह सॅ . .अबैत पथि बाल कंदन . .
डोलाबैत म्हृय के . . . अम्तर य कोलि गाछ ..वा . .
पाम्त म्बानु तड्फडाइत .. .म्छलमिलाईत िछ . .
अथवा कनसाम्र
क' बौल ि भङभङा क' फूटैत लाबा
म्संहासन सॅ दौगैत त'
िदा वीरागी .. . संर्याि. . .क्त्ताणी क' बहकल
पएर. . ठाि ठाि ठकिल
क़तेक स्पर गुंजायिन भेल कान ि
दासी के स्पर सॅ बनल पम्ताम्बम्ब
गौर भुराक़ . .चन्द्रािसन .कारी ऑम्छया केर
पैघ पैघ ऑम्ख वला .. स्पस्थ . भावी नरेरक वणश्र सुम्त
ओकर हाथ सॅ झपटा िम्रक'
छीनैत नेना के. . .अपन दग्घ म्हृय सॅ लगौने '
नयन रम्हतौ नयन म्बाम्हन . . कतेक पैघ म्बपम्त
कतेक कठोर पण. . केहेन घोर तप
िित बीत भम्र क' दूरी प ऑम्ख .
क्ण िित ि पटी झटैक़ . . म्बस्फाम्रत दृम्ष्ट सॅ . .भम्र पोख
तकैत.... . .अपन लाल के. . .
िदा बज बनल करेज़ .
बज नम्ह फाटैत अम्छ बज फाडैत अम्छ।
आ' हाथ कखनो . कि्षक रेघा नाघए के कोरम्सस सेहो नम्ह कयल
तखन सिय काल के सेहो
होबैंत रहलै पाण बेकल. .
एकसम्र रपवती. . .जौवन भार सॅ दबल. .

हाथ सॅ टउआ क' ममहारैत नेना ममर रु सबहक र प
एहेन केस राम्स .. ओहेन िजगुत भुजबल
राजीव लोचन . .िकखन. . िलायि ममतवन
पीताबरी के गोटा .. . धनुषक' नकारी. . .चेरी कहैत अमछ. .
.आ' नैनन ि हुनक उपमस्थत भ'.. .अतीत ..
फरीछा दैत छममह सब मकछु. . .पटोरक रंग .पलंगक . चदमर. .
. .मखङकी. .दलानक' परदा . .
स्तीगण सबहक र प गुण . . .सुनैत गुनैत. . .
बसौने अपन िमस्तषक ि . . एक गोट अजगुत संसार
जौ पमत नयन मबन . .आखीर तखन रहल की . .
हुनक . भाग्य संसार. . पुर स्वामिनी . .िहारानी. . .अममानिनी ..
. .
एतेक मवस्तृत साजित्य . .जीबए केर. .ई केहन सुनर आधार. .
तखन रानी ित कान . . कान बमत गेलमह . रोि रोि ।
भनसा सॅ आबैत सुगंध. . पाक मवदा के पवीण हस्त
भॉमत भॉमत क' सािगी .. .ित गंध सॅ मचन्हैत. . .
परोसमत थारी ि स्वािी के. . .मवहृवल भ' पूमछ लैथ
'ई पायस केहेन आयश..' .
बनौने हिी छी . चौंटी अमछ पिण ..।' .
मवहॅमस शीिनि .. बढाबैत ..अमतरय स्नेह सॅ पकंमपत अपन बाि
हाथ. . . .
पिणक' कोन पयोजन त्र.. . जखन हि दूनू नयन मवमहन .. .
हि जनिजात . . अहॉक .स्नेह प आघात.
भेल भानस. . .अहॉक स्मरशित सॅ. रसयि. िधुयि. . .
भ' उठैत अमछ. . . .आ' ई त' सदः अपने कोलि हाथ सॅ

रान्हल. .

थाित राजा के बढल हाथ.

र बद्द ाित सँ हृदय ि उठैत

म्सनेहक तीव . . .वेगवती धार के छुबैत. . .पकम्डः हुनक अइंछ

हाथ. . .कठौत ि धोबए लेल . . दासी बढौलक जलपात ..। .

मर ा राम्त ि नीन .. म्कए नै म्कए बम्न म्दयाद. . .

लडए लागैत अम्छ ऑम्ख सँ. .

भवनक' छत प'. .म्सहकैत बयार ि .. नहुँ नहुँ टहलैत . .

हाथ पकडने चेरी कहैत. . .

आय अकास ि बडका टा के चान म्ाकसल छै. .

केहेन पीयर . .. जेना दूध ि फेट देने होय केसर म्कयो. . ।.

आ अनेको म्बम्ब . . . म्बगत क'

चान के. .

ऑम्खक सोझा थरथर कॉपैत. .

पूम्छ रहल .. . कोन अपराध हरि कहु सुनरी

म्कएक नै हिरा हेरी रहल छी. . . .चकोर बताह बनल हिरा लै. .

.अहॉ केना म्बरक्त बनल. .? .

ुदा ओ पण .. . म्हय प लागल छल जे वण. .

करेज वज भ' गेल छल. . .आ' बज फटैत नम्ह अम्छ फाडैत

अम्छ ।

िम्स्तष्क ि बसल सबटा कोलाहल. .

सयि काल पाम्ब अथशगहण करैत

ठाढ भेल सम्चत . .सावाक .. .आ अनायास . . .जीवन जीबा ि

कोनो म्बरेष नम्ह देखैत कंटक

ुदा काज पयोजन. . .

म्र रु बालकक उपनैन वा म्बदाभ्यास .. .
म्बवाह दान .. .पम्रछन. .चुिन .. .
सयि ककर बंधुआ. . . ककर खवास
एहेन पण .. .आय धम्र के जात इम्तहास ि ।
माभा सकल के. . . ताहू ि एकगोट नाम्र. .
जेकरा लेल अम्ह सािजक मायत सम्दखन म्बकट ..
सूयश्च चन्द्र. ्र .गह नक्त ्रश्च .ताम्ह सॅ उपजल . ्रश.वत उपवास
सॅ एकदि फराक ....
आन आन वत . ्र ाित अन .पाम्म तथामा
भूमि रयन .. .अमम गिन वा एहने सन म्कछु ..
ॅिदा ओ वत आ ई. . .असंभव. . दुसाध्य. . आजीवन दृम्ष बाध्य
अछैत दृग़ .. . ्र
स्ती एक गोट खेलौना. ्रश.
राज्य जीतबाक कि ि . . . ्र
जीत म्लअ ओकरो .. .ओ एकगोट वस्तु ाित .. ्र. .
फहराबू अपन ध्वजा. . .अपन वचश्व ्र
ओकर कोन दश्च. . .अम्भलाष वा जान ..
ाित सेम्बका .. . पम्रचाम्रका .. ्र
तखन की. . ्रश
तखन म्बधान इएह बनौल ई साजि .. .
जे स्ती आखीर उठौत म्कएक आवाज़ . ्र
घेट प’ बङका टा के फटा
आ’ ाथि प’ दुपटा .. ्र
आ िजबूम्र क अथाह सिुद
कत .्र डूबब ्र.. . कत .्र पौङब .. ्र.

ताहू ि पराम्जत राज के दुम्हता .. ्ॅर
ि़दा भाग्य दासी नम्ह रानी
सेहो बनायल. .
. . . . .आय सहस्तो बम्रख बाद
जुग औचक जेना जामा उठल
बङका बङका परचि फहराबैत. ्ॅर .. .
पूम्छ रहल अम्छ हुनका सॅ. . ्ॅरश
आखीर म्कएक बान्हल ऑम्ख प' पटी. . ्ॅर.
ई अजानता वा परि म्मरार।
अतीत के एक गोट दुसह दुखद म्दन देखौलक
संसार क' पथि म्बश जुद. . . कुर केतक जुद ..्ॅर .
कारण . ..िूल ि िते. . . .
सौ टा संतान करैत घिसान. . ्ॅर
म्जनक सहस्त पुत
कोना नै हेतै एहेन जुद. . . .
आ तखन ऑम्ख प' पटी .. . ्ॅर
जाम्न बूम्झ क' रहय लेल .. ्ॅर. सत्य सॅ अनम्भज. . . ्ॅर
अहॉ के नजम्र ि सुयोधन .. .सुयोधने रम्ह गेल. . ्ॅरश
ि़दा कश्ि. .आ .. सिाजि धेल दोसम्र नाि .. .सु' हम्ट क' दु'. .
.आ इएह एक गोट आखर .. ्ॅर
भ' गेलै पाथर. . . . ्ॅर
ँिनवता के संहारक़ . .आत्याचारी . .लोलूप. . ्ॅर.
ँिता के कोिल उपदेर . .
द सकैत छल इम्महास के एक गोट नीक संकेत. ्ॅर
आ' वन वन नम्ह भटैक़ . ्ॅर.

पॉच गाि. . सँ संतुष .. ्रश
भ’ जयतम्थ अनंत ि म्बाम्लन. ्र . .
ुदा युद त’ कदाम्पा नम्ह .
तङम्पा क कहलैन्ह जुग सँ
सुननेछी अहू सुर सँ. . . हिरा.. प’ जे कलंक लागै . ुदा अन्याय के गाछ प’ न्यायक फङ नै लागै छै .. . सत्य ई
अम्ह गप के रम्ह गेलम्न्ह
हुनको िन ि खेद. . . .
म्कएक एहेन म्बाभेद. . ्र.
एके कुलक लोक एक दोसरा लेल. .. एतेक पैघ अम्र ....
हे हम्र. .
. . . .तखन बहल जतेक रोम्पात आ’ नोर .. . . म्हय नै रहलौं कठोर. . छल ओ सहस्त्र पुतक जननी. .के. . . .युद भूम्म ि करैत. . हृदय .दावक म्बालाप. .
असहृय वेदना. . . करण संताप
सुनौलम्न्ह जदुनंदन के भम्र पोख सराप. .
अम्ह संहार के .. ओएह संचालक . .
अजस्त्र नोर सँ . .पटी पारदरी भ’ . . .दृम्प गत कयल सबटा नर संहार. .सुनर .. .म्बालकण काया . . पङल अंग भंग भेल. . .खसल िटीक ूरित .. .नै बाजय. ्र नै भूकय लेल ..
ओ िम्टक बासन सब . .एखन धम्र नम्ह भागल .. .अम्छ अजहू राखल आंगन. . .ताम्ह ि पोषल पूत सब कोना .. .एतेक रीघ भेला सपन .
ित एक स्त्री के िथ प’ कलंक़ . ्र आ’ अपने बुम्ल रहल छी म्नःरंक़ . . .

हे रणछोड . . कहै छी म्हय तोम्हः. .

चतुराई सॅ अहॉ के अपना अधीन

कम्र के सकैत अम्छ. ॅर. .जे स्मयं चौसठो कला ि पवीण. . .छल सॅ .. बल सॅ . .कौसल सॅ. . .तोम्हतौ सारम्थसुत क अम्मानि .. एकसर दुरजोधनक अजान .. . ककरा बल प' लड्बा लेल ताल ठोम्कतै . .

अहॉसन जानी. . .म्नलोक दरी कहेबाक दंभ रखैत .. ॅर. एतेक नम्ह भेल जे खूनक ई फाग रोम्क दैम्नएक . . . .

चार कात धधकैत आमा . . ताम्ह ि अहॉ तकैत छलहू केहेन न्याय . . .

फुम्सयाही के खेल ि .. . सोचैत रम्ह गेलौ उपाय .. .

चाम्ल रतरंजक चला देम्लयै. . .अपने पाछॉ हम्ट क' .. . म्नि भष सब के जुटा देम्लयै. .

म्धया पुता के कशिके ..

नाि देम्लयै धशिके. . .

युद त' युद होइत छै. .पम्रणाि . .नर संहार. .

तखन एकरा धशिक नाि म्कएक देल. .

धशिकी अम्छ .. . कहूॅ म्बास्तार सॅ .. . . .

हड्पब .. . िरब . .लूटब. . .जारब ..

जाम्ह सस्याक साधिान . . .गप सॅ भ' सकैत छल. . .ताम्ह लेल तर आम्र . . गडासा. .तीर धनुक्ख .

ई कोन जुगक िनुक्ख .. .

पाषाण कालक' वा. . .ताहू सॅ पम्हने के आम्दि . .

हे अवतारी. . .अहॉ त' तखनो पकट भेलहु . .भरल सभा ि द्रौपदी के जखन भ' रहल छल चीर हरण. . .नूआ त' बढा क' वाह वाही

लुटल . .जे पाचाली के लाजबम्च गेल
ि दा अम्ह कुकृत्यक म्वरोध ि स्पर त' उठौम्वतौ. .
गुर जन. . . दूरजोधन के ललकाम्रक . .िल्लजुद ि पछाम्ड क'
. . म्र का त' दैम्तयैक नैम्तक़ . . .पाडव म्दस सनेह म्सक्त .. .
..कौरव म्दस फूटल दृम्ष्ट . . . .
आम्खर म्कयै केरव. ्ॅर . म्हत त' पाडव के सेहो कतए. . . सब
काम्न खीझी क' म्बलम्ख म्बलम्ख क' अपन अपन म्र म्बर ि . . .
.कम्र रहल अम्छ . दार ण म्बलाप .. . कतए अहाॅ के जय जय
कार . . .सब युम्क्त . . सब तकशबेकार. .
अहूॅ त' एतबे ि रम्ह गेलहू. . . ..पेि सॅ नम्ह पूछल त' साग म्वदूरक
घर खेलहूॅ. . . .
ओ सयि िनि समि नि करेबाक कतए छल. . पेि त' कतेक देल
गोपी . . .तैयो तरसल. . देखैत रहलहू धि म्क' रथ प' चढल .
.भाय भाय के कूकूर जकाॅ लड्ल. . .
अम्ह ि अहाॅ क' की म्बराटता . .पत्यक ठाढ अपने. . .आ'
हम्स्तनापुरक दू टा कुलक' सवशार भ गेलै. . . तखन अहाॅ केहेन
भगवान .. . .नम्ह जाम्न की छल. . .अहाॅक दृम्ष्ट .. . .अहाॅक
ईिनि. .
कतए उठाबए चाहैत छल
स्पजन प' पाडव अपन गाडीव. . . .
म्नाम्षद भीख लेल िनि बना क' पड़ारहल छल म्नजश ि . . .
.सदाचारी ओ . . गुर जन सोझाॅ कम्हयो ि थि नै उठाओल. .
उकसा उकसा हाथ ि ओकरा हम्थयार पकड़ाओल
र ंखनाद कम्र रक्त जरैलौ
कोम्ख उजाड्य लेल. .

स्तीजाम्ता के . .म्धकार अम्छ हे कृष्ण. .

आयल छलहूँ बहना कम्र क’

िरिए लेल वा तारय लेल

ओ लूि. . ई लागङ. . .ओ कोम्ढ़ . .ई आन्हर. . ्र.

एयह छल अहॉक सैन्य बल . . . ..वा कोनो पैघ छल ..

म्ताल के ताङ . . राई के पहाङ .. . .ताम्ह प’ अपने ठाढ़ . .नेने

हाथ ि सुदरशा चक. . .बनौने दृम्ष वक .. .

केकरा छल बनेबाक म्छनिस्ता . .

हिहू छी ठाढ़ .काटू हिर ित्था. . . .

हे तेजस्वी पुरख .. . देखने होयत जे अहॉक रप . .

आियशहेतै जुग के. .

नायक . . िहानायक . .देम्ख क’ दृश्य. . .फटैत अम्छ म्कयेक

नम्ह करेज़ . .

होबैत अम्छ म्कएक नम्ह िनि कोनो दरेग .. . .

सुम्न क’ एहेन आत्तनाद .. . . .म्दमदगंत धम्र भ’ चुकल अम्छ ..

.आक्रंत . . अहॉ एहेन म्तास्पृह.. .

नम्ह कोनो िहि . . .नम्ह म्सनेह. . . .

भीषण ताप सॅ चटान सेहो भ’ जाईत अम्छ म्वखंम्डत. . . . .नाम्र

अहॉ के नेह सॅ सराबोर कम्र देलक . .त’ दोसरो नाम्रए अहॉक

अम्तारप्त सेहो कय रहल. . म्लखू. . . म्दवस .. .सिय .. .

स्थान .. ्रश.

अम्हना अहॉक कुलक घिसान . . . रोम्पातक एकएक बूॅद जरबैत

.. . .करत म्चत्कार. . फाटत िथ कपार. . . आ’ ओम्ह रोकाकुल

िनिस दरा ि. . .करब अपने धरती सॅ पस्थान. . . . .अंत

अहू के म्ताकट. . . . होयत एतबै म्बकट. . . .

कनैत बजैत गाधारी ..ॅर . संभारैत अपन साडी . . .क्ग ित ि ततेक कजिोर . . जेना . .जनजिात अर क्त . . .नहॅू नहॅू . .पहुचल छली त' हिल ि. . ि दा सुम्न कोलाहल .. . . कुंतीक वन गनिक'. . . पम्त सॅ कयल म्नवेदन. . . आब एत की .. . .कतेक सूनब सोर. . . .अम्ह कष क .. . कोन छोर. . . .नम्ह छल भाग्य ि जे सुख . .तेकर कोन दुख़ . . .म्लखनहार सॅ केहेन बैर. . .स्नप छल जम्र गेल. . . . .सूल सॅ भरल ई हिल .. .

आब कतय रहय बला रहल. . .

कान ि सम्दखन गुॅजैत अम्छ . .पुत . .पौत. . .सखा ितिक स्नर . .

म्हय ि उठैत अम्छ लहम्र. . .

सागरक छाम्त प' छटपटाईत बताम्ह. . ॅर.

काटैत अम्छ म्कंस्याह अपने वंर सन आम्ह. .

जतेक बॉचल आब जीवन.

कम्ट जेतैक चम्ल क' वन. . .

िम्स्तष्क ि राम्त आर हेतै त' कोना ..

चलू ओम्हना चली. . . चलाबैत छम्थ म्बधाता जेना. . . .

तीनू गोटे. .संग म्नकसल. .

तप करय ..वा अमान ि भसि होबए . .म्नयम्त. त' चुप छल . . . ओकर हाथ ि म्कछु कतय .. . . . . ।

र कुनतला

म्सनेह सॅ सीचल . .. ड़ूम्रिक फूल. . . .
स्पपयि जीनगी के. . . छाहम्र ि टहलैत. . .
गुनैत. . . ृिग र ावकक पाछॉ दौगैत .. . . . .म्ठठकैत. . .
कम्ल कम्ल. . .कुसुि .कुसुि के
अपन म्सनेहक ताग सॅ गॉथैत. . . बाधैत. . . .
सजाबैत. . .संभारैत. . .औचक एक म्दन. . . . .
अनम्चन्हार सन. . . . धून लागल जाङक ािस
सब म्कछु झलफल. . . कतौ म्कछु नै स्पष . . . .
आ' ओम्ह अस्पष सन. . नदी के तल पृष ि
एक गोट ािोहर. . . बम्लष . .. आहृलादकारी. . . जोदा. क'
म्बंब. . . .उभम्र .. . . वेगवान वायु क' संपकशसॅ. . .
असंख्य पम्तम्बंब ि पम्रवम्तश होईत. . .
क्णार .. . ि म्तरोम्हत भ' उठल.. . .ािदा ओ एक क्ण
. . . . .कएक म्दन . . . ािस. . . धम्र. . . ािस्कैत. . .पैघ
.पैघ ािदक
ऑम्ख सॅ .. .. .
पेिकि हकार. . पठबैत. . . पकृम्त पुर ष.क' ताक झॉक . .
ऋम्षकन्या के बेकल करैत .. . .
ऑम्ख ऊपर उठाक' . . . .रहस्यक अवलोकन करय लेल. . .
. . चहु म्दस हेरैत. . .किलाकी ....सन. . . . ।
अपन सोझा ठाढ .. . म्वर ाल चुंबकक़ . .पभाव सॅ . .. धकधक
करैत म्हय के संभारब ि असथिश्र. .. ािथक अवगुंठन. . .कम्न
नीचा तीरैत. . . .पफुम्ल्लत ... . सरोर द .. . .ािखिडिल के झॅपबा

के कि ि उठेलक हाथ . ।..

झट सँ ओम्हि ृणालसन. . . हाथ के थाएि लेल . ... .बम्हि गेल छल उष्ण .. .रोम्पात सँ पवाम्हित . . जिगुत .. पौरष हाथ .. . धङफडी ि नजम्र स ॅनजम्र मिलिलै. . . आ' म्बाजुम्र चकि .. .ठनका सन खम्स पङल रहै िथ । . .

ई साकात. . . स्गाक अपसरा. . . जौ होईत हरि सहचरा. . . अनेकानेक दन्द क' म्र कार ि .. . म्फरीरान . .म्फरीरान . .. ओम्हि सुन िसान . ..घाटक .. .कात ि. . . पेकि पथि वल्लम्र जम्निते .. . पफुम्ललत भ' उठल . .. तीर तरकस कादिवक .. . खेल खेलाडी म्बधाता . .. लेखनहार सेहो स्यं ।

ई ज्वर. . .बढैत. . . .चढैत .. . .म्दिग के करय लै गस्त .. . कएल अपन सबटा अजगुत. . .पॉम्ख़ . .परस्त. .।

स्छंद म्बचरैत आमा .. .

म्खच्चा पकृम्त .. .के. ..करबा लेल तबाम्हि

जोम्हि रहल छल बाट. . .

आगंतुकक ठाठ. . ..

छल सँ भरल . . .अपन म्सनेहक'

पथि म्नरान. . . .. सौपैत स्णशम्दिका. . . ..

यर. . . कीम्तश्च. . सुनािक़ . .ध्जा फहराबैत. . . .

फेर अयबाक बोल भरोस दैत. . . .

कएक म्दवसक अन्तराल . . . .गाछ तर . . . बान्हल .. . अश प'. . . . आरोही. . .ओम्हि . . . घन घोर जंगल ि जाईत रहला. . . . जखन दूर धम्र. . . ओकर पीठ हेरैत. . . .म्नहारैत .. . कुिदनी. . . .

पीपनी खसेनाय म्बसम्र गेल अपन .. . .।

ई सब एतेक रीघ. . . .
अनायास .. .
कोना भ' गेल .. . .षड्यंत पकृम्त केर. ..। .
ओ कोलि स्पर श्र. . .
पाम्त ि ऊब डूब .. करैत. .
एकटा. . . रस लोलुप भरि ..
दोसर कॉच कली. . . . .
अम्ह ज्वार भाटा ि डूबए लेल ित कम्ल. . .
उम्ङ चलल . .. रसपान कम्र. . .सुआरथी जीव .. .
अपन देर .. . अपन गली. . .।
ऑम्ख ि चकिैत .. .अतीतक' िहकता .. . .
ओ सुनर म्चतवन. . . ओ िदक चपलता .. . .
म्छठकल सन घर ि. . . .म्बसरल सन रस्ता. . . ।
सम्ख बृन्द बेहाल .. .देम्ख कुसुि गुिसुि .. .
हेरायल हेरायल चाम्ल .. . .
कग िति लेल. . .जे नम्ह कम्हयो म्स्थर. . म्बदयुतलता. . .
आखर सॅ पम्हने हॅसी म्नकसै ठोर सॅ. . .
नव तर. सन. . ड़ोलैत ओ भामिनी .. .
आय हठात .. . म्कएक . . .एना गुि .. . .
फराक .फराक बैसल .. .
एसगर ताम्क रहल अम्छ उदास. . . .
गुलाबक म्खलल फूल प' .. .
ि्डराम्त . . . गुनगुनाम्त .. . चकिैत कृष्ण वणी छम्लया .. .
के बेतहास .. . ।
म्छटकल म्छटकल सब सॅ. . .

नमहि जायत अमछि संगे नहाय .. . .
नदी. . . वा फूल लोढय .. . फूलवामर .. .
समदखन ऑमख ि नोर .. .
भेल भाव मवभोर. . .
िसैक उठैत अमछि कोनेॉ पहर. . .
तोङैत डामर. . .दोसरे कण. . .
घरक पछुआमत . ..िमलनी केर .. . जलधार ि
फूलके खोमट . .खोमट क’ करैत पवामहत .. .
हेरैत अमछि . . .रात .. .नील. . .आसिन .. .
महिलयक कोरा ि .. .पकृमतक झोरा सॅ. .
मकासैत अमछि पुषदल .. . भ’ भ’ क
मवहृवल. . . .
कखनो क’ मवहुॅमस क’ बजैत अमछि स्वागत. . .
ई मवयोग घडी. . .अपनहु के .. . केहेन लागैत होयत कात. ..
एक पाण आ दू काया . ..
के रचल ई िया .. . ।
एतेक मदवस बीत रहल
.. .. लेलमथ कत. . .खोज खबमर. . .।
हे नदी . .. . िते . . . साकी अही. . . . ओही गंधवशपमरणय के. . .
एतेक मवलंब तखन मकएक भेल .. .
बहै छमनह .. . दूनू ऑमख हर हर. . . .
सोझा राखल. . . समिधा के जारैन. . .
तोङैत अनेरे. . .बनाबैत. . बाढमम .. . .
कखनो बैसल कखनो ठाढ .. .

तखने याचक आयल दार. . . .

देखि घरक फूजल केवाङ. . .

पाषाणी. . . सिकैत .. . छम्मा के मन्हारैत. . .

चलला मनकुक्क .. चुटा झकिकारैत .. .

एहेन ओहेन नै ओ. . .ऋषि दुवासा. . .

जनिक रक्त ति छल गङा.सा .. . .

कि मासमय जाए ओ जनिक यादि

छै डूबल. .

टटा रहल छी हि कएक साझक भूखल .. . .

दौगल सखी. . . .ई की कहल हे मानखारी . .. .

नहि अछि सुध हमरि कुमि. . . .

दा ताबैत .. .ओ वाक हि सँ मनकम्स. गेल .. .

उधमगामि हाथ .. .कण ति लेल ठहमर गेल. .

ई की केलहुँ . . . विधाता हमरि कंठ स्वर सँ. . . कोना

बॉचव आब हि अहि कलंक सँ. .

कडिल सँ चुर भमर जल ल’ क’

फेकलहुँ सकुन प’ अमामिनात कमर क’

इतिहास. क पना प’ रहब अहाँ छापल ..

पतापी पुतक जननी कहायब. .. .

एखन त’ भोगय पडत हमरि सराप .. . .

किछु बॉचल अछि अहू के

ओही जनकि पाप ..।

सखी सब तखन. . . बालखिक .. . आर ि ि दौगल. . .

देराटन सँ आयल कण्व सँ कहल छल .. .

“हे तात .. . अपनेक . . .परोक्क .. मखस्सा. . .

सकल आरि के मालटा रहल अछ .. . .
गुिसुि .. .सूकू केर. . .पाण आब बचाऊ. . .
आ' दुवासा क' सराप सॅ एकरा हटाऊ ।
चहुॅ मदस अंधार भ' चिकैत मबजुमर संग .. .उलकापात भेल होय. . .सून .. . . चान्ह आमब गेलमह .. . .
धमि सॅ कुरािसन प बैमस
िथि हाथ. धेने ऋमष .. .
कणकुटीर ि .. . ई केहेन पलयंकारी .. ..संदेर .. .
सौर िडल ि .. . चक .चक करैत चन्दि ॅासन िुखवाली रकुन के .. . अमलान पंकजक ई हाल. . .
जेना िुठी भमर छौर रगमड देने होय मकयो .. .
मबरहाकुल. . .मबवस मपता. . के. . सहजही ि देखाय पमड गेलमह . .. भमबषयत रेष .. . .
आगािी संकट सॅ सहमि क'कामन .. . .वा .. .दूरसथ भमबतवय सॅ .. .िुमदत िुसकाबी . .
नमह जामन पओला . . ऋमष मबरेष. . . . .।
सखा िीत गण आमब सूझेलकैन्ह बाट .. .
हतोतसाह मकएक गुरवर .. . . .
अहू नदी के . . . अवसस हेतय कोनो नै कोनो घाट. .. .
बालयकाल ि मपता आ' यौवन ि पमत भवन .. .
आब हि सब आन .. . .ओ अपमन .. . .
चलैत चलू ॅ करए लेल उपाय .. . .
करब नै ताधमर मबरािि .. .
मबदा करब .. . सजा धजा क' .. . पुषपक िहिफा . ..
तर वललमरक झालमर . ..

रीघ गनि करैत .. .सखा बंधु .. .
कुल गौरवक पमरचय दैत .. .
षोडषोतिोपचार सॅ देवी के पूजन अचशा करैत. . .
स्नेम्हल .. सकुन के स ँग चलबा लेल उताहुल भेला त'
.. . . िदा आगाॅ पाछाॅ. . . जम्हः चेतनक हाल म्बाम्चत .. .
श्यामा. . . कजरी .. . धम्म .. . चतुरंमा .. .गोला .. गौ . . .
बाछा .. बाछी. . .रंभैत. . .रंभैत. . .
ध लेलक़ . .पछोर .. .
आन परु पाखी .. .
िषि .. . वृषभ .. . ृिग .. . तोता .. .िना .. . सकुन पाखीक'
झूण्ड .. . संरम्कत भेल छल जेकर साम्नध्य ि . . .
मर रु सकुन. . .
खंजन. . . कचबम्चया .. .
सूझै नै म्कछु .. .देखाय नै पडै बम्टया .. .
म्बलखैत .. .म्बसुरैत .. . छाती पीटैत .. .दाय . .. म्पाम्तयाम्न ..
पीसी िय .. . .सखी सम्पदाय .. . .
कोढ फाटय वला म्बछोह सुम्न .. .
गाछ म्बरीछक जम्हः डोलायिन .. .
अपन लता गुलि सॅ .. . डाम्र नीचा कम्र .. .
छेकए लगलै. . .िहाभागक बाट ..
.म्क . . .सून कम्र क' अम्ह आरिके. . . .कतए नेने जाय छी
सौभाग्य. .
पाछाॅ िम्हः तकने छलम्ह .. . .
ृिगनैनी अशुपूमरत ऑम्ख सॅ. . . . .
छुम्ट रहल अम्छ .. .

ई मिट .. . ई पाम्न. . . ई गाि .. .ई धाि .. .

ई लोकवेद .. ई परु पखेर . . . ई सखी सािज़ . .

कतए सुनब. . .ई स्वर. . .ई साज .. . .

फम्ट रहल छलम्ह. . .हुनको म्हय .. .

अम्ह म्बादागरी क' िािन्तक कष सॅ. . .

काम्न रहल छलीह. . .असंख्य नोर ..

थमि गेलम्ह पएर .. .कएक क्गक लेल. .

िुदा िचबए लगला .. .पुर खगण सोर .. . .

आ' नहुॅ नहुॅ कम्रतो. . . अम्ह्याातए आयल लोक .. .

आपस भेल. . .हृदय िभम्र क' र ोक .. .

कतेक सून ई आर ि . ..जतए कल कल बहैत. . .

धार सन. . .

सबहक़ . दुख सुख़ . .क' म्चठा म्लखैत. . .

हॅसैत. . गलबम्हयॉ दैत. . .ऑम्खक तारा .. .सकुन .. .

नैहर तम्ज .. .आय सासुर चम्ल जाय रहल छली. . .

दूर देर . . .जतय म्कयो अपान नै. . .ाित . .नेहक पतीक पम्त. .

.आ' हुनक पारब्ध .. . . ।

िुदा दौगल चलल भाग्य. . हुनका सॅ पम्हने.. . ..

आ' रचल सब टा. . कुचक. . . .म्बान ककरो कहने .. .

दोख काल. . ओही ािछ के देल. . .

आंगुर ि गस्सल िुम्दका जे गीड लेल .. .

तखन अम्ह पेकि ाित एक जीबैत म्मार ानी. . .

शॉस लैत गभशि. . . .एक कोिल सन पाणी. . . . ।

एतय राजा के गौरव फराक़ . . .

बहराय धाखे नै म्कनको िुह सॅ वाक़ . .

ऋष्यश्र के आवेदन प' तखनहि ओ उठल छल. . .
के. . . ई. .. .दुष्प्रचार लेल. . .सवस्सा गढैत अछि . .
जौ हरिरे अछि ई गभर्मथ . पाणी. . .
हेतै . .त' अवस्स कोनो हरिो मारानी. . .
चेन्हाम्स. . . मचहुॅंक .. कुंतल .. . आंगुर माहारै छमथ. . .
नम्हं बॉचल अछि .. .आब कोनो पाणि .. .
देखल नम्हं माया के मारमछियो नजमर सॅ
मारस्कार कयल सबके वचन सॅ
एकातके भावुक .. .रम्सक ई सखा. . . .
सस्ति जन के सोझॉ बनल बघनखा .. . .
सहस्तो नौह सॅ हि नोईच रहल अछि. . .
असंख्य खापमछक' कामरख़ . .हरिा हि प' पोईत रहल अछि. . .
बहैत बरसाती नदी बनल धार दार नोर .. .
केहेन मिथ्या. . .. . . कपट .. . छल. . .कतेक फुईस ई सोर
.. . . . दुनु हाथ सॅ पोछैत अपान नोर. . . . .
देखैत अछि .. .उचुम्कक' राजा के झॉमक .. .
दया .. . पेि. . मबहलता तुरंते छमट गेल. . .
आ' खंजन नयन ि .. . .मबदोहक लुत्ती .. .भडमक गेल. . . .
मबशामति आ' िनका के रोमात फन फन करैत .. .
करय लागल मकल्लोल. . .
हन हन रणचंडी .. सन .. .
हुंकारय लेल. . .
भरल दरबार प' नजमर एकटा फेरैत. . .
कोध सॅ कॉपैत .. . िहाराज के हेरैत .. . .
जोर .जोर आबैत जाईत शॉस के रोकैत. ..

उठौने छल अप्पन दम्हन हाथक आंगुर. . .
करैत म्संहासनम्दस ईसारा .. .
कम्न काल लेल सभासद की. . . बहैत बयार धम्र चुप्प. .
कोम्ट कोम्ट ऑम्ख उठल एक संग़ .
फडम्क रहल छल हुनक बाि अंग़ .
एतेक पैघ छल. . .
भेलै नम्ह आस्था आ’ म्वशासक जीत. .
आ’ अम्छ कम्नयो नम्ह ई पाखंडी भयभीत. . .
कम्न काल . म्बलिति. . .कहल म्वचाम्र. . .
हिनै कतौ सॅ . . .कम्नयो अबला नाम्र .. .
करकि गम्न स्वीकार अम्छ हिरा. . .
िदा जाय छी हि सब सॅ आब कम्ट क . .
नै म्मक्र हरि जीवन के संभारत. . .
नै ककरो म्नठुरता जीवन के उजाडत. . .
अपने की त्यागब .. हिही अहॉ के तजै छी ..
आ
जाईत जा. ईत ई भाषा भखैत छी. . . .
जे ढोग पम्रणय. . .के कम्र क’ जरौलक म्नता प’ .. . .नम्ह .
करम्थन्ह ािफ ओकरा कम्हयो म्वधाता .. .
तडपतै. . .ािछ सन रौद सॅ म्धपल बौल ि..
म्सनेहक छॉह लेल ओ रेमास्तान ि भटकतै .. .

चपल वेग सॅ ओ चंचल चलल छल .. .
म्हय ि कतेको के हूक सन उठल छल. .
ई लचकैत कॉच करची सन काया .. .

ई जननी के ताप . .. . मेक अदृष क' िया. . ..
िनस माता नोर ढर ढर बहौला . .. ुदा िमानी
अपन पण सॅ हटल नै .. .
अनमचान्हार बाट प' उठल जे पग छल .. .
ओ साहस. . .मािय .... कछिता सॅ भरल छल. . . .
बनल नै मासमहन . नै .. .. साधु संन्यासन . .
जनि द' कुमिर के रहल जंगल वासन .. .
सिंहासन . ..त नहि छल . ..परंच खमटया .. .पटया .. .
बैस राजरानी ओ अडा जिलक़ . .
हुनक रप आ' गुण सॅ वरीभूत. . .सनेहक भरल पात ल'
लोक दौगल. .
माता के सखाओल ओ धशित वाणी. . .
ओ कात कछिक सुॅदृढ रस्ता .. . . . .
अघोमत . ओ रानी .. . बसल सबहक हय ि
आ' कण कण के आदर सॅ पुमित . ओ जीवन. . .
गॅूजल जखन ओत पथि मकलकारी. . . .त' हमार माधाता .. .
पफुल्लत नर नार. . .
बजौलक बधैया के ढोलक .. .िजीरा. . .
संगहि बजौलक .. .लोटा . ..आ' थारी .. . .
इएह आब संगी. . . .नाता ित. . .गोसया. . .
हनके सामाध्य ि पलैत बाल रासक़ . . .
गोर. . .भुराक़ . .पुष ओ बालक़ . .
सफूर्त. ..अजब. . .तेज सॅ ओ भरल छल. . . .
करैत ल्लि जुद . . . .संगी बनवासी नेना संग़ . .
सबके करैत क्ग ि चीत ओ चलैत छल .. . .

सूतल सिंह रावक के दुलारैत िलारैत. . .

उठल रावकक संग दौड लगबैत रहैत छल. . .

मानती सिखल. . .सिंहनी के दाॅत मान मान. . .

तिारी के सुनबै. . .निरदोष बालक़ . .

नै अश के .. . . सेर के आब नाथब .. .

आ' िता हुलसि क' गरा सॅ लगाबैत .. .

पठाबैथ फेर सॅ युद के गुर सीखा क' .. .

कोना सैन्य .. . बढत .. . न्याय करब त' कोना .. .

केहेन कूटनीति सॅ .. . रिपु हेते पराजित . ..

पाठ पढ़ि जननी सॅ आबैथ. . ..

संहिताया प' आजािबैत . .. .

वनवासी गरब सॅ निहारैत. . . .

रानी के पूत . . .सिंह के पछाडैत. . . .

चटान्ॅासन िमिकि. ठाढ पाछाॅ. . .

नै चिन्ता फिकिर . . . . .नै भयगस्त काया . ..

विचार ि घोरैत. . ..अमिय के पियाला .. .

आ' काया ि ढारैत पौरुष क निवाला. . . .

भरत नामी ओ जे राज बनल छल. . .

ओ रकुन के जीवन के धन धन कयल छल. .

.. . . .निरवस्ता बाद के जे रहल होय. . .

रहल अनिमाज .. सत्य सॅ जग सिखिखन. . .

राखि देने छल. .दोष हरय लेल .पुरषस्य चमितर के .. . .

दुवासा. . .वा .. .ाछिक' गप .. . .

सुनल हेता .. . राज़ा. .भरतक डंका. . अजस्त. . .

. . .

. .बल. . . .रौयक्षक .. . .साहस के मखसस्सा जानै कएक सहस्सत. . . .

एतेक . टा साजिया. . ाुदा. . कतो नम्हि उतराम्धकाम्र .. .

ऊपर सॅ आसन वृधावस्था. . ..

म्चंता नीत बढाबै. . .छल .. .

मिस .पम्रषदक सलाह मिम्स .. .

ओही जंगल म्द्दस कूच केलम्थ. . .म्लखल. .जतए .. पात .. पात. .प’ वीर. . . राजकुवरक नाि. . . . .

देखल जे आनंदकारी .. .र प. . .गुण . ..सॅ भरल देह. . . ाित .. .

म्पाता के नाि सुम्म .. .क़ रेज औचक धडम्क गेल. . .

आंम्खक सोझा .. .व्यतीत .. .करय लागल म्कल्लोल. . .

ओ पाखीक गीत. . . .पकृम्त. . .ओ कुंतल . .हास्य म्स्मति .. .

बरखो पम्हनुका सूखल घाव. ...ि . .. टीस ाािरल असंख्य .. . .

ई. . .की कयल. . म्बधाता .. . राम्ख .. .हरि कान्ह प’ तीर. . .

हरि. . .. तनुज .. .हरि अंर ई. . . आय ठाढ़ . .कतेक गंभीर .. . .

ाित. . .र कुन. . . चेन्ह सकैत अम्छ. . .हरि पम्बात . .. म्सनौंह. . .

बौआबैत .. .अतीत ि.. .. . . चलला .. . .बालकक पाछॉ .. .

भयौन वन .पदेर . . .. वम्जश . ..जतय .. .भास्करक पवेर .. .

दहाडैत .. .चहुॅम्द्दस .. . भौल .. .हाथी. . . बब्बर सेर. . . .

ओकरे संग दौगैत बाल्य भरत .. . .धेने समाटक हाथ .. .

.. . . पदासिन ि बैसल . . .साधना लीन. . .

लग ि होईत सोर .. औंचक ि देम्ल ऑम्ख फोम्ल. . .

पत्थक ठाढ . ..क’ल’ जोडने र ासक ..

पुतक पाछॉ. . . ऑम्ख ि भरल. . पायम ितक भाव .. .

पाकल केर .. . झूकल छाती .. .आगॉ के दू दॉत टूटल. . .

िन ि कम्नयो कोनो भाव नै उपजल. . .

ओ ओम्हना म्स्थर. . . .

िता के हाथक ईसारा .. . .दैत कुसासन .. .

भरतक संग . . .गहण कयल. . .नृपनंदन. . .

चम्कत .भाव सॅ नम्ह हेर सकला. ..चहुकात .. .

सकुन के ुिख िडल . . . एकदि सपाट. . .

काल .. दुबम्क क’ लागल छल कोनटा .. .

ई सबल नाम्र . . .फाटत की नम्ह म्पयति . .सिक ..

म्नाया चम्रतक अ’ड ि खेलत खेल कोनटा. . . .

कनतै .. .खीझतै. . . .म्छम्डयेतै. . . .म्नारस्कार .. .

आरोप .. .पत्थारोप. . . .

ुदा . . .नम्हं म्ककछु एहेन सन .. .

अकूत. .धैयश्र. . .सहज स्वर .. .कम्नयो नम्ह म्नाकत. . .

कम्नयो नम्हं लोहछल. . .

स्वर फूटल छल सहज सुिगल. . . .

म्चन्ह गेलौ. . राजन. . .हि अपन म्सनेहक बंधन. . .

नम्ह चाही हिरा कोनो चेन्हासी ..

नम्ह राज ुम्द्रका. . .नम्ह कोनो कंगन. . . .

पथि पेि के उपजल फम्सल. .

अम्छ उपम्स्थत अही के सीिप. . .

बॉहू .. ...बल. . ..बुम्द्ध ि अहॅू सॅ बीस. .

कम्हि रहल अम्छ लोक चहू म्दस. ..
स्वीकायशहोयत त' अपने के सौभाग्य .. .
ओकरो गौरव .. .म्पाता के हाथ. . .
रहतै िथ .. . त' म्दमहगंत. . .
हेतै स्तुम्त .. .बजतै .. .घडीघंट
भेल सािप्त. . .उतरदाम्यत्व हिर .. .
भावी समाट के गढब के. . .पोषब के. ।. .गहण कर हिर निन.
. .
हि आ ब परि स्वतंत. . .
स्नेहम्सक्त हाथ भरत प' फेरौलीह. .
आ' राजा के चरण ि िथ झूकाक'
पस्थान अपन ितृकुल लै भेली . .. .।

फागुन राग

फागुन मे रास रचाऊ सखी फागुन मे. .।। 2. .
पीयरी पक्हरने खेत मे देक्खयौ. . .
नाक्च रहल अक्छ जौनि. . . .
क्सनुक्रया सन दहक्क रहल अक्छ. . .
चार कात नि उपनि .. . .
गरमाहट सॅ भरल ई सूरज .. .
आब नै मॅूह नुकाबै. . .
जोर जोर सॅ चलैत सिंती. . .
सेहो डहकन गाबै. . . .
मन उमक्क रहल बेजोड़ . .
चाहै सीमा तोक्ड लै फागुन मे. . . . .. .।।2
असगर कोना रहब फाग मे
क्हय हम्मर नक्ह मानै. .
गाछ क्बरीछ सब मुक्सक रहल अक्छ
क्क सोचै क्क जानै. . . .
आस बढा क’ पॉती क्लख क्लख़. .
पठबैत हम क्पयजन के. . .
मग मे बैसल क्बहुॅक्स उठैत छी. .
दीप जरा नैनन के. . . .
हम्मर आंगन स्नेहक मि बनल फागुन मे .. . .।।2
गठजोक्र खेलु फाग सखी फागुन मे. . . .
ई पूआ . . . ई मालपूआ. . . .
ई दहीबडा. . . .मॅूगबा .. .इमरती .. .
पक्हने खेलू फाग पोख भक्र

पेट मे तखने ससरती. . . .

बान पीने . . मक्दरा भॉग . .बौरैलौ फागुन मे. . . ..

बलजोक्र खेलूॅ फाग सखी फागुन मे. . . . .। ।2

<u>कारीक घाट</u>

बाबन टा घाट सँ
टघरैत बहैत
नुकैत . . .िसकैत
ऐंठैत. . .उिकैत
झूित. . हॉफैत
चम्लल रहल अम्छ नाह
िम्दि िम्दि .. . .
ऊपम्र
आकार केर
अपन बाहुपार ि नेने
कारी कचोर िघ
म्छटकौने सबटा जटा
बनौने बडका छॉहम्र
दैत
जेठक जरैत रौद सँ
बचवा के असीरबाद
पाम्त कि छै
दूर दूर धम्र सूखल कछार
भनभनाम्त. . .असंख्म्य बौलक स्मार
पयावरणक अधोगम्तक
पसारए चाहैत अम्छ म्खस्सा
िदा
हुनकर पठाओल हकार

हुनक दरबार
नम्हि सुनब आजु हि
केकरो आनक म्बालाप
नम्हिं देखब हि
िम्डिल के दुगम्बा
पंडा सबहक लूट खसोट
वृद आ' नगर वधू. .. प'
म्बाभत्स रस क लेपन
वा चहूँ म्दिस पसरल
कूडा कचरा के सामाज्य
खसत त' अवस्स नोर हिर आय
ुदा म्बाशनाथे के िम्डिल ि जाए
दीवोदास क् राज्य ि
औघड के म्तारूल प' बसल
जे धाि
वएह त' हिर कारी
हिर पाण
वएह
त' हिर स्वापक म्चर पतीम्बक्त
गाि ।।
2सारनाथक संत
तपस्वी
इम्हर एकात ि
पकृम्त सुनम्र के रप लावण्य म्हाहाम्र
एतेक ऐशयशपाम्बा

कतेक आनंद भेटल
अपनेक ुखि िडिल सॅ जात होम्बा रहल अम्छ
यदम्पा छी ध्यानाम्गि
अपन पॉच म्र षम्यक संग
गाछक नीचा तीतैत
अम्बाचल .. . . काल वा ासिकि पहार सॅ
म्बाजय वा पराजयक आस सॅ पृथक
एकसम्र लडैत अपना सॅ
बढैत जा रहल छी म्नाशुन्द. . .
सहस्त्रो बरख पम्हने देल ओ पवचन
अनुगॅुम्जत भ’ रहल अम्छ
रंखनाद बम्न
िहि िहि करैत अम्छ
वातावरण चार कात
अपनेक दैम्हक सुवास सॅ
ओम्ह म्दन सॅ म्बालिल सयि
. . . चम्कत ..ुम्दत
सीखा रहल अम्छ
अष ागी ागिम्क चरि ऊदेश्य
सिटिने अपन बोम्रया म्बास्तरा
नेने हाथ ि.
छडी कििडल .. . .
ओम्ह म्चरंतन बाट के बटोही
जेकर पाथेय ाित सत्य छै
जीवनक कटुतिि सत्य। ।

चिडैक अभिलाष

एक पाखी गीत सँ
किछु कहि रहल छल
डारि कतेक हि देखल
अहि जनि ि
भेट नहि पाओल हिरा
कतौ बसेरा
आस के एक खड नेने
ठाढ एत ।
कखनो त’ कतो कोनो
बिरीछ भेटत
घर के एक
नीव राखि .. . .
खोता सँ बाहर
हिहूँ
भरि पोख हेरब
हिरो अंडा
हिरो चिलका
हिरो संगी
हिहूँ कतौ चैन सँ
किछु राग टेरब
गीत घूरल
देर धरि
निःचेष भ’ क’

छोट एतेक
स्वप्न कतेक
ई अकिंचन
भॉम्पा क' ओकर
एहेन मनोभावना के
उम्ड़ चलल
घबड़ा क' ओ
कमजोर पंखी।

भटकैत साँप

बड़का... .अजोध. . . अजगर.. . .
ससरैत.. ससरैत .. . .
माड़ने जा रहल अछि . .. .
सब किछु .. .
अपन ि नि. . . ियादा
अपन खेत पथार. . .
अपन. . .संस्कार विचार.. .
नहि रहलै आब. . .
कतो संझया चुमि
नहि बॉचल चुमि क छौड़ .. ।
आब त'   .. .गैस प'   बनै छै
परसौती के दबाय
घरक काज धंधा सॅ   फुरसति पाबि कर ...
कन्या सब देखैत अछि टीवी. .
के विसरायल .. . .' बड़का बड़का विजापन
आ'   हेरायल अछि साँपक दुनिया ि
 जतय बड़का गाडी ि. . .
बन्हिया सूट पहिरने
सब देखन ि सिकैत .. .सुनर राजकुॅ रि .
घुि बैत अछि मस्टयमरंग

आ'   गाबै अछि सुहनगर पेकि
ि धुर ि धुर गीत . .. .

कात ि बैसल . । . .अधश्गन . . . ..केर म्छड़कोने

सुनै अम्छ .. भाव ि ... डूबल ई पीत ...

ि धुर ि धुर गीत.. ..वा जीवन संगीत ...

ुदा गाकि कन्या के

नम्ह छै ई भान

जे अम्ह सूम्टंग के बाद

नै ओ राजकुि र .. .नै ओ सुनम्र. ..आ' नम्ह ओ बड़का गाड़ी..ि या

जाल छै सब . .।

सब अपन काज सम्पन कम्र .. .

आओत अपन औकात प' . .. .

गाडी जेतय गाडी वाला लग़ ..

दुनु के भेटतै पाम्रशमि क . . नाटक करबा लेल .

आ' फेर . . .ओ सब . .. कोनो

ऐडक' लेल. .. . ताकैत रहतै बाट ...

ुदा बजारक .. .चलाकी

बूझतै .. कोना कन्या. . . .. .ओ बेच की रहल अम्छ

ओ त' एकरा .. सत्तय ि म्म ..

टुम्ट रहल अम्छ . .अपना सॅ . .. अपन घर सॅ.. .अपन जम्ड़ सॅ

.

ई चि कैत अजगर. . .

चुम्स रहल छै. ..

लोकक म्नदोष स्वप के

आ' भम्र रहल अम्छ ।

ओम्ह ि ..कुंठा .. .ि हभंग .. . आ' अंगोर. ।..

आजुक विदाथी

लोदी के लोढी बूझू

क्सस्टम सील समान

क्थंकर के कुतर म बूझू

पीसू एक समान

बनत चहटगर चटनी ।

काम्ट काम्पटन फैन भेल

हॉब्स हासुआ छाप

अकबर आब होटल बनल

फैराडे फेराडॉल

बनल बव्ढ़या विजापन ।

भू के नक्शा ताव्ड़ क'

अपन बनाउ प्ला न

जतए मोन तत राखू

एक्शाया यूरोप आक्त

रहत िसुिि कुटुंबकम

हरिश्चन्द्र औ पेमचंद

दूनू बेमातर भाय

एकके काज पोथी लिखब

दोसरक गप्पे केनाय

देखु इ नब नमूना ।

औरंजेब भागल कब सँ

दुख सँ ढहि गेल ताज

मुँह नूकॉने हिम छलाह

देखि विद्यार्थी आज

एना की उचित लगै छै ।

सरस्वती के राज मे

काशि रहल इसकुल

ओहो केहेन दिन छलै

बिहॅसित छल गुर कुल

केहेन बयार चलल छै ।

<u>असमिजस</u>

ओ लड़ाइ तँ
अहा स्वयं लड़ने रही
जय पराजयक
मानू मंताक
लोकवेदक मांदा के अनठाबैत
सेहो तखन ओम्हर बयस मि
जखन अहाके गटा एतेक मजिगूत नम्हर छल
जे सम्हारम पाबैत हम्थियारक बोझ
एक म्दस चकब्यूह आऽ दोसर म्दस अनंत जुआएल जोदा
आने मक दुनु छोर प मृत्युतक ताडव
मुदा मानु इथ-ऽऽउथ क
अपन लक्म मि लागल
अहा संगामि सँ मुँह नै नुकेलहुँ
फेर आय म्चकन चौरस
अम्ह मिदान मि एतेक उदभान्त मकएक़
बढैत चलू .. मालमि नम्ह
म्जनगीक ई लड़ाइ सेहो
अही के लड़बाक अम्छ
हरि बीर अम्मान्यु .. ।

आतंकी गाि

हाथ पएर िङने
ओ सूतल सूतल सन गाि
जतए एखनो मकयो मकयो
गाबैत छल पराती झूमिर आ’ नचारी
जतए एखनो रहैत छल मभेदक बावजुद
संग संग बाघ आ’ बकरी ।
खमरहान ि पसरल छल दूर दूर धान
हसैत मछमछयामत लॉक क’ छलै भमर ि ुँह पान
नव नूकुत पेकि होइत छल चचश
आ’ नीक बेजाए ि बुमद्द होए छल खचश
जतए अखनो बाचल छल
आंचमरक लाज़
जनी जामत जी जामत क’
करैत छलीह अप्पन काज ।
जतए एखनो भोर सॅ साझ धमर
बनैत छल मकमसि मकमसकि के भानस
भोजन सॅ तृप्त सुखासन पॅ बैमस
जानी जन पढै छला िनिस
जतए एखनो
सपना छलै भरत सन राजा के
लछनि सन भाय आ’ राकि’ ियादा के।
ओमह सूतल सूतल ओंघाएल सन गाि ि
पैमस गेल छल एक मदन अजगुत अन मचन्हार लोक

रंग ढंग सँ मामचत हाथ ि कड़गर
हमरयर नोट आ' बंदूक़
आयल छल खरीद रामत्त फैला क सब तमर भामत्त ।
खेत खमरहान ि उगाबए लेल बारद आर डी एक्स
ओ सब मछटैत रहल पाए आ' देखैत देखैत
गाकि पोखमर भ' गेलए मबषाक्त
बंद भ' गेलए पराती
आ' डेरा गेलए साँि़ज़
ओँतए आब कामबज छै
भयानक अटहास करैत
ि्ँह सँ उगलैत आमा बला
आतंक क' मघनौन राज ।

<u>म्लखत के पेि गीत</u>

कदंबक गाछ तऽ कम्ह्ट
चुकल छऽल आब
कृर काय
एकसम्र ठाढ राधा
हेरए छलीह एखनों कृषणाक बाट
सखी सब पम्हने संग छोंडलम्ह
आब ि रारी सेहों लापता
केहेन घोंर कम्लकाल
पेकि र ाशत कम्ल
कोंना ि रिझा गेलय
नम्हं बोंचल हृदयक उदेग
नम्ह रहल आब ओं राग अनुराग
पोंखरी क' घाट ˘˘˘ गाछी ˘ ˘इनार
सब जेना म्बरान भ' गेलए
म्चडै चुनि नि चुप्प
चारहु कात ˘˘जेना अन्हार घुप्प
पेि कतय उम्ड गेल कपूर सन
कत ताकू ˘˘ कोंन बाध ˘˘कोंन बोंन
सोंचैत छम्थ राधा भरल ऑम्ख सॅ
म्क जखन पेिी नम्ह त म्लखत के पेि गीत
के म्लखत जौंवन के ि धुर ि धुर पीत
ताकै छम्थ व्याकुल भ' धरती आकास के
गाछ म्बरीछ ˘˘लता कुॅज ˘˘˘दूर आ' पास के

म्लखत के पेि गीत म्लखत के पेि गीत
म्बदापम्स जबाब दौंथ˘˘˘˘˘˘˘˘ ।

आम्रखर कम्हया धमर

आम्रखर कम्हया धमर
कूटैत रहब ढेकी िधान
आ’ बैसल बैसल करब नैहरक बखान
आम्रखर कम्हया धमर
मवषहरा के देबै दूध आ’ लावा
आ’ गोमताया के देख सॉन्हाम्ना रहब आवा
आम्रखर कम्हया धमर
िम्थल आ’ कॉबरा के िनैत रहब सत्य
आ’ इरखा देष के बनेने रहब लक्ष्म
आम्रखर कम्हया धमर
कम्हया धमर सीता के हेतैन्ह गुणगान
आ आजुक सीता रहती गुिनाि
आम्रखर कम्हया धमर कॉसकी करती नागट भ’ नाच
उजाङती बगीचा पाकल आ’ कॉच
आम्रखर कम्हया धमर
कम्हया धमर रहब एना मछटकल मछटकल
तनसँ बेराि आ’ िंन सँ मचकल
आम्रखर कम्हया धमर
कम्हया धमर नबका पुल टुटल रहत
आ’ कम्हया धमर मनकमी सब जुटल रहत
आम्रखर कम्हया धमर
कम्हया धमर रघुबर के हेतै चुिन
आ पाग पम्हरा करब फुइसक बखान

आम्खर कम्हया धम्र

कम्हया धम्र उगना खबास रहता

आ कम्हया धम्र रंकर उपास करता

आम्खर कम्हया धम्र

कम्हया धम्र पान खिान म्बासरब

कम्हया धम्र खेती के रान म्बासरब

आम्खर कम्हया धम्र

कम्हया धम्र आपस ि करब कटौंज

कम्हया धम्र लङत ननम्द आ भौंज

आम्खर कम्हया धम्र

कम्हया धम्र अप्पन गाि म्बासरब

बाडी ि फङल लताि म्बासरब

आम्खर कम्हया धम्र

कम्हया धम्र कहबै मम्थिला िहान

आ तरे तरे काटबै अपने बान्ह

आम्खर कम्हया धम्र

कम्हया धम्र करैत रहब रैक्या म्बालाप

आ दिम्द केम्नाहार के देब गाम्र आ सराप

आम्खर कम्हया धम्र

कम्हया धम्र अनकर करब सत्कार

आ' अप्पन लॉक के देबै दुत्कार

आम्खर कम्हया धम्र

कम्हया धम्र मम्थिला एना सुने रहतै

आ" कम्हया धम्र म्थिल सब दूखे सहतै

आम्खर कम्हया धम्र

भाषा

बङ दैन्य भाव सँ
आखर आखर
मखहाम्र
कल’ जॉम्र
करैत छल मर्हांरा
मबकासक’ नाि प’ त’
छॉम्हुए देम्लए गाि
िदा नै मबसर हिरा
हि अहॉ के आन
अहॉक रान
अहॉक पहचान छी ।
पढुआ बाबूॅ भैया नूकैत रहला
कॉन तााम्क क’ इम्हर उम्हर
कान ि तूर ठूॅम्स बम्हर सेहॉ भ’ जायथ
पॉछा सॅ अंगा खीचैत
दॉत मपॉरम्त
फेर कलपै भाखा
जूम्त मबसर हिरा
बाजू
नम्ह त हि नष भ’ जायब

हि अहॉक बाबू दादू के भाखा छी
हिरा फेर कत पायब

म्लम्प त' म्बलुप्ते पायः
असगरे आब हि
ँितृभूमि के नाि
आ' मिम्थिळा के पाण छी
बाबू भैया तिसेळाह
कंधा उचकबैत
िुह म्बचकबैत
कहला
तॉरा बाम्ज क' हि गॅिर बनल रहू
धँि नम्ह जायत हरि उत्धान
जॉ तू गाि घर ि नुकाएल रह
सबहक अपिन आ दुत्कार सह
इर् िहानगम्र छैक िहानगम्र
एत साहबक भाखा चलै छै
लाडशिकाले के
ऑम्ह दुर दुर सॅ
कै बरख धम्र पडल रहल बेसुध
हॉर अबीते ितर फेर
धेने रहल पछॉर
परदेरॉ ि म्हमति नै छॉडलक
गम्हएने रहल
चरण किल अम्ह भैया
अम्ह दीदी ऑही िया के
आ' एक म्दन ठहक्का िम्र क'
हॅम्स पडल जॉर सॅ

देखू हि त’ अि र बॉली जकॉ
ि हानगम्र ि पसम्र गेलहुॅ
हि गाि र कत’ हि र साम्हत्य म्यार ाळ अम्छ
आय देर क राजधानी ि ठाठ सॅ
अम्भजात्य वगक्क’ ि्ंह सॅ म्नकम्ल रहल छी
जन ाि नस ि पसम्र रहल छी
हि सम्रपहुॅ बम्स रहल छी ।

चक्का

चक्का जे संस्कृमा के रान छल ॅ
आब उनमा के पहचान बमा गेल ।
अम्ह सभ्य सािज ि जे जतेक निहर
तेकरा लग ततेक चक्का
बङका दौँङल छोँटका दौँङल
तेकरा पाॅछा नेगङा दौँङ रहल अम्छ
आ दौँम्ङ दौँम्ङ क बैसाहय लागल
नब नब पैँघ पैँघ सुनर सुनर चक्का
जेकर म्कछु पूछ नैँ छले
ॅसेहोँ गुङम्क रहल अम्छ
चार कात चक्के चक्का
आ ॅ ' अम्ह चक्का सॅ जाि भ रहल अम्छ
नगरक िहानगरक सीमित सङक
गारा गारी ठोँकि ठोँक
थाना पुम्लस कोँट कचहरी जेळ
सबहक पाछा लामा गेल अम्छ चक्का
चक्का हटै तखन नैँ जाि हटतै
डंडा बरसाबैँत पुम्लसबोँ थकले
ॅकोँनोँ रोँक नै
इर् ससरम्ा ससरम्ा
टतेक ऊपर पहुँच गेल अम्छ
जत सॅ नीचा
िहाम्बनारक ढलान छैँ

चक्का के म्मायम्त आब की
पगम्त आगॉ बढते क़त
ढलान प चम्ढ
ऑम्ह ठा‌ि म्बरा‌ि लेतए
त कॉना
म्क अम्ह प सॉचलम्ह कम्हयॉ
आधुम्नक म्बजानी लॉक

ई केकर शोणगात ?

माझ आँगन मे /
बइसल/ क्सलबटा पर /वासा रहल छल भाग /
हाकी रहल छलक्थ गाछी पप्प क/दलान पर/
तावम रहल छक्थ पतौह जरा क /जुटल नीकक्कर लोग ।
उमहर /नहू नहू /कक्रक /समुच्चा खेत खक्रहान /
कनैत रहल हकन /पड़ाईत रहल नतिुक्रया /
क्जल्ला के क्जल्ला पा र /समुद क पार /
नेने माथ पर अपन /सपिक पोटरी/
आ पेट मे /संगाम करैत /बयालीस हाथ क' अंतड़ी ।
टमाटरक चटनी संग /वाड़इत सोहारी /
करैत रहले करेज शीतल /
भ जाए कीछु पाय /नई रहब परदेश तखन /
सपना के महल बनबए ले/
पठबइत रहल /मक्नयाडर/कटैत रहले क्दसि /
बगोबानी /हुक्लया /क्नगाक्ड़ /सकसै क जोकर बक्न /
करैत रहल/
मनोरंजन सबहक /मुदा असगर मे /
बहैत रहलै नॉर के कात कक्र/शोणगात सक्दखन /

मोन पड़े जखन जख़न गाम ।

ओ हेराइल /भोथियाइल लोक के मिदोख आंखि स /

झकेत सपना पर /लावा गेल रहैक/डकूबा सब हक नजरि/

ओकि पान /मखानक / जनक/जानकी / गौतम /याजलियक /

गंडक /बागमती स' सिंचित /तपोमय /यज भूमि पर /

लागय लागले /

कलंकक कारी टीका /

िभत्स आरोपक /लिखाए लागले /करिया सियाही स/

मिथिला के आजम गढ़ /

तखन चित्कार कयने छल मो न /

सियासत क शतरंजी चालि/

के बली चढ़ि गेले /ओ सुतल /

बिरहा /नचारी गबईत/संतोरी मनुख क भूखेल ,पिछड़ल पदेश ।

नब त' आकाश कुसुम /पुरनको बंद पड़ल/ कल कारख़ाना /मिल /फैकी /

अनेको आशाशनक बादो खुजले नहिं जखन /

तखन परदेश मे चिचियाति अरमान /

कोन कोन राकस् क /हाथि लावा /

बोकरए लागले शोणित /

अपराी ओ युि / ि हमर चिनौन राजनीति /

खेलईत रहल गोटरस/नुकेने मुंह बाउल मे /

शूतरमुरगक जका/संकीणट/गव्हत्त जाक्ताि दिक अड़ मे /

जरेत रहलै कुक्सयारक म्ि र खेत ।

कलपक्त छव्थ महाकाल /

ने जनम लेबे व्द्दओ /

ि दि, साख्मक भूक्म पर आतंक जी लामुखी /

हमहू छी गाि ह अप्मन भूक्म के /

लाल ;व्मयर िती / पा ग आ टोपी /व्द्दिली आ दाहा/

लोटा आ’ बदना /कीतद्द आ अजान /

बला माव्ट पा क्त मे /

व्मछला कतेक दशक स/

वि देशी आसुरी शक्क्त /

क्कएक बार द साक्त रहल छै/

कराक्बओ जाच शीघ एकर /

दूर फेकू पोखरी स/सड़ल माछ /

महकइत पाक्तओ के सफाई के समय आक्ब गेलै /

जागु सरकार /जागु /बडड कि कर छै /

आतंकि दि के पटी माथ पर/ बाह्ही क /जीनाए /

समय के तकाजा अक्छ /

एहु केत्त के इंसाफ चाक्ह आब ।

खिड़की

दिन मे तीन बेर /

भिनसर ,दुपहरिआ’ साझ /

खोलि क खिड़की /

हेरय छी हमहू दुनिया जहान के /

के कत स’ आबि रहल अछि/

के किमहर जा रहल अछि /

ओकरा हाथ मे ओ की ?

एकरा माथ पर’ ई की ?

सूंघय छी हमहू हवा के /

पाथने रहेत छी कान /

अहि बदलैत समय के /

बडड लग स देखबा के उत्कंठा मे /

चाहेत छी जाई /बाहर दूर धरि/

छूबी/ दसो आंगुर स /

महसूस करि अहि बदलाव के /

मुदा समय एकर अनुमति नही दैतै/

बुझल अछि खूब हमारा /

मात एक गाहि क ‘र प मे /

ठाढ़ छी पल्ला पकड़ने /

समय के संग हम /

समय के कैद मे ।

भरोस

बेकल /विहिल भरोस /

अपना स हारल /समय समारल /

लज्जित /संकुचित /निराशा के गतटमे सिल /

पाबि नहि रहल अछि /दुनिया के कोनो ठेकान ।

केकरा कहतै/आ पतियेते त के /

की कहिओ ओकरो पुरखा के जमीदारी छल/

बिन लिखा पढ़ी /कलम दवात् क /बही खाता के /

चलैत छलई/कारोबार /खेत स खरिहान /

आ गाछी स बथान बिकके /सोन,चानी,रपा /

स ऊपर बइसल ईमान /एकरे अगज /

निने अपन पिता मिकक धजा दुनु हाथे /

क ल जोड़ने लोकचा रहु दिवस /

निबल आ सबल् क मध्य एक गोट मजगुत कड़ी /

मुदा हे लॉडटमेकाले /ई संताप अहि के देल /

हमरा सन मंद बुद्धि लिा /दोरी अहीके मानैत छी/

तेहेन व्यक्ति के चलन /

तार तार भेल हमर आरिण /

जे नही लिखल गेल बही मे /

हेतय कोना सही ?

रोमन क्लवा मे दस्तखत करे लेल /

फड़केत आंगुर /

गुरेर क ताकने छल ईमान के जाही क्दन /

पेटकुक्या देने कोठी के दोग मे मिटअपन /

धजिा समेटने /ओसारा पर/बइसल /कल्पैत कुहरेत /

भरोस के देवख /शोक स आंवख सदा के लेल बन /

कवर/नब भविष्यि के /नब मुहारिा गढ़ि लेल छोव्ड़ देने छल।

पुष्पाजलि

पुष्पाजलि ।

आजुर मे भरने /

लाल /पीयर/हरियर /

नारंगी /बैगनी /भाँति भाँति के /

रंग /गंध /रूप /आकार /

सँ सज्जित /पुष्प दल /

साँसि मे भरने /मलयानिल मादक /

मन्द्म मन्द्म आंच प/

नहु नहु गमाबईत हिम मे /

नब नब तरु पल्लव के अड़ स/

झाकैत शिरा सुनरी /

कवि रहल अछि /

उन्मादित पेमी सन /

भावविभोर भ'/ऋतु राज क/

आराधना मे/

अरविद गरा आ' मूंदल आंखि से /

पुष्पाजलि /

रूपसी के सौन्दयटस चकित /

अनंग सेहो शंख नाद कक्र देल/

सजी रहल अक्छ रंगमंच /

पेमोत्सि के /मुटी मे आक्ब गेले /

सभ हक /उड़बए लेल अबीर /गुलाल

उतक्र गेला नर नारी मे/फेर स/नलि भेस मे /

खेलय लेल फागुन के /

कृष्ण आ’ राधा ।

आस्थाक पूर्णकलश

पोखरिक माटि सँ बनितवेड़या फुलडाली माजैत/
बाबी ओइ दिन बड़ उदास भऽ गेल छलीह/
जखन घासक छिटा ,माथ सँ उतारि/
घुटनक आंगनालिप /आँचर मे बान्हल /
गंगा मैयाक परसाद देलकहि /
हरिद्वार सँ आएल छल/ कुम्भ नहा कऽ/
माथ पर बोझ छल ,कतेक रास विश्वासाक /
सह सह करैत लोक / मुंडे मूँड चार दिस /
कराल रखबाक जग्गाह नहि /
उपरका सिनहि उपरे /
नीचुलका नीचे /
मुदा सहस्र बाहु सन बेटा /
माय बाबू दुनु के पकड़या कऽ भीड़के चिरयाबैत /
आनि गेला घाट पर/
ओ निर्मल, ओ कन कन जल /
डुबकी पर डुबकी /
उतरि गेल सभ पाप /
निहारि तँ सिगरेट/ आँखिसँ देखल/

ओ घंटी आ शंख सँ गुंजैत ,/

इन्द्रक दरबार सन सजल / मैयाक आरती ।

ओइ दिन तँ शुरु आते छलै पोथीक /

बाचैत रहली कतेको दिन / मास /

सुि बुि बिसरल /

बाबी संग कतेको मइया सभ लइत रहली उसास /

देती की माते , हुनको ई पुण्य लाभ /

बा अंगना कोन मे पड़ल पड़ल /

जिनगी होइत रहत खाक।

माल जाल / पशु /पाखी /

मृतकके उदार करए िली /

पतितपाविनी /सुनौथ हमरो सबहक विलाप ।

आ दलान पर/

आंगन मे/

ओसारा पर/

गोहाली मे /

पोखरिक महाड़ पर/

बनैत रहलै बिसबासक पुल/

कुजरनी अपन तरकारी बेच कऽ/

मलाहीन माछ /तेलिन तेल /

कुम्हइन अपन माक्टक बासन बेक्च /

पुरक्हताइन लोटा /हसूली /

बह्हकी राक्ख करैत रहली बाटक ओक्रयान

नक्ह जाक्त / नक्ह कुल गौरकि गुमान /

कतेक क्दन सँ एतबे लागल वियान /

जे गंगा असननीया जेबै /

आ ओहो माघ आक्ब गेलै /लावा गेलै संगम मे कुम्भ /

क्बन कोनो पुरख पातके नेहोरा पाती केने /

मोटरी चोटरी बाह्हने/ अरिक्ताए /

टीसन पर/ पहुँच गेल रहै/नहा ि कऽ/ नब नब स्त्ति मे /

सम्पूणटगामक आि सँ बेसीए स्त्तीगण सभ /

स्कूल /कॉलेज मे / पढ़य /पढ़बए िली बेटी /पुतौह /

अस्पताल मे काज करैत क्सस्टर /

क्डगी िरी नतुक्रया संग /

गामक मुक्खया सहजो पीसी सेहो /

बुझैत अपना के महान /

बहरायल छल / सबहक संग /

करबक लेल अपन कल्याण /

साि हेतै पूणटआब /

करबाक गंगा अस्नान ।

<u>खिलैत पलास ि न</u>

खिलैत पलास ि न ।

ि रती सँ उनचास हाथ ऊपर/

उठल जे /पदीप्त मशाल/

भक, भुक, करैत/ मिझा गेल हुअए/

तँ ऐ मे बसातक कोन दोर ?

ओकर तँ अप्पन पिृ त्त/

ओ, समथर्/ओ शक्तिमान।

मुदा, मिझैल मशाल/

ठाढ़ तँ ओहिना/

अप्पन, दुगर्तिक खिस्सा कहैत/

खसा रहल अि छ/ दुनु आँखि सँ झर-झर नोर/

ई केहेन इजोर/

नै राित/ नै भोर/

चार िदस / पसिछल/ बफर्क सफेद चादिर/

छोट छोट/मोमक बाती/

आ कतेक पैघ उदासी/

ई कोन ि हास/ ई कोन उपास/

मुदा तैयो/ मोनमे जमल जा रहल छै आस/

िक जे देिता/ भीतर के /अप्पन िवष ा आ पेम सँ/

गोहराबैत /आस्था के जीवि त राखल /

मानि ीय संबंि के /मन पाण मे सइतने /

जुग जुग सँ ओकर कुशल भाखैत/

आइ फेर ओ जावा उठल अछ/

मनबै ले बम्हा के/

चाही ओ रक्त कि चि/

क्लखल ताड़ पत पर/

जे दनुज, दैत्य ,राकस के दंड हुअए क्वि त/

नारीक चीर हरण/ करै नै दुि जन/

र प क्दअ दुगा के / शक्त क्दअ काली के /

काक्ष उठैक सोक्च कऽ ि ृि ता असुर जन /

कतबो अनहर हुअए/ वि शास आब संग छै/

पात पात झड़ल /डाक्ढ़ पर/ क्खलतै पलास ि न/

एतबे मे/

आबए बाला ऋतु / कक्ह गेलै कान मे/

पाछा कर नै आब अपन ि ाण/

तैयार दि ीक्ष ओ छक्थ/

देबए फेर सँ/ अपन अक्स्थ दानमे।

आदिवासिक स्त्रीगण १-५

१

एसगर ओ चलैत/

निहारैत खेत, पथार, मचान /

आँकैत अपन बल/

झुकौने नहि ड़ि /

तकैत सीमि /

चौकना आँखि

स्थिर मुखमंडल/

जाइत अछि स्कूल /

खेलाइत अछि /

डोला पाती / गोटरस/ कबडडी/ खो-खो /

टेनिस / बैडमिंटन /

आबै छै जोड़ऽ हिसाब /

पढ़ै छै विजान /

आब नै ओ छै अजान।

२

दलान पर राखल लालटेम /

नै छै खाली बौआ भाय सभक लेल /

जात/ चकी /, गोबर /, गोइठा,/ चूली /, बासन /,छौड़ ,/

नव्ह डराबे छै आब /करबाक ओकरो छै होम किट/

जनबाक छै पकाश रिट/

समय आ दूरी पर /

बनेबाक छै ढेर रास सलि ।

पोखरर सँ भरैत काल डोल,

मन करैत छै कल्लोल,

की छै आकलमडीजक क्सदात।

आनै छै पेक्ठयासँ बेसाव्ह कऽ

नून/ तेल/ तरकारी/

घरक समान/

करै छै होम किट्

माएक काज आसान।

बेलै छै चकलापर,

उनटाबै छै ताबा परका सोहारी,

रटै छै एच टू एस ओ फोर।

लगबै छै मइयाक फाटल बेमायमे /

मरहम ।

देखै छक्थ दादी ,/ वांजरासँ बहराएल सुगनीके/

ऊपर पसरल ,/ उड़बा लेल /नील आसमान /

विया ने बोझ /जुड़ाइत छक्त छाती आब ।

३

बमकी पाड़ैत छौड़ाके / नोचलक टीक जखन/

ककओ ने दूर छी कहलकै ,/

सब िलकै ओकर मान /

आबै छै ओकरा मचबए सोर/

देक्खकऽ चोर ।

करै छै क्ािक भऽभाय ,बाबूसँ गप्प /

देखै छै टीिी / बुझै छै / कानून /दंड संक्हता /

छेड़छाड़ ,बलात्कारी के /

ताड़ै छै दस लगाी फराके सँ/

चलै छैझुण्डमे / जेना मृग ,गज /

िुक िुकी करेजक ,भगबे छै सािसक जोरसँ /

नाचै मजूर बक्त , मुदा ओक्हने चौकना।

नइ सुनबै छै ककओ आब / फकड़ा सभ ,सोन बराबक्र हेबाक/

देखैत छै सपना ओहो / जीिन सुिरबाक/

सोचै छै िजाक्तक, समाजशास्त्रीक िरपर

संघरटजीिनके आगा बढ़ेबाक नाम छै/

तखन ओ ककए नै क्हारe पूणटचान के ।

नि संविािनक पस्तािना लए जे बेकल /

ओ समाज आइ ओकर भूक्मका गक्ढ़ रहल ।

साम सँ नै दाम सँ दंड सँ नै भेद सँ/

दीपदान कऽ रहल बाटके पकाशमान।

पीठ पर ओकर अछ गागी /,मैतेयी/,सीताक अतीत /

नब जुगक कथा जागृतक सूयटभेल /

हाथमे रुमाल छै/

तँ दोसरमे मशाल सेहो/

आँखमे आँख देने /

समयसँ ओ पूछ रहल/

कोन एहेन विरम मागट/

जइ पर हम नै चल सकब ?

४

संपक

ओ नै आब संपक /

ओकरो चाह संपक ।

खेत मे /पथार मे /

मकान मे /दोकान मे /

जात आ अजात मे /

देखथन वाता व्हस्सा ओकर /

ओहो तँ हुनके तनज़

बुढ़ापेक लाठी ओहो /

सेिक ओहो हकदार /

पठौतक्ह नै हुनका/

भयौन ओल्ड होम मे।

५

आदेस लऽ /विदेशमे/

पक्ताक गृह पदेशमे/

आएल अक्छ देबएले सुख /

चाही ओकरो डगरा भक्र सुख।

पताड़णा ि लाछना /

कटु /क्ताक्त िदना /के ताप मे भस्म कक्र/

तखन ई कोन क्जंदगी ?

क्सनेहके क्सनेहसँ/

कतक्यके कतक्यसँ/

पेमके पेमसँ/ सीचब तँ बाजत बासुरी /

कुरके्त ने बनए /छत /देिल सँ घेरल जगह /

पयास इहै रहै /

सभ ठाम हो रोशनी ।

नक्ह िभत्स र प हो /

िसह्ते िसंत हो सदा /

कतक्यक अविकारक /सूली पर /

नक्ह चढ़ए पड़ैक।

संकुक्यत विचार पर/ पद पहार कक्र रहल /

नब जुगक, नब कुसुम, नब चेतनासँ भरल।

बातरसक ददर्सँ/

लोथ बनल सौस लेल/ बेकल बनल ओ ताकक रहल/

बातरसक दबाइ/

ससुरक मोक्तयाकंद/ जोक्ह रहल बाट ओकर/

देखाबक छै सम्पूणर्खेत खक्रहान/

समस्याक जा नक्ह समाान/

ताक्र नै ओकरा विराम/

सम्मन करब छै होमकिट एतबै ओकरा भान छै।

कॉलेजक पागण हो/

ा घरसँ फराक कतौ/

क्ंतन विशाल छै/

हटेबाक अंकार छै/

िरती सिगटबनै/

बूनै छै सपना जे/

आक्िक समाजक रचनामे लागल ओ/

ओकरा कतऽ पलखक्त छै/

सुनबा के आलोचना ।

<u>कुिार िनोज कश्यप</u> ।जन्ि-१९६९ ई िे धिुबनी जजलातगगत सलेपिुर गाि िे। स्कूली मशक्षा गाि िे आ उच्च मशक्षा धिुबनी िे। बाल्य काले सँ लेखन िे अमभरुमच। कैक गोट रचना आकारवाणी सँ पसामरत आ मवमभन्न पत-पमत्रका िे पकामशत। सम्पमत्त केदीय समचवालय िे अनुभाग आधकारी पद पर पदस्थामपत।

<u>वसंती दोहा</u>

गेदा - गुलाब - पलार संग, फूलल फूल कचनार ।
मपंहुकय आहट पर गोरी, आमब गेला माया दार॥

भरल वसंती िास िे, माया मादशा बसल परदेर ।
अिड़ - िस्त वसंत, फेर बढ़ा देने आछ क्लेर ॥

धरती सँ मिलिन के आछ, व्याकुल भेल आकार ।
माया मवरह िे रामत - मदन, पीयर पड़ल पलार ॥

रंग - अबीर - गुलाल सँ, धरती भऽ गेल लाल ।
गोरी के गाल पर जेना, िलिल चुटकी भमर गुलाल ॥

एम्हर - ओम्हर िटमक रहल, पीमब कऽ भाग वसंत ।

नि चंचल आई भऽ रहल , मक योगी मक संत ॥

पीमा कऽ भाग बसातो आब, लागल करय उतपात ।
धूड़ा उड़ा कऽ पड़ा गेल, देयि कान ने कोनो बात ॥

समख वासंती तोमह हुनका, जा दय मदहनु संदेर ।
जी भमर लिबमन रंग हि, भेटता मपाया जखन जे भेष ॥

ककरा सँ िनिक व्यथा कही, बुझत के िर टीस ।
सुमन कऽ सभ हँसबे करत, बनत के नि-ीत ॥

नम्हं सुम्त रहब आहा चदम्र ताम्त

अि देर केर अि पुत आहा, भारत िता केर संतान ।
ितृभूमि के सजग प्ॅराहरी, नम्ह सुम्त रहब आहा चदम्र ताम्त ॥

भगवान राि केर धनुष चढ़ा म्लय, गुंजय तीनू लोक टंकार ।
सािि-गान सँ जग अनुनाम्दत, गुंजय वाणीक वीणा झंकार ।
भगवान कृष्ण केर चवम्र सुदरश्ा, आसुर लीला केर संहार ।
रोम्णत-रतम्ा सँ आई करक आछ, भारत िता केर शृंगार ।

असंख्य अि बम्लदानीक रोम्णत, के आछ करक समिान ।
ितृभूमि के सजग प्ॅराहरी, नम्ह सुम्त रहब आहा चदम्र ताम्त ॥

रपथ आहा के आई ितृभूमि के , रपथ आछ भगवान के ।
नम्ह म्बसरब म्ाज गौरव-म्हिा, नम्ह म्बसरब बम्लदान के।
राजनीम्त केर बात ने कथिम्ा , बात आछ केवल रैतान के ।
ितॄ- भूमि म्हत रक्त ि तऽ , दंर नम्ह कोनो टा वाण के ।

दुरिन देरक हँम्स रहल आछ, कर म्दश्ा ओकर आई गुिान ।
ितृभूमि के सजग प्ॅराहरी, नम्ह सुम्त रहब आहा चदम्र ताम्त ॥

आगा ि जौ रास्त रहल , तऽ पाछा रस्त रहल सम्द काल ।
ररणागत के ररण देल , तऽ भू-लुंम्ठत कयल आरक भाल ।
रतम्ा-बीज के उन्िूलन ि, उम्श्त रोम्णत सम्दखन लाल ।

फन थवुॅचई ि तारतम्य ने, जौ मितहु बनय काल - व्याल ।

म्वाश-राम्स उदोषक के, नम्हि िनय दुम्नया कायर-म्सदान ।
ितृभूमि के सजग पॅराहरी, नम्हि सुम्त रहब आहा चदम्र ताम्स ॥

हल्दी-घाटीक रण - पॅरााागण ि, एखनो गुंम्जत राणाक हुंकार ।
वीर म्र वाजी म्सखा रहल छम्थ, दुदश्वा रण - कौरल संस्कार ।
वीर िराठा , राजपूत केर उम्स्त रतॅक अखनो पॅराबल संचार ।
वीर जवानक किशूमि ई, भारत आछ सम्रपहुँ वीरक संसार ।

जीम्वा कऽ िरय लोक अनुखन, िम्रकय जीवय लोक िहान ।
ितृभूमि के सजग पॅराहरी, नम्हि सुम्त रहब आहा चदम्र ताम्स ॥

गोपनीय अणु-अस्त्र उठा कय, देखा म्दय अपन राम्तॅ अपार ।
दुशिन देरक म्सहम्र उठय, देम्ख र प आहा केर पॅरालयंकार ।
कैल जौ घुसपैठ दुशिन तऽ , कय देब ओकर हि पूणश संहार ।
दोस्त सँ दोस्ती यदम्प आछ , दुशिन सँ बम्ढ़ कऽ पॅराहार ।

रण-भूमि ि रण-चंडी आछ तैयार करक हेतु रण-आभयान ।
ितृभूमि के सजग पॅराहरी, नम्हि सुम्त रहब आहा चदम्र ताम्स ॥

बाम्ज गेल रण - डंक आब , तारतम्य के गुंजाईर कहा आछ ।
राजनीम्त के कुद-घाट पर पाम्स म्पयब ने आहाक काज आछ ।
युवा-वीर बम्ढ चलू सिर ि, लाज देर केर आहंक हाथ आछ ।
दौपदीक चीर ने पेॅर हरण हो, गाडीव-गदा आहंक हाथ आछ ।

उत्सर्ग हो सम्पूर्ण देह , तामे स्वदय आई नव-निर्माण वितान ।
ि तृभूमि के सजग पॅ्राहरी, नमन सुमन रहब आहा चदमनर तामे ॥

गजल

धज्जी रातुक श्याह आँचर ि, अहल भोर के ताम्क रहल म्छ।
अपन आंगन ि ठाढ़ हि, आई अपने घर के ताम्क रहल म्छ ।

आहत िनिक घायल तड़पन, पेय्रो आई कनाबऽ आयल।
जतऽ जलन के पीड़ा कि हो, ओहन छाह के ताम्क रहल म्छ।

दोसरा के म्क दोष देबई हि, अपनो सभ तऽ अंम्छये बनला ।
याद ने कोनो बाचल रम्ह जाय, ओहन ठौर के ताम्क रहल म्छ।

बगबाहो अपनम्हं हाथे, आई कलि-बाग सभ जारऽ आयल।
तड़पन जतऽ तड़म्प रम्ह जायत, ओहने कहर के ताम्क रहल म्छ।

म्बसम्र गेल जे याद छलै, से सपना म्कयैक याद म्दयौलक?
नोर ने ढ़रकय जाम्ह पलक सँ, एहन आँम्ख के ताम्क रहल म्छ।

म्नकम्ल गेलहुँ आछ सुन राह पर, अन्हारेक टा सम्बल केवल।
अपन-आन केयो कतहु नम्ह, आई ओहन दर के ताम्क रहल म्छ।

<u>गजल</u>

आदि छल - छदक हिरा बनल ।
आब गाि पर रहरक पहरा पड़ल ।

िनुक्खे रहल, िनुक्खा लुम्ट गेलई।
लट पाचाली के फेर सँ खुजले रहल ।

रंग अपनहुँ के आब जदशसन भऽ गेलई।
म्जनगीक हिल आई खंडहर सन ढ़हल।

आब ककरा सँ कहतई िनिक व्यथा।
कान िम्लको के तऽ छई पाथरे बनल।

अपनो पर कोना आब कोई भरोसा करय।
सास-सासो ि िहुर आछ भरल पड़ल।

बाटक धूरा जका उम्ड़ते रम्ह गेलहुँ।
आँम्ख कानल िुदा िन नम्हये भरल।